उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी

CORE COURSE **बी.ए.– (द्वितीय सेमेस्टर)**

BAKA(N)-102

नित्यकर्म, देवपूजन एवं कर्मकाण्ड का वैज्ञानिक स्वरूप

मानविकी विद्याशाखा

भारतीय कर्मकाण्ड

तीनपानी बाईपास रोड , ट्रॉन्सपोर्ट नगर के पीछे
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल - 263139
फोन नं .05946- 261122 , 261123
टॉल फ्री न0 18001804025
Fax No.- 05946-264232, E-mail- info@uou.ac.in
http://uou.ac.in

अध्ययन समिति

अध्यक्ष
कुलपति, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
हल्द्वानी
प्रोफेसर रेनू प्रकाश
निदेशक, मानविकी विद्याशाखा
उ0मु0वि0वि0, हल्द्वानी
डॉ. नन्दन कुमार तिवारी – संयोजक
असिस्टेन्ट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
वैदिक ज्योतिष-भारतीय कर्मकाण्ड विभाग
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय , हल्द्वानी

प्रोफेसर रामराज उपाध्याय
पौरोहित्य विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय
नई दिल्ली
प्रोफेसर रामानुज उपाध्याय
वेद विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत
विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
प्रोफेसर उपेन्द्र त्रिपाठी
अध्यक्षचर, वेद विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

पाठ्यक्रम सम्पादन एवं संयोजन

डॉ. नन्दन कुमार तिवारी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
वैदिक ज्योतिष-भारतीय कर्मकाण्ड विभाग
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय , हल्द्वानी

इकाई लेखक	खण्ड	इकाई संख्या
डॉ. नन्दन कुमार तिवारी असिस्टेन्ट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, ज्योतिष-कर्मकाण्ड विभाग उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय , हल्द्वानी	1	1, 2, 3, 4, 5
डॉ. उमेश शुक्ल प्रवक्ता , व्याकरण विभाग श्रीमती लाडदेवी शर्मा पंचोली संस्कृत महाविद्यालय बरून्दनी, भिलवाड़ा , राजस्थान	2	1, 2, 3, 4, 5
प्रोफेसर रामराज उपाध्याय पौरोहित्य विभाग श्रीलाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय , नई दिल्ली	3	1, 2, 3, 4
प्रोफेसर हरीश्वर दीक्षित वेद विभाग , काशी हिन्दू विश्वविद्यालय , वाराणसी	4	1, 2, 3, 4

कापीराइट @ उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय

ISBN No. –
प्रकाशित वर्ष - 2024
मुद्रकः -
प्रकाशक : उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

नोट - : (इस पुस्तक के समस्त इकाईयों के लेखन तथा कॉपीराइट संबंधी किसी भी मामले के लिये संबंधित इकाई लेखक जिम्मेदार होगा। किसी भी विवाद का निस्तारण नैनीताल स्थित उच्च न्यायालय अथवा हल्द्वानी सत्रीय न्यायालय में किया जायेगा।

CORE COURSE   नित्यकर्म, देवपूजन एवं कर्मकाण्ड का वैज्ञानिक स्वरूप   BAKA(N)-102

BA-23 बी.ए. (द्वितीय सेमेस्टर)

अनुक्रम

प्रथम खण्ड – नित्यकर्म एवं देव पूजन परिचय	**पृष्ठ - 1**
इकाई 1 : नित्यकर्म	2-19
इकाई 2 : पूजन क्रम विधि	20-33
इकाई 3 : गणपति – गौरी एवं षोडशमातृका पूजन	34-47
इकाई 4 : पंचदेव पूजन विधि	48-58
इकाई 5 : श्री महालक्ष्मी पूजन	59-68
द्वितीय खण्ड - कथा एवं जप प्रकरण	**पृष्ठ 69**
इकाई 1 : सत्यनारायण व्रत कथा	70-100
इकाई 2 : महामृत्युञ्जय जप	101-124
इकाई 3 : श्रीनवार्ण मन्त्र पुरश्चरण	125-143
इकाई 4 : सन्तान गोपाल मन्त्र	144-161
इकाई 5 : श्रीमद्भगवद्गीता का 15 वॉ अध्याय	162-169
तृतीय खण्ड – विविध देवताओं की आरती एवं स्तुति	**पृष्ठ 170**
इकाई 1: गणेश जी की आरती	171-188
इकाई 2: श्री दुर्गा जी की आरती एवं स्तुति	189-208
इकाई 3 : श्री लक्ष्मी जी की आरती एवं स्तुति	209-227
इकाई 4: श्री सत्यनारायण जी की आरती एवं स्तुति	228-246
चतुर्थ खण्ड – कर्मकाण्ड प्रक्रियाओं की वैज्ञानिकता	**पृष्ठ 247**
इकाई 1: पूजन में मांगलिक द्रव्यों की वैज्ञानिकता	248-257
इकाई 2: संस्कारों की वैज्ञानिक अवधारणा	258-267
इकाई 3 : व्रत एवं पर्वों की वैज्ञानिकता	268-280
इकाई 4: उपनयन एवं विवाह की वैज्ञानिकता	281-288

बी.ए. – 23 (द्वितीय सेमेस्टर)

CORE COURSE – कर्मकाण्ड

नित्यकर्म, देवपूजन एवं कर्मकाण्ड का वैज्ञानिक स्वरूप

BAKA(N)-102

खण्ड -1

इकाई – 1 नित्यकर्म

इकाई की संरचना

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3. नित्य कर्म प्रातःकालीन भगवत स्मरण

शौच दन्तधावन

त्रिकाल संध्याका विधान

गायत्री जप माहात्म्य

1.4 सारांश

1.5 शब्दावली

1.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.8 निबन्धात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना:-

प्रस्तुत इकाई BAKA(N)–102 के प्रथम खण्ड की पहली इकाई **'नित्यकर्म'** नामक शीर्षक से सम्बन्धित है। मानव अपने नित्य जीवन में प्रात: काल जगकर क्या - क्या कार्य करें जिससे उसका प्रतिदिन उत्तरोत्तर विकास हो इसके लिये नित्यकर्म, प्रात:कालीन भगवत स्मरणादि से पाठकों को परिचित कराया जा रहा है।

नित्य का अर्थ होता है – प्रतिदिन, दिनानुदिन। अर्थात् प्रतिदिन किये जाने वाले कर्मों से सम्बन्धित तथ्य को नित्यकर्म कहते है। शास्त्रीय दृष्ट्या नित्यकर्म के अन्तर्गत क्या - क्या आता है? इसका विवेचन आप हम प्रस्तुत इकाई में करने जा रहे है।

प्रत्येक मनुष्य के जीवन में कुछ समय ऐसे होते है जब उसकी बुद्धि निर्मल और सात्विक रहती हैं तथा उस समय में किये गये क्रियाकलाप शुभ कामनाओं से समन्वित एवं पुण्यवर्धन करने वाले होते है । इन विचारों को ध्यान में रखते हुये इस इकाई में मनुष्य के दैनन्दिनी जीवन में कृत्य सुकर्मों का शास्त्रीय विधान को बतलाया जा रहा है।

1.2 उद्देश्य -

1. इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप नित्यकर्म की विधाओं को जान पायेगें।
2. सन्ध्या के बारे में जान पायेगें।
3. गायत्री कवच एवं गायत्री के माहात्म्य को समझ पायेगें।
4. दैनन्दिनी जीवन में शास्त्रोक्त कृत्य कार्यों को भली – भॉंति समझ पायेंगे।

1.3 नित्य कर्म प्रात:कालीन भगवत स्मरण

शास्त्रविधि से गृहस्थ के लिए नित्यकर्म का निरूपण किया जाता है, **'जायमानो वै ब्रह्मणोस्त्रिभिर्ऋणवा जायते'** के अनुसार मनुष्य देवऋण, मनुष्य ऋण, पितृऋण से युक्त होकर जन्म लेता है। इन ऋणों से सम्यक् प्रकार से मुक्ति मिले इसलिये नित्यकर्म का विधान किया जाता है। नित्यकर्म में मुख्य छः कर्म बताये गये है -

संध्या स्नानं जपश्चैव देवतानां च पूजनम।
वैश्वदेवं तथाऽऽतिथ्यं षट् कर्माणि दिने दिने।।

मनुष्य को शारीरिक शुद्धि के लिए स्नान, संध्या, जप, देवपूजन, बलिवैश्वदेव और अतिथि सत्कार – ये छः कर्म प्रतिदिन करने चाहिए। हमारी दिनचर्या नियमित है। प्रातः काल जागरण से लेकर शयन

तक की समस्त क्रियाओं के लिए शास्त्रकारों ने अपने दीर्घकालीन अनुभव से ऐसे नियमों का निर्माण किया है जिनका अनुसरण करके मनुष्य अपने जीवन को सफल कर सकता है। नियमित क्रियाओं के ठीक रहने पर ही स्वास्थ एवं मन स्वस्थ रहता है।

आचारो परमो धर्मः -

उपर्युक्त पंक्ति के अनुसार आचार ही मनुष्य का परम धर्म है। आचार - विचार के पवित्र होने पर ही मनुष्य चरित्रवान बनता है, मनुष्य के चरित्रवान होने से राष्ट्र का भी सर्वांगीण विकास होता है।

प्रातःकालीन कर्मों में सर्वप्रथम ब्रह्ममुहूर्त में जगना चाहिये, ब्रह्ममुहूर्त में नहीं जगने से क्या हानि होती है आचार्यों ने इस प्रकार प्रतिपादित किया है –

ब्रह्मे मुहूर्ते या निद्रा सा पुण्यक्षयकारिणी।
तां करोति द्विजो मोहात् पादकृच्छ्रेण शुद्ध्यति।।

ब्रह्ममुहूर्त में जो मुनष्य सोता है, उस समय की निद्रा उसके पुण्यों को समाप्त करती है । उस समय जो शयन करता है उसे इस पाप से बचने के लिए पादकृच्छ्र नामक (व्रत) प्रायश्चित्त करना होता है । हमारी दैनिक चर्या का आरम्भ प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में जागरण से होता है। शास्त्रों में ब्रह्ममुहूर्त की व्याख्या इस प्रकार से है -

रात्रेः पश्चिमयामस्य मुहूर्तो यस्तृतीयकः।
स ब्राह्म इति विज्ञेयो विहितः स प्रबोधने।।

अर्थात् - रात्रि के अन्तिम प्रहर का जो तीसरा भाग है उसको ब्रह्म मुहूर्त कहते है। निद्रा त्याग के लिए यही समय शास्त्र विहित है।

ब्राह्ममुहूर्त सूर्योदय से चार घड़ी (डेढ़ घंटे) पूर्व को कहते है। मनुष्य प्रातःकालीन जागरण के पश्चात् ऑखों के खुलते ही दोनों हाथों की हथेलियों को देखें और निम्न मन्त्र को बोले -

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।
करभूले स्थिलो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम्।।

भाषा - हाथ के अग्रभाग में लक्ष्मी हाथ के मध्य में सरस्वती का निवास है, हाथ के मूल भाग में ब्रह्माजी का निवास है, अतः प्रातः काल कर (हाथ) का दर्शन करना चाहिए।

उपयुक्त श्लोक बोलते हुए अपने हाथो को देखना चाहिए। यह शास्त्रीय विधान बड़ा ही अर्थपूर्ण है। इससे मनुष्य के हृदय में आत्म-निर्भरता और स्वावलम्ब की भावना उदय होती है । वह जीवन के प्रत्येक कार्य में दूसरों की तरफ न देखकर अन्य लोगों के भरोसे न रहकर-अपने हाथों की तरफ देखने का अभ्यासी बन जाता है।

भूमि की वन्दना - शय्या से उठकर पृथ्वी पर पैर रखने से पूर्व पृथ्वी की प्रार्थना करें -

समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डिते।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ।।

समुद्ररूपी वस्त्रो को धारण करने वाली पर्वत रूपी स्तनो से मण्डित भगवान विष्णु की पत्नी पृथ्वी देवी आप-मेरे पाद स्पर्श को क्षमा करें।

प्रातः स्मरण -

धर्म शास्त्रों ने निद्रा त्याग के उपरान्त मनुष्य मात्र का प्रथम कर्तव्य उस कोटि-कोटि ब्रह्माण्ड-नायक, सच्चिदानन्द-स्वरूप प्यारे प्रभु का स्मरण बताया है - जिस की असीम कृपा से अत्यन्त दुर्लभ मानव देह प्राप्त हुई है, जो समस्त सृष्टि के कण-कण में ओत-प्रोत है, और सत्य, शिव, व सुन्दर है। जिसकी कृपा से मनुष्य सब प्रकार के भयों से मुक्त होकर 'अहं ब्रह्मास्मि'' के उच्च लक्ष्य पर पहुंच कर तन्मय हो जाता है। दैनिक जीवन के प्रारम्भ में उस के स्मरण से हमारे हृदय में आत्मविश्वास और दृढता की भावना ही उत्पन्न नहीं होगी अपितु सम्पूर्ण दिन मंगलमय वातावरण में व्यतीत होगा। मानसिक शुद्धि के लिए मन्त्र बोलें -

ॐ अपवित्र पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्यभ्यन्तरः शुचि ।।

प्रातः स्मरणीय श्लोकः-

निम्नलिखित श्लोकों का प्रातः काल पाठ करने से अत्यधिक कल्याण होता है। जैसे- दिन अच्छा बीतता है, धर्म की वृद्धि होती है भगवत् प्रीत्यर्थ इसका पाठ करना चाहिए।

गणेशस्मरणः-

प्रातः स्मरामि गणनाथमनाथबन्धुं
सिन्दूरपूरपरिशोभित गण्डयुग्मम् ।
उद्दण्डविघ्नपरिखण्डनचण्डदण्ड
माखण्डलादिसुरनायकवृन्दवन्द्यम् ।।

अर्थ- अनाथों के बन्धु सिन्दूर से शोभायमान दोनो गण्डस्थलवाले प्रबल विघ्न का नाश करने में समर्थ एवं इन्द्रादि देवों से नमस्कृत श्रीगणेश का मैं प्रातः काल स्मरण करता हूँ।

विष्णुस्मरणः-

प्रातः स्मरामि भवभीतिमहार्तिनाशं
नारायणं गरूडवाहनमब्जनाभम् ।

ग्राहाभिभूतवरवारणमुक्तिहेतुं
चक्रायुधं तरूणवारिजपत्रनेत्रम् ।।

अर्थ- संसारके भय रूपी महान् दुःख को नष्ट करने वाले ग्राह से गजराज को मुक्त करने वाले चक्रधारी एवं नवीन कमल दलके समान नेत्रवाले पद्मनाभ गरूडवाहन भगवान् श्रीनारायण का मैं ध्यान करता हूँ।

शिवस्मरण:-

प्रातः स्मरामि भगभीतिहरं सुरेश
गङ्गाधरं वृषभवाहनमम्बिकेशम् ।
खट्वाङ्गशूलवरदाभयहस्तमीशं
संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ।।

अर्थ- संसार के भय को नष्ट करनेवाले देवेश, गंगाधर, वृषभवाहन, पार्वतीपति, हाथ में खट्वांग एवं त्रिशूल लिये और संसाररूपी रोग का नाश करने वाले अद्वितीय औषध स्वरूप अभय एवं वरद मुद्रयुक्त हस्तवाले भगवान् शिवका मैं प्रातः काल स्मरण करता हूँ।

देवीस्मरण:-

प्रातः स्मरामि शरदिन्दु करोज्ज्वलाभां
सद्त्नवन्मकरकुण्डलहारभूषाम् ।
दिव्यायुधोर्जितसुनीलसहस्रहस्तां
रक्तोत्पलाभचरणां भवतीं पेरशाम्।।

अर्थ- शरत्कालीन चन्द्रमाके समान उज्ज्वल आभावाली उत्तम रत्नों से जटित मकरकुण्डलों तथा हारों से सुशोभित दिव्यायुधों से दीप्त सुन्दर नीले हजारों हाथोंवाली लाल कमल की आभायुक्त चरणोंवाली भगवती दुर्गा देवी का मैं प्रातः काल स्मरण करता हूँ।

सूर्यस्मरण -

प्रातः स्मरामि खलु तत्सवितुर्वण्यं
रूपं हि मण्डलमृचोऽथ तनुर्यजूष।
सामानि यस्य किरणाः प्रभावादिहेतुं
ब्रह्माहरात्मकमलक्ष्यमचिन्त्यरूपम्।।

अर्थ- सूर्यका वह प्रशस्त रूप जिसका मण्डल ऋग्वेद, कलेवर यजुर्वेद तथा किरण सामवेद हैं। जो सृष्टि आदि के कारण है ब्रह्मा और शिव के स्वरूप हैं तथा जिनका रूप अचिन्त्य और अलक्ष्य है

प्रातः काल मैं उनका स्मरण करता हूँ।

नवग्रहों का स्मरण -

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी
भानुः शशी भूमिसुतोबुधश्च।
गुरूश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्॥

अर्थ- ब्रह्मा, विष्णु, शिव, सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु ये सभी नवग्रह मेरे प्रातः काल को मंगलमय करें।

ऋषिस्मरण -

भृगुर्वसिष्ठः क्रतुरङि.गराश्च
मनुः पुलस्त्यः पुलहश्च गौतमः।
रैभ्यो मरीचिश्च्यवनश्च दक्षः
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्॥

अर्थ- भृगु, वसिष्ठ, क्रतु, अंगिरा, मनु, पुलस्त्य, पुलह, गौतम, रैभ्य, मरीचि, च्यवन और दक्ष ये समस्त मुनिगण मेरे प्रातः काल को मंगलमय करें।

प्रकृतिस्मरण -

पृथ्वी सगन्धा सरसास्तथापः
स्पर्शी च वायुर्ज्वलितं च तेजः।
नभः सशब्दं महता सहैव
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्॥

अर्थ- गन्धयुक्त पृथ्वी, रसयुक्त जल, स्पर्शयुक्त वायु, प्रज्वलित तेज, शब्दसहित आकाश एवं महत्तत्व ये सभी मेरे प्रातःकाल को मंगलमय करें।

अभ्यास प्रश्न- 1

1. मनुष्य कितने ऋणों से युक्त होता है?
2. शय्या से उठने के पश्चात् सर्व प्रथम क्या किया जाता है?
3. प्रातः कालीन भगवत स्मरण से क्या लाभ होता है?
4. ब्रह्ममुहूर्त का क्या समय है?

1.3.1 शौच दन्तधावन

तत्पश्चात शौच से निवृत्त होकर दन्तधावन करे, मुखशुद्धि के बिना पूजा-पाठ मन्त्र जप ये सब निष्फल हो जाते है वेद पढ़ने के लिए निम्नलिखित दातुनों का उपयोग करना चाहिए 1. चिड़चिड़ा (अपामार्ग) 2.गूलर, 3. आम, 4.नीम, 5. बेल, 6 खैर, 7. तिमुर, 8. करंज

स्नान - प्रातः काल स्नान करने के पश्चात् मनुष्य शुद्ध होकर जप, पूजा, पाठ आदि समस्त कर्मो के करने योग्य बनता है नौ छिद्रोवाले अत्यन्त मलिन शरीर से दिन-रात मल निकलता रहता है, अतः प्रातः कालीन स्नान करने से शरीर शुद्धि होती है।

वेद स्मृति में कहे गये समस्त कार्य स्नानमूलक है -

स्नानमूलाः क्रियाः सर्वाः श्रतिस्मृयुक्षिता नृणाम् ।
तस्मात् स्नानं निषेवेत श्रीपुष्टचारोग्यवर्धनम् ।।

सारी क्रियायें स्नान से सम्बन्धित है, अतः स्नान आवश्यक है, अतएव लक्ष्मी, पुष्टि आरोग्य की वृद्धि चाहने वाले मनुष्य को स्नान सदैव करना चाहिए।

स्नान के प्रकार - स्नान के सात भेद है -

मान्त्रं भौमं तथाग्नेयं वायव्यं दिव्यमेव च ।
वारूणं मानसं चैव सप्त स्नानान्यनुक्रमात् ।।

1. मन्त्र स्नान 2. भौम (भूमि) 3. अग्नि 4. वायु (वायव्य) 5. दिव्यस्नान 6. वारूण
7. मानसिक स्नान

हाथ में जल लें और बोलें ।

स्नान - संकल्प- ऌँ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः परमात्मने अद्य .... अमुक गोत्रोत्पन्नः शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम श्रुतिस्मृतिपुराणोक्त फलप्राप्तिपूर्वकं श्री भगवत्प्रीत्यर्थं च प्रातः/ मध्याह्न/सायं स्नानं करिष्ये।।

संकल्प के पश्चात् - तीर्थो का आवाहन करें

ऌँ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती ।
नर्मदा सिंधु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरू ।।

अभ्यास प्रश्न- 2

1. दातुन करने की आवश्यकता क्यों है?
2. स्नान के कितने प्रकार होते है?

1.4 त्रिकाल संध्याका विधान

उपासक जिस क्रिया में परब्रह्म का चिन्तन करते है, वह उपासना कर्म सन्ध्या कहलाता है।
सम् उपसर्ग पूर्वक ''ध्यै चिन्तायाम्'' धातु से अधिकरण में अड्. प्रत्यय करके स्त्री अर्थ में टाप् करके संध्या शब्द को निष्पन्न करते है।

नियमपूर्वक जो लोग प्रतिदिन संध्या करते है, वे पापरहित होकर सनातन ब्रह्मलोक को प्राप्त होते है।

संध्यामुपासते येतु सततं संशितव्रताः।
विधूतपापास्ते यान्ति ब्रह्मलोकं सनातम्।।

जो भी मनुष्य जो अपने कर्म से रहित हो, उनको पवित्र करने के लिए ब्रह्माजी ने संध्या की उत्पत्ति की है।

रात्री या दिन में जो भी अज्ञानवश दुष्कर्म हो जाये, वे त्रिकाल-संध्या करने से नष्ट हो जाते है।

संध्या के प्रकार - संध्या प्रायः तीन समय की जाती है प्रातः मध्याह्न, सायं प्रातः संध्या सूर्योदय से पूर्व की जाती है,

उत्तमा तारकोपेता मध्यमा लुप्ततारका।
अधमा सूर्यसहिता प्रातः संध्या त्रिधास्मृता ।।

सूर्योदय से पूर्व जब आकाश मण्डल में तारे दिखाई दें उस समय की संध्या को उत्तम सन्ध्या कहते है। जब तारे लुप्त हो जाये सूर्योदय न हुवा हो वह सन्ध्या मध्यम सन्ध्या होती है। सूर्योदय के पश्चात् जो सन्ध्या होती है उसे अधम सन्ध्या कहते है। सायं सन्ध्या प्रायः सूर्यास्त से पूर्व उत्तम होती है।

उत्तमा सूर्यसहिता मध्यमा लुप्तसूर्यका।
अधमा तारोकोपेता सायं संध्यात्रिधास्मृता ।।

सूर्य के रहते सायं कालीन सन्ध्या उत्तम है, सूर्य अस्त हो जाये तो मध्यम सन्ध्या, और तारे दिखाई दे तो वह सन्ध्या अधम मानी जाती है।

प्रातः संध्यां सनक्षत्रां मध्याह्ने मध्यभास्कराम्।
ससूर्या पश्चिमां संध्यां तिस्त्रः संध्या उपासते ।।

प्रातः संध्या तारो के रहते और जब सूर्य आकाश के मध्य में हो तो मध्याह्न संध्या, सूर्य पश्चिम में हों सायं सन्ध्या होती है इस प्रकार तीन संध्यायें होती है।

स्वकाले सेविता संध्या नित्यं कामदुघा भवेत्।

गोधूलि समय पर की गयी संध्या इच्छानुसार फल देती है और असमय पर की गयी संध्या वन्ध्यास्त्री के समान होती है।

सन्ध्या के लिए आवश्यक सामाग्री -

1. लोटा जल के लिए
2. पात्र चन्दन पुष्पादि के लिए
3. पञ्चपात्र
4. आचमनी
5. अर्घा
6. थाली जल गिराने के लिए
7. आसन, 1. गोमुखी, 1. माला

स्नान के पश्चात् शुद्ध वस्त्र धारण करें और आसन बिछाकर उत्तर या पूर्व को मुख करके बैठें और निम्न मन्त्र पढ़ते हुये शिखा बॉधे -

ऊँ चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः सन्विते।
तिष्ठ देवि शिखबद्धे तेजोवृद्धि कुरूष्व में।।

तिलक लगायें तीन बार आचमन करे आचमन निम्न मन्त्रों से करें -

ऊँ केशवाय नमः , ऊँ नारायणाय नमः , ऊँ माधवाय नमः इन मन्त्रों से जल पीयें तथा ऊँ हृषीकेशाय नमः इस मन्त्र को बोलकर हाथ धो लें।

पहले बायें हाथ में जल ले दायें हाथ से ढकें गायत्री मन्त्र से अभिमन्त्रित करके अपने ऊपर निम्न मन्त्र बोलते हुये छिड़के -

ऊँ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्ष स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

पुनः जल लेकर आसन में छोड़े मन्त्र बोले -

ऊँ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरू चासनम्।।

सन्ध्या संकल्प - हाथ में जल कुशा ले और संकल्प पढ़े।

ऊँ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः परमात्मने अद्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पेवैवस्वतमन्वन्तरेअष्टा विंशतितमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे भूर्लोके भारतवर्षे अमुक स्थाने अमुक संवत्सरे अमुक ऋतौ अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुक गोत्रे अमुक शर्मा (वर्मा गुप्ता) अहं मम उपात्तदुरितक्षयपूर्वकश्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं प्रातः (सायं,मध्याह्न) संध्योपासनं करिष्ये ।।

संकल्प के बाद प्राणायाम करें -

प्राणायाम के तीन भेद है 1. पूरक 2. कुम्भक, और 3. रेचक

पूरक - अंगूठे से नाक के दाहिने छिद्र को दबाकर बायें छिद्र से श्वास को धीरे-धीरे खीचने को ''पूरक प्राणायाम कहते है।

कुम्भक - श्वास को रोककर नाक के दोनो छिद्रों को बन्द करना कुम्भक कहलाता है।

रेचक - नाक के बाये छिद्र को दबाकर दाहिने छिद्र से धीरे-धीरे छोड़े इसको रेचक प्राणायाम कहते है।

हाथ में जल लें और विनियोग पड़े

विनियोग - ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्देवी गायत्रीच्छन्दः परमात्मा देवता तत्सवितुरिति विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता प्राणायामे विनियोगः।।

तत्पश्चात श्वास लेते समय और रोकते समय और छोड़ते समय निम्न मन्त्र को पढ़े

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ।।

प्राणायाम के पश्चात् मार्जन करे पुनः हाथ में जल लेकर विनियोग पढे।

विनियोग- आपो हिष्ठेत्यादि त्रयृचस्य सिन्धुद्वीप ऋषिगायत्रीच्छन्दः आपो देवता मार्जने विनियोगः

पुनः बाये हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ की तीन अंगुलियो से 1 से 7 तक मन्त्रों को बोलकर सिर पर जल छिड़के। 8 वें मन्त्र से पृथ्वी पर तथा 9 वे मन्त्र से पुनः सिर पर जल छिड़के।

ॐ आपोहिष्ठामयोभुवः

ॐ तान ऊर्जेदधातन

ॐ महेरणाय चक्षसे

ॐ यो वः शिवतमो रसः

ॐ तस्य भाजयते नः

ॐ उशतीरिवमातरः

ॐ तस्मा अरंगमाम

ॐ यस्य क्षयायजिन्वथ

ॐ आपो जनयथाचन:

अघमर्षण - नीचे लिखे विनियोग को पढ़कर दाहिने हाथ में जल लेकर उसे नाक से लगाकर मन्त्र पढ़े और ध्यान करें कि समस्त पाप नाक से निकलकर जल में आ गये है। फिर उस जल को देखे

बिना बायीं ओर फेंक दे।

विनियोग:- अघमर्षणसूक्तस्याघमर्षण ऋषिः अनुष्टुप् छनदः भाववृतो देवता अघमर्षर्ण विनियोगः।।

मन्त्र - ऊँ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्रयजायत। ततः समुद्रो अर्णवः समुद्रादर्णवादधी संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदद्यद्विश्वस्य मिषतोवशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत् दिवं पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः ।।

सूर्याघ्र्य विधि - सूर्य हमारे प्रत्यक्ष देवता है गायत्री के अधिष्ठातृ देव है संध्या काल में इन्हे अर्ध्य अवश्य देना चाहिए प्रातः काल की संध्या में खड़े होकर तीन बार सूर्य नारायण को अर्धा दें मध्याह्न में खड़े होकर 1 बार, सांय संध्या में बैठ कर तीन बार अर्धा देना चाहिए, हाथ में जल लेकर विनियोग करें।

विनियोग - ऊँ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दः तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता सूर्याध्यदाने विनियोगः।।

विनियोग के बाद निम्न मन्त्र से अर्घा दे।

ऊँ भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियोयोनः प्रचोदयात्।।

उपस्थान

विनियोग - तच्च्क्षुरित्यस्य दध्यड्ङथर्वण ऋषिः अक्षरातीतपुर उष्णिक्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।।

ऊँ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येमशरदः शतं जीवेम शरदः शत छः श्रृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूय श्च शरदः शतात्।।

न्यास जप - विनियोग - ऊँ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दः परमात्मा देवता ऊँ भूर्भुवः स्वरिति महाव्याह्वतीनां परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः गायत्रयुष्णि - गनुष्टुभश्छन्दांसि अग्निवायुसूर्या देवताः ऊँ तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्रऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता जपे विनियोगः।।

न्यास ऊँ हृदयाय नमः। ऊँ भूः शिरसे स्वाहा, ऊँ भुवः शिखायै वषट् , ऊँ स्वः कवचाय हुम् ऊँ भूर्भुवःस्वःनेत्राभ्यां वौषट्

ऊँ भुर्भुवःस्वः अस्त्राय फट ।।

प्रातः कालीन गायत्री ध्यान -

बालां विद्यां तु गायत्रीं लोहितां चतुराननाम्।

रक्ताम्बरद्वयोपेतामक्षसूत्र करां तथा ।।

कमण्डलुधरां देवीं हंसवाहनसंस्थिताम् ।

ब्रह्माणीं ब्रह्मदैवत्यां ब्रह्मलोकनिवासिनीम् ।।

मन्त्रेणावाहयेद्धेषीमायन्तीं सूर्यमण्डलात् ।।

तत्पश्चात् गायत्री मन्त्र का जप करें -

ॐ भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

गायत्री जप करते समय गायत्री मन्त्र के अर्थ को ध्यान में रखते हुये जप करें ।।

अर्थ – भू: – सत् , भुवः - चित् , स्वः - आनन्द स्वरूप, सवितु: देवस्य – सृष्टिकर्ता प्रकाशमान परमात्मा के, तत् वरेण्यं भर्ग: - उस प्रसिद्ध वरणीय तेज का (हम) ध्यान करते हैं, य: - जो परमात्मा, न: - हमारी, धिय: - बुद्धि को (सत् मार्ग की ओर) , प्रचोदयात् - प्रेरित करे ।।

अर्थात् सत् चित् आनन्द स्वरूप (सच्चिदानन्द स्वरूप) सृष्टिकर्ता प्रकाशमान परमात्मा (सूर्य) के उस प्रसिद्ध वरणीय तेज का हम ध्यान करते हैं जो परमात्मा हमारी बुद्धि को सत्मार्ग की ओर प्रेरित करता है।

2. तर्पण से पूर्व गायत्री कवच का पाठ करें

गायत्री कवच तीनों संध्यायों में पढ़ें।

गायत्री जप कर माला या रूद्राक्ष की माला से करें।

गायत्री जप के अनन्तर गायत्री तर्पण करे तर्पण केवल प्रातः कालीन संध्या में अनिवार्य है।

विनियोग - ॐ गायत्रया विश्वामित्र ऋषिः सविता देवता गायत्री छन्दः गायत्री तर्पणे-विनियोगः ।।

ॐ भू: ऋग्वेदपुरूषं तर्पयामि ॐ भुवः यजुर्वेदपुरूषं तर्पयामि ॐ स्वः सामवेदपुरूषं तर्पयामि। ॐ मह: अथर्ववेदपुरूषं तर्पयामि ॐ जनः इतिहासपुराण पुरूषं तर्पयामि ॐ तपः सर्वागमपुरूषं तर्पयामि । ॐ सत्यं सत्यलोकपुरूषं तर्पयामि ॐ भू: भूर्लोक पुरूषं तर्पयामि । ॐ भुवः भुवर्लोक पुरूषं तर्पयामि। ॐ स्वः स्वर्लोकपुरूषं तर्पयामि। ॐ भू: एकपदां गायत्रीं तर्पयामि। ॐ भुवः द्विपदां गायत्रीं तर्पयामि ॐ स्वः त्रिपदां गायत्रीं तर्पयामि। ॐ भुर्भुवः स्वः चतुष्पदां गायत्रीं तर्पयामि। ॐ उषसीं तर्पयामि। ॐ गायत्रीं तर्पयामि। ॐ सावित्रीं तर्पयामि। ॐ सरस्वतीं तर्पयामि। ॐ वेदमातरं तर्पयामि। ॐ पृथिवीं तर्पयामि। ॐ अजां तर्पयामि। ॐ कौशिकीं तर्पयामि ॐ सांकृतिं तर्पयामि। ॐ सार्वजितीं तर्पयामि। ॐ तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु।

तत्पश्चात् अपने आसन में खड़े होकर परिक्रमा करें। परिक्रमा मन्त्र-

''यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।

तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे ।।''

किया हुआ जप भगवान को अर्पण करें - नीचे लिखे वाक्य बोलें

अनेन गायत्री जपकर्मणा सर्वान्तर्यामी भगवान् नारायणः प्रीयतां न मम ।।

गायत्री देवी का विसर्जन - निम्नलिखित विनियोग के साथ आगे बताये गये मन्त्र से गायत्री देवी का विसर्जन करें -

विनियोग - ''उत्तमे शिखरे'' इत्यस्य वामदेव ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः गायत्री देवता गायत्री विसर्जने विनियोगः।। विनियोग के बाद हाथ जोड़े और मन्त्र बोलें -

ऊँ उत्तमे शिखरे देवी भूम्यां पर्वतमूर्धनि ।
ब्राह्मणेभ्योऽभ्यनुज्ञाता गच्छदेवि यथा सुखम् ।।

इसके बाद नीचे लिखा वाक्य पढ़कर इस संध्योपासना कर्म को भगवान् को अर्पण करें - अनेन प्रातः संध्योपासनाख्येन कर्मणा श्री परमेश्वरः प्रीयतां न मम।

ऊँ तत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु ।। अन्त में पूर्ववत् आचमन करें और भगवान का स्मरण करें।

गायत्री कवच

हाथ में जल लेकर विनियोग पढ़े

विनियोग - ऊँ अस्य श्री गायत्रीकवचस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दः भूः बीजम् - भुवः शक्तिः स्वः कीलकम् गायत्री प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः ।

ध्यानम् –

मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रोक्षणै-
र्युक्तिामिन्दुनिबद्धरत्नमुकुढां तत्वार्थवर्णात्मिकाम्।
गायत्रीं वरदाभयाड.कुशकशाः शुभ्रं कपालं गुणं -
शडंख चक्रमथारोवन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे।।
ऊँ गायत्री पूर्वतः पातु सावित्री पातु दक्षिणे।
ब्रह्मसन्ध्या तु मे पश्चाटुत्तरायां सरस्वती।।1।।
पार्वती मे दिशं रक्षेत्पावकीं जलशायिनी।
यातुधानी दिशं रक्षेद् यातुधानभयड.करी।।2।।
पावमानीं दिशं रक्षेत्पवभाविलासिनी।
दिशं रौद्रीं च मे पातु रूद्राणी रूद्ररूपिणी ।।3।।
ऊर्ध्वं ब्रह्माणि मे रक्षेदधस्तद्वैष्णवी तथा।
एवं दश दिशो रक्षेत्सवाड.गं भुवनेश्वरी।।4।।
तत्पदं पातु मे पादौ जडे.ध ये सवितुः पदम्।
देवस्य मे तद्धृष्यं धीमहीति च गल्लयोः
धियः पदं च मे नेत्रे यः पदं मे ललाटकम् ।।6।।

नः पातु मे पदं मूर्ध्नि शिखायां मे प्रचोदयात् ।
तत्पदं पातु मूर्धानं सकारः पातु भालकम् ।।7।।
चक्षुषी तु विकारार्णस्तुकारस्तु कपोलयोः ।
नासापुटं वकारार्णो रेकारस्तु मुखे तथा ।।8।।
णिकार ऊर्ध्वभोष्ठं तु यकारस्वधरोष्ठकम् ।
आस्यमध्ये भकारार्णो गोकार बुके तथा ।।9।।
देकारः कण्डदेशे तु वकारः स्कन्धदेशकम्
स्यकारो दक्षिर्ण हस्तं धोकरो वामहस्तकम् ।।10।।
मकारो हृदयं रक्षेद्धिकारो उदरो तथा।
धिकारो नाभिदेशे तु योकारस्तु कटिं तथा ।।11।।
गुहचं रक्षतु योकार ऊरू द्वौ नः पदाक्षरम्।
प्रकारो जानुनी रक्षेच्चोकारो जड.घदेशकम् ।।12।।
दकारं गुल्फदेशे तु यकारः पदयुग्मकम्।।
तकारव्यन्जनं चैव सर्बाडगं मे सदावतु ।।13।।
इदं तु कवचं दिव्यं बाधाशत विनाशनम्।
चतुः ण्टि कलाविद्यादायकं मोक्षकारकम् ।।14।।
मुच्यते सर्वपापेभ्यः परं ब्रह्माधिगच्दति ।।15।।

इति श्रीमद्देवीभागवते एक0 तृतीय- अध्याय: ।।

मध्याह्न संध्या

मध्याह्न सन्ध्या प्रातः सन्ध्या के अनुसार ही होगी, प्राणायाम सूर्यार्घदान सब पूर्ववत् होगा

विनियोग - ऊँ आप: पुनन्त्विति ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्द: आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोग:

मध्याह्नकालीन गायत्री का ध्यान निम्नलिखित के अनुसार करें -

ऊँ मध्याह्ने विष्णुरूपां च ताक्ष्र्यस्थां पीतवाससाम् ।
युवतीं च यजुर्वेदां सूर्यमण्डलसंस्थिताम् ।।

तत् पश्चात् गायत्री जप इत्यादि पूर्ववत् करें, कवच का पाठ करें,

मध्याह्न में तर्पण नहीं करें ।

1. अन्य सभी कर्म प्रातःकाल की भाँति होगें ।

सायं संध्या

सायं कालीन संध्या सूर्य के रहते उत्तराभिमुख होकर करें भगवान् सूर्य को पश्चिम मुख होकर अर्घा दें।

विनियोग –

ऊँ अग्निश्च मेति रूद्र ऋषि: प्रकृतिश्छन्दोऽग्निर्देवता अपामुपस्पर्शने विनियोग: ।

सायंकाल शिव रूपा गायत्री का ध्यान करें -

ऊँ सायह्ने शिवरूपा च वृद्धां वृषभवाहिनीम्।
सूर्यमण्डलमध्यस्थां सामवेदसमायुताम्।।

जप करें कवच का पाठ करें विसर्जन आदि पूर्ववत्।।

अशौच - आदि में संध्योपाना की विधि महर्षि पुलस्त्यने जननाशैच एवं मरणाशौच में संध्योपासन की अबाधित आवश्यकता बतलायी है। प्रक्रिया भिन्न हो जाती है।

''सूतके मानसीं संध्यां कुर्याद् वै सुप्रयत्नतः''

सूतकादि में मानसी संध्या करनी चाहिये यह मत स्मृतिसमुच्चय का है । इस में सूर्य का जल से अर्धा और उपस्थान नहीं होता है यहॉ दस बार गायत्री का मानसिक जप आवश्यक है, इतने से ही संध्योत्पासन का फल प्राप्त हो जाता है। आपत्ति के समय या रागावस्था में, रास्ते में और अशक्त होने पर भी मानसीं संध्या अवश्य करनी चाहिए। अर्थात किसी भी स्थिति में संध्या का त्याग नहीं करना चाहिए।

अभ्यास प्रश्न – 3

1.संध्या कितने प्रकार के होते है ?

2.अघमर्षण करने से क्या होता है?

3.संध्या के पात्रों के नाम लिखिये?

1.4.1 गायत्री महात्म्य

गायत्री मन्त्र चारों वेद में आता है श्रीमद्देवीभागवत् एवं अन्यपुराणों में भी गायत्री का माहात्म्य मिलता है श्रीमद्देवी भागवत् के माहात्म्य में कहा गया है,

न गायत्रयाः परो धर्मो न गायत्रयाः परं तपः।

न गायत्रयाः समो देवो न गायत्रयाः परो मनुः।। दे0मा0अ0पूशो0 94

गातारं त्रायते यस्माद गायत्री तने सोच्यते ।। 95

भाषा - गायत्री से बड़कर कोई धर्म नहीं गायत्री से बड़कर कोई तप नहीं गायत्री के समान कोई देवता नहीं गायत्री से परे कोई ऋषि नहीं।

गाने वाले की या जपने वाले की जो रक्षा करें उसे गायत्री कहते है।

1.5 सारांश -

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आपने जाना कि शास्त्रविधि से गृहस्थ के लिए नित्यकर्म का निरूपण किया जाता है, **'जायमानो वै ब्रह्मणोस्त्रिभिर्ऋणवा जायते'** के अनुसार मनुष्य देवऋण, मनुष्य ऋण, पितृऋण से युक्त होकर जन्म लेता है। इन ऋणों से मुक्ति मिले इसलिये नित्यकर्म का विधान किया जाता है। नित्यकर्म में मुख्य छः कर्म बताये गये है - मनुष्य को शारीरिक शुद्धि के लिए स्नान, संध्या, जप, देवपूजन, बलिवैश्वदेव और अतिथि सत्कार - ये छः कर्म प्रतिदिन करने चाहिए। हमारी दिनचर्या नियमित है। प्रातः काल जागरण से लेकर शयन तक की समस्त क्रियाओं के लिए शास्त्रकारों ने अपने दीर्घकालीन अनुभव से ऐसे नियमों का निर्माण किया है जिनका अनुसरण करके मनुष्य अपने जीवन को सफल कर सकता है। नियमित क्रियाओं के ठीक रहने पर ही स्वास्थ एवं मन स्वस्थ रहता है। नित्यकर्म में मनुष्य क्या - क्या कर्म करें जिससे कि उसका सर्वतोमुखी विकास हो, शास्त्रीय दृष्ट्या इस इकाई में आपके अवलोकनार्थ व ज्ञानार्थ प्रस्तुत है।

1.6 पारभाषिक शब्दावली

बलिवैश्वदेव - चावल अनाज तथा घी आदि में से कुछ अंश का सब जीवों कों उपहार या दान करना।

दीर्घकालीन - लम्बें समय तक।

आचार - आचरण ।

ब्राह्ममूहूर्त - सूर्योदय से पूर्व का समय (सुबह 4:00 से सूर्योदय से पूर्व तक का समय) ।

शौच – पवित्रता।

दन्तधावन - दातून करना।

मार्जन - स्वच्छ करना।

अघमर्षण - पापों का नाश करना।

उपस्थान - अभिवादन, नमस्कार।

अशौच – अशुद्ध ।

1.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न – 1

1. प्रत्येक मनुष्य देवऋण, मनुष्यऋण , पितृ ऋण से युक्त होता है।

2. शय्या से उठने के पश्चात् सर्व प्रथम दोनों हाथों की हथेलियों को देखें और निम्न मन्त्र को बोलना चाहिये -

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये तु सरस्वती ।
करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम् ।।

3. प्रातः कालीन भगवत् स्मरण से दिन अच्छा व्यतीत होता है तथा धर्म की वृद्धि होती है

4. ब्राह्ममुहूर्त सूर्योदय से चार घड़ी (डेढ़ घंटे) पूर्व को कहते है।

अभ्यास प्रश्न – 2

1. मुख की शुद्धि तथा मन्त्र की शुद्धि के लिये दातून करने की आवश्यकता है।
2. स्नान के सात प्रकार होते है ।

अभ्यास प्रश्न – 3

1.संध्या प्रातःकाल मध्याह्न काल और सायंकाल तीन प्रकार की होती है ।

2.अघमर्षण करने से पापों का नाश होता है।

3. संध्या के पात्रों के नाम है-

1. लोटा - जल के लिए
2. पात्र चन्दन पुष्पादि के लिए
3. पन्चपात्र
4. आचमनी
5. अर्धा
6. थाली जल गिराने के लिए
7. आसन
8. गोमुखी
9. माला

1.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

ग्रन्थ नाम	प्रकाशन
नित्यकर्म पूजाप्रकाश	गीताप्रेस गोरखपुर
श्रीमद्देवी भागवत	गीताप्रेस गोरखपुर

1.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1- प्रातः कालीन भगवत् स्मरण के चार श्लोकों का अर्थ सहित वर्णन कीजिये?

2- स्नान की आवश्यकता के विषय में लिखिये?

3. संध्या से आप क्या समझते है। स्पष्ट कीजिये।

4. त्रिकाल संध्या की विधि लिखिये।

5. नित्यकर्म की उपयोगिता बतलाइये।

इकाई – 2 पूजन क्रम विधि

इकाई की संरचना

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 पूजन क्रम

2.3.1 तिलक, दीप पूजन

2.3.2 शंख, घंटा पूजन, स्वस्तिवाचन तथा देवताओं के पृथक-पृथक पुष्पांजलि

2.3.3 संकल्प का महत्व

2.4 सारांश

2.5 शब्दावली

2.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

2.7 संन्दर्भ ग्रन्थ सूची

2.8 निबन्धात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना -

प्रस्तुत इकाई BAKA(N)-102 प्रथम खण्ड के द्वितीय इकाई से सम्बन्धित है। इसके पूर्व की इकाईयों में आप नित्यकर्म को समझ चुके है। इस इकाई में आप देवपूजन के अन्तर्गत पूजन क्रम का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

कर्मकाण्डोक्त पूजन में उत्तरोत्तर क्या–क्या क्रम होता है। किसके पश्चात् क्या करना चाहिये आदि का ज्ञान तथा पूजन सम्बन्धित विभिन्न तत्वों का ज्ञान इस इकाई में वर्णित किया जा रहा है। पूजन के मुख्य रूप से तीन प्रकार है – पंचोपचार, दशोपचार एवं षोडशोपचार। पूजन क्रम क्या – क्या है तथा उसकी विधि क्या है, इस इकाई में आपके अवलोकनार्थ प्रस्तुत है।

2.2 उद्देश्य -

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप समझ सकते है कि –

- पूजन क्या है।
- देवपूजन में आरम्भिक पूजन क्या है।
- आरम्भिक पूजन के अन्तर्गत क्या - क्या करते है।
- देवताओं का पूजन क्रम क्या है।
- तिलक, दीपप्रज्वलन, दीप महत्व आदि का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

2.3 पूजन क्रम

पूजन के लिये सर्वप्रथम शुभ मुहूर्त्त का चयन करते है। उसके पश्चात् पूजन के लिये सम्बन्धित सामग्रीयों को एकत्र कर पवित्र स्थान पर आसन आदि बिछाकर वहॉ बैठते है तथा पूजन सामग्रीयों को सुव्यवस्थित करते है।

आसन पर बैठकर मंत्रो के द्वारा पूजन सामग्रियों को पवित्र करते है। तत्पश्चात् पूजन क्रम को समझ लिजिये –

जिस देवता की पूजन करनी हो, उसका मंत्र द्वारा आवाहन करते है, फिर पश्चात् का क्रम इस प्रकार है -

आवाहन

आसन

पाद्य

अर्घ्य

आचमन

स्नान

पंचामृत स्नान

शुद्धोदकस्नान शुद्ध जल से स्नान

वस्त्र, उपवस्त्र

चंदन

यज्ञोपवीत (जनेऊ)

पुष्प

दुर्वा गणेश जी के पूजन में

तुलसी विष्णु जी के पूजन में तुलसी

शमी शमीपत्र

अक्षत शिव में श्वेत अक्षत, देवी में रक्त (लाल) अक्षत, अन्य में पीत (पीला) अक्षत

सुगंधिद्रव्य इत्र

धूप

दीप

नैवेद्य प्रसाद

ऋतुफल

ताम्बूल पान

दक्षिणा

आरती

पुष्पाञ्जलि

मंत्रपुष्पांजलि

प्रार्थना

इस प्रकार क्रमानुसार पूजन करते हैं।

आवाहन का मन्त्र -

> **आगच्छन्तु सुरश्रेष्ठा भवन्त्वत्र स्थिरा: समे।**
> **यावत् पूजां करिष्यामि तावत् तिष्ठन्तु संनिधौ।।**

मन्त्र पढ़ते हुये जिनकी पूजा कर रहे हो, उनका ध्यानपूर्वक आवाहन करना चाहिये। जिस देवता की

पूजा कर रहे हो, उसका नाम लेकर पुष्प अर्पित करना चाहिय । यथा गणेश जी की पूजा कर रहे हो तो – गणपतिमावाहयामि, स्थापयामि कहते हुए आवहनार्थे पुष्पं समर्पयामि कहना चाहिए। इसी प्रकार जो कर्म कर रहे हो, उसका नाम लेते हुए उच्चारण करना चाहिए।

आसन का मन्त्र –

अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम्।
कार्तस्वरमयं दिव्यमासनं परिगृह्यताम्।।

पाद्य का मन्त्र –

गंगादिसर्वतीर्थेभ्य आनीतं तोयमुत्तमम्।
पाद्यार्थं सम्प्रदास्यामि गृह्णनतु परमेश्वरा:।।

अर्घ्य का मन्त्र –

गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया।
गृह्णन्त्वर्घ्यं महादेवा: प्रसन्नाश्च भवन्तु मे।।

आचमन –

कर्पूरेण सुगन्धेन वासितं स्वादु शीतलम्।
तोयमाचमनीयार्थं गृह्णन्तु परमेश्वरा:।।

स्नान –

मन्दाकिन्या: समानीतै:कर्पूरागुरूवासितै:।
स्नानं कुर्वन्तु देवेशा जलैरेभि: सुगन्धिभि:।।

पंचामृत स्नान –

पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम्।
पञ्चामृतं मयाऽऽनीतंस्नानार्थं प्रतिगृह्यातम्।।

शुद्धोद्धक स्नान –

मलयाचलसम्भूतचन्दनेन विमिश्रतम्।
इदं गन्धोदकं स्नानं कुकुमाक्तं नु गृह्यताम्।।

वस्त्र – उपवस्त्र का मन्त्र –

शीतवातोष्णसंत्राणे लोकलज्जानिवारणे।
देहालंकरणे वस्त्रे भवदभ्यो वाससी शुभे।।

यज्ञोपवीत –

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृह्णन्तु परमेश्वरा:।।

चन्दन –

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढयं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

पुष्प, पुष्पमाला –

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि भक्तित:।
मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

धूप –

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढयो गन्ध उत्तम:।
आघ्रेय: सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यातम्।।

दीप –

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निा योजितं मया।
दीपं गृह्णन्तु देवेशास्त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

नैवेद्य -

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

ऋतुफल –

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ताम्बूल –

पूगीफलं महद् दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् ।
एलालवंगसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृहय्ताम्।।

दक्षिणा –

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसो :।
अनन्तपुण्यफलदमत: शान्तिं प्रयच्छ मे।।

आरती –

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मां वरदो भव।।

पुष्पांजलि –

श्रद्धया सिक्तया भक्तया हार्दप्रेम्णा समर्पित:।
मन्त्रपुष्पांजलिश्चायं कृपया प्रतिगृह्यताम्।।

प्रार्थना –

नमोऽस्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरूबाहवे ।
सहस्रनाम्ने पुरूषाय शाश्वते सहस्रकोटीयुगधारिणे नम: ।।

उपर्युक्त सभी मन्त्र लौकिक हैं। इसी प्रकार वैदिक मन्त्रों से भी पूजन किया जाता है।

2.3.1 तिलक, दीप पूजन

तिलक के सम्बन्ध में कई लोगों के मन में यह विचार आता है कि तिलक क्यों लगाया जाता है। किस प्रकार लगाना चाहिये आदि ... इत्यादि। भारतीय सनातन परम्परा में ऋषियों ने तिलक को अत्यन्त महत्वपूर्ण बताया है। तिलक लगाने से आत्मशान्ति, श्रीवृद्धि, पवित्रीकरण, पापनाशक, आपदा हरण, तथा सर्वथा लक्ष्मी का साथ होता है। चित्त सदैव स्थिर रहता है।

तिलक धारण का लौकिक मन्त्र –

चन्दनस्य महत्पुण्यं पवित्रं पापनाशनम्।
आपदं हरते नित्यं लक्ष्मी वसति सर्वदा ॥

वैदिक मन्त्र -

सुचक्षाऽहमक्षीभ्याम् भूयास गूँ सुवर्चामुखेन सुश्रुतकर्णाभ्याम् भूयासम् ॥

तिलक धारण महत्व -

स्नानं दानं तपो होमो देवता पितृकर्म्म च।
तत्सर्वं निष्फलं याति ललाटे तिलकं विना ॥

यजमान तिलक -

चन्दनस्य महत्पुण्यं पवित्रं पापनाशनम्।
आपदं हरते नित्यं लक्ष्मी वसति सर्वदा ॥

स्नान, होम, देव, पितृकर्म, दान, एवं तपस्यादि कर्म बिना तिलक के निष्फल हो जाते है। इसलिये उपासक को चाहिए पूजनादि से पहले तिलक धारण अवश्य करें।

यजमान पत्नी-बालक-बालिका-विधवा को तिलक के मन्त्र निम्नलिखित हैं -

यजमान तिलकः भद्रमस्तु शिवंचास्तु महालक्ष्मीः प्रसीदतु

रक्षन्तु त्वां सदा देवाः सम्पदः सन्तु सर्वदा सपत्नादुर्ग्रहापस दुष्टसत्वाद्युपद्रवाः तमाल पत्रमालोक्य निष्प्रभाव भवन्तु ते ॥

आयुष्मान भव कहकर आर्शीवाद दें।

यजमान पत्नी तिलक:

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनो व्यात्तम्। इष्णन्निषाण मुम्मऽइषाण। आयुष्मती सौभाग्यवती भव।

बालक तिलक - यावद् गंगा कुरूक्षेत्रे यावत्तिष्ठति मेदिनी।
यावद् राम कथा लोके तावत जीवतु बालकः ॥

बालिका- तिलक ॐ अम्बे अम्बिकेऽऽम्बालिके नमानयति कश्चन।
ससत्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥

विधवा तिलक - ॐ तद्विष्णोः परमं पदœ सदा पश्चन्ति सूरयः दिंवीव चक्षुराततम् ॥

दीप प्रज्वलन एवं दर्शन के कई मन्त्र है -

मन्त्र- चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।

श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्रिरजायत ।।

शिव पूजन में दीप का मन्त्र –

ऊँ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान वृणक्तु विश्वत: ।

अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्नि धेहि तम् ।।

दीपक पूजन का मन्त्र –

त्वं ज्योतिस्त्वं रविश्चन्द्रो विद्युदग्निश्च तारका:।

सर्वेषां ज्योतिषां ज्योतिर्दीपावल्यै नमो नम:।।

दीप ज्योतिषे नमः।

आचमन किसी कर्म के प्रारम्भ में आचमन की महती आवश्यक होती है। आन्तरिक पवित्रता के लिये भी आचमन आवश्यक है। यजमान पूर्व दिशा की ओर मुख करके आसन में बैंठें निम्नलिखित तीन मन्त्रों से तीन बार जल को पीयें (आचमन करें)

ऊँ केशवाय नमः। ऊँ नारायणाय नमः। ऊँ माधवाय नमः

तत्पश्चात् हाथ को प्रक्षालन के मन्त्र-

गोविन्दाय नमो नमः हस्त प्रक्षालनम्।

बायें हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ की तीन अँगुलियों से अपने ऊपर मन्त्र पढते हुए जल के छीटें दें।

मन्त्र

ऊँ पवित्रेस्थो वैष्ण्व्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।

ऊँ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्धां गतोडपिवा।

यः स्मरेत् पुण्डीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुद्धिः।।

जल छिडकते हुए तीन बार बोलें - ऊँ पुण्डरी काक्षः पुनातु

शिखाबन्धनम्:- शिक्षा बन्धन करें या शिखा में हाथ लगायें मन्त्र

ऊँ चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः सन्विते।

तिष्ठ देवि शिखाबद्धे तेजोवृद्धि कुरूष्व में।।

अभ्यास प्रश्न -1

1. आचमन क्यों किया जाता है?
2. पवित्र होने हेतु जल किस हाथ में लिया जाता है?

2.3.2 शंख, घंटा पूजन, स्वस्तिवाचन तथा देवताओं के पृथक-पृथक पुष्पांजलि

शंख पूजन – शंख में दो दर्भ या दूब, तुलसी और फूल डालकर 'ओम' उच्चारण कर उसे सुवासित जल से भरें। इस जल को गायत्री मन्त्र से अभिमन्त्रित कर दे। फिर निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर शंख में तीर्थों का आवाहन करें –

पृथिव्यां यानि तीर्थानि स्थावराणि चराणि च।
तानि तीर्थानि शंखेऽस्मिन् विशन्तु ब्रह्मशासनात्॥

पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर शंख को प्रणाम करें –

त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृत: करे।
निर्मित: सर्वदैवश्च पाञ्जन्य नमोऽस्तुते॥

शंख मन्त्र –

ऊँ शंख चन्द्रार्कदैवत्यं वरूणं चाधिदैवतम्।
पृष्ठे प्रजापति विधादग्रे गंगा सरस्वती॥
त्रैलोक्ये यानि ती र्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया।
शंखे तिष्ठन्ति वै नित्यं तस्माच्छंखं प्रपूजयते्॥
शंख में गन्धाक्षत पुष्प चड़ाये और बोले-भू भुर्वःस्वः-
शंखस्ध देवतायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि-समपयामि॥

घन्टा पूजन मन्त्र –

ऊँ आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं च रक्षसाम्।
कुरू घण्टे वरं नादं देवतास्थानसंन्निधौ॥

भूर्भुव: स्वः घण्टस्थ देवताय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि सर्मपयामि तत्पश्चात् शंख घन्टा बजायें।

पुष्पाक्षत भगवान में चड़ये पुनः पुष्पहाथ में ले निम्न मन्त्रों से भगवान में चढायें।

हाथ में पुष्प-अक्षत लें स्वस्तिवाचन का पाठ करें। सभी शूभ कार्यो के प्रारम्भ में स्वस्ति वाचन का पाठ करना अनिवार्य होता है।

स्वस्तिवाचन – हरिः ऊँ स्वस्तिनऽइन्द्रो व्वृद्धश्रवाः स्वतिनः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यो अरिष्ठनेमिःस्वस्ति नो वृहस्पतिद्धधातु ।।1।। पृषदश्वा मरूतः पृश्निमातः शुभँव्यावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवाऽअवसागमन्निह ।।2।।

भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम् देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राःस्थिरैरङगस्तुष्टुवा सस्तनूभिर्व्व्यशैमहि देवहितं जदायुः ।3। शतोमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम् पुत्रासो यत्र पितरो भवन्तिमानो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः ।।4।। अदितिद्यौरदितिरन्तक्षमदिति माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पञ्चजना अदितिजामदितिर्जनित्वम् ।।5।। द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष शान्तिः पृधिनी शान्तिरायः शान्ति रोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शन्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व शान्तिः शान्तिदेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ।।7।। यतो यत: समीहसे ततो नो अभयंकुरू । शं नः कुरू प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।।8।। गणानां त्वा गणपति हवामहे प्प्रियाणां त्वा प्प्रियपति हवामहे निधीनां त्वा निधिपति हवामहे व्वसो मम । आहमजानि गर्भधमा त्त्वमजासि गर्भधम् ।।9।। अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् । सुशान्तिर्भवतु ।। श्रीमन्महागणधिपतये नमः। लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। उमामहेश्वराभ्यां नमः। वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः । शचीपुरन्दराभ्यां नमः । मातापितृचरणकमलेभ्यो नमः । इष्टदेवताभ्यो नमः कुलदेवताभ्यो नमः । ग्रामदेवताभ्यो नमः। वास्तुदेवताभ्यो नमः। स्थानदेवताभ्यो नमः। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। सिद्धिबुद्धि सहिताय श्री मन्महागणाधिपतये नमः ।।

पुनः पुष्प लेकर पुनः पुष्प लेकर गणेश जी का स्मरण करें ।

ऊँ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षोभालचन्द्रो गजाननः ।
दृादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ।।
विधारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ।।
अभीप्सितार्थसिद्धयर्थं पूजितो यः सुराऽसुरैः ।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ।
सर्वमंगलमंग्ल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।

शरण्ये त्रयम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ॥
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममंगलम् ।
येषां हृदिस्थो भगवान् मंगलायतनं हरिः ॥
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव ।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽघ्रियुगं स्मरामि ॥
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।
यत्र यागेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ।
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥
स्मृतेः सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते ।
पुरूषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम् ।
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः ।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मोशानजनार्दनाः ॥
यत्र योगेश्वर: कृष्ण यत्र पार्थो धनुर्धर: ।
तत्र श्रीर्विजयोभूतिध्रुर्वानीतिमर्तिमम् ॥

चन्दन से भूमि में त्रिकोण बनायें उसके अक्षर उलय त्रिकोण बनायें यह षट्कोण बन जायेगा इसके बाहर गोल घेरा बनायें और इन वाक्यों की संस्कृत में उच्चारण करें-भूमौ चन्दनेन त्रिकोणं षट्कोण वर्तुलं वा विलिख्य उसके ऊपर चन्दन से ही शंख चक्र की आकृति की कल्पना मात्र करें या बनाये। इस में पुष्प रखें (संस्कृत तदुपरि आसनं) पुष्प के उपर अर्धा रखें (तदुपरि अर्धपात्रं) अर्ध में कुशा की पवित्री रखें और मन्त्र बोले-

ऊँ पवित्रे स्थो वैष्णव्यो सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यीच्छद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः॥

तत्पश्चात् अर्धा में जल चड़ाये और मन्त्र बोलें-

ऊँ शन्नो देवीरभीष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्त्ररन्तु नः॥

तीर्थों का आवाह्नन का मन्त्र -

गंगा च यमुना चैव गोदावरि सरस्वती ।
नर्मदा सिन्धु कावेरि जलेस्मिन्सन्निधि कुरू ॥

अर्धा में यव (जौ) गन्धाक्षत पुष्प छोड़े और कहें-

यव, जल, गन्धाष्ठत पुष्पादिं तूष्णी निक्षिप्त अर्धपांत्र सुसम्पन्नं अस्तु सुसम्पन्नम्-

तेन जलेन आत्मानं सर्वान सूर्याध्य दान सामाग्रीं च सम्प्रोक्ष्य।

एक पात्र (थाली) में

सर्वप्रथम सूर्य भगवान् को अर्धा दें, पुष्प से ध्यान करें-

ध्यानम् - ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्त्ती नारायणः सरसिजासनसंनिविष्टः।

केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटी हारी हिरण्मयवपुर्धृतशंखचक्रः ।।

भूर्भुवः स्वः श्री भास्कर देवाय नमः ध्यानं समर्पयामि

पुष्प चड़ा दें। अक्षत घुमा कर पात्र में चढ़ायें।

भू0 श्री भा0 नमः अक्षतैः आवाहनं समर्पयामि

एक पुष्प चड़ायें भू0 भा0 आसनोपरि पुष्पं समर्पयामि

एक चम्मच जल चड़ायें भू0 भा0 पाद्यार्थे जलं समर्पयामि

जो अर्धां आपने स्थापित किया उसी से सूर्य को अर्घा दें।

मन्त्र- एहि सहस्रांशो तेजोरशि जगत्पते।

अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घं दिवाकर ।।

नमोऽतु सूर्याय नमोडस्तु भावने।

भू0 भा0 अर्धां समर्पयामि पुनः पात्र में गन्धाक्षत चड़ाये और बोलों भू0 भा0 गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि मन्त्र-

ऊँ आ कृष्णेन रजसा व्वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यन्च।

हिरण्ण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ।।

सूर्य पूजन के अनन्तर भूतोपसादन करें।

बाये हाथ में अक्षत और पीली सरसों लेकर चारों दिशाओं की और छोड़े-

मन्त्र-

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्।

सर्वेषामीवसेधेन ब्रह्मकर्म (पूजाकर्म) समारथे।।

पाखण्डकारिणो भूता भूमौ ये चान्तरिक्षगाः।

दिवि लोके स्थिता ये ज ते नश्यन्तु विशाज्ञया।

निग्च्छितां च भूतानां वर्त्म दधात्स्ववामतः।।

पुनः पूर्वोक्त रीति से अर्धा स्थापन करें, अर्धा स्थापन के पश्चात् कहें ”अर्धपांत्र सुसम्पन्नम्-अस्तु

सुसम्पन्नम् गतेन जलेन आत्मानं सर्वान् पेजन सामाग्रीं च सम्प्रोक्ष्य पुष्प लेकर हाथ जोड़े भैरव जी का स्मरण करें-

मन्त्र - अति तीक्ष्ण महा काया कल्पान्त दहनोपम ।

भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातु महर्सि ।।

अभ्यास प्रश्न-2

1. स्वस्तिवाचन से पूर्व क्या किया जाता है ?
2. सर्वमंगलमंगल्ये ....।

   .... नमोऽस्तुते।।

इस श्लोक को पूरा कीजिये?

3. भूतोत्साधन किस वस्तु से किया जाता है?

2.3.3 संकल्प का महत्व

संकल्प - पूजनादि में संकल्प की महती आवश्यकता है,

संकल्पेन बिना कर्म यत्किन्चित्कुरूतेनरः ।

फलं चाप्यल्पकं तस्य धर्मस्याद्धिक्षयोभवते ।।

मनुष्य संकल्प के बिना जो कुछ भी कर्म करता है उसका फल बहुत थोड़ा होता है। उसके आधे पुण्य का फल क्षय हो जाता है। (भविष्यपुराण)

संकल्पं विधितत्कुर्यात् स्नानन्दान-व्रतादि के स्नान, दान, व्रत आदि में विविधवत् संकल्प करना चाहिए।

संकल्प भूलः कामो वै यज्ञाः संकल्पसम्भवः।

व्रतानि यमधर्माश्च सर्वे संकल्पजाउस्भताः।।

किसी काम को करने की इच्छा का मूल संकल्प है।

यज्ञादि संकल्प से ही होते है। व्रतादि सभी धर्मों का आधार संकल्प ही कहा गया है।

संकल्प करने से मास, पक्ष, तिथी, वार देश काल का भी सभ्यक ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

हाथ में पुष्प अक्षत कुशाकी पवित्री जल लें और संकल्प पढ़े –

ॐ विष्णुर्विष्णुविष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरूषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽपि द्वितीय परार्द्धे श्रीश्वेतवाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टविंशतितमें कलियुगे कलिप्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरत खण्डे आर्यावर्तैकदेशे, अमुकक्षेत्ते (जिस स्थान में आप बैठै है) बौद्धावतारे विक्रमशकें अमुकनाम संवत्सरे श्रीसूर्ये अमुकायने अमुकऋतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ

अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे एवं ग्रह गुणगण विशेषण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुक शर्माऽहं ;वर्माऽहं गुप्तोऽहंद्ध मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य मम इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सर्वपापक्षयपूर्वक दीर्घायुः विपुल धन धान्य पुत्र पौत्राद्यनवच्छिन्न सन्ततिवृद्धि स्थिरलक्ष्मी कीर्तिलाभ शत्रुपराजय सदभीष्टसिद्धय़र्थं अमुक पूजन कर्मणः पूर्वांगत्वेन निर्विघ्नता सिद्धयर्थं गणपति पूजनं करिष्ये ।।

अभ्यास प्रश्न- 3

1. संकल्प के बिना कर्म ....जाता है?
2. पवित्री किस वस्तु की होती है?

2.4 सारांश-

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जाना कि पूजा के क्रम में क्या - क्या होता है । आवाहन से लेकर प्रार्थना तक उनका क्रम किस प्रकार है । आचमन से संकल्प तक की क्रिया बोध आपको हो चुका है । आरम्भिक पूजन क्रम में आवाहन , आसन, पाद्य , अर्घ्य , आचमन, स्नान, पंचामृत स्नान, शुद्धोदकस्नान शुद्ध जल से स्नान, वस्त्र, उपवस्त्र , चंदन, यज्ञोपवीत (जनेऊ(, पुष्प, दुर्वा गणेश जी के पूजन में , तुलसी विष्णु जी के पूजन में तुलसी, शमी शमीपत्र, अक्षत शिव में श्वेत अक्षत, देवी में रक्त अक्षत (लाल), अन्य में पीत अक्षत (पीला), सुगंधिद्रव्य इत्र, धूप, दीप, नैवेद्य प्रसाद , ऋतुफल , ताम्बूल पान , दक्षिणा, आरती ,पुष्पाञ्जलि, मंत्रपुष्पांजलि , प्रार्थना आदि है । प्रत्येक पूजन में ये कर्म होते ही होते है । अन्य पूजन में कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन होता है । प्रधान पूजन में एक को प्रधान मानकर उनका पूजन किया जाता है ।

2.5 शब्दावली

प्रसीदतु - प्रसन्न हो ।

हस्त प्रक्षालनम्- हाथ धोना ।

पुण्डरी काक्ष - कमल जैसे नेत्रों वाले ।

मंगलायतन - मंग जैसी आकृति वाले ।

हृदिस्थे- हृदय में स्थित ।

शशिवर्णम्- चन्द्र जैसे वर्ण वाले ।

शुक्लांबर धरम्- श्वेत वस्त्र धारण करने वाले ।

2.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न – 1

1. आचमन आन्तरिक पवित्रता के लिये किया जाता है।
2. पवित्र होने के लिये जल को बॉये हाथ में लिया जाता है।

अभ्यास प्रश्न – 2

1. स्वस्तिवाचन से पूर्व शंख घण्टा का पूजन किया जाता है।
2. सर्वमंगलमंगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
   शरण्ये त्रयम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते।।
3. भूतोत्साधन पिली सरसों से किया जाता है।

अभ्यास प्रश्न – 3

1. संकल्प के बिना कर्म आधा हो जाता है।
2. पवित्री कुशा की होती है?

2.7 संन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कर्मकाण्ड प्रदीप संपादक आचार्य जनार्दन पाण्डेय
2. रूद्रष्टाध्यायी।

2.8 निबन्धात्मक प्रश्न

1. पूजन क्या है ? मन्त्रसहित उसका क्रम लिखिये।
2. आरम्भिक पूजन से आप क्या समझते है ? स्पष्ट कीजिये।
3. स्वस्तिवाचन के मन्त्र लिखिये ।
4. कर्मकाण्ड में पूजन का महत्व पर अपने शब्दों में निबन्ध लिखिये ।

इकाई – 3 गणपति – गौरी एवं षोडशमातृका पूजन

इकाई संरचना

3.1 प्रस्तावना
3.2 उद्देश्य
3.3 गणपति - गौरी पूजन
3.4. षोडशमातृका पूजन
3.5 सारांश
3.6 शब्दावली
3.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
3.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
3.9 निबन्धात्मक प्रश्न

3.1-प्रस्तावना-

प्रस्तुत इकाई BAKA(N)–102 के प्रथम खण्ड की तीसरी इकाई से सम्बन्धित है। इससे पूर्व की इकाईयों में आपने नित्यकर्म एवं आरम्भिक पूजन का अध्ययन कर लिया है। इस इकाई में अब आप गणपति – गौरी एवं षोडशमातृका पूजन का अध्ययन करेंगे।

जैसा कि आप सब जानते हैं कि देवताओं में अग्रगण्य होने के कारण सर्वप्रथम गणेश जी का पूजन किया जाता है। गणेश जी के साथ गौरी का पूजन भी किया जाता है। उसी क्रम में मातृका पूजन होता है, जिसमें षोडशमातृका पूजन होता है।

इस इकाई में आप पूजा के महत्वपूर्ण अंग गणपति – गौरी एवं षोडशमातृकाओं के पूजन की विधि का अध्ययन करेगें।

3.2 उद्देश्य-

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- गणपति पूजन विधि को समझ लेंगे।
- गणपति के साथ गौरी पूजन को भी समझा सकेंगे।
- षोडशमातृका पूजन कैसे होता है, जान लेंगे।
- पूजन में गणपति – गौरी पूजन का महत्व समझा सकेंगे।
- मातृका पूजन में षोडशमातृका पूजन का निरूपण कर सकेंगे।

3.3 गणपति – गौरी पूजन

भारतीय सनातन परम्परा में यह निर्विवाद है कि सभी पूजन कर्मो में सर्वप्रथम गणेश जी की पूजा होती है, साथ में गौरी माता की पूजा भी होती है। पूजन की प्रक्रिया में क्या क्या होता है इसका अध्ययन आप पूर्व के इकाई में कर चुके हैं। प्राचीन काल में पूजन कर्म केवल वैदिक मन्त्रों से किये जाते थे, क्योंकि वह वेदप्रधान युग था। कालांतर में स्थितियॉ बदली, तो अब संस्कृतज्ञों एवं वेदज्ञों की संख्या भी घटती चली गई है। ऐसी परिस्थिति में आचार्यों ने लौकिक मन्त्र का निर्माण कया । इस प्रकार अब लौकिक और वेद मन्त्र से पूजन की जाती है। यहॉ दोनों का समावेश किया जा रहा है। आइए गणपति और गौरी पूजन का अध्ययन करते है –

सर्वप्रथम हाथ में अक्षत लेकर गणपति – गौरी का ध्यान निम्नलिखित मन्त्र से करना चाहिए –

गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारूभक्षणम्।

उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम्।।

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नम:।

नम: प्रकृत्यै भद्रायै नियता: प्रणता: स्म ताम्।।

श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नम: , ध्यानं समर्पयामि।

इसके पश्चात् हाथ में अक्षत पुष्प लेकर आवाहन करना चाहिए। आवाहन के निम्न मन्त्रों का उच्चारण करें –

ऊँ गणानां त्वा गणपति गॅू हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति गॅू हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति गॅू हवामहे व्वसो मम् ।। आहमजानि गर्ब्भधमा त्त्वमजासि गर्ब्धधम्।।

एह्येहि हेरम्ब महेशपुत्र समस्तविघ्नौघविनाशदक्ष।

मांगल्यपूजाप्रथमप्रधान गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते।।

ऊँ भूर्भुव: स्व: सिद्धिबुद्धिसहिताय गणपतये नम:, गणपतिमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च ।

हाथ के अक्षत गणेश जी पर चढ़ा दे । पुन: अक्षत लेकर गणेश जी की दाहिनी ओर गौरी जी का **आवाहन करें** –

ऊँ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन।

ससस्त्यश्वक: सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।।

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शंकरप्रियाम्।

लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्।।

ऊँ भूर्भुव: स्व: गौर्ये नम:, गौरीमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च ।

आवाहन के पश्चात् गणपति और गौरी को स्पर्श करते हुए निम्नलिखित मन्त्र से उनकी प्राण प्रतिष्ठा करनी चाहिए -

प्रतिष्ठा -

ऊँ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ गॅू समिमं दधातु । विश्वे देवास इह मादयन्तामो ३ प्रतिष्ठ ।

अस्यै प्राणा: प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणा: क्षरन्तु च।

अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

गणेशाम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्।।

प्रतिष्ठापूर्वकम् आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि गणेशाम्बिकाभ्यां नम:।

आसन के लिए अक्षत समर्पित करे ।

पश्चात् निम्न मन्त्र से पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, स्नान, पुनराचमनीय करें –

ऊँ देवस्य त्वा सवितु: प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।।

एतानि पाद्यार्घ्याचनमनीयस्नानीयपुनराचमनीययानि समर्पयामि गणेशाम्बिकाभ्यां नम: । इतना

कहकर जल चढ़ा दे।

दुग्ध स्नान –

ॐ पय: पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धा:। पयस्वती: प्रदिश: सन्तु मह्यम्॥

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पय: स्नानार्थमर्पितम्।

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: पय: स्नानं समर्पयामि। दूध से स्नान कराये।

दधिस्नान -

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिन:। सुरभि नो मुखा करत्प्राण आयू गॅं षि तारिषत्॥

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: दधिस्नानं समर्पयामि। दधि से स्नान कराये।

घृत स्नान –

ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिघृते श्रितो घृतम्वस्य धाम। अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्॥

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: घृतस्नानं समर्पयामि। घृत से स्नान कराये।

मधुस्नान –

ॐ मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धव:। माध्वीर्न: सन्त्वोषधी:॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव गॅं रज:। मधु द्यौरस्तु न: पिता॥

पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेज: पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: मधुस्नानं समर्पयामि। मधु से स्नान कराये।

शर्करास्नान –

ॐ अपा गॅं रसमुद्वयस गॅं सूर्ये सन्त गॅं समाहितम्। अपा गॅं रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्॥

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: शर्करास्नानं समर्पयामि। शर्करा से स्नान कराये।

पञ्चामृत स्नान –

ॐ पञ्च नद्य: सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतस:। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।

ॐ पञ्चामृतं मयानीतं पयो दधि घृतं मधु।

शर्करया समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।

ऊँ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि । पञ्चामृत से स्नान कराये ।

गन्धोदक स्नान –

ऊँ अ गूॅं शुना ते अ गूॅं शु: पृच्यतां परूषा परू: । गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युत: ।

मलयाचलसम्भूतचन्दनेन विनि:सृतम् ।

इदं गन्धोधकस्नानं कुंकुमाक्तं च गृह्यताम् ।।

ऊँ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: गन्धोदकस्नानं समर्पयामि । गन्धोदक से स्नान कराये ।

शुद्धोद्धक स्नान –

ऊँ शुद्धवाल: सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विना: । श्येत: श्येताक्षोऽरूणस्ते रूद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपा: पार्जन्या: ।।

गंगा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती ।

नर्मदा सिन्धु कावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।

ऊँ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: शुद्धोद्धकस्नानं समर्पयामि । शुद्धोद्धक स्नान कराये ।

आचनम - शुद्धोद्धकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि । आचमन के लिए जल दे ।

वस्त्र –

ऊँ युवा सुवासा: परिवीत आगात् स उ श्रेयान् भवति जायमान: । तं धीरास: कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो ३ मनसा देवयन्त: ।

शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम् ।

देहालंकरणं वस्त्रमत: शान्तिं प्रयच्छ मे ।।

ऊँ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: वस्त्रं समर्पयामि । वस्त्र समर्पित करे ।

आचमन – वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

उपवस्त्र –

ऊँ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमाऽसदत्स्व: । वासो अग्ने विश्वरूप गूॅं सं व्ययस्व विभावसो

यस्याभावेन शास्त्रोक्तं कर्म किंचिन्न सिध्यति ।

उपवस्त्रं प्रयच्छामि सर्वकर्मोपकारकम् ।।

ऊँ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: उपवस्त्रं समर्पयामि । उपवस्त्रभावे रक्तसूत्र समर्पित करे ।

आचमन - उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

यज्ञोपवीत -

ऊँ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।

आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेज: ।।

यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि ।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् ।।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीत समर्पित करे ।

आचमन - यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

चन्दन –

त्वां गन्धर्वा अखनॅस्त्वामिन्द्रस्त्वां वृहस्पति:। त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत।।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढयं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: चन्दनानुलेपनं समर्पयामि। चन्दन समर्पित करे ।

अक्षत –

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विन्द्र ते हरी

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ता: सुशोभिता:।

मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ।।

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: अक्षतान् समर्पयामि। अक्षत अर्पित करे ।

पुष्पमाला –

ॐ ओषधी: प्रति मोदध्वं पुष्पवती: प्रसूवरी:। अश्वा इव सजित्वरीर्वीरूध: पारयिष्णव:।।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।

मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: पुष्पमालां समर्पयामि। पुष्पमाला समर्पित करे ।

दूर्वा –

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परूष: परूषस्परि ।एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।

दूर्वांकुरान् सुहरितानमृतान् मंगलप्रदान् ।

आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक ।।

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: दूर्वांकुरान् समर्पयामि। दुर्वा समर्पित करे ।

सिन्दूर –

ॐ सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमिय: पतयन्ति यह्वा:।

घृतस्य धारा अरूषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभि: पिन्वमान:।।

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्

शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: सिन्दूरं समर्पयामि। सिन्दूर समर्पित करे ।

अबीर – गुलाल -

ॐ अहिरिव भोगै: पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमान:। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमा गूँ सं परि पातु विश्वत:।

अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम्।
नाना परिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वर ॥

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि। अबीर आदि समर्पित करे ।

सुगन्धित द्रव्य –

ॐ अहिरिव भोगै: पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमान:। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमा गूॅं सं परि पातु विश्वत:।

दिव्यगन्धसमायुक्तं महापरिमलाद्भुतम्।
गन्धद्रव्यमिदं भक्त्या दत्तं वै परिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: सुगन्धितद्रव्यं समर्पयामि। द्रव्य समर्पित करे ।

धूप –

ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्व यं वयं धूर्वाम:। देवानामसि वह्नितम गूॅं सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्॥

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढयो गन्ध उत्तम:।
आघ्रेय: सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: धूपमाघ्रापयामि। धूप दिखाये।

दीप –

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्नि: स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योति : सूर्य: स्वाहा । अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्च: स्वहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्च: स्वाहा। ज्योति: सूर्य: सूर्यो ज्योति: स्वाहा।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निा योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तुते॥

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: दीपं दर्शयामि। दीप दिखाये ।

हस्त प्रक्षालन - ॐ हृीषीकेशाय नम: कहकर हाथ धो ले।

नैवेद्य –

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष गूॅं शीर्ष्णो द्यौ: समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिश: श्रोत्रात्तथा लोकॉं अकल्पयन् ।

ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।

ॐ प्राणाय स्वाहा । ॐ अपानाय स्वाहा । ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा।

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।

आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: नैवेद्यं निवेदयामि। नैवेद्य निवेदित करे ।

नैवद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

ऋतुफल –

ॐ या: फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणी: । वृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुंचन्त्व गूॅं हस: ॥

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।

तेन मे सफलवाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: , ऋतुफलानि समर्पयामि।

फलान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि

उत्तरापोशन - उत्तरापोऽशनार्थे जलं समर्पयामि। गणेशाम्बिकाभ्यां नम:।

करोद्वर्तन -

ॐ अ गूॅं शुना ते अ गूॅं शु: पृच्यतां परूषा परू: । गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युत:।

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम् ।

करोद्ववर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर॥

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: , करोद्वर्तनकं चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूल –

ॐ यत्पुरूषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत । वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्म: शरद्धवि: ॥

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।

एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: , ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ।

दक्षिणा –

ॐ हिरण्यगर्भ: समवर्तताग्रे भूतस्य जात: पतिरेक आसीत् । स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।

अनन्तपुण्यफलदमत: शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: , कृताया: पूजाया: सांगुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि ।

आरती –

ॐ इद गूॅं हवि: प्रजननं मे अस्तु दशवीर गूॅं सर्वगण गूॅं स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि॥ अग्नि: प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त॥

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।

आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: , आरार्तिकं समर्पयामि।

पुष्पांजलि –

ऊँ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् । ते ह नाकं महिमान: सचन्त यत्र पूर्वे साध्या: सन्ति देवा: ।

ऊँ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: , पुष्पांजलिं समर्पयामि ।

प्रदक्षिणा -

ऊँ ये तीर्थाथ्नि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषडिं्गण: । तेषा गूॅ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ।।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे ।।

ऊँ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: , प्रदक्षिणां समर्पयामि ।

विशेषार्घ्य -

ताम्रपात्र में जल, चन्दन, अक्षत, पुष्प , दूर्वा और दक्षिणा रखकर अर्घ्यपात्र को हाथ में लेकर निम्नलिखित मन्त्र पढ़े -

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक ।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात् ।।
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो ।
वरदस्त्वं वरं देहि वांछितं वांछितार्थद ।
अनेन सफलार्घ्येण वरदोऽस्तु सदा मम ।।

ऊँ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: , विशेषार्घ्य समर्पयामि ।

अन्त में हाथ जोड़कर प्रार्थना करे –

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय
गौरीसुताय गणनाथ नमो नमोस्ते ।।
भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय
सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय ।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय
भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमोस्ते ।।
नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय करिरूपाय ते नम:
विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे ।
भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक
त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति ।।
भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति

विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति।
तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव
त्वां वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या ॥
विश्वस्य बीजं परमासि माया
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत् ।
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतु: ॥
ऊँ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: , प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि।
गणेशपूजने कर्म यन्नयूनमधिकं कृतम्।
तेन सर्वेण सर्वात्मा प्रसन्नोऽस्तु सदा मम।
अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयताम् न मम ॥

ऐसा कहकर समस्त पूजन कर्म को गणपति – गौरी को समर्पित कर दे तथा पुन: नमस्कार करना चाहिए।

बोध प्रश्न-

1. समस्त पूजन में प्रथम पूजन होता है ?
   क. विष्णु ख. शिव ग. गणेश घ. ब्रह्मा
2. गजानन का अर्थ है -
   क. घोड़े के समान मुख ख. हाथी के समान मुख ग. ग्राह के समान मुख घ. कोई नहीं
3. गौरी जी का स्थान गणेश जी के होता है -
   क. दायॉ ख. बायॉ ग. सामने घ. पीछे
4. गणेशाम्बिका का अर्थ है -
   क. गणेश ख. गणेश – गौरी ग. गणेश – दुर्गा घ. शिव – गणेश
5. हिरण्यगर्भगर्भस्थं .... विभावसो।
   अनन्तपुण्यफलदमत: शान्तिं प्रयच्छ मे ॥
   क. हेमबीज ख. ताम्बूलं ग. कर्पूरं घ. कोई नहीं

3.3.1 षोडश मातृका पूजनम्

मातृका पूजन पंचांग पूजन का अंग है गणेश पूजन के अनन्तर मातृकाओं का पूजन होता है।
सर्वप्रथम प्रधान संकल्प करें ------

ऊँ विष्णःविष्णुःविष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरूषस्य विष्णो राज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे विक्रमशके बौद्धावतारे

अमुकनामसंवत्सरे श्रीसूये अमुकायने अमुकऋतौ महामांगल्यप्रदमासोत्तमे मासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे एवं ग्रहगुण - विशेषण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकशर्मा सपत्निकोऽहं मम इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सर्वपापक्षयपूर्वक- दीर्घायुर्विपुल - धन-धान्य- पुत्र-पौत्राद्यनवच्छिन्न- सन्ततिवृद्धि-स्थिरलक्ष्मी-कीर्तिलाभ शत्रु पराजय सदभीष्टसिद्ध्यर्थं .... गणेशपूजनं करिष्ये।

षोडश मातृका चक्र

स्थापना -

षोडशमातृकाओं की स्थापना के लिये पूजक दाहिनी ओर पॉच खड़ी पाइयों और पॉच पड़ी पाइयों का चौकोर मण्डल बनायें। इस प्रकार सोलह कोष्ठक बन जायेंगे। पश्चिम से पूर्व की ओर मातृकाओं का आवाहन और स्थापन करें। कोष्ठकों में रक्त चावल, गेहूँ या जौ रख दे। पहले कोष्ठक में गौरी का आवाहन होता है, अतः गौरी के आवाहन के पूर्व गणेश का भी आवाहन पुष्पाक्षतों द्वारा कोष्ठक में करे । इसी प्रकार अन्य कोष्ठकों में भी निम्नांकित मन्त्र पढ़ते हुए आवाहन करे -

आवाहन एवं स्थापन मन्त्र –

ऊँ गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि, स्थापयामि।

ऊँ गौर्ये नमः, गौरीमावाहयामि, स्थापयामि।

ऊँ पद्मायै नमः, पद्मावाहयामि, स्थापयामि।

ऊँ शच्यै नमः, शचीमावाहयामि, स्थापयामि।

ऊँ मेधायै नमः मेधामावाहयामि, स्थापयामि।

ऊँ सावित्र्यै नमः, सावित्रीमावाहयामि, स्थापयामि।

ऊँ विजयायै नमः, विजयामावाहयामि, स्थापयामि।

ऊँ जयायै नमः , जयामावाहयामि, स्थापयामि।

ऊँ देवसेनायै नमः, देवसेनामावाहयामि, स्थापयामि।

ऊँ स्वधायै नमः, स्वधामावाहयामि, स्थापयामि।

ऊँ स्वाहायै नमः, स्वाहामावाहयामि, स्थापयामि।

ऊँ मातृभ्यों नमः, मातृः आवाहयामि, स्थापयामि।

ऊँ लोकमातृभ्यो नमः लोकमातृः आवाहयामि स्थापयामि।

ऊँ धृत्यै नमः, धृतिमावाहयामि, स्थापयामि।

ऊँ पुष्टयै नमः पुष्टिमावाहयामि, स्थापयामि

ॐ तुष्टयै नम: तुष्टिमावाहयामि, स्थापयामि

ॐ आत्मन: कुलदेवतायै नम:, आत्मन: कुलदेवतामावाहयामि, स्थापयामि।

षोडशमातृका - चक्र

आत्मन: कुलदेवता १६	लोकमातर: १२	देवसेना ८	मेधा ४
तुष्टि: १५	मातर: ११	जया ७	शची ३
पुष्टि १४	स्वाहा १०	विजया ६	पद्मा २
धृति १३	स्वधा ९	सावित्री ५	गौरी गणेश १

इस प्रकार षोडशमातृकाओं का आवाहन, स्थापना कर **ॐ मनोर्जूति जुषतामा... 0 ,** मंत्र से अक्षत छोड़ते हुए मातृका मण्डल की प्रतिष्ठा करनी चाहिये। तत्पश्चात् निम्नलिखित नाम मन्त्र से गन्धादि उपचारों द्वारा पूजन करनी चाहिये –

ॐ गणेशसहितगौर्यादिषोडशमातृकाभ्यो नम: ।

विशेष : - मातृकाओं को यज्ञोपवीत नही चढ़ाना चाहिये।

नैवेद्य के साथ - साथ घृत और गुड़ का भी नैवेद्य लगाना चाहिये।

विशेष अर्घ्य दे।

फल का अर्पण - नारियल आदि फल अंजलि में लेकर प्रार्थना करे –

ॐ आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं मातरो मम।
निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरूघ्वं सगणाधिपा:।।

इस तरह प्रार्थना करने के पश्चात् नारियल आदि फल चढ़ाकर हाथ जोड़कर बोले –

गेहे वृद्धिशतानि भवन्तु, उत्तरे कर्मण्यविघ्नमस्तु ।

इसके बाद –

अनया पूजया गणेशसहितगौर्यादिषोडशमातर: प्रीयन्ताम् न मम।

इस वाक्य का उच्चारण कर मण्डल पर अक्षत छोड़कर प्रणाम करना चाहिये -

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः ।।
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता।
गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्याश्च षोडश।।

3.4 सारांश -

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन से आपने जाना कि भारतीय सनातन परम्परा में यह निर्विवाद है कि सभी पूजन कर्मो में सर्वप्रथम गणेश जी की पूजा होती है, साथ में गौरी माता की पूजा भी होती है। पूजन की प्रक्रिया में क्या क्या होता है इसका अध्ययन आप पूर्व के इकाई में कर चुके हैं। प्राचीन काल में पूजन कर्म केवल वैदिक मन्त्रों से किये जाते थे, क्योंकि वह वेदप्रधान युग था। कालांतर में स्थितियॉ बदली, तो अब संस्कृतज्ञों एवं वेदज्ञों की संख्या भी घटती चली गई है। ऐसी परिस्थिति में आचार्यों ने लौकिक मन्त्र का निर्माण किया। इस प्रकार अब लौकिक और वेद मन्त्र से पूजन की जाती है। गणपति – गौरी पूजन के साथ – साथ मातृका पूजन में षोडशमातृका पूजन (जिसमें 16 कोष्ठक बने होते है) का भी ज्ञान प्राप्त किया है।

3.5 शब्दावली-

वेदप्रधान – जहॉ वेद की प्रधानता हो ।

लौकिक - सांसारिक।

वैदिक – वेद से सम्बन्धित ।

विघ्नेश्वर - विघ्न को हरने वाले ईश्वर ।

आवाहयामि – आवाहन करता हॅू

पूजयामि – पूजन करता हॅू

च – और

घृत – घी

मधु – शहद

शर्करा – चीनी

पंचामृत – दूध, दही, घी, शहद, गंगाजल का मिश्रण

3.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. ग
2. ख
3. क
4. ख
5. क

3.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1- कर्मकाण्ड प्रदीप

2- संस्कार दीपक

3. नित्यकर्मपूजाप्रकाश

3.8 निबन्धात्मक प्रश्न

1. गणपति - गौरी पूजन का विस्तार से वर्णन कीजिये।
2. षोडशमातृका से आप क्या समझते है ? स्पष्ट कीजिये।

इकाई – 4 पंचदेव पूजन विधि

इकाई की संरचना

4.1 प्रस्तावना
4.2 उद्देश्य
4.3 पंचदेव पूजन विधि
4.4 सारांश
बोध प्रश्न
4.5 पारिभाषिक शब्दावली
4.6 बोध प्रश्नों के उत्तर
4.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
4.8 निबन्धात्मक प्रश्न

4.1 प्रस्तावनाः-

प्रस्तुत इकाई BAKA(N)–102 के प्रथम खण्ड की चौथी इकाई '**पंचदेवपूजन विधि**' नामक शीर्षक से सम्बन्धित है। इससे पूर्व की इकाई में आपने गणेश – गौरी एवं षोडशमातृका पूजन का अध्ययन कर लिया है । इस इकाई में आप पंचदेवपूजन का अध्ययन करने जा रहे है।

पंचदेव के अन्तर्गत गणेश, विष्णु, शिव, दुर्गा एवं सूर्य भगवान आते है। इनका पूजन किस प्रकार होता है, पूजन विधि क्या है आदि का विवरण प्रस्तुत इकाई में किया जा रहा है।

कर्मकाण्ड में कथित पंचदेव पूजन का ज्ञान होने से आरम्भिक रूप में पूजन का ज्ञान हो जाता है। प्रधान रूप से इन्हीं पॉच देवताओं का पूजन किया जाता है। अत: आपके अध्ययनार्थ व ज्ञानार्थ पंचदेव पूजन विधि दी जा रही है।

4.2 उद्देश्य -

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप -

1. पंचदेव पूजन क्या है, जान लेंगे।
2. पंचदेव पूजन की विधि क्या है, समझा सकेंगे।
3. कर्मकाण्ड में पंचदेव पूजन का क्या महत्व है, इसका निरूपण कर सकेंगे।
4. पंचदेव पूजन की शास्त्रीय रीति को बता सकेंगे।
5. पंचदेव पूजन से होने वाले लाभ बता सकेंगे।

4.3 पंचदेव पूजन विधि

जैसा कि आपको विदित हो चुका है कि सभी पूजन में प्रथम गणेश जी का पूजन होता है। अत: पंचदेव पूजन में भी सर्वप्रथम गणेश जी का ही पूजन करते है। पंच का अर्थ पॉच होता है, इसलिये पंचदेव पूजन में पॉच देवताओं का पूजन होता है। पॉच देवता है – विष्णु, गणेश, शिव, दुर्गा एवं सूर्य पूजन में गणेश जी का स्मरण करते हैं तत्पश्चात् पूजन का निष्काम या सकाम संकल्प किया जाता है। उसी क्रम में घण्टादि पूजन, शंखपूजन एवं कलश पूजन करते है। पश्चात् सभी पंचदेवों का ध्यान करते है। पूजन क्रम एक ही है, अत: उसी क्रम से मन्त्रसहित उनका उपलब्ध सामग्री से पूजन – अर्चन किया जाता है। चूॅकि गणेश पूजन, संकल्पादि से आप पूर्व में परिचित हो चुके है। अत: यहॉ अब कलश पूजन, एवं पंचदेव पूजन को बताया जा रहा है।

उदकुम्भ (कलश) की पूजा - सुवासित जल से भरे हुए उदकुम्भ (कलश) की उदकुम्भाय नम: इस मन्त्र से चन्दन, फूल आदि से पूजा कर इसमें तीर्थों का आवाहन करते हैं –

ऊँ कलशस्य मुखे विष्णु: कण्ठे रूद्र: समाश्रित: ।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणा: स्मृता:।।
कुक्षौ तु सागरा: सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेद: सामवेदो ह्यथर्वण: ।।
अंगैश्च सहिता: सर्वे कलशं तु समाश्रिता:।
अत्र गायत्री सावित्री शान्ति: पुष्टिकरी तथा।।
सर्वे समुद्रा: सरितस्तीर्थानि जलदा नदा:।
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारका:।।
गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरू।।

इसके पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से उदकुम्भ की प्रार्थना करे -

देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवा: सर्वे त्वयि स्थिता:।।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणा: प्रतिष्ठिता:।
शिव: स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापति:।।
आदित्या वसवो रूद्रा विश्वेदेवा: सपैतृका:।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यत: कामफलप्रदा:।।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव।
सांनिध्यं कुरू मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।।

अब पंचदेवों की पूजन के लिये सर्वप्रथम सभी का ध्यान करें -

विष्णु का ध्यान –

उद्यत्कोटिदिवाकराभमनिशं शखं गदां पंकजम्।
चक्र विभ्रतमिन्दिरावसुमतीसंशोभिपार्श्वद्वयम्।।
कोटीरांगदहारकुण्डलधरं पीताम्बरं कौस्तुभै -
दीप्तं विश्वधरं स्ववक्षसि लसच्छ्रीवत्सचिह्नं भजे

अर्थ - उदीयमान करोड़ों सूर्य के समान प्रभातुल्य, अपने चारों हाथों में शंख, गदा, पद्म तथा चक्र धारण किये हुए एवं दोनों भागों में भगवती लक्ष्मी और पृथ्वी देवी से सुशोभित, किरीट, मुकुट, केयूर हार और कुण्डलों से समलंकृत, कौस्तुभमणि तथा पीताम्बर से देदीप्यमान विग्रहयुक्त एवं वक्ष:स्थलपर श्रीवत्सचिह्न धारण किये हुए भगवान विष्णु का मैं निरन्तर स्मरण ध्यान करता हूॅं।

ध्यानार्थे अक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ऊॅं विष्णवे नम:।

शिव का ध्यान -

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारूचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।

चॉदी के पर्वत के समान जिनकी श्वेत कान्ति है, जो सुन्दर चन्द्रमा को आभूषण रूप से धारण करते हैं, रत्नमय अलंकारों से जिनका शरीर उज्जवल है, जिनके हाथों में परशु, मृग, वर और अभय मुद्रा है, जो प्रसन्न हैं, पद्म के आसन पर विराजमान हैं, देवतागण जिनके चारों ओर खड़े होकर स्तुति करते हैं, जो बाघ की खाल पहनते हैं, जो विश्व के आदि जगत् के उत्पत्ति के बीज और समस्त भयों को हरनेवाले हैं, जिनके पॉच मुख और तीन नेत्र हैं, उन महेश्वर का प्रतिदिन ध्यान करें।

ध्यानार्थे अक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ऊॅं शिवाय नम:।

गणेश का ध्यान –

सर्वं स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरं
प्रस्यन्दन्मदगन्धलुब्धमधुपव्यालोलगण्डस्थलम्।
दन्ताघातविदारितारिरूधिरै: सिन्दूरशोभाकरं
वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कामदम्।।

जो नाटे और मोटे शरीरवाले हैं, जिनका गजराज के समान मुख और लम्बा उदर है, जो सुन्दर हैं तथा बहते हुए मद की सुगन्ध के लोभी भौरों के चाटने से जिनका गण्डस्थल चपल हो रहा है, दॉतों की चोट से विदीर्ण हुए शत्रुओं के खून से जो सिन्दूर की सी शोभा धारण करते हैं, कामनाओं के दाता और सिद्धि देनेवाले उन पार्वती के पुत्र गणेश जी की मैं वन्दना करता हूॅं।

ध्यानार्थे अक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ऊॅं गणेशाय नम:।

सूर्य का ध्यान –

रक्ताम्बुजासनमशेषगुणैकसिन्धुं
भानुं समस्तजगतामधिपं भजामि।
पद्मद्वयाभयवरान् दधतं कराब्जै -
र्माणिक्यमौलिमरूणांगरूचिं त्रिनेत्रम्।।

लाल कमल के आसन पर समासीन, सम्पूर्ण गुणों के रत्नाकर, अपने दोनों हाथों में कमल और अभयमुद्रा धारण किये हुए , पद्मराग तथा मुक्ताफल के समान सुशोभित शरीरवाले, अखिल जगत् के स्वामी, तीन नेत्रों से युक्त भगवान सूर्य का मैं ध्यान करता हूँ।

ध्यानार्थे अक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ऊँ सूर्याय नम:।

दुर्गा का ध्यान -

सिंहस्था शशिशेखरा मरकतप्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजै:
शंखं चक्रधनु:शरांश्च दधती नेत्रैस्त्रिभि: शोभिता।
आमुक्ताङ्गदहारकंकणरणत्कांचीरणन्नूपुरा
दुर्गा दुर्गतिहारिणी भवतु नो रत्नोल्लसत्कुण्डला।।

जो सिंह की पीठ पर विराजमान हैं, जिनके मस्तक पर चन्द्रमा का मुकुट है, जो मरकतमणि के समान कान्तिवाली अपनी चार भुजाओं में शंख, चक्र, धनुष और बाण करती हैं, तीन नेत्रों से सुशोभित होती हैं, जिनके भिन्न - भिन्न अंग बॉधे हुए बाजूबंद, हार, कंकण, खनखनाती हुई करधनी और रूनझुन करते हुए नूपुरों से विभूषित हैं तथा जिनके कानों में रत्नजटित कुण्डल झिलमिलाते रहते हैं, वे भगवती दुर्गा हमारी दुर्गति दूर करनेवाली हों।

अब हाथ में फूल लेकर आवाहन के लिये पुष्पांजलि दे।

पुष्पांजलि - ऊँ विष्णुशिवगणेशसूर्यदुर्गाभ्यो नम:, पुष्पांजलिं समर्पयामि ।

यदि पंचदेव की मूर्तियॉ न हों तो अक्षत से इनका आवाहन करे । मन्त्र नीचे दिया जा रहा है । निम्न कोष्ठक के अनुसार देवताओं को स्थापित करे -

विष्णु पंचायतन -

शिव		गणेश
	विष्णु	
देवी		सूर्य

आवाहन का मन्त्र -

आगच्छन्तु सुरश्रेष्ठा भवन्त्वत्र स्थिरा: समे।
यावत् पूजां करिष्यामि तावत् तिष्ठन्तु संनिधौ ।।

ॐ विष्णुशिवगणेशसूर्यदुर्गाभ्यो नम:, आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि।

आसन का मन्त्र –

अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम्।
कार्तस्वरमयं दिव्यमासनं परिगृह्यताम्।।

ॐ विष्णुपंचायतनदेवताभ्यो नम:, आसनार्थे तुलसीदलं समर्पयामि।

पाद्य का मन्त्र –

गंगादिसर्वतीर्थेभ्य आनीतं तोयमुत्तमम्।
पाद्यार्थं सम्प्रदास्यामि गृह्णनतु परमेश्वरा: ।।

ॐ विष्णुपंचायतनदेवताभ्यो नम:, पादयो: पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्य का मन्त्र –

गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया।
गृह्णन्त्वर्घ्यं महादेवा: प्रसन्नाश्च भवन्तु मे।।

ॐ विष्णुपंचायतनदेवताभ्यो नम:, हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमन –

कर्पूरेण सुगन्धेन वासितं स्वादु शीतलम्।
तोयमाचमनीयार्थं गृह्णन्तु परमेश्वरा: ।।

ॐ विष्णुपंचायतनदेवताभ्यो नम:, आचमनीयं जलं समर्पयामि।

स्नान –

मन्दाकिन्या: समानीतै:कर्पूरागुरूवासितै: ।
स्नानं कुर्वन्तु देवेशा जलैरेभि: सुगन्धिभि: ।।

ॐ विष्णुपंचायतनदेवताभ्यो नम:, स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पंचामृत स्नान –

पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम्।
पञ्चामृतं मयाऽऽनीतंस्नानार्थं प्रतिगृह्यातम्।।

ॐ विष्णुपंचायतनदेवताभ्यो नम:, पंचामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोद्धक स्नान –

मलयाचलसम्भूतचन्दनेन विमिश्रतम्।
इदं गन्धोदकं स्नानं कुकुमाक्तं नु गृह्यताम्।।

ॐ विष्णुपंचायतनदेवताभ्यो नम:, शुद्धोद्धकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्र – उपवस्त्र का मन्त्र –

शीतवातोष्णसंत्राणे लोकलज्जानिवारणे।
देहालंकरणे वस्त्रे भवदभ्यो वाससी शुभे ।।

ऊँ विष्णुपंचायतनदेवताभ्यो नम:, वस्त्रमुपवस्त्रं च समर्पयामि।

यज्ञोपवीत –

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृह्णन्तु परमेश्वरा: ।।

ऊँ विष्णुपंचायतनदेवताभ्यो नम:, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

चन्दन –

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढयं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ऊँ विष्णुपंचायतनदेवताभ्यो नम:, चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

पुष्प, पुष्पमाला –

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि भक्तित: ।
मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ऊँ विष्णुपंचायतनदेवताभ्यो नम:, पुष्पाणि समर्पयामि।

तुलसी दल और मंजरी -

तुलसीं हेमरूपां च रत्नरूपां च मंजरीम्।
भवमोक्षप्रदां रम्यामर्पयामि हरिप्रियाम्।।

ऊँ विष्णुपंचायतनदेवताभ्यो नम:, तुलसीदलं मंजरीं च समर्पयामि।

धूप –

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढयो गन्ध उत्तम: ।
आघ्रेय: सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यातम् ।।

ऊँ विष्णुपंचायतनदेवताभ्यो नम:, धूपमाघ्रापयामि।

दीप –

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निा योजितं मया ।
दीपं गृह्णन्तु देवेशास्त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

ऊँ विष्णुपंचायतनदेवताभ्यो नम:, दीपं दर्शयामि।

नैवेद्य -

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

ऊँ विष्णुपंचायतनदेवताभ्यो नम:, नैवेद्यं समर्पयामि ।

ऋतुफल –

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

ॐ विष्णुपंचायतनदेवताभ्यो नम:, ऋतुफलं समर्पयामि।

ताम्बूल –

पूगीफलं महद् दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् ।
एलालवंगसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृहय्ताम्॥

ॐ विष्णुपंचायतनदेवताभ्यो नम:, ताम्बूलं समर्पयामि।

दक्षिणा –

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसो :।
अनन्तपुण्यफलदमत: शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ विष्णुपंचायतनदेवताभ्यो नम:, द्रव्य दक्षिणां च समर्पयामि।

आरती –

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मां वरदो भव॥

ॐ विष्णुपंचायतनदेवताभ्यो नम:, आरार्तिकं समर्पयामि।

पुष्पांजलि –

श्रद्धया सिक्तया भक्तया हार्दप्रेम्णा समर्पित:।
मन्त्रपुष्पांजलिश्चायं कृपया प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ विष्णुपंचायतनदेवताभ्यो नम:, मन्त्रपुष्पांजलि समर्पयामि।

प्रार्थना –

नमोऽस्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरूबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरूषाय शाश्वते सहस्रकोटीयुगधारिणे नम:॥

ॐ विष्णुपंचायतनदेवताभ्यो नम:, प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि ।

अन्य पंचायतनों के नाम मन्त्र

गणेश पंचायतन – ॐ गणेशविष्णुशिवदुर्गासूर्येभ्यो नम: ।

शिव पंचायतन – ॐ शिवविष्णुसूर्यदुर्गागणेशेभ्यो नम: ।

देवी पंचायतन – ॐ दुर्गाविष्णुशिवसूर्यगणेशेभ्यो नम: ।

सूर्य पंचायतन - ॐ सूर्यशिवगणेशदुर्गाविष्णुभयो नम: ।

चरणामृत पान –

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम् ।

विष्णुपादोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते ॥

क्षमा याचना -

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
तस्मात् कारूण्यभावेन रक्ष मां परमेश्वर ॥

इन मन्त्रों का श्रद्धापूर्वक उच्चारण कर अपनी विवशता एवं त्रुटियोंके लिये क्षमा याचना करे ।

बोध प्रश्न –

१. पंचदेव पूजन में कौन – कौन से देवता होते है –
   क. विष्णु, शिव, गणेश, दुर्गा एवं सूर्य ख. लक्ष्मी, काली, सरस्वती, दुर्गा, भैरवी
   ग. ब्रह्मा, विष्णु, महेश, सुरेश, सूर्य घ. विष्णु, लक्ष्मी, शिव, पार्वती, दुर्गा

२. कलश के मुख में किस देवता का वास होता है –
   क. ब्रह्मा ख. विष्णु ग. रूद्र घ. इन्द्र

३. द्वीपों की संख्या होती है –
   क. ५ ख. ६ ग. ७ घ. ८

४. लम्बोदर किसे कहते है –
   क. शिव ख. विष्णु ग. गणेश घ. ब्रह्मा

५. विष्णु पंचायतन में विष्णु का स्थान है –
   क. दायें ख. बायें ग. मध्य में घ. कोई नहीं

4.4 सारांश -

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन से आपने जाना कि भारतीय सनातन परम्परा में यह निर्विवाद है कि सभी पूजन कर्मो में सर्वप्रथम गणेश जी की पूजा होती है, साथ में गौरी माता की पूजा भी होती है। पूजन की प्रक्रिया में क्या क्या होता है इसका अध्ययन आप पूर्व के इकाई में कर चुके हैं। प्राचीन काल में पूजन कर्म केवल वैदिक मन्त्रों से किये जाते थे, क्योंकि वह वेदप्रधान युग था। कालांतर में

स्थितियॉ बदली, तो अब संस्कृतज्ञों एवं वेदज्ञों की संख्या भी घटती चली गई है। ऐसी परिस्थिति में आचार्यों ने लौकिक मन्त्र का निर्माण किया। इस प्रकार अब लौकिक और वेद मन्त्र से पूजन की जाती है। गणपति – गौरी पूजन के साथ – साथ मातृका पूजन में षोडशमातृका पूजन (जिसमें 16 कोष्ठक बने होते है) का भी ज्ञान प्राप्त किया है।

4.5 शब्दावली-

उद्कुम्भ – कलश

सर्वे - सभी में

सप्तद्वीप – सात द्वीप

दिवाकर - सूर्य

पीताम्बर – पीला हो वस्त्र जिसका, विष्णु

विश्वधर – विश्व को धारण करने वाले

महेश – शिव

लम्बोदर – लम्बा हो उदर जिसका, गणेश

सिद्धिप्रद – सिद्धि को प्रदान करने वाले

अम्बुज – कमल

भानु – सूर्य

करिष्यामि - करूगॉ

आवाहनार्थे – आवाहन के लिये

4.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. क
2. ख
3. ग
4. ग
5. ग

4.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1- कर्मकाण्ड प्रदीप

2- संस्कार दीपक

3. नित्यकर्मपूजाप्रकाश

4.8 निबन्धात्मक प्रश्न

1. पंचदेव पूजन विधि का विस्तारपूर्वक उल्लेख कीजिये।
2. विष्णुपंचायतन को समझाते हुए वर्णन कीजिये ।

इकाई – 5 श्रीमहालक्ष्मी पूजन

इकाई की संरचना

5.1 प्रस्तावना

5.2 उद्देश्य

5.3 श्रीमहालक्ष्मी पूजन विधि

5.4 सारांश

बोध प्रश्न

5.5 पारिभाषिक शब्दावली

5.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

5.8 निबन्धात्मक प्रश्न

5.1 प्रस्तावनाः-

प्रस्तुत इकाई BAKA(N)–102 के प्रथम खण्ड की पॉचवी इकाई '**श्रीमहालक्ष्मीपूजन**' नामक शीर्षक से सम्बन्धित है। इससे पूर्व की इकाई में आपने पंचदेव पूजन विधि को जान लिया है। यहॉ अब श्रीमहालक्ष्मीपूजन का अध्ययन करने जा रहा है।

माता लक्ष्मी भगवान विष्णु की पत्नी है। देवासुर संग्राम के पश्चात् समुद्रमन्थन के समय सागर से इनकी उत्पत्ति हुई थी। श्रीमहालक्ष्मी पूजन का विधान कर्मकाण्ड में बतलाया गया है।

महालक्ष्मी के प्रसन्नार्थ कर्मकाण्ड में उनके पूजन पद्धति को कहा गया है। भौतिक जीवन में द्रव्य की आवश्यकता तो सभी को होती है। अत: महालक्ष्मी के प्रसन्नार्थ उनका पूजन विधि आपके अवलोकनार्थ प्रस्तुत है।

5.2 उद्देश्य -

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप -

1. महालक्ष्मी कौन है। जान जायेंगे।
2. महालक्ष्मी पूजन कैसे किया जाता है, इसे बता सकेंगे।
3. महालक्ष्मी के महत्व को समझा सकेंगे।
4. महालक्ष्मी के पूजन क्रम को बता सकेंगे।
5. पूजन विधि के मन्त्र को जान जायेंगे।

5.3 श्रीमहालक्ष्मी पूजन विधि

भगवती महालक्ष्मी चल एवं अचल, दृश्य एवं अदृश्य सभी सम्पत्तियों, सिद्धियों एवं निधियों की अधिष्ठात्री साक्षात् नारायणी हैं। कर्मकाण्ड में धन की आदि शक्ति के रूप में पराम्बा भगवती लक्ष्मी को जाना गया है। धन की प्राप्ति के लिये लक्ष्मी जी की वन्दना या पूजन किया जाता है। यह प्रकल्प शक्ति प्राप्ति हेतु एवं विविध मनोकामनाओं की प्रपूर्ति हेतु किया जाता है। अतः श्री लक्ष्मी जी क्या हैं ? तथा कैसे उनकी पूजा की जाती है ? इसका ज्ञान आपको इस इकाई के अध्ययन से हो जायेगा।

श्री लक्ष्मी जी की आरती एवं स्तुति विचार के अभाव में दीपावली आदि के अवसर पर या अन्य लक्ष्मी जी के व्रतादि या पूजनादि का सम्पादन किसी भी व्यक्ति द्वारा ठीक ढंग से नही हो सकता है। क्योकि इसमें लक्ष्मी माता की ही उपासना की जाती है। सभी सुख, सुविधा, शक्ति, भुक्ति, मुक्ति की दाता एवं ज्ञान पुंज रूपा आह्लादिनी महालक्ष्मी जी की पूजा अवश्य करनी चाहिये। मां लक्ष्मी भाव से

की गयी समस्त प्रकार के पूजन या स्तोत्र पाठ से परम प्रसन्न होती हैं। इसलिये मां लक्ष्मी की पूजा अवश्य करनी चाहिये। इसके लिये यथा उपलब्ध उपचारों से मां की श्रद्धा भक्ति एवं शुचिता से दीपावली या अन्य पर्व इत्यादि के समय महालक्ष्मी पूजन करना चाहिये। ताकि हमारा जीवन सुखमय, आनन्दमय, सात्विक विचारों से परिपूर्ण एवं वर्ष पर्यन्त पुत्र पौत्र सुख, हर्ष उल्लास, ग्रहों की शान्ति, कायिक, वाचिक एवं मानसिक पीड़ा की निवृत्ति के लिये, भूत, प्रेत, डाकिनी, शाकिनी, बेतालादि की शान्ति के लिये, अखण्ड लक्ष्मी की प्राप्ति और कोष को आगे बढ़ाने के लिये, निरोगी काया के लिये, व्यापार को बढ़ाने के लिये, लोक कल्याण के लिये, अपने आश्रितों का पोषण करने के लिये महालक्ष्मी पूजन करना चाहिये।

महालक्ष्मी पूजन का विशेष समय –

कार्तिक कृष्ण पक्ष के अमावस्या को भगवती श्रीमहालक्ष्मी एवं भगवान् गणेश की नूतन प्रतिमाओं का प्रतिष्ठापूर्वक विशेष पूजन किया जाता है।

पूजन की तैयारी –

पूजन के लिये किसी चौकी अथवा कपड़े के पवित्र आसन पर गणेश जी के दाहिने भाग में माता महालक्ष्मी को स्थापित करना चाहिये। पूजन के दिन गृह को स्वच्छ कर पूजन स्थान को भी पवित्र कर लेना चाहिये और स्वयं भी पवित्र होकर श्रद्धा भक्तिपूर्वक सायंकाल में इनका पूजन करना चाहिये। मूर्तिमयी श्रीमहालक्ष्मी जी के पास ही किसी पवित्र पात्र में केसरयुक्त चन्दन से अष्टदल कमल बनाकर उस पर द्रव्य लक्ष्मी को भी स्थापित करके एक साथ ही दोनों की पूजा करनी चाहिये। पूजन सामग्री को यथास्थान रख ले।

सर्वप्रथम पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुखा हो आचमन, पवित्रीधारण, मार्जन प्राणायाम कर अपने उपर तथा पूजा सामग्री पर निम्न मन्त्र पढ़कर जल छिड़के -

ॐ अपवित्र: पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
य: स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तर: शुचि: ॥

आसन - शुद्धि और स्वस्ति पाठ कर हाथ में जल – अक्षतादि लेकर पूजन संकल्प करें।

तत्पश्चात् प्रतिष्ठा कर ध्यान करें –

या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी
गम्भीरावर्तनाभिस्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया ।
या लक्ष्मीर्दिव्यरूपैर्मणिगणखचितै: स्नापिता हेमकुम्भै:
सा नित्यं पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमांगल्ययुक्ता ॥
ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।

चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥

ॐ महालक्ष्म्यै नम: । ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि। ध्यान के लिए पुष्प अर्पित करे ।

आवाहन –

सर्वलोकस्य जननीं सर्वसौख्यप्रदायिनीम्।
सर्वदेवमयीमीशां देवीमावाहयाम्यहम्॥
ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरूषानहम् ॥

ॐ महालक्ष्म्यै नम: । महालक्ष्मीमावाहयामि, आवाहनार्थे, पुष्पाणि समर्पयामि।

आसन -

तत्पकाञ्चनवर्णाभं मुक्तामणिविराजितम्।
अमलं कमलं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥

ॐ महालक्ष्म्यै नम: । आसनं समर्पयामि।

पाद्य –

गंगादितीर्थसम्भूतं गन्धपुष्पादिभिर्युतम्।
पाद्यं ददाम्यहं देवि गृहाणाशु नमोऽस्तुते॥
ॐ कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥

ॐ महालक्ष्म्यै नम: । पादयो: पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्य -

अष्ट गन्धसमायुक्तं स्वर्णपात्रप्रपूरिताम् ।
अर्घ्यं गृहाण मद्दतं महालक्ष्मी नमोऽस्तु ते।
ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मनीमीं शरणं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे॥

ॐ महालक्ष्म्यै नम: । हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमन –

सर्वलोकस्य या शक्तिर्ब्रह्माविष्णवादिभि: स्तुता।

ददाम्याचमनं तस्यै महालक्ष्म्यै मनोहरम् ॥

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।

तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः । आचमीनीयं जलं समर्पयामि ।

इसके पश्चात् पूर्व के पूजनानुसार स्नान, आचमन, वस्त्र, उपवस्त्रादि चढ़ायें ।

आभूषण –

रत्नकंकणवैदूर्यमुक्ताहारादिकानि च ।

सुप्रसन्नेन मनसादत्तानि स्वीकुरूष्व भोः ॥

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।

अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः । नानाविधानि कुण्डलकटकादीनि आभूषणानि समर्पयामि ।

पुनः गन्ध, सिन्दूर, कुंकुम, अक्षत, पुष्प एवं पुष्पमाला दुर्वादि पूर्व के पूजन मन्त्रानुसार चढ़ायें ।

महालक्ष्मी अंग पूजा -

रोली, कुंकुममिश्रित अक्षत- पुष्पों से निम्नांकित एक – एक नाम मन्त्र पढ़ते हुए अंग पूजा करें-

ॐ चपलायै नमः, पादौ पूजयामि ।

ॐ चंचलायै नमः, जानुनी पूजयामि ।

ॐ कमलायै नमः, कटिं पूजयामि ।

ॐ कात्यायन्यै नमः, नाभिं पूजयामि ।

ॐ जगन्मात्रे नमः, जठरं पूजयामि ।

ॐ विश्ववल्लभायै नमः वक्षः स्थलं पूजयामि ।

ॐ कमलवासिन्यै नमः, हस्तौ पूजयामि ।

ॐ पद्माननायै नमः, मुखं पूजयामि ।

ॐ कमलपत्राक्ष्यै नमः, नेत्रत्रयं पूजयामि ।

ॐ श्रियै नमः, शिरः पूजयामि ।

ॐ महालक्ष्म्यै नमः, सर्वांगं पूजयामि ।

अष्टसिद्धि पूजन -

इस प्रकार अंगपूजा के अनन्तर पूर्वादि क्रम से आठों दिशाओं में आठों सिद्धियों की पूजा कुंकुमाक्त अक्षतों से देवी महालक्ष्मी के पास निम्नांकित मन्त्रों से करे –

ऊँ अणिम्ने नम: (पूर्व में) , ऊँ महिम्ने नम: (अग्निकोण में) , ऊँ गरिम्णे नम: (दक्षिणे) , ऊँ लघिम्ने नम: (नैर्ऋत्य में) , ऊँ प्राप्त्यै नम: (पश्चिमे) , ऊँ प्राकाम्यै नम: (वायव्ये), ऊँ ईशितायै नम: (उत्तर में) , ऊँ वशितायै नम: (ऐशान्याम्) ।

अष्टलक्ष्मी पूजन –

तदनन्तर पूर्वादि क्रम से आठों दिशाओं में महालक्ष्मी के पास कुंकुमाक्त अक्षत तथा पुष्पों से एक – एक नाम मन्त्र पढ़ते हुए आठ लक्ष्मीयों का पूजन करे –

ऊँ आद्यलक्ष्म्यै नम:, ऊँ विद्यालक्ष्म्यै नम: , ऊँ सौभाग्यलक्ष्म्यै नम: , ऊँ अमृतलक्ष्म्यै नम:, ऊँ कामलक्ष्म्यै नम: , ऊँ सत्यलक्ष्म्यै नम: , ऊँ भोगलक्ष्म्यै नम: , ऊँ योगलक्ष्म्यै नम: ।

पुन: धूप, दीप, नैवेद्य, आचमन, ऋतुफल, ताम्बूल, दक्षिणा, नीराजन, प्रदक्षिणा पूर्वानुसार करें ।

महालक्ष्मी की प्रसन्नता हेतु महालक्ष्म्यष्टक स्तोत्र का पाठ –

इन्द्र उवाच-

नमस्तेस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते ।
शंखचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मी नमोस्तुते ।
नमस्ते गरुडारूढे कोलासुरभयंकरी ।
सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मी नमोस्तुते ।
सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्टभयंकरी ।
सर्वदुखहरे देवि महालक्ष्मी नमोस्तुते ।
सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी ।
मन्त्रपूते सदादेवि महालक्ष्मीनमोस्तुते ।
आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्तिमहेश्वरी ।
योगजे योगसम्भूते महालक्ष्मी नमोस्तुते ।
स्थूलसूक्ष्ममहारौद्रे महाशक्ति महोदरे ।
महापापहरे देवि महालक्ष्मी नमोस्तुते ।
पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणी ।
परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मी नमोस्तुते ।
श्वेताम्बरधरे देवि नानालंकारभूषिते ।
जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मी नमोस्तुते ।
महालक्ष्म्यष्टकं स्तोत्रं यः पठेत् भक्तिमान्नरः ।

सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा।
एककाले पठेन्नित्यं महापाविनाशनम्।
द्विकालं यः पठेन्नित्यं धनधान्यसमन्वितः।
त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रु विनाशनम्।
महालक्ष्मीर्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा॥
इतीन्द्रकृतं महालक्ष्म्यष्टकम्।

इस महालक्ष्म्यष्टक का निर्माण इन्द्र जी के द्वारा किया गया है। इसका महत्व बतलाते हुये कहा गया है कि जो भी भक्तिमान होकर मनुष्य इस महालक्ष्म्यष्टक का पाठ करता है वह सभी प्रकार की सिद्धियों को प्राप्त करता है। राज्य की भी प्राप्ति इस स्तोत्र के पाठ से होती है। एक समय में पाठ करने से महापाप का विनाश होता है, दो काल यानी दो समय पढ़ने से धन एवं धान्य से व्यक्ति समन्वित होता है। तीन काल यानी तीनों समयों में पढ़ने से व्यक्ति महा शत्रुओं का विनाश होता है तथा महालक्ष्मी प्रसन्न होकर वर देने वाली होती है।

प्रार्थना -

सुरासुरेन्द्रादिकिरीटमौक्तिके -
र्युक्तं सदा यत्तव पादपंकजम् ।
परावरं पातु वरं सुमंगलं ।
नमामि भक्त्याखिलकामसिद्धये॥
भवानि त्वं महालक्ष्मी: सर्वकामप्रदायिनी।
सुपूजिता प्रसन्ना स्यान्महालक्ष्मी नमोऽस्तुते॥
नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये ।
या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात् त्वदर्चनात् ॥

ऊँ महालक्ष्म्यै: नम:, प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि।

समर्पण -

पूजन के अन्त में कृतेनानेन पूजनेन भगवती महालक्ष्मीदेवी प्रीयताम् न मम्॥

यह वाक्य उच्चारण कर समस्त पूजन कर्म भगवती महालक्ष्मी को समर्पित करे तथा जल गिराकर प्रणाम करे।

बोध प्रश्न -

१. सिद्धियों की संख्या है –

क. ८ ख. ९ ग. १० घ. ११

२. महालक्ष्मी का विशेष पूजन कब होता है –

क. कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा ख. कार्तिक कृष्ण अमावस्या ग. मार्गशीर्ष

घ. कार्तिक सप्तमी

३. सर्वलोकस्य जननीं का क्या अर्थ है –

क. सर्वजन ख. सभी लोगों की माता ग.सभी लोक घ. कोई नहीं

४. चन्द्रां प्रभासां .... लोके देवजुष्टामुदाराम् ।।

क. यशसा ज्वलन्तीं सर्व ख. अलक्ष्मीर्मे नश्यतां ग. तपसोऽधि जातो

घ.तपसा नुदन्तु

५. निधियॉ है –

क. ८ ख. ९ ग. १० घ. ११

5.4 सारांश -

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन से आपने जाना कि भगवती महालक्ष्मी चल एवं अचल, दृश्य एवं अदृश्य सभी सम्पत्तियों, सिद्धियों एवं निधियों की अधिष्ठात्री साक्षात् नारायणी हैं। कर्मकाण्ड में धन की आदि शक्ति के रूप में पराम्बा भगवती लक्ष्मी को जाना गया है। धन की प्राप्ति के लिये लक्ष्मी जी की वन्दना या पूजन किया जाता है। यह प्रकल्प शक्ति प्राप्ति हेतु एवं विविध मनोकामनाओं की प्रपूर्ति हेतु किया जाता है । अतः श्री लक्ष्मी जी क्या हैं ? तथा कैसे उनकी पूजा की जाती है ? इसका ज्ञान आपको इस इकाई के अध्ययन से हो जायेगा।

श्री लक्ष्मी जी की आरती एवं स्तुति विचार के अभाव में दीपावली आदि के अवसर पर या अन्य लक्ष्मी जी के व्रतादि या पूजनादि का सम्पादन किसी भी व्यक्ति द्वारा ठीक ढंग से नही हो सकता है। क्योकि इसमें लक्ष्मी माता की ही उपासना की जाती है। सभी सुख, सुविधा, शक्ति, भुक्ति, मुक्ति की दाता एवं ज्ञान पुंज रूपा आह्लादिनी महालक्ष्मी जी की पूजा अवश्य करनी चाहिये। मां लक्ष्मी भाव से की गयी समस्त प्रकार के पूजन या स्तोत्र पाठ से परम प्रसन्न होती हैं। इसलिये मां लक्ष्मी की पूजा अवश्य करनी चाहिये। इसके लिये यथा उपलब्ध उपचारों से मां की श्रद्धा भक्ति एवं शुचिता से दीपावली या अन्य पर्व इत्यादि के समय महालक्ष्मी पूजन करना चाहिये। ताकि हमारा जीवन सुखमय, आनन्दमय, सात्विक विचारों से परिपूर्ण एवं वर्ष पर्यन्त पुत्र पौत्र सुख, हर्ष उल्लास, ग्रहों की शान्ति, कायिक, वाचिक एवं मानसिक पीड़ा की निवृत्ति के लिये, भूत, प्रेत, डाकिनी, शाकिनी, बेतालादि की शान्ति के लिये, अखण्ड लक्ष्मी की प्राप्ति और कोष को आगे बढ़ाने के लिये, निरोगी

काया के लिये, व्यापार को बढ़ाने के लिये, लोक कल्याण के लिये, अपने आश्रितों का पोषण करने के लिये महालक्ष्मी पूजन करना चाहिये।

5.5 शब्दावली-

चल – जिसमें गति हो।

अचल - स्थिर।

दृश्य – जो दिखलाई देता हो ।

अदृश्य - जो दिखाई न देता हो ।

पद्मासन - कमल का आसन।

पूर्वाभिमुख – पूर्व दिशा की ओर मुख

केसरयुक्त – केसर मिला हुआ

जननी – माता

नानाविध – अनेक प्रकार के

पादौ – दोनों पैर

कटि – कमर

हस्तौ - दोनों हाथ

5.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. ख
2. ख
3. ख
4. क
5. ख

5.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1- कर्मकाण्ड प्रदीप

2- संस्कार दीपक

3. नित्यकर्मपूजाप्रकाश

5.8 निबन्धात्मक प्रश्न

1. महालक्ष्मी पूजन विधि का विस्तारपूर्वक उल्लेख कीजिये।
2. महालक्ष्मी के अंगपूजन एवं अष्टसिद्धि पूजन का वर्णन कीजिये ।
3. महालक्ष्म्यष्टक स्तोत्र का लेखन कीजिये।

खण्ड – 2

कथा एवं जप प्रकरण

इकाई – 1 सत्यनारायण व्रत कथा

इकाई संरचना

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 श्री सत्यनारायण पूजन विधि

1.4 श्री सत्यनारायण कथा

1.5 सारांश

1.6 शब्दावली

1.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई BAKA(N)-102 द्वितीय खण्ड की प्रथम इकाई **'श्रीसत्यनारायण व्रत कथा'** से सम्बन्धित है। इस इकाई के अध्ययन से आप बता सकते है कि कर्मकाण्ड की उत्पति किस प्रकार से हुई है? कर्मकाण्ड की उत्पति अनादि काल से हुई है तथा इन्हीं कर्मकाण्डों के माध्यम से आज सनातन धर्म की रक्षा हो रही है।

कर्मकाण्ड को जानते हुए आप सत्यनारायण व्रत कथा के विषय में परिचित होंगे कि सत्यनारायण व्रत कथा के पूजन का प्रयोजन क्या है एवं उसका महत्त्व क्या है इन सबका वर्णन इस इकाई में किया गया है।

इससे पूर्व की इकाईयों में आपने नित्यकर्म एवं आरम्भिक पूजन का अध्ययन कर लिया है। यहॉ आप सत्यनारायण व्रत कथा से सम्बन्धित ज्ञान प्राप्त करेंगे।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप -

1. सत्यनारायण व्रत कथा के विषय में आप परिचित होंगे -
2. सत्यनारायण व्रत कथा में कितने अध्याय है, इसके विषय में आप परिचित होंगे।
3. सत्यनारायण व्रत कथा के प्रथम से लेकर अन्तिम अध्याय तक के अध्यायों की कथा को समझ सकेगें।
4. सत्यनारायण व्रत कथा के प्रत्येक अध्यायों के अर्थ को समझ सकेगें।
5. सत्यनारायण व्रत कथा के महत्व को समझ सकेगें।

1.3 सत्यनारायण पूजन विधि

एक लकड़ी की चौकी के ऊपर गणेश, षोडशमातृका, सप्तमातृका स्थापित करे। दूसरी चौकी पर नवग्रह, पञ्चलोकपाल आदि स्थापति करे। ईशान कोण में घी का दीपक रखे और अपने दायें हाथ में पूजा सामग्री रख लेवे। शुद्ध नवीन वस्त्र पहनकर पूर्वाभिमुख बैठे। कुंकुम आदि से तिलक धारण कर दाहिनें हाथ की अनामिका अंगुली में सुवर्ण की अंगुठी पहनकर आचमन प्राणायाम कर पूजन आरम्भ करे।

पवित्रीकरण –

सर्वप्रथम अधोलिखित मन्त्र को पढ़ते हुये पूजन सामग्रियों को पवित्र करें –

ॐ अपवित्र: पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्ष स बाह्याभ्यन्तरः शुचि ।।

ऊँ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ऊँ पुण्डरीकाक्षः पुनातु , ऊँ पुण्डरीकाक्षः पुनातु ।

आचमन-:(तीन बार आचमन करे)

ऊँ केशवाय नमः। ऊँ नारायणाय नमः। ऊँ माधवाय नमः।

प्राणायाम-:

गोविन्दाय नमः बोलकर हाथ धोवे और यदि ज्यादा ही कर सके तो तीन बार पूरक (दायें हाथ के अंगूठे से नाक का दायाँ छेद बन्द करके बायें छेद से श्वास अन्दर लेवे), कुम्भक (दायें हाथ की छोटी अंगुली से दूसरी अंगुली द्वारा बाया छेद भी बन्द करके श्वास को अन्दर रोके), रेचक (दायें अंगूठे को धीरे–धीरे हटाकर श्वास बाहर निकाले) करें।

पवित्रीधारणम् -

ॐ पवित्रेस्त्थो व्वैष्णव्यौसवितुर्व्व प्रसव उत्पन्नुनाम्यच्छिद्रेण पवित्र सूर्यस्य रश्मिभिः।

तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम् ।।

सपत्नीक यजमान के ललाट में स्वस्तितिलक लगाते हुए मन्त्र को बोले-

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवा: स्वस्ति न पूषा विश्ववेदा:। स्वस्ति नस्ताक्ष्यो अरिष्ट नेमि स्वस्ति नो वृहस्पतिदर्धातो।

उँ श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्क्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्वि नौव्व्यात्तम्।

इष्णनिषाणम ……… सर्वलोकम इषाण।।

ग्रन्थिबन्धन) - तं पत्नी भिरनुगच्छेम देवा: पुत्रैऽभ्रातृ भिरतु वा हिरण्यैः।

नाकङ्गृभ्णानाः सुकृतस्यलोके तृतीयपृष्ठेऽअधिरोचने दिवः।।

आसनपूजन -

ऊँ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम् ।।

(सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि)

भूतापसारण -

रक्षोहणं व्वलगहनं व्वैष्णवीमिदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि म्मे निष्ट्यो ममात्यो निचखानेदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि म्मे समानोमसमानो निचखानेदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि म्मे सबन्धुम सबन्धुर्न्निचखानेदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि म्मे सजातो मसजातो निचखानोत्कृत्याङ्क्रिामि।

ऊँ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामवरोधेन पूजाकर्म समारभे।।

निम्न मन्त्रों को पढते हुए सरसों का सभी दिशाओं में विकिरण करे-:

प्राच्यैदिशे स्वाहार्व्वाच्यै दिशेस्वाहा दक्षिणायै दिशेस्वाहार्व्वाच्यै दिशेस्वाहा प्रतीच्यै दिशे स्वाहार्व्वाच्यै दिशे स्वाहोदीच्यै दिशे स्वाहा र्व्वाच्यै दिशे स्वाहोद्र्ध्वायै दिशेस्वाहा र्व्वाच्यै दिशे स्वाहा व्वाच्यै दिशे स्वाहार्व्वाच्यै दिशे स्वाहा।

पूर्वे रक्षतु गोविन्द आग्नेय्यां गरुड़ध्वजः। दक्षिणे रक्षतु वाराहो नारसिंहस्तु नैर्ऋते।।
पश्चिमे वारुणो रक्षेद्वायव्यां मधुसूदनः। उत्तरे श्रीधरो रक्षेद् ऐशान्ये तु गदाधरः।।
ऊर्ध्वं गोवर्धनो रक्षेद्अधस्ताद्त्रिविक्रमः। एवं दश दिशो रक्षेद्वासुदेवो जनार्दनः।।

कर्मपात्र पूजन -:(ताँबे के पात्र में जलभरकर कलश को अक्षतपुञ्ज पर स्थापित करते हुए पूजन करे)

ऊँ तत्वामि ब्ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते जमानो हविर्ब्भिः।

अहेडमानो व्वरुणे हबोद्ध्युरुश समानऽ आयुः प्प्रमोषीः।।

उॅ वरूणाय नमः।।

सर्वोपचारार्थे चन्दन अक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अंकुशमुद्रया सूर्यमण्डलात्सर्वाणि तीर्थानि आवाहयेत् (दायें हाथ की मध्यमा अङ्गुली से जलपात्र में सभी तीर्थों का आवाहन करे) :–

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वति।

नर्मदा सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिनसन्निधे कुरू।।

कलशस्य मुखे विष्णु कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।।
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।।
अश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बु समाश्रिताः।
गायत्री चात्र सावित्री शान्तिः पुष्टिकरा तथा।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।।

उदकेन पूजासामग्रीं स्वात्मानं च सम्प्रोक्षयेत् (पात्र के जल से पूजन सामग्री एवं स्वयं का प्रोक्षण करे) :–

ऊँ आपो हिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्ज्जेदधातन। महेरणायचक्षसे।।
योवः शिवतमोरसस्तस्यभाजयते हनः। उशतीरिवमातरः।।
तस्माऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्वथ आपोजनयथाचनः।।

दीपपूजनम् (देवताओं के दाहिने तरफ घी एवं विशेष कर्मों में बायें हाथ की तरफ तेल का दीपक जलाकर पूजन करना चाहिए) :–

अग्निर्द्देवता व्वातो देवता सूर्य्यो देवता चन्द्रमा देवता व्वसवो देवता रुद्रा देवतादित्त्या देवता मरुतो देवता विश्श्वे देवा देवता बृहस्प्पतिर्द्देवतेन्द्रो देवता व्वरुणो देवता।

ऊँ दीपनाथाय नमः। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि (गन्ध अक्षत पुष्प दीपक के सामने छोडे।)

प्रार्थनाः–(हाथ में अक्षत–पुष्प लेकर अधोलिखित श्लोक को पढते हुए दीपक के सामने छोड़े

ऊँ भो दीप देवस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत।
यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात्तावदत्र स्थिरो भव।।

सर्वप्रथम सत्यनारायण व्रत कथा की अधिकार प्राप्ति के लिये प्रायश्चित्तरूप में गोदान का संकल्प करना चाहिये

प्रायश्चित संकल्प हाथ में जल अक्षत–पुष्प कुश तथा द्रव्य लेकर प्रायश्चित संकल्प करे–

हरिः ऊँ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ऊँ तत्सद। ैतस्य श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अ। श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्द्धे तदादौ श्रीश्वेतवाराहकल्पे सप्तमे वैवस्वतमन्वतरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे तत्रापि परमपवित्रे भारतवर्षे आर्यावर्त अन्तर्गते अमुकदेशे (अपने देश का नाम) अमुकक्षेत्रे (अपने राज्य का नाम) अमुकनगरे (अपने नगर का नाम) श्री गङ्गायमुनयोः अमुकभागे (अपने स्थान की दिशा) नर्मदाया अमुक भागे (अपने स्थान की दिशा) चान्द्रसंज्ञकानां प्रभवादिषष्टिसम्वत्सराणां मध्ये अमुक नाम्नि सम्वत्सरे (सम्वत्सर का नाम) श्रीमन्नृपति विक्रमार्कसमयादमुकसंख्यापरिमिते विक्रमाब्दे (वर्तमान विक्रम सम्वत्) अमुकायने (वर्तमान सम्वत्) अमुकर्तौ (वर्तमान ऋतु) अमुकमासे (वर्तमान मास) अमुकपक्षे (वर्तमान पक्ष) अमुकतिथौ (वर्तमान तिथि) अमुकवासरे अमुकगोत्रः (यजमान का गौत्र) अमुकशर्मा अहं सत्यनारायण व्रत कथा अधिकार प्राप्त्यर्थं कायिकवाचिकमानसिकसांसर्गिकचतुर्विधपापशमनार्थं शरीरशुद्ध्यर्थं गोनिष्क्रयद्रव्यं ''''''''''गोत्राय''''''''''शर्मणे आचार्याय भवते सम्प्रददे (ऐसा कहकर हाथ का संकल्प जल तथा द्रव्य ब्राह्मण के हाथ में दे दे।

मंगल पाठ –हस्ते अक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा (हाथ में अक्षत–पुष्प लेकर गणेश जी की प्रार्थना करे) : –

ऊँ आनो भद्राः क्रतवो यन्तु व्विश्वतो दब्धासोऽअपरीतासऽउद्भिदः। देवानो यथा सदमिद्वृधेऽअसन्नप्प्रायुवोरक्षितारो दिवेदिवे।।१।। देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतान्देवाना रातिरभिनोनिवर्त्तताम्। देवाना सक्ख्यमुपसेदिमा व्वयं देवानऽआयुः प्रतिरन्तुजीवसे।।२।। तान्पूर्वया निविदाहूमहे व्वयं भगम्मित्रमदितिं दक्षमस्रिधम्। अर्यमणं व्वरुण सोममश्विना सरस्वती नः सुभगामयस्करत्।।३।। तन्नोव्वातो मयो भुव्वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता। ीः। तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयो भुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम्।।४।। तामीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पति–न्धियञ्जिन्न्वमवसे हूमहे व्वयम्। पूषा नो यथा व्वेदसामद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।५।। स्वस्ति न ऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषाव्विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्ताक्ष्र्यो ऽ अरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु।।६।। पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो व्विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वामनवः सूरचक्षसो व्विश्वेनोदेवाऽअवसा गमन्निह।।७।।

भद्रङ्कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा œ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं य्यदायुः।।८।। शतमिन्नुशरदो ऽ अन्ति देवा त्रा नश्चक्रा जरसंतनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मद्धया रीरिषतायुर्गन्तोः।।६।। अदिति। ैरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वेदेवा ऽ अदितिः पञ्चजना ऽ अदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्वम्।।१०।। । ैः शान्तिरन्तरिक्ष œ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। व्वनस्पतयः शान्ति व्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व œ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामाशान्तिरेधि।।११।। यतो यतः समीहसे ततो नो ऽ अभयं कुरु। शन्नः कुरु प्रजाब्भ्योभयन्नः पशुभ्यः।।१२।। सुशान्तिर्भवतु।। **(अक्षत–पुष्प को सिर से लगाकर गणपति मण्ड़ल पर गणेशजी को समर्पित करे)**

गणपत्यादि देवानां स्मरणम्– (हाथ में अक्षत–पुष्प लेकर गणेश जी की प्रार्थना करे)

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजगर्णकः। लम्बोदरश्च विकटोविघ्ननाशो विनायकः। धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि। वि। ारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। संग्रामे संकटे चौव विघ्नस्तस्य न जायते। शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये। अभीप्सितार्थ सिध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः। सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः। सर्वमङ्ग्ल माङ्ग्ल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते। सर्वदा सर्व कार्येषु नास्ति तेषाममङ्ग्गलम्। येषां हृदिस्थो भगवान् मंगलायतनं हरिः। तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव। वि। ाबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि। लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः। येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः। यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः। तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम। सर्वेष्वारब्धकार्येषु त्रयस्त्रि भुवनेश्वराः। देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः। विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्। वन्दे काशीं गुहां गङ्ग्गां भवानी मणिकर्णिकाम्। विनायकं गुरुभानुं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान्। सरस्वतीं प्रणौम्यादौ सर्वकार्यार्थ सिद्धये।ऊँ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। ऊँ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। ऊँ उमामहेश्वराभ्यां नमः। ऊँ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। ऊँ शचीपुरन्दराभ्यां नमः। ऊँ मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः। ऊँ सर्वपितृदेवताभ्यो नमः। ऊँ इष्टदेवताभ्यो नमः। ऊँ कुलदेवताभ्यो नमः। ऊँ ग्रामदेवताभ्यो नमः। ऊँ स्थानदेवताभ्यो नमः। ऊँ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ऊँ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ऊँ गुरवे नमः। ऊँ परमगुरवे नमः। ऊँ परात्परगुरवे नमः। ऊँ परमेष्ठिगुरवे नमः।(अक्षत–पुष्प को सिर से लगाकर गणपति मण्ड़ल पर गणेशजी को समर्पित करे)

संकल्प–हाथ में जल अक्षत–पुष्प कुश तथा द्रव्य लेकर संकल्प करे–

हरिः ऊँ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ऊँ तत्सद। ैतस्य श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अ। श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्द्धे तदादौ श्रीश्वेतवाराहकल्पे सप्तमे वैवस्वतमन्वतरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे तत्रापि परमपवित्रे भारतवर्षे आर्यावर्त अन्तर्गते अमुकदेशे (अपने देश का नाम) अमुकक्षेत्रे (अपने राज्य का नाम) अमुकनगरे (अपने नगर का नाम) श्री गङ्गायमुनयोः अमुकभागे (अपने स्थान की दिशा) नर्मदाया अमुक भागे (अपने स्थान की दिशा) चान्द्रसंज्ञकानां प्रभवादिषष्टिसम्वत्सराणां मध्ये अमुक नाम्नि सम्वत्सरे (सम्वत्सर का नाम) श्रीमन्नृपति विक्रमार्कसमयादमुकसंख्यापरिमिते विक्रमाब्दे (वर्तमान विक्रम सम्वत्) अमुकायने (वर्तमान सम्वत्) अमुकर्तौ (वर्तमान ऋतु) अमुकमासे (वर्तमान मास) अमुकपक्षे (वर्तमान पक्ष) अमुकतिथौ (वर्तमान तिथि) अमुकवासरे अमुकगोत्रः (यजमान का गौत्र) अमुकशर्मा अहं (ब्राह्मण के लिए शर्मा, क्षत्रिय के लिए वैश्य, वैश्य के लिए गुप्ता, शूद्र के लिए दासान्त) सपुत्रस्त्रीबान्धवो अहं मम जन्मलग्नाच्चन्द्रलग्नाद् वर्ष मास दिन गोचराष्टक वर्गदशान्तर्दशादिषु चतुर्थाष्टं द्वादशस्थान् स्थित क्रूरग्रहास्तेषां अनिष्टफल शान्ति पूर्वकं द्वितीयसप्तम् एकादशस्थानस्थित सकल शुभफल प्राप्त्यर्थं श्री सत्यनारायण व्रत कथा अहं करिष्ये (वा ब्राह्मण द्वारा कारयिष्ये) । ऐसा कहकर हाथ का संकल्प जल तथा द्रव्य गणेश जी के सामने छोड़ दे।

पुनः हाथ में जल अक्षत–पुष्प कुश तथा द्रव्य लेकर बोले –

तदंगत्वेन कार्यस्य सिद्धयर्थं आदौ गणेशाम्बिकयोः पूजनं करिष्ये। ऐसा कहकर हाथ का संकल्प जल तथा द्रव्य गणेश जी के सामने छोड़ दे।

पूजा में जो वस्तु वि। मान न हो उसके लिये 'मनसा परिकल्प्य समर्पयामि' कहे। जैसे, आभूषणके लिये 'आभूषणं मनसा परिकल्प्य समर्पयामि' ।)

सर्वप्रथम गणपति का पूजन आप कर ले।

भगवान् विष्णु का पूजन

१. विष्णु :– (बाये हाथ में अक्षत लेकर अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् विष्णु के उपर छोड़े)

क्रमात्कौमोदकी पद्मशङ्कचक्रधरं विभुम्।

भक्तकल्पद्रुमं शान्तं विष्णुमावाहयाम्यहम्।।

ऊँ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधेपदम्। समूढमस्यपा œ सुरे स्वाहा।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठापनम्ः– (हाथ में अक्षत लेकर अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् विष्णु के उपर छोड़े)

ऊँ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्यस्य बृहस्पर्तिज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टं ज्ञ गूं समिमन्दधातु।
विश्वेदवा स ऽ इह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ।।
ऊँ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः। सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेत्

आसनम् –(हाथ में पुष्प लेकर अधोलिखित मन्त्र पढ़ते हुए भगवान् विष्णु के उपर छोड़े)

ऊँ पुरुष ऽ एवेद œ सर्व्वंद्भूतँच्च भाव्व्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।
ऊँ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः आसनार्थे पुष्पं समर्पयामि।

पा। म् ––(हाथ में जल लेकर अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् विष्णु के उपर छोड़े)

ऊँ एतावानस्य महिमातोज्ज्याँश्चपूरुषः।

पादोस्य व्विश्श्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः पादप्रक्षालनार्थं पा। ं समर्पयामि।

अर्घ्यम् ––(हाथ में जल लेकर अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् विष्णु के उपर छोड़े)

ऊँ धामन्तेव्विश्वम्भुवनमधिश्रितमन्तः समुद्धेह्व। न्त रायुषि।

अपामनीकेसमिथेय ऽ आभृतस्तमश्याम मधुमन्तन्त ऽ ऊर्मिम्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयम् ––(हाथ में जल लेकर अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् विष्णु के उपर छोड़े)

सर्वतीर्थ समायुक्तं सुगन्धिनिर्मलं जलम्।

आचम्यार्थं मया दत्तं गृहाण गणनायक।।

ऊँ इमम्मेव्वरुणत्त्शुधीहवमद्द्या च मृडय। त्वामवस्युराचके।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

जलस्नानम् –(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् विष्णु के उपर जल छोड़े)

ऊँ व्वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनीस्त्थो व्वरुणस्य ऽ ऋतसदन्न्यसि

वरुणस्य ऽ ऋतसदनमसि व्वरुणस्य ऽ ऋतसदनमासीद।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः स्नानार्थे जलं समर्पयामि।।

पञ्चामृत स्नानम् –(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् विष्णु के उपर पंचामृत से स्नान करावे)

पयो दधिघृतं चैव मधुं च शर्करायुतम्।

सरस्वती तु पञ्चधासो देशेभवत्सरित्।

ऊँ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदक स्नानम् –(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् विष्णु के उपर शुद्ध जल से स्नान करावे)

ऊँ शुद्धवालः सर्व शुद्धवालो मणिवालस्त ऽ आश्विनः श्येतः

श्येताक्षो रुणस्तेरुद्रायपशुपतये कर्णायामा अवलिप्ता रौद्रानभोःरूपाः पार्ज्जन्याः।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

वस्त्रोपवस्त्रम्–(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् विष्णु के उपर रक्त सूत्र चढ़ावे)

ऊँ सुजातोज्ज्योतिषा सहशर्म्म व्वरुथमासदत्स्वः।

व्वासो ऽ अग्ने विश्वःप गूं सँव्ययस्वव्विभावसो।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः वस्त्रोपवस्त्रार्थे रक्तसूत्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम् –(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् विष्णु के उपर यज्ञोपवीत चढ़ावे)
ऊँ ब्रह्मज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोव्वेनऽआवः।
सबुद्धन्याऽउपमा अस्यविष्ठाः सतश्च्चयोनिमसतश्चव्विवः।
ऊँ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

चन्दनम् ––(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् विष्णु के उपर चन्दन चढ़ावे)
ऊँ अ गूं शुना ते अ गूं शुः पृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदायरसोऽअच्युतः।
ऊँ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः चन्दनकुंकुमञ्च समर्पयामि।

अक्षताः ––(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् विष्णु के उपर अक्षत चढ़ावे)
ऊँ अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रियाऽ अधूषत।

अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठ्ठयामती योजान्विन्द्रते हरी।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः   अलङ्करणार्थम् अक्षतान् समपर्यामि।

पुष्पाणि (पुष्पमालां) ——(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् विष्णु के उपर पुष्पमाला अथवा पुष्प चढ़ावे)

ऊँ ओषधिः प्रतिमोदद्धवं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।

अश्श्वाऽ इव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्णवः।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः   पुष्पाणि समर्पयामि।

दुर्वाङ्कुरम् ——(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् विष्णु के उपर दूर्वा चढ़ावे)

ऊँ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवा नो दूर्व्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः दूर्वाङ्कुराणि समर्पयामि।

बिल्वपत्रम् ——(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् विष्णु के उपर बिल्वपत्र चढ़ावे)

ऊँ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो व्वर्मिणे च वरुथिने च नमः

श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुब्भ्याय चाहनन्याय च।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः   बिल्वपत्राणि समर्पयामि।

सुगन्धितद्रव्यम् ——(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् विष्णु के उपर इत्र चढ़ावे)

ऊँ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीयमामृतात्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः   सुगन्धितद्रव्यं समर्पयामि।

सिन्दूरम् ——(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् विष्णु के उपर सिन्दूर चढ़ावे)

ऊँ सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो व्वातप्प्रमियः पतयन्ति ह्यवाः।

घृतस्य धारा ऽ अरुषो न व्वाजी काष्ठाभिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः   सिन्दूरं समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्याणि ––(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् विष्णु के उपर अवीर चढ़ावे)

ऊँ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुञ्ज्याया हेतिं परिबाधमानः।

हस्तघ्नो व्विश्वाव्वयुनानि व्विद्वान्पुमान्पुमा œ सम्परिपातुव्विश्वतः।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः परिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

धूपम् –(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् विष्णु को धूप दिखावे)

धूरसि धूर्व्वधूर्व्वन्तं धूर्व्व तोस्म्मान् धूर्वतितन्धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः।

देवानामसि व्वह्नितम œ सस्न्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतम्।

ऊँ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः धूपम् आघ्रापयामि।

दीपम् –(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् विष्णु को दीप दिखावे)

ऊँ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्योज्योतिज्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।

अग्निर्व्वर्चोज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा सूर्यो वर्च्चोज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा।

ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।

ऊँ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः दीपकं दर्शयामि।

हस्तौ प्रक्षाल्य। (इसके बाद हाथ धोये)

नैवे। म् –(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् विष्णु को भोग लगावे)

ऊँ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष œ शीष्र्णो । ाैः समवर्तत।

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ २ अकल्पयन्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः नैवे। ं निवेदयामि। मध्ये जलं निवेदयामि। (इसके बाद पॉच बार जल चढावे)

ऋतुफलम् –(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् विष्णु के उपर फल चढ़ावे)

ऊँ याः फलनीर्या ऽ अफला ऽ अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्व œ हसः।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः फलं निवेदयामि। पुनः आचमनीयं निवेदयामि।(इसके बाद पुनः जल चढावे)

ताम्बूल–मन्त्र बोलते हुए लवंग,इलायची, सोपारी सहित पान का पत्ता भगवान् विष्णु के उपर चढावे।

ॐयत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।

वसन्तोस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मःशरद्धविः।।

ॐ भूभुर्वः स्वः विष्णवे नमः मुखवासार्थं एलालवंगपूगीफलसहितं ताम्बूलं समर्पयामि।
(इलायची,लौंग–सुपारी सहित ताम्बूल को चढ़ाये)

दक्षिणा–(अधोलिखित मन्त्र पढ़ते हुए भगवान् विष्णु के उपर दक्षिणा चढ़ावे)

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातःपतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं । ामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

ॐ भूभुर्वः स्वः विष्णवे नमः,कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।(द्रव्य दक्षिणा समर्पित करें।)

आरती–(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् विष्णु को कर्पूर की आरती करे)
कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम् ।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य में वरदो भव।।
प्रदक्षिणा–(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् विष्णु की प्रदक्षिणा करे)
यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।

तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे।।

ॐ भूभुर्वः स्वः विष्णवे नमः , प्रदक्षिणा समर्पयामि।(प्रदक्षिणा करे।)

प्रार्थना– मन्त्र बोलते हाथ में फूल लेकर पुष्पांजलि अर्थात् प्रार्थना करना।
विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय
गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते।।
भक्तार्ति नाशनपराय गणेश्वराय

सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।

पि। ाधराय विकटाय च वामनाय

भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते।।

ॐ भूभुर्वः स्वः विष्णवे नमः, प्रार्थना पूर्वक नमस्कारान् सम्रर्पयामि।(साष्टांग नमस्कार करे।)

समर्पण–(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए हाथ में पुष्प लेकर भगवान् विष्णु को समस्त पूजन कर्म समर्पित करे)

विष्णुपूजने कर्म यन्न्यूनमधिकं कृतम्।

तेन सर्वेण सर्वात्मा प्रशन्नोस्तु सदा मम।।

ॐ भूभुर्वः स्वः विष्णवे नमः, अनया पूजया विष्णवे प्रीयेताम् न मम । पुष्प को भगवान् विष्णु के उपर चढ़ावे)
इसके बाद भगवान् सत्यनारायण व्रत कथा को प्रारम्भ करे ।

1.4 श्री सत्यनारायण व्रत कथा

प्रथमोऽध्यायः

व्यास उवाच–एकदा नैमिषारण्ये ऋषयः शौनकादयः। प्रपच्छुर्मुनयः सर्वे सूतं पौराणिकं खलु।।1।। ऋषय उवाच– व्रतेन तपनसा किं वा प्राप्यते वांछित फलम्। तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामः कथयस्व महामुने।।2।। सूत उवाच–नारदेनैव संपृष्टो भगवान्कमलापतिः। सुरर्षये यथैवाह तच्छृणुध्वं समाहिताः।।3।।

व्यासजी ने कहा – एक समय शौनकादि सभी मुनिगण नैमिषारण में एकत्र हुए और उन्होंने कलियुग में लोगों के हित के लिए वेदों व पुराणों के ज्ञाता श्री सूत जी से पूछा–''हे सूत जी! हे वेद–वेदांग के ज्ञाता! इस कलियुग में वह कौन–सा व्रत–तप है जिसके करने से मनवांछित फल मिलता है? हे महामुने! कृपा करके हमें कलियुग में पापों से छुटकारे और धन–धान्य देने वाला कोई उपाय बताएं। हम सब ऋषि–मुनि आपके श्री मुख से वह उपाय सुनना चाहते हैं।''

श्री सूत जी बोले–''हे मुनिश्रेष्ठ ! तुम धन्य हो जिसने प्राणियों के हित के लिए ऐसा उत्तम प्रश्न किया है। एक बार ऐसा ही प्रश्न नारद जी ने भगवान कमलापति से किया था, वही मैं आपको सुनाता हूं–

एकदा नारदो योगी परानुग्रहकांक्षया। पर्यटन्विविधांल्लोकान्मर्त्य– लोकमुपागतः।। 4।। ततो दृष्टाव् जनान्सर्वान्नानाक्लेशसमन्वितान्। नानायोनि समुत्पान्नान् क्लिश्यमानान्स्वकर्मभिः।।5।।

केनोपायेन चैतेषां दुःखनाशो भवेद्ध्रुवम्। इति संचिन्त्य मनसा विष्णुलोकं गतस्तदा।।6।। तत्र नारायणं देवं शुक्लवर्णचतुर्भुजम्। शंख चक्र गदा पद्म् वनमाला विभूषितम्।। 7।।

एक बार नारदजी भ्रमण करते–करते पृथ्वी लोक में जा पहुंचे। उनका यह भ्रमण तीनों लोकों के प्राणियों के परोपकार की भावना को लेकर था। पृथ्वी लोक में जाकर उन्होंने देखा कि वहां लोग तरह–तरह के कष्ट भोग रहे हैं। वे बार–बार मृत्यु को प्राप्त होते हैं और हर बार विभिन्न योनियों में जन्म लेकर अपने कर्मो (पापों) का फल भोगते हैं। उन सभी दुःखी प्राणियों को देखकर नारद सोचने लगे कि इनका कष्ट किस प्रकार दूर हो, किस प्रकार इन्हें इन दुःखों से मुक्ति मिले? यही सब सोचते–सोचते वह विष्णु लोक में आ गए। वहां चार भुजा भगवान विष्णु शेष शय्या पर विराजे हुए थे। वे शंख, चक्र, गदा व कमल अपने हाथों में धारण किए हुए थे। गले में वनमाला पड़ी थी।

दृष्ट्वा तं देवदेवेशं स्तोतुं समुपचक्रमे। नारद उवाच–नमोवङ्मनसातीत–रूपायानंतशक्तये।।8।। आदिमध्यांतहीनाय निर्गुणाय गुणात्मने। सर्वेषामादिभूताय भक्तानामार्तिनाशिने।।9।। श्रुत्वा स्तोत्रं ततो विष्णुर्नारदं प्रत्यभाषत्।। श्रीभगवानुवाच–किमर्थमागतोऽसि त्वं किं ते मनसि वर्तते। कथायस्व महाभाग तत्सर्वं कथयामिते।।10।। नारद उवाच–मर्त्यलोके जनाः सर्वे नानाक्लेशसमन्विताः। नानायोनिसमुत्पन्नाः पच्यन्ते पापकर्मभिः ।।11।।

नारद जी ने मुग्ध भाव से उन्हें देखा, फिर बोले–'हे श्री हरि! मन और वाणी से परे है। अनन्त शक्तिधारी! मैं आपको प्रणाम करता हूं। हे प्रभु! आपका न आदि है, न मध्य है और न अंत है। आप इससे सर्वथा मुक्त हैं। हे सर्वआत्मा के आदिकरण! मैं आपको नमस्कार करता हूं।'

नारद जी की स्तुति सुनकर भगवान विष्णु ने मुस्कराकर पूछा–'हे नारद! तुम्हारे मन में अवश्य ही कोई ऐसी बात है जिसके कारण तुम यहां आए हो। तुम्हारे मन में क्या है, मुझे सब कुछ बताओ।'

भगवान के ऐसे वचन सुनकर नारद जी ने कहा–'प्रभु! मृत्यु लोक के सभी प्राणी अपने पाप कर्मों के कारण बार–बार विभिन्न योनियों में जन्म लेकर कष्ट भोग रहे हैं।

तत्कथं शमयेन्नाथ लघूपायेन तद्वद्। श्रोतुमिच्छामि तत्सर्वं कृपास्ति यदि ते मयि।।12।। श्रीभगवानुवाच–साधु पृष्टं त्वया वत्स लोकानुग्रहकांक्षया।। यत्कृत्वा मुच्यते मोहात्तच्छृणुष्व वदामि ते।।13।। व्रतमस्ति महत्पुण्यं स्वर्गे मर्त्ये च दुर्लभम्।। तव स्नेहान्मया वत्स प्रकाशः क्रियतेऽधुना।।14।।

हे भगवान! यदि आप मुझ पर कृपा रखते हैं तो इन प्राणियों के दुःख दूर करने का कोई सुगम एवं छोटा उपाय बताएं।'

भगवान श्री वष्णु बोले– 'हे नारद! तुम हमेशा सबका हित चाहते हो, तुम साधु हो। प्राणियों के कल्याण के लिए यह तुमने बड़ा ही उत्तम प्रश्न किया है। मैं तुम्हें बताता हूं कि किस व्रत को करने से व्यक्ति मोह से छूट जाता है। हे नारद! जो व्रत मैं तुम्हें बताने जा

रहा हूं, वह स्वर्ग और मृत्यु लोक दोनों में दुर्लभ है, किन्तु तुम्हारे स्नेह के कारण मैं तुम्हें इस व्रत का पूरा विधि–विधान बताता हूं।

सत्यनारायणस्यैवं व्रतं सम्यग्विधानतः। कृत्वा स। : सुखं भुक्त्वा परत्र मोक्षमाप्नुयात्।।14।।

तच्छ्रुत्वा भगवद्वाक्यं नारदो मुनिरब्रवीत्। नारद उवाच–किं फलं किं विधानं च कृतं केनैव तद्व्रतम्।।16।। तत्सर्वंविस्तराद् ब्रूहि सदा कार्यं हि तद्व्रतम्। श्रीभगवानुवाच– दुःखशोकादिशमनंधनधान्यप्रवर्धनम्।।17।। सौभाग्यसन्ततिकरं सर्वत्रविजयप्रदम्। यदिस्मन्कस्मिन्दिने मर्त्यो भक्ति श्रद्धासमन्वितः।।18।।

हे नारद! भगवान सत्यनारायण का विधिपूर्वक व्रत करने से तत्काल ही सुख प्राप्त होता है और अंत में प्राणी मोक्ष का अधिकारी हो जाता है।

श्री विष्णु के मुख से ऐसे प्रीतियुक्त वचन सुनकर नारद जी ने पूछा–'प्रभु! इस व्रत के करने से क्या फल प्राप्त होता है, इसकी विधि और समय क्या है तथा इसे पहले किस–किसने किया है। कृपा कर यह सभी विस्तारपूर्वक बताएं।'

विष्णु भगवान ने कहा–'हे नारद! यह व्रत दुःख और शोक को दूर करने वाला है। इससे धन–धान्य में वृद्धि होती है तथा सौभाग्य व संतान की प्राप्ति होती है। प्राणी को चारों दिशाओं में विजयश्री दिलाने वाले इस व्रत को व्यक्ति किसी भी दिन पूर्ण श्रद्धा व भक्ति से कर सकता है।

सत्यनारायणं देवं यजेच्चैव निशामुखे। ब्राह्मणैर्बान्धवाश्चैव सहितो धर्मतत्परः।।11। नैवे।

भक्तितो द। त्सपादं भक्ष्यमुत्तमम्। रंभाफलं घृतं क्षीरं गोधूमस्य च चूर्णकम्।।20।।

अभावेशालिचूर्णं वा शर्करा वा गुडस्तथा। सपादं सर्वभक्ष्याणि चैकीकृत्य निवेदयेत्।।21।।

विप्राय दक्षिणा द। त्कथां श्रुत्वाजनैः सह। ततश्चबन्धुभिः सार्धं विप्रांश्च प्रतिभोजयेत्।।22।।

सायंकाल धर्म में पूरी आस्था रखते हुए, बंधु–बान्धवों सहित किसी ब्राह्मण के सहयोग से भगवान श्री सत्यनारायण जी का पूजन करना चाहिए। सवाया प्रसाद बनाना चाहिए। प्रसाद में केले का फल, घी, दूध व गेहूँ का आटा लेना चाहिए। यदि गेहूँ का आटा उपलब्ध न हो तो चावल का आटा लें और उसमें शक्कर के स्थान पर गुड़ मिला लें। यह सब मिलाकर सवाया बना नैवे। भगवान को अर्पण करें। इसके बाद कथा सुनकर प्रसाद ग्रहण करना चाहिए तथा ब्राह्मणों को दक्षिणा देनी चाहिए। बंधु–बांधवों सहित ब्राह्मणों को भोजन कराकर स्वयं भी भोजन करना चाहिए।

प्रसादं भक्षयेद्भक्त्या नृत्यगीतादिकं चरेत्। ततश्च स्वगृहं गच्छेत्सत्यनारायणं स्मरन्।।23।। एवंकृते मनुष्याणां वाञ्छासिद्धिर्भवेद् ध्रुवम्। विशेषतः कलियुगे लघूपायऽस्ति भूतले।।24।।

प्रसादादि ग्रहण करने के बाद भजन–कीर्तनादि करना चाहिए। फिर भगवान सत्यनारायण का स्मरण करते हुए सभी बन्धु–बांधव अपने घरों को प्रस्थान करें। इस प्रकार जो भी भगवान श्री सत्यनारायण का स्मरण करते हुए सभी बन्धु–बांधव अपने घरों को प्रस्थान करें। इस प्रकार जो भी भगवान श्री सत्यनारायण जी का व्रत–पूजन करता है, उसकी सभी मनोकामनाएं अवश्य ही पूर्ण होती हैं। इस कलियुग में दुःख एवं दरिद्रता से छुटकारा पाने का इससे छोटा कोई उपाय नहीं है।''

इति श्रीस्कन्द पुराणे रेवाखण्डे सत्यनारायणव्रत कथायां प्रथमोऽध्यायः समाप्तः।

श्री स्कन्द पुराण के रेवाखण्ड की सत्यनारायणव्रत कथा का प्रथम अध्याय पूर्ण हुआ।

बोलो सत्यनारायण भगवान की जय

श्रीमन् नारायण, नारायण, लक्ष्मी नारायण, नारायण, नारायण

द्वितीयोऽध्यायः

सूत उवाच– अथान्यत्संप्रवक्ष्यामि कृतं येन पुरा द्विज। कश्चित् काशीपुरे रम्ये ह्यासीद्विप्रोऽतिनिर्धनः।।1।। क्षुत्तृड्भ्यां व्याकुलो भूत्वा नित्यं बभ्राम भूतले।। दुःखितं ब्राह्मणं दृष्टाव् भगवान्ब्राह्मणप्रियः।।2।। वृद्धब्राह्मणरूपस्तं पप्रच्छ द्विजमादरात्। किमर्थं भ्रमसे विप्र महीं नित्यं सुदुःखितः तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि कथ्यतां द्विजसत्तम।।3।।

सूत जी बोले–''हे मुनिश्वर ! पहले इस व्रत को किस–किसने किया, अब मैं तुम्हें इस विषय में बताता हूँ। सुनिए– बहुत ही रमणीय स्थल काशीपुरी में एक बड़ा ही निर्धन ब्राह्मण रहता था। वह भूख–प्यास से दुःखी यहां–वहां भटक, भिक्षा मांगकर अपना पेट भरता था। इस ब्राह्मण को दुःखी देखकर ब्राह्मणों से प्यार करने वाले भगवान विष्णु बड़े व्यथित हुए। फिर एक दिन वे बूढ़े ब्राह्मण का वेश धारण कर पृथ्वी पर आकर उस ब्राह्मण से बोले–'हे विप्र! तुम इतने दुःखी होकर इस पृथ्वी पर क्यों भटक रहे हो। कृपा कर मुझको अपनी विपदा बताओ।

ब्राह्मण उवाच– ब्राह्मणोऽति दरिद्रोऽहं भिक्षार्थं वै भ्रमे महीम्।।4।। उपायं यदि जानासि कृपया कथय प्रभो। वृद्ध ब्राह्मण उवाच–सत्यनारायणो वृद्धस्तत्रैवान्तरधीयत्।।7।। तद्व्रतं संकरिष्यामि यदुक्तंब्राह्मणेन वै। इति संचिंत्य विप्रोऽसौ निद्रां न लब्धवान्।।8।।

ब्राह्मण बोला–हे' बन्धु! मैं अत्यन्त ही निर्धन और दुःखी हूँ। क्या आप इस निर्धनता से मुक्त होने का कोई उपाय जानते हैं। यदि जानते हैं तो कृपा कर मुझको बताएं। मैं वह उपाय अवश्य ही करूंगा ताकि मुझे इस कष्टपूर्ण जीवन से मुक्ति मिले।'

बूढ़े ब्राह्मण ने कहा–'सत्यनारायण स्वरूप भगवान विष्णु सबको मन चाहा फल देने वाले हैं। अतः हे विप्र! तुम उन्हीं को उत्तम व्रत व पूजन करो। भगवान सत्यनारायण का व्रत व पूजन करने से मनुष्य के सब दुःख दूर हो जाते हैं।'

'हे भगवन्!' गरीब ब्राह्मण ने कहा–' कृपया मुझे इस व्रत का विधि–विधान बताएं।

आपके अनुसार मैं उत्तम फल प्रदान करने वाले इस व्रत को अवश्य ही करूंगा।'

बूढ़े ब्राह्मण वेशधारी भगवान विष्णु ने उसे सत्यदेव भगवान के व्रत–पूजन का विधान बताया और अन्तर्धान हो गए। निर्धन ब्राह्मण ने मन ही मन में संकल्प लिया कि वह बूढ़े ब्राह्मण द्वारा गया व्रत अवश्य करेगा। इन्हीं विचारों के कारण उसे रात भर नींद नहीं आई।

ततः प्रातः समुत्थाय सत्यनारायणव्रतम्। करिष्य इति संकल्प्य भिक्षार्थमगमद् द्विजः।।9।। तस्मिन्नेव दिने विप्रः प्रचुरं द्रव्यमाप्तवान्। तेनैव बन्धुभिः सार्धं सत्यस्य व्रतमाचरत्।।10।। सर्वदुःखविनिर्मुक्तः सर्वसंपत्समन्वितः। बभूव स द्विजश्रेष्ठो व्रतस्यास्य प्रभावतः।।11।। ततः प्रभूतिकालं च मासि मासि व्रतं कृतम्। एवं नारायणेवेकतिम व्रतं कृत्वा द्विजोत्तमः।।12।। सर्वपापविनिर्मुक्तो दुर्लभं मोक्षमाप्तवान्।। व्रतमस्य यदा विप्राः पृथिव्यां संकरिष्यति।।13।।

दूसरे दिन वह इस संकल्प के साथ भिक्षाटन के लिए निकला कि आज जो कुछ भी भिक्षा में मिलेगा, उससे मैं सत्यनारायण जी का व्रत–पूजन करूंगा। उस दिन से भिक्षा में काफी द्रव्य प्राप्त हुआ। उसी से ब्राह्मण ने अपने बन्धु–बांधवों सहित श्री सत्यनारायण भगवान का व्रत किया। व्रत के प्रभाव और भगवान सत्यदेव की कृपा से वह सम्पत्तिवान हो गया। तब से उस ब्राह्मण ने प्रति माह व्रत रखना आरंभ कर दिया और अन्त में सब पापों से मुक्त हो मोक्ष को प्राप्त हुआ।

तदैव सर्वदुःखं तु मनुजस्य विनश्यति।। एवं नारायणेनोक्तं नारदाय महात्मने।।14।। मया तत्कथितं विप्राः किमन्यत्कथयामि वः। ऋषयः उवाच–तस्माद्विप्राच्छ्रुतं केन पृथिव्यां चरितं मुने। तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामः श्रद्धाऽस्माकं प्रजायते।।15।। सूत उवाच–श्रृणुध्वं मुनयः सर्वे व्रतं येन कृतं भुवि। एकदा स द्विजवरो यथाविभवविस्तरैः।।16।। बन्धुभिः स्वजनैः सार्धं व्रतं कर्तुं समु। तः। एतस्मिन्नंतरे काले काष्ठक्रेता समागमत्।।17।।

हे विप्रो! इस प्रकार पृथ्वी पर जो कोई भी श्रद्धापूर्वक इस व्रत को करेगा, उसके सभी दुःख दूर होंगे–श्रीमन नारायण जी ने यही वचन नारद जी से कहे थे। अब आप लोग बताइए कि और क्या जानने की इच्छा है?''

तब ऋषिगणों ने पूछा–''हे सूत जी! अब यह बताएं कि आगे चलकर ब्राह्मण के बाद किस–किसने इस व्रत को किया। यह जानने की हमारी प्रबल इच्छा है।''

सूत जी बोले–''उस ब्राह्मण से सुनकर आगे यह व्रत किन–किन लोगों ने किया, यह भी ध्यानपूर्वक सुनो। वह ब्राह्मण धन–धान्य से भरपूर होकर एक बार व्रत कर रहा था कि एक लकड़हारा वहां आया।

बहिः काष्ठं च संस्थाप्य विप्रस्य गृहमाययौ। तृष्णाया पीडितात्मा च दृष्ट्व विप्रं कृतव्रतम्।।18।। प्रणिमत्य द्विजं प्राह किमिदं क्रियते त्वया। कृते किं फलमाप्नोति विस्तराद्वद मे प्रभो।।11।। विप्र उवाच–सत्यनारायणस्येदं व्रतं सर्वेप्सितप्रदम्। तस्य प्रसादान्मे सर्वं धनधान्यदिकं महत्।।20।। तस्मादेतद्व्रतं ज्ञात्वा काष्ठक्रेताऽतिहर्षितः। पपौ जलं प्रसादं च भुक्त्वा स नगरं ययौ।।21।।

लड़की का बोझ बाहर रखकर, वह प्यास बुझाने के उद्देश्य से ब्राह्मण के घर में गया। वहां उसने ब्राह्मण को देखा, जो अपने बंधु–बांधवों सहित भगवान श्री सत्यनारायण का व्रत और पूजन कर रहा था। वह सब देख लकड़हारे को बड़ी उत्सुकता हुई। उसने

ब्राह्मण को प्रणाम करके पूछा–'हे प्रभू! हे ब्राह्मण देव! आप यह किसका पूजन कर रहे हैं और इस पूजन का क्या फल मिलता है, कृपा कर विस्तारपूर्वक मुझे बताएं।'

ब्राह्मण बोला–'हे भाई लकड़हारे! यह हम भगवान सत्यनारायण का व्रत और पूजन कर रहे हैं। सत्यदेव भगवान का यह व्रत सभी मनोरथों को सिद्ध करने वाला और शुभ फलदायी है। उन्हीं की कृपा से मेरे घर में यह सब धन–धान्य और सुख–वैभव है।'

यह जानकर लकड़हाड़ा बहुत प्रसन्न हुआ। वह प्रसाद ग्रहण करके तथा जलपीकर बाहर आया और अपना गट्ठर उठाकर लकड़ी बेचने के लिए शहर को चल दिया।

सत्यनारायणं देवं मनसाऽसौऽचिन्तयतं। काष्ठंविक्रयतो ग्रामे प्राप्यते चा। यद्धनम्।।22।।
तेनैव सत्यदेवस्य करिष्ये व्रतमुत्तमम्। इति संचिन्त्य मनसा काष्ठं धृत्वा तु मस्तके।।23।।
जगाम नगरे रम्ये धनिनां यत्र संस्थितिः। तद्दिने काष्ठमूल्यं च द्विगुणं प्राप्तवानसौ।।24।।
ततः प्रसन्नहृदयः सुपक्वं कदलीफलम्। शर्कराघृतदुग्धं च गौधूमस्य च चूर्णकम्।।25।।

रास्ते में चलते–चलते उसने सोचा कि आज यह लकड़ियां बेचकर जो भी धन प्राप्त होगा, उससे मैं भी भगवान सत्यनारायण का व्रत और पूजन करूंगा। यह संकल्प कर वह उस बस्ती की ओर चल दिया जहां नगर के अमीर लोग रहते थे। भगवान सत्यनारायण की ऐसी कृपा हुई कि उस दिन उसे लकड़ियों के दूने दाम प्राप्त हुए। लकड़हारे ने प्रसन्न होकर पके केले, शक्कर, घी, दूध और गेहूँ का आटा सवाया बनवाकर खरीद लिया और अपने घर की ओर चल पड़ा।

कृत्वैकत्र सपादं च गृहीत्वा स्वगृहं यतौ। ततो बन्धून् समाहूय चकार विधिना व्रतम्।।26।।
तद्व्रतस्य प्रभावेण धनपुत्रान्वितोऽभवत्।। इह लोके सुखं भुक्त्वा चांते सत्यपुरं ययौ।।27।।

लकड़हारे ने अपने भाई–बांधवों सहित विधिपूर्वक भगवान का पूजन–व्रत किया। व्रत के प्रभाव से वह पुत्रवान और धनवान बन गया। फिर इस लोक में चिरकाल तक सुख भोगकर अन्त में भगवान सत्यनारायण की कृपा से उनके लोक मे ंचला गया।''

इति श्रीस्कन्द पुराणे रेवाखण्डे सत्यनारायण व्रत कथायां द्वितीयोऽध्यायः समाप्तः।

श्रीस्कन्द पुराण के रेवाखण्ड की सत्यनारायण व्रत कथा का द्वितीय अध्याय पूर्ण हुआ।

बोलो सत्यनारायण भगवान की जय

श्रीमन् नारायण, नारायण, नारायण, लक्ष्मी नारायण, नारायण, नारायण।

तृतीयोऽध्यायः

सूत उवाच–पुनरग्रे प्रवक्ष्यामि श्रृणुध्वं मुनिसत्तमाः। पुरा उल्कामुखो नाम नृष्चासीन्महामतिः।।1।। जितेन्द्रियः सत्वादी ययौ देवालयं प्रति। दिने दिने धनं दत्त्वा द्विजान्संतोषयन्मुधीः।।2।। भार्यातस्य प्रमुग्धा च सरोजवदना सती। भद्रशीला नदी तीरे

सत्यस्य व्रतमाचरत्।।3।। एतस्मिन्नंतरे तत्र साधुरेकः समागतः। वाणिज्यार्थं बहुधनैरनेकैः परिपूरितः।।4।।

सूत जी बोले–''हे मुनियो! अब मैं इससे आगे की कथा सुनाता हूँ, ध्यानपूर्वक सुनो–पूर्वकाल में उल्कामुख नाम का एक बुद्धिमान राजा था। वह बड़ा ही जितेन्द्रिय एवं सत्यवादी था। वह नित्यप्रति मंदिरों आदि में जाकर ब्राह्मणों को दान–दक्षिणा देकर प्रसन्न रखता था। उसकी रानी बड़ी पतिव्रता और सुमुखी थी। एक बाद वे राजा–रानी भद्रशीला नदी के तट पर भगवान सत्यनारायण का व्रत कर रहे थे। उसी समय साधु नामक एक वैश्य धन–धान्य से भरी अपनी नौका लेकर वहां पहुंचा।

नावं संस्थाप्य तत्तीरे जगाम नृपतिं प्रति। दृष्टाव् स व्रतिनं भूपं प्रपच्छ विनयान्वितः।।5।। साधुरूवाच–किमिदं कुरूषे राजन्भक्तियुक्तेन चेतसा। प्रकाशं कुरू तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि सांप्रतम्।।6।। राजोवाच–पूजनं क्रियते साधो विष्णोरतुलतेजसः। व्रतं च स्वजनैः सार्धं पुत्रा। ा वाप्तिकाम्यया।।7।। भूपस्य वचनं श्रुत्वा साधुः प्रोवाच सादरम्। सर्वं कथय में राजन्करिष्येऽहं तवोदितम्।।8।।

साधु वैश्य ने नाव को किनारे पर लगाकर व्रत–पूजन में व्यस्त राजा–रानी को देखा। फिर उनके निकट जाकर विनयपूर्वक राजा से बोला–'हे राजन! आप इतने भक्तिभाव से यह किस देवता का पूजन कर रहे हैं, कृपा कर यह सब वृतांत मुझे भी बताएं।'

राजा उसकी विनय सुनकर बोला–'हे वैश्य! हम अपने बन्धु–बांधवों सहित विष्णु भगवान जैसे तेजस्वी भगवान श्री सत्यनारायण जी व्रत और पूजन कर रहे हैं। यह सब हम पुत्रादि की प्राप्ति के लिए कर रहे हैं।''

राजा की बात सुनकर साधु बोला–'महाराज! आप कृपा करके मुझे इस व्रत के सम्बंध में सारा विधान बताएं ताकि मैं भी यह व्रत करूं।

ममापि सन्ततिर्नास्ति ह्येतस्माज्जायते ध्रुवम्। ततो निवृत्य वाणिज्यात्सानंदो गृहमागतः।।9।। भार्यायै कथितं सर्वं व्रतं संततिदाकम्। तदा व्रतं करिष्यामि यदा में संततिर्भवेत्।।10।। इति लीलावतीं प्राह पत्नीं साधुः स सत्तमः। एकस्मिन्दिवसे तस्यभार्या लीलावती सती।।11।। भर्तृयुक्तानन्दचित्ताऽभवद्धर्म परायणा। गर्भिणी साभवत्तस्य भार्या सत्यप्रसादतः।।12।। दशमे मासि वै तस्याः कन्या रत्नमजायत। दिने दिने सा ववृधे शुक्लपक्षे यथा शशी।।13।।

मेरे भी कोई सन्तान नहीं है। क्या इस व्रत के प्रभाव से मेरे सन्तान हो जाएगी?' 'अवश्य होगी वैश्व, भगवान सत्यदेव किसी को कभी निराश नहीं करते।' यह कहकर राजा ने उसे व्रत से सम्बंधित पूरा विधि–विधान बता दिया।

सब कुछ जान लेने के बाद वैश्य खुशी–खुशी अपने घर चल दिया। घर पहुंचकर उसने अपनी पत्नी लीलावती को सब कुछ बताया, फिर बोला–'यदि हमारे घर सन्तान हुई तो हम भी सत्यनारायण भगवान का व्रत करेंगे।'

उसकी पत्नी यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुई। इस प्रकार दिन गुजरने लगे और कुछ समय बाद लीलावती गर्भवती हो गई। दसवें माह में उसने एक कन्या को जन्म दिया। यह कन्या चन्द्र की कला की भांति दिनो–दिन बढ़ने लगी।

नांमाकलावती चेति तन्नामकरणं कृतम्। ततो लीलावती प्राह स्वामिनं मधुरं वचः।।14।। न करोषि किमर्थं वै पुरा संकल्पितव्रतम्। साधुरूवाच–विवाह समये त्वस्या करिष्यामि व्रतं प्रिये।।15।। इति भार्यां समाश्वास्य जगाम नगरं प्रति। ततः कलावती कन्या ववृधे पितृवेश्मनि।।16।। दृष्टाव कन्यांततः साधुर्नगरे सखिभिः सह। मन्त्रयित्वा द्रुतं दूतं प्रेषयामास धर्मवित्।।17।। विवाहार्थं च कन्यायाः वरं श्रेष्ठं विचारय। तेनाज्ञप्तश्च दूतोऽसौ कांचनं नगरं ययौ।।18।।

इस कन्या का नाम कलावती रखा गया। एक दिन लीलावती ने अपने पति से कहा–'स्वामी ! आपने कहा था कि जब हमारे सन्तान उत्पन्न हो जाएगी, तब आप भगवान सत्यनारायण का व्रत व पूजन करेंगे। अब आप अपने संकल्प के अनुसार यह कार्य क्यों नहीं करते?'

साधु बोला–'प्रिये! हम कन्या के विवाह के समय यह व्रत कर लेंगे।'

इसके बाद वैश्य पुनः अपने काम से दूसरे नगर को चला गया। इधर कन्या भगवान सत्यनारायण की कृपा से तेजी से बढ़ रही थी। एक दिन वैश्य ने अपनी पुत्री को सहेलियों के साथ विचरण करते देखा तो उसे सुधि आई कि कन्या सयानी हो गई है और अब इसका विवाह कर देना चाहिए। अतः पत्नी से विचार–विमर्श करके उसने शीघ्र ही कन्या के योग्य वर तलाशने के लिए अपने दूतों को भेज दिया। वैश्य की आज्ञा पाकर दूत सर्वप्रथम सुसम्पन्न कांचन नगर को चल दिए।

तस्मादेकं वणिक्पुत्रं समादायागतो हि सः। दृष्ट्वा तु सुंदरं बालं वणिक्पुत्रं गुणान्वितम्।।19।। ज्ञातिभिर्बन्धुभिः सार्धं परितुष्टेन चेतसा। दत्तावान्साधु पुत्राय कन्यां विधिविधानतः।।20।। ततोऽभाग्यवशात्तेन विस्मृत व्रतमुत्तमम्। विवाहसमये तस्यास्तेनरूष्टोऽभवत्प्रभुः।।21।। ततः कालेनकियता निज कर्मविशारदः। वाणिज्यायगतः शीघ्रं जामातृसहितो वणिक्।।22।। रत्नसारपुरे रम्ये गत्वा सिन्धुसमीपतः वाणिज्यमकरोत्साधुर्जामात्रा श्रीमता सह।।23।।

कुछ दिनों बाद वे वहां से एक बड़े ही गुणवान और सुन्दर वैश्य पुत्र को अपने साथ ले आए। साधु वैश्य ने अपने बंधु–बांधवों सहित उसे देखा और वार्तालाप करके संतुष्ट हो गया। फिर कुछ दिन बाद उसने विधिपूर्वक अपनी कन्या का विवाह उसके साथ कर दिया। लेकिन दुर्भाग्यवश उस समय भी वह भगवान श्री सत्यनारायण जी का व्रत और पूजन करना भूल गया। परिणामस्वरूप श्री सत्यनारायण भगवान रूष्ट हो गए। इस प्रकार कुछ समय बीत गया। अब वैश्य से सोचा कि व्यापार के लिए चलना चाहिए। अपने कार्य के प्रति वह सदा ही सचेत रहता था। अतः अपने जमाता को लेकर वह व्यापार के लिए चल दिया। इस बार वह समुद्र के समीप रत्नसार नामक सुंदर और सम्पन्न नगर गया। वहां जाकर वह अपने जमाता के साथ व्यापार में व्यस्त हो गया।

तौ गतौ नगरे रम्ये चन्द्रकेतोर्नृपस्य च। एतस्मिन्नेव काले तु सत्यनारायणः प्रभुः।।24।। भ्रष्टप्रतिज्ञमालोक्य शापं प्रदत्तवान्। दारूणं कठिनं चास्य महद्दुःखं भविष्यति।।25।। एकस्मिन्दिवसे राज्ञो धनमादाय तस्करः। तत्रैव चागश्चौरो वणिजौ यत्र संस्थितौ।।26।। तत्पश्चाद्धावकान्दूतान्दृष्ट्वा भीतेन चेतसा। धनंसंस्थाप्य तत्रैव स तु शीघ्रमलक्षितः ।।27।। ततोदूतः समायाता यत्रास्ते सज्जनो वणिक्। दृष्ट्वा नृपधनं तत्र बद्ध्बाऽऽनीतौ वणिक्सुतौ।।28।।

इस सुन्दर और सम्पन्न नगर में राजा चन्द्रकेतु का राज्य था। उस समय अपनी प्रतिज्ञा से भ्रष्ट हुए वैश्य को भगवान सत्यनारायण ने शाप दे दिया कि हे वैश्य! तू घोर कष्ट को प्राप्त होगा।

एक दिन राजा की सत्पत्ति चुराकर एक चोर वहां गया, जहां वैश्य साधु और उसका जमाता ठहरे हुए थे। उसके पीछे राजा के सिपाही लगे थे। अतः डर के मारे उसने राजा का चुराया हुआ धन वहीं छोड़ दिया और अलोप हो गया। उसके पीछे–पीछे आए सिपाहियों ने राजा का धन वहां पड़ा देखा तो चोरी के अपराध में उन दोनों वैश्यों को बंदी बना लिया।

हर्षेण धावमानाश्च प्रोचुर्नृपसमीपतः। तस्करौ द्वौ समानीतौ विलोक्याज्ञापय प्रभो।।29।। राज्ञाऽऽज्ञप्तास्ततः शीघ्रं दृढं बद्धवा तु तावुभौ। स्थापितौ द्वौ महादुर्गे करारेऽविचारतः।।30।। मायया सत्यदेवस्य न श्रुतं कैस्तयोर्वचः। अतस्तयोर्धनं राज्ञा गृहीतं चंद्रकेतुना।।31।। तच्छापाच्च तयोर्गेहे भार्या चैवातिदुःखिता।। चौरेणापहृतं सर्वं गृहे यच्च स्थितं धनम्।।32।। आधिव्याधिसमायुक्ता क्षुत्पिपासातिदुःखिता। अन्नचिंतापरा भूत्वा बभ्राम च गृहे गृहे। कलावती तु कन्याऽपि बभ्राम प्रतिवासरम्।।33।।

हर्षित होकर सिपाहियों ने जाकर राजा को बताया–'महाराज! राजमहल में चोरी करने वाले दो चोरों को हम पकड़ लाए हैं, आप देखकर आज्ञा दें।

राजा ने बिना कुछ देखे–भाले और विचार किए आज्ञा दी कि उन दोनों को बंदीगृह में डाल दिया जाए। भगवान श्री सत्यनारायण जी की माया से किसी ने भी उनकी बात नहीं सुनी। राजा चन्द्रकेतु की आज्ञा से उनका सारा धन भी छीन लिया गया। उधर भगवान के शाप के कारण वैश्य की पत्नी भी दुःखी हो गई। उसके घर की सारी सम्पत्ति चोर ले गए। वह शरीर से रूग्ण होकर चिन्तित अवस्था में अन्न के लिए घर–घर भटकने लगी। पहनने–ओढ़ने की क्या कहें, घर में खाने को अन्न का दाना तक नहीं रहा। ऐसी ही हाल उसकी पुत्री कलावती का भी था।

एकस्मिन्दिवसे याता क्षुधार्ता द्विजमन्दिरम्। गत्वाऽपश्यद् व्रतं तत्र सत्यनारायणस्य च।।34।। उपविश्व कथां श्रुत्वा वरं प्रार्थितवत्यपि। प्रसादभक्षणं कृत्वा ययौ रात्रौ गृहं प्रति।।35।। माता कलावतीं कन्यां कथयामास प्रेमतः। पुत्रि रात्रौ स्थिता कुत्र किं ते मनसि वर्तते।।36।। कन्या कलावती प्राह मातरं प्रति सत्यवरम्।। द्विजालयं व्रतं मातर्दृष्टं वांछित सिद्धिदम्।।37।।

एक दिन भूखी–प्यासी कलावती एक ब्राह्मण के यहां गई, जहां उसने भगवान सत्यनारायण जी का व्रत व पूजन होते देखा। उसने वहां बैठकर बड़ी श्रद्धा से कथा सुनी

और प्रसाद लेकर रात को अपने घर लौटी। घर आने पर उसकी मां ने पूछा–'बेटी! इतनी रात गए तक तू कहां थी तथा तेरे मन में क्या है?'

कलावती ने मां को बताया–' मैंने एक ब्राह्मण के घर पर सभी मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाले भगवान सत्यनारयण का व्रत होते देखा है। मैं भी वहीं थी और श्रद्धापूर्वक कथा श्रवण कर रही थी।'

तच्छ्रुत्वा कन्यकावाक्यं व्रतं कर्तुं समु। ता। सा मुदा तु वणिग्भार्या सत्यनारायणस्य च।।38।।

व्रतं चक्रे सैव साध्वी बन्धुभिःस्वजनै सह। भर्तृजामातरौ क्षिप्रमागच्छेतां स्वाश्रमम्।।39।। अपराधं च मे भर्तुर्जामातुः क्षंतुमर्हसि। व्रतेनानेन तुष्टोऽसौ सत्यनारायणः प्रभुः।।40।। दर्शयामास स्वप्नं ही चन्द्रकेतुं नृपोत्तमम्।। बन्दिनौ मोचय प्रातर्वणिजौ नृपसत्तम।।41। देयं धनं च तत्सर्वं गृहीतं यत्त्वयाऽधुना। नो चेत्त्वां नाशयिष्यामि सराज्य धनपुत्रकम्।।42।।

कन्या की बात सुनकर वैश्य की पत्नी को तत्काल स्मरण हो आया कि उसके पति ने व्रत करने का संकल्प लिया था, किन्तु आज तक व्रत नहीं किया। उसने सोचा कि सम्भव है, इसीलिए हम पर यह कष्ट आ गए हों। यह सोचकर उसने तत्काल निर्णय लिया कि अपनी पुत्री के साथ वह भी इस व्रत को करेगी। दूसरे ही दिन लीलावती ने अपने बंधु–बांधवों के साथ व्रत किया और भगवान सत्यदेव से प्रार्थना की कि उसके पति व जमाता शीघ्र लौट आएं और प्रभू सत्यनारायण उनके अपराध को क्षमा करें। लीलावती द्वारा किए गए व्रत और उसकी प्रार्थना को सुनकर भगवान सत्यदेव प्रसन्न हो गए। उसी रात उन्होंने स्वप्न में राजा चन्द्रकेतु को दर्शन देकर आज्ञा दी कि हे राजा! सवेरा होते ही उन दोनों वैश्यों को मुक्त कर दे तथा उनका छीना हुआ धन भी लौटा दे। यदि ऐसा नहीं करेगा तो मैं धन और पुत्रों सहित तेरे राज्य का नाश कर दूंगा।

एवमाभाष्यराजानं ध्यानगम्योऽभवत्प्रभुः। ततः प्रभातसमये राजा च स्वजनैः सह।।43।। उपविश्य सभामध्ये प्राह स्वप्नं जनं प्रति। बद्धौ महाजनौ शीघ्रं मोचय द्वौ वणिक्सुतौ।।44।। इति राज्ञो वचः श्रुत्वा मोचयित्वा महाजनौ। समानीय नृपस्याग्रे प्राहुस्ते विनयान्विताः।।45।। आनीतौ द्वौ वणिक्पुत्रौ मुक्तो निगडबंधनात्। ततो महाजनौ नत्वा चंद्रकेतुं नृपोत्तम्।।46।। स्मरंतौ पूर्ववृत्तांत नोचतुर्भयविहव्लौ। राजावणिक्सुतौ वीक्ष्य वचः प्रोवाच सादरम्।।47।।

इतना कहकर भगवान अंतर्धान हो गए। सुबह राजा की आंख खुली तो उसने सभी सभासदों को अपने स्वप्न के विषय में बताया। फिर आदेश दिया कि चोरी के अपराध में बंदी उन वैश्यों को तत्काल छोड़ दिया जाए और हमारे समक्ष लाया जाए। सिपाही आदर सहित उन दोनों को राजा के समक्ष ले आए। दोनों ने नम्रता से राजा को नमस्कार किया। वे डर रहे थे कि राजा न जाने अब क्या आज्ञा दे दें, लेकिन उन्हें देखकर बड़े ही आदर भाव से राजा ने कहा–

देवात्प्राप्तं महद्दुःखमिदानीं नास्ति वै भयम्। तदा निगडसंत्याग क्षौर कर्मा। कारयत्।।48।।

वस्त्रालंकारकंदत्त्वा पारितोष्य नृपच्श्र तौ। पुरस्कृत्य वणिक्पुत्रौ वचमातोषयद्भृशम्।।49।। पुरानीतं तुयद्द्रव्यं द्विगुणीकृत्य दत्तवान्। प्रोवाज तौ ततो राजा गच्छ साधो निजाश्रमम्।।50।। राजानं प्रणिपत्याह गंतव्यं त्वप्रसादतः। इत्युक्त्वा तौ महावैश्यौ जग्मतुः स्वगृहं प्रति।।51।।

'भगवान ने आपको कष्ट दिया है, किन्तु अब डरने की कोई बात नहीं है।' यह कहकर राजा ने बेड़ियां कटवाकर उनकी हजामत वगैरह बनवाई और गहनों–वस्त्रों से उन्हें अलंकृत कर उनकी प्रशंसा की। उनका जो धन छीना था, उससे दुगना देकर उन्हें विदा किया।

दोनों ने राजा को प्रणाम किया तथा धन लेकर खुशी–खुशी अपने घर को चल लिए।''

इति श्रीस्कन्द पुराणे रेवाखण्डे सत्यनारायण व्रत कथायां तृतीयोऽध्यायः समाप्तः।
श्रीस्कन्द पुराण के रेवाखण्ड की सत्यनारयण व्रत कथा का तृतीय अध्याय पूर्ण हुआ।
बोलो सत्यनारायण भगवान की जय।
श्रीमान् नारायण, नारायण, नारायण, लक्ष्मी नारायण, नारायण, नारायण।

चतुर्थोऽध्यायः

सूत उवाच–यात्रां तु कृतवान् साधुर्मग्ङलायनपूर्विकाम्। ब्राह्मणेभ्यो धनं दत्त्वा तदा तु नगरं ययौ।।1।। कियद्दूरं गते साधौ सत्यनारायणः प्रभुः। जिज्ञासां कृतवान् साधो किमस्ति तव नौस्थितम्।।2।। ततो महाजनौ मत्तौ हेलया च प्रहस्य वै। कथं पृच्छसि भो दण्डिन् मुद्रां नेतुं किमच्छसि।।3।। लता पत्रादिकं चैव वर्तते तरणौ मम। निष्ठुरं च वचः श्रुत्वा सत्यं भवतु ते वचः।।4।।

सूत जी बोले–''इस प्रकार साधु नामक वैश्य मंगल स्मरण करके और ब्राह्मणों को दक्षिणा आदि देकर अपने घर चल दिया। अभी वह कुछ ही दूर चला था कि भगवान सत्यनारायण ने साधु वैश्य की मनोवृत्ति जानने के उद्देश्य से दंडी का वेश धारण कर उससे पूछा–'हे वैश्य! तेरी नाव में क्या है?'

धन के मद में चूर वैश्य ने कहा–'हे दंडी स्वामी! क्या तुम्हें मुद्रा चाहिए। मेरी नाव में तो बेल पत्र भरे हैं।'
वैश्य के ऐसे निष्ठुर वचन सुनकर दंडी वेशधारी भगवान सत्यनारायण ने कहा–'हे वैश्य! तुम्हारा कहना सत्य हो।'

एवमुक्त्वा गतः शीघ्रं दंडी तस्य समीपतः। कियद् दूरं ततो गत्वा स्थितः सिन्धुसमीपतः।।5।। गते दंडिनि साधुच्श्र कृतनित्यक्रियस्तदा। उत्थितां तरणिं दृष्ट्वा विस्मयं परमं ययौ।।6।। दृष्ट्वा लतादिकं चैव मूर्च्छितोन्यप तद्भुवि। लब्धसंज्ञोवणिक्पुत्रस्ततच्श्रितान्वितोऽभवत्।।7।।

तदा तु दुहितः कांतो वचनंचेदमब्रवीत्। किमर्थं क्रियते शोकः शापो दत्तच्श्र दंडिना।।8।। शक्यते तेन सर्वं हि कर्तुं चात्र न संशयः। अतस्तच्छरणंयामो वाञ्छितार्थो भविष्यति।।9।।

इतना कह दंडी वैश्य के पास से हटकर कुछ दूर समुद्र के किनारे जाकर बैठक गए। दंडी के जाने के बाद साधु ने महसूस किया कि नाव काफी हल्की हो गई है और कुछ फूली हुई लग रही हैं। वह बहुत चकित हुआ और कपड़ा हटाकर देखा। धन के स्थान पर बेल–पत्र देखकर उसे मूर्च्छा आ गई। उसके जमाता ने उसे सम्भाला और जल आदि छिड़ककर होश में लाया। होश में आने पर वह अपने धन के लिए विलाप करने लगा। तब उसके दामाद ने कहा–'इस प्रकार शोक क्यों करते हैं? यह उस दंडी स्वामी का शाप है। वह दंडी सर्व–समर्थ हैं, इसमें संशय नहीं। उनकी शरण में चलिए, वहां जाने पर ही मनवांछित फल मिलेगा।'

जामातुर्वचनं श्रुत्वा तत्सकाशं गतस्तदा। दृष्ट्वा च दंडिनं भक्त्या नत्वा प्रोवाज सादरम्।।10।। क्षमस्व चापराधं मे यदुक्तं तव सिन्नधौ। एवं पुनः पुनर्नत्वा महाशोकाकुलोऽभवत्।।11।। प्रोवाच वचनं दण्डी विलपन्तं विलोक्य च। मा रोदीः शृणु मद्वाक्यं मम पूजाबहिर्मुखः।।12।। ममाज्ञया च दुर्बुद्धे लब्धं दुःखं मुहुर्मुहुः। तच्छ्रुत्वाभगवद्वाक्यं स्तुति कर्तुं समु। तः।।13।। साधु उवाच–त्वश्रव्ायामोहिताः सर्वे ब्रह्मा। ास्त्रिदिवौकसः। न जानंति गुणन् रूपं तवाश्चर्यमिदं प्रभो।।14।।

दामाद का कहना मानकर वैश्य दंडी स्वामी की शरण में गया और प्रणाम कर आदरपूर्वक बोला–'हे प्रभु! मैंने जो कुछ भी आपसे कहा था, उसके लिए मुझे क्षमा कर दें।' ऐसा कहते समय वह महाशोक से व्याकुल हो उठा।

वैश्य को रोते देखकर दंडी स्वामी ने कहा–'रोओ मत! सुनो साधु! तुम मेरी पूजा से विमुख हुए हो। हे कुबुद्धि! इसलिए मेरी आज्ञा से ही तू बार–बार दुःख भोग रहा है।' अब वैश्य को सारी बात समझ में आ गई। वह विनती करते हुए बोला–'हे प्रभु! आपकी माया को तो ब्रह्मादि भी नहीं समझ सके, फिर मैं भला आपकी लीला को कैसे समझ सकता हूँ? ब्रह्मादि भी आपके अद्भुत रूप व गुणों को नहीं जानते।

मूढ़ोऽहंत्वां कथं जाने मोहितस्तव मायया। प्रसीद पूजयिष्यामि यथा विभवविस्तरैः।।15।। पुरा वित्तं च तत्सर्वं त्राहि माम् शरणागतम्। श्रुत्वा भक्तियुतं वाक्यं परितुष्टो जनार्दनः।।16।। वरं च वांछितं दत्त्वा तत्रैवान्तर्दधे हरिः। ततो नावं समारूह्य दृष्ट्वा वित्तप्रपूरिताम्।।17।। कृपया सत्यदेवस्य सफलं वांछितं मम। इत्युक्त्वा स्वजनैः सार्धं पूजां कृत्वा यथाविधिः।।18। हर्षेण चाभवत्पूर्णः सत्यदेवप्रसादतः। नावं संयोज्ययंतेन स्वदेशगमनं कृतम्।।19।।

हे प्रभु! मुझ पर प्रसन्न हों। मैं माया से भ्रमित मूढ़ बुद्धि आपको कैसे पहचान सकता हूं। मैं अपनी समार्थ्य अनुसार आपकी पूजा करूंगा, कृप्या प्रसन्न हों। हे प्रभु! मेरा धन जैसा पहले था, वैसा ही कर दें। मैं आपकी शरण में हूं, मेरी रक्षा करें।'

वैश्य के ऐसे भक्तियुक्त वचनों को सुनकर भगवान सत्यनारायण प्रसन्न हुए और वैश्य को मनचाहा वर देकर अंतर्धान हो गए। तब वैश्य अपनी नाव पर आया तो उसने उसे धन से भरी पाया। वह बोला–' भगवान सत्यदेव की कृपा से मेरी मनोकामना पूर्ण हुई हैं।' फिर उसने अपने जमाता और साथियों सहित भगवान सत्यनारायण की पूजा की। भगवान सत्यदेव की कृपा पाकर साधु बहुत प्रसन्न हुआ। फिर नाव द्वारा अपने देश को चल दिया।

साधुर्जामातरं प्राह पश्य रत्नपुरीं मम। दूतं च प्रेषयामास निजवित्तस्य रक्षकम्।।20।। ततोऽसौ नगरं गत्वा साधुभार्यां विलोक्य च। प्रोवाच वांछितं वाक्यं नत्वा बद्धांजलिस्तदाः।।21।। निकटे नरस्यैव जामात्रा सहितो वणिक्। आगतो बन्धुवर्गैश्च वित्तैश्च बहुभिर्युतः।।22।। श्रुत्वा दूतखाद्वाक्यं महाहर्षवती सती। सत्यपूजां ततः कृत्वा प्रोवाच तनुजां प्रति।।23।। व्रजामि शीघ्रमागच्छ साधुसंदर्शनाय च। इति मातृवचः श्रुत्वा व्रतं कृत्वा समाप्य च।।24।।

अपने नगर के तट पर पहुंचकर उसने एक दूत को अपने घर भेजा। दूत ने साधु वैश्य के घर जाकर बताया कि आपके पति व जमाता सकुशल लौट आए हैं। यह जानकर वैश्य की पत्नी लीलावती अति प्रसन्न हुई। उस समय वह अपनी पुत्री के साथ भगवान सत्यनारायण की कथा व पूजन कर रही थी। कथा समाप्त कर उसने प्रसाद ग्रहण किया और अपनी पुत्री से बोली–'बेटी! मैं जाकर तेरे पिता को देखती हूं, तू प्रसादि ग्रहण करके आ जाना।' कहकर वह चली गई।

कन्या ने काम समाप्त किया और बिना प्रसाद व चरणामृत ग्रहण किए वह भी अपने पति से मिलने चल दी।

प्रसादं च परित्यज्य सापि पतिं प्रति। तेन रूष्टः सत्यदेवो भर्तारं तरणिं तथा।।25।। संहृत्य च धनैः। सार्धं जले तस्यावमज्जयत्। ततः कलावती कन्या न विलोक्य निजं पतिम्।।26।। शोकेन महता तत्र रूदती चापतद् भुवि। दृष्ट्वा तथा निधां नावं कन्या च बहुदुःखिताम्।।27।। भीतेन मनसा साधुः किमाच्श्रर्यमिदं भवेत्। चिंत्यमानाच्श्रते सर्वेबभूवुस्तरणिवाहकाः।।28।। ततो लीलावती कन्यां दृष्ट्वा सा विव्हलाभवत्। विललापातिदुःखेन भर्तारं चेदमब्रवीत।।29।।

प्रसाद ग्रहण न करके वह पति के पास पहुंची। इस प्रकार प्रसाद का अपमान करते देख भगवान सत्यदेव रूष्ट हो गए। उन्होंने उसके पति तथा धन से भरी नाव को जल में डूबो दिया। यह देखकर कन्या को बड़ा दुःख हुआ और वह चक्कर खाकर भूमि पर गिर पड़ी। नाव को डूबते तथा कन्या मूर्च्छित देखकर साधु को बड़ा आश्चर्य हुआ। मल्लाह भी अचरच करने लगे। लीलावती बेटी की ऐसी हालत देखकर बड़ी व्याकुल हुई और अपने पति से बोली–

इदानीं नौकयासार्धं कथंसोऽभूदलक्षितः। न जाने कस्य देवस्य हेलया चैव सा हृता।।30।। सत्यदेवस्य माहात्म्यं ज्ञातु वा केन शक्यते। इत्युक्त्वा विललापैव ततच्श्र स्वजनैः सह।।31।। ततो लीलावती कन्यां क्रौडे कृत्वा रूरोदह। ततः कलावती कन्या नष्टे स्वामिनिदुःखिता।।32।। गृहीत्वापादुके तस्यानुगतुंचमनोदधे। कन्यायाच्श्ररितं दृष्ट्वा सभार्यः सज्जनोवणिक्।।33।। अतिशोकेनसंतप्ताच्श्रिन्तयामास धर्मवित्। हृतं वा सत्यदेवेन भ्रांतोऽहं सत्यमायया।।34।।

हे स्वामी! नाव सहित जमाता कहां और कैसे गायब हो गए। मुझे तो लगता है कि यह अवश्य ही किसी देवता का कोप है। आखिर भगवान सत्यनारायण की लीला को कौन समझ सका है।' यह सुनकर वह पुत्री के साथ विलाप करने लगी। उसकी पुत्री ने कहा कि वह भी अपने पति के वियोग में यहीं जलसमाधि ले लेगी।

यह देखकर वैश्य दुःखी हुआ। उसे समझते देर नहीं लगी कि यह सब भगवान सत्यदेव के कुपित हो जाने के कारण ही हुआ है। पुत्री या पत्नी से अवश्य ही कोई भूल हुई है। आखिर उनकी माया को कौन समझ सकता है। मैं स्वयं उनकी माया से मोहित हूं।
सत्यपूजां करिष्यामि यथाविभवविस्तरैः। इतिवान् सर्वान् समाहूय कथयित्वा मनोरथम्।।35।। नत्वा च दंडवद् भूमौसत्यदेवं पुनःपुनः। ततस्तुष्टः सत्यदेवो दीनानां परिपालकः।।36।। जगाद वचनंचैनं कृपया भक्तवत्सलः। त्यक्त्वा प्रसादं ते कन्यापतिं द्रष्टुं समागता।।37।। अतोऽदृष्टोऽभवत्तस्याः कन्यकायाः पतिर्ध्रुवम्। गृहं गत्वा प्रसादं च भुक्त्वा साऽऽयति चेत्पुनः।।38।। लब्धभर्त्रीसुता साधो भविष्यति न संशयः। कन्यका तादृशं वाक्यं श्रुत्वा गगनमण्डलात्।।39।।

उसने उन्हें अपने पास बुलाकर अपनी शंका व्यक्त की ओर बोला–''मैं विधि–विधान से भगवान सत्यनारायण का पूजन करूंगा, वे मेरी पुत्री को क्षमा करें।'

वह बार–बार भगवान से क्षमा–याचना करने लगा तो भगवान सत्यदेव उस पर प्रसन्न हो गए। तभी भविष्यवाणी हुई–'हे साधु! तेरी पुत्री मेरा प्रसाद छोड़कर अपने पति को देखने आई थी। इसी कारण इसका पति नौका सहित अदृश्य हो गया है। यदि यह घर जाकर प्रसाद ग्रहण करके लिए आए तो इसका पति इसे अवश्य ही मिल जाएगा, इसमें कोई संशय नहीं है।' वैश्य की पुत्री ने भी यह भविष्यवाणी सुनी।
क्षिप्रं तदा गृहं गत्वा प्रसादं च बुभोज सा। सा पच्श्रात् पुनरागम्य ददर्श सुजनं पतिम्।।40।। ततः कलावती कन्या जगाद पितरं प्रति। इदानीं च गृहं याहि विलम्बं कुरूषेकथम्।।41।। तच्छ्त्वा कन्यकावाक्यं संतुष्टोऽतः। पूजनं सत्यदेवस्य कृत्वा विधिविधानतः।।42।। धनैर्बन्धुगणैः सार्द्धं जगाम निजमन्दिरम्। पौर्णमास्यां च संक्रान्तौ कृतवान्सत्यपूजनम्।।43।। इहलोके सुखं भुक्त्वा चान्ते सत्यपुरं ययौ। अवैष्णवानामप्राप्यं गुणत्रयविवर्जितम्।।44।।

वह तत्काल घर गई और प्रसाद गहण किया। जब कन्या लौटकर आई तो उसका पति सही–सलामत वहां उपस्थि था। यह देखकर वह बहुत प्रसन्न हुई और पिता से बोली–'हे पिताजी! अब घर को चलिए, अब क्या देर है।'

हे बेटी! हमें भगवान सत्यदेव का पूजन करना है।' कहकर साधु ने सबके साथ मिलकर भगवान सत्यनारायण की कथा व पूजन किया। फिर अपने बंधु–बांधवों व जमाता सहित घर आ गया। उस दिन के बाद से वह प्रत्येक पूर्णिमा व संक्रांति को भगवान सत्यनारायण का पूजन करते हुए उनके सुख भोगता हुआ अंत में भगवान सत्यनारायण के बैकुंठ लोक चला गया जो देवताओं के लिए भी दुर्लभ है तथा जहां सत्, रज, तम तीनों गुण अप्रभावी रहते हैं।''

इति श्रीस्कन्द पुराणे रेवाखण्डे सत्यनारायण व्रत कथायां चतुर्थोऽध्यायः समाप्तः।

श्रीस्कन्द पुराण के रेवाखण्ड की सत्यनारायण व्रत कथा का चतुर्थ अध्याय पूर्ण हुआ।

बोलो सत्यनारायण भगवान की जय।

श्रीमन् नारायण, नारायण, नारायण, लक्ष्मी नारायण, नारायण, नारायण।

पंचमोऽध्यायः

सूत उवाच–अथान्यच्श्र प्रवक्ष्यामि श्रृणुध्वं मुनिसत्तमाः।। आसीत् तुग्ङध्वजो राजा प्रजापालनतत्परः।।1।। प्रसादं सत्यदेवस्य त्यक्ता दुःखमवाप सः।। एकदा स वनं गत्वा हत्वा बहुविधान्पशून्।।2।। आगत्य वटमूलं च दृष्ट्वा सत्यस्य पूजनम्।। गोपाः कुर्वंति संतुष्टा भक्तियुक्ताः सबांधवाः।।3।। राजा दृष्ट्वा तु दर्पेण न गत्वा न ननाम सः।। ततो गोपगणाः सर्वे प्रसादं नृपसन्निधौ।।4।।

सूत जी ने कहा–''हे मुनिगणो सुनो! अब मैं तुम्हें इससे आगे की कथा सुनाता हूँ। तुंगध्वज नामक एक राजा था जो अपनी प्रजा का संतान की भांति पालन करता था। किन्तु भगवान सत्यनारायण का प्रसाद न लेने से उसे भी बहुत दुःख उठाने पड़े थे। एक दिन राजा शिकार खेलने के लिए वन में गया, जहां उसने बहुत से जीवों का शिकार किया। वहीं एक वटवृक्ष के नीचे उसने कुछ ग्वालों को भगवान सत्यनारायण का पूजन करते देखा। किन्तु गर्व के कारण न तो वह पूजन स्थल तक गया और न ही भगवान को प्रणाम किया। फिर भी गोप–ग्वाले प्रसाद लेकर राजा के पास गए।

संस्थाप्य पुनरागत्यं भुक्त्वा सर्वे यथेप्सितम्।। ततः प्रसादं संत्यज्य राजा दुःखमवाप सः।।5।। तस्य पुत्रशतं नष्टं धनधान्यादिकं च यत्। सत्यदेवेन पतत्सर्वं नाशित मम निश्चितम्।।6।। अतस्तत्रैव गच्छामि यत्र देवस्य पूजनम्। मनसा तु विनिश्चित्य ययौ गोपालसन्निदौ।।7।। ततोऽसौ सत्यदेवस्य पूजां गोपगणैःसह। भक्ति श्रद्धान्वितो भूत्वा चकारविधिना नृपः।।8।। सत्यदेव प्रसादेन धनपुत्रान्वितोऽभवत्। इहलोके सुखं भुक्त्वा चांते सत्यपुरं ययौ।।9।।

प्रसाद राजा के समीप रखकर वे पूजन स्थल को लौट गए। राजा ने प्रसाद की ओर देखा भी नहीं, जिसके कारण उसे बड़ा ही दुःख भोगना पड़ा। उसके सौ पुत्र, धन–धान्य व राज्य सभी कुछ नष्ट हो गए। अतः राजा वहीं पहुंचा जहां भगवान सत्यदेव का पूजन हो रहा था। वहां जाकर राजा ने ग्वाल–बालों के संग भगवान सत्यनारायण का पूजन किया और क्षमा–याचना की। इससे भगवान सत्यनारायण प्रसन्न हो गए। उनकी कृपा से उसे पुत्रादि सब कुछ पुनः प्राप्त हो गया। फिर इस जीवन में सुख भोगकर अंत में वह सत्यनारायण भगवान के लोक को चला गया।

यह इदं कुरूते सत्यव्रतं परमदुर्लभम्। श्रृणोति च कथां पुण्यां भक्तियुक्तः फलप्रदाम्।।10।। धनधान्यादिकं तस्य भवेत्सत्यप्रसादतः। दरिद्रोलभते वित्तं बद्धी मुच्येत बंधनात्।।11।। भीतो भयात्प्रमुच्येत सत्यमेव न संशयः। ईप्सितं च फलं भुक्त्वा चांते सत्यपुरं व्रजेत्।।12।। इति वैकथितं विप्राः सत्यनारायणं व्रतम्। यत्कृत्वा सर्वदुःखेभ्यो मुक्तो भवति मानवः।।13।। विशेषतः कलियुगे सत्यपूजा फलप्रदा। केचित्कालं वदिष्यंति सत्यमीशं तमेवच।।14।।

इस परम दुर्लभ सत्यनारायण व्रत को जो भी धारण करता है और इसकी फलदायी कथा को भक्तिपूर्वक सुनता है, उसे श्री सत्यनारायण की कृपा से भरपूर धन–धान्य आदि प्राप्त होते हैं। दरिद्र धन पाते हैं, बंदी बंधनों से मुक्त हो जाते हैं, भयग्रस्त का भय मिट जाता है, यह निःसंदेह सत्य है। इस कथा व व्रत के प्रभाव से व्यक्ति जीवन भर सुख भोगकर अंत में सत्यलोक को पाता है। हे विप्रो! यह मैंने सत्यनारायण व्रत की कथा कही। इसके प्रभाव से व्यक्ति सब बंधनों से मुक्त हो जाता है। यह व्रत–पूजन कलियुग में विशेष फलदायी है।

सत्यनारायणं केचित्सत्यदेवं तथापरे। नानारूपधरो भूत्वा सर्वेषामीप्सित प्रदः।।15।। भविष्यति कलौ सत्यव्रतरूपी सनातनः। श्रीविष्णुना धृतं रूपं सर्वेषामीप्सितप्रदम्।।16।। य इदं पठते नित्यं श्रृणोति मुनिसत्तमाः। तस्य नश्यन्ति पापानि सत्यदेवप्रसादतः।।17।। व्रतं यस्तु कृतं पूर्वं सत्यनारायणस्य च। तेषां त्वपरजन्मानि कथयामि मुनीश्रव्राः।।18।। सतानंदो महाप्राज्ञः सुदामा ब्राह्मणो ह्यभूत। तस्मिन् जन्मनि श्रीकृष्णं ध्यात्वा मोक्षमवापह।।19।।

भगवान सत्यनारायण अलग–अलग समय में अलग–अलग रूप धरकर अपने भक्तों को सुख पहुंचाते हैं। कोई उन्हें काल कहता है, कोई ईश्वर। कोई सत्यदेव तो कोई सत्यनारायण। अनेक रूप धरकर भी वे मनचाहा फल देने वाले हैं। कलियुग में सत्यव्रतरूपी सनातन सत्यनारायण ही होंगे। सभी को मनचाहा फल देने के लिए भगवान विष्णु ने सत्यनारायण का रूप धर लिया है। हे मुनिगण! जो इस कथा का नित्य पाठ करेंगे अथवा सुनेंगे, श्री सत्यनारायण की कृपा से उनके समस्त पाप नष्ट हो जाएंगे।''

सूत जी बोले–''हे मुनीश्वरो! जिन्होंने सत्यनारायण का व्रत पहले किया था, उनके अलगे जन्म की कथा सुनाता हूँ। सुनो, महान बुद्धिमान शतानंद ब्राह्मण सुदामा हुआ और श्रीकृष्ण की आराधना कर मोक्ष को प्राप्त हुआ।

काष्ठभारवहो भिल्लो गुहराजो बभूव ह। तस्मिज्ञ्जन्मनिसंसेव्य रामं मोक्षं जगाम वै।।20।। उल्कामुखो महाराजो नृप दृशरथोऽभवत्। श्रीरग्ङनाथं संपूज्य श्रीवैकुंठं तदाऽगमत्।।21।। धार्मिकः सत्यसन्धचश्र साधुर्मोरध्वजोऽभवत्। देहार्धंक्रकचैश्छित्त्वा दत्वा मोक्षमवाप है।।22।। तुग्ङध्वजो महाराजः स्वायंभुरभवत्किल। सर्वान्भागवतान् कृत्वा श्री वैकुंठं तदाऽगमत्।।23।।

लकड़ी बेचने वाला लकड़हारा भील गुहराज बना और श्रीरामजी की सेवा कर मोक्ष का अधिकारी हुआ। राजा उल्कामुख महाराज दशरथ हुए और श्री रंगनाथ की पूजा कर बैकुंठवासी हुए। साधु नामक वैश्य सत्यव्रतधारी मोरध्वज राजा बना। वह आधा शरीर आरे से चीरकर दान देने के कारण मोक्ष को प्राप्त हुआ। राजा तुंगध्वज स्वयंभुव मनु हुए। वे सभी को वैष्णवपथ पर लगा, भागवत बना बैकुंठ को गए।

इति श्रीस्कन्द पुराणे रेवाखण्डे सत्यनारायण व्रत कथायां पंचमोऽध्यायः समाप्तः।

श्रीस्कन्द पुराण के रेवाखण्ड की सत्यनारायण व्रत कथा का पंचम अध्याय पूर्ण हुआ।

बोलो सत्यनारायण भगवान की जय।

श्रीमन् नारायण, नारायण, नारायण, लक्ष्मी नारायण, नारायण, नारायण।

इसके बाद भगवान् सत्यनारायण आरती करे प्रसाद वितरण करे

अभ्यास प्रश्न –

1. सत्यनारायण व्रत कथा में कितने अध्याय है?
2. भगवान सत्यनारायण का विधिपूर्वक व्रत करने से तत्काल ही किसकी प्राप्ती होती है ?
3. भगवान सत्यनारायण का विधिपूर्वक व्रत करने से अंत में प्राणी किसका अधिकारी हो जाता है?
4. चौथे अध्याय में कितने श्लोक है?
5. पॉचवे अध्याय में कितने श्लोक है?

भगवान् सत्यनारायण की आरती –

नमोऽस्त्वन्ताय सहस्रमूर्तये, सहस्रपादाक्षिशिरोरु बाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः।।
जय लक्ष्मीरमणा, श्रीलक्ष्मीरमणा।
सत्यनारायण स्वामी जन–पातक–हरणा।। जय०।। टेक।।
रत्नजटित सिंहासन अद्भुत छबि राजै।
नारद करत निराजन घण्टा ध्वनि बाजै।। जय०।।
प्रकट भये कलि कारण, द्विजको दरस दियो।
बूढ़े ब्राह्मण बनकर कञ्चन महल किया।। जय०।।
दुर्बल भील कठारो, जिनकी विपत्ति हरी।। जय०।।
वैश्य मनोरथ पायो, श्रद्धा तज दीन्हीं।
सो फल भोग्यो प्रभुजी फिर अस्तुति कीन्हीं।। जय०।।
भाव–भक्ति के कारण छिन छिन रूप धर्यो।
श्रद्धा धारण कीनी, तिनको काज सर्यो।। जय०।।
ग्वाल–बाल सँग राजा, वन में भक्ति करी।
मनवाञ्छित फल दीन्हों दीनदयालु हरी।। जय०।।
चढ़त प्रसाद सवायो कदलीफल, मेवा।
धूप–दीप–तुलसी से राजी सत्यदेवा।। जय०।।
सत्यनारायणजी की आरती जो कोई नर गावै।
तन–मन–धन सम्पति मन–वाञ्छित फल पावै।। जय०।।

ॐ भूभुर्वः स्वः विष्णवे नमः, आरार्तिकं समर्पयामि।(पुष्पांजलि अर्पित करे।) आरती के बाद जल गिरा दे।

पुष्पाञ्जलि – (हाथ में अक्षत–पुष्प लेकर भगवान् विष्णु की प्रार्थना करे) :–

ॐयज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।

ॐ भूभुर्वः स्वः विष्णवे नमः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पांजलिं समर्पयामि।(पुष्पांजलि अर्पित करे।)

1.4 सारांश

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप जान चुके है कि समस्त वेदादि शास्त्रों में नित्य और नैमित्तिक कर्मों को मानव के लिये परम धर्म और परम कर्तव्य कहा है। संसार में सभी मनुष्यों पर तीन प्रकार के ऋण होते हैं–देव–ऋण, पितृ–ऋण और मनुष्य(ऋषी)ऋण। नित्य कर्म करने से मनुष्य तीनों ऋणों से मुक्त हो जाता है इस लिये मनुष्य अपने ऋणों से मुक्त होने के लिये कर्मकाण्ड का अध्ययन करता है तथा अपने जीवन में इसको पालन करता है। क्योंकि अपने ऋणों से मुक्त कर्मकाण्ड के माध्यम से ही होसकता है और उसके पास दूसरा कोई रास्ता नही है। इस लिये कर्मकाण्ड का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है।इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् भगवान सत्यनारायण का विधिपूर्वक व्रत करने से तत्काल ही सुख प्राप्त होता है और अंत में प्राणी मोक्ष का अधिकारी हो जाता है।'श्री विष्णु के मुख से ऐसे प्रीतियुक्त वचन सुनकर नारद जी ने पूछा–'प्रभु! इस व्रत के करने से क्या फल प्राप्त होता है, इसकी विधि और समय क्या है तथा इसे पहले किस–किसने किया है। कृपा कर यह सभी विस्तारपूर्वक बताएं।' विष्णु भगवान ने कहा–'हे नारद! यह व्रत दुःख और शोक को दूर करने वाला है। इससे धन–धान्य में वृद्धि होती है तथा सौभाग्य व संतान की प्राप्ति होती है। प्राणी को चारों दिशाओं में विजयश्री दिलाने वाले इस व्रत को व्यक्ति किसी भी दिन पूर्ण श्रद्धा व भक्ति से कर सकता है।

1.5 पारिभाषिक शब्दावली

शब्द	अर्थ
गुहराजः	गुहराजा
बभूव	हुए
तस्मिन्	उसमें
रामं मोक्षं	राम मोक्ष को
जगाम	गये
उल्कामुखो	उल्कामुख नाम का राजा
नृप	राजा
अभवत्	हुए
श्रीरग्ङनाथं	श्रीरंगनाथ को
संपूज्य श्रीवैकुंठं	पूजा करके
तदाऽगमत्	तब गये
धार्मिकः	धार्मिक

1.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. सत्यनारायण व्रत कथा में पॉच अध्याय है।
2. भगवान सत्यनारायण का विधिपूर्वक व्रत करने से तत्काल ही सुख की प्राप्ती होती है।
3. भगवान सत्यनारायण का विधिपूर्वक व्रत करने से अंत में प्राणी मोक्ष का अधिकारी हो जाता है।
4. चौथे अध्याय में चौवालीस श्लोक है।
5. पॉचवे अध्याय में तेईस श्लोक है।

1.7 सन्दर्भ ग्रन्थ

1. सत्यनारायणव्रत कथा – लेखक – शिवदत्त मिश्र
प्रकाशक का नाम– चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी
2. सर्वदेव पूजापद्धति – लेखक का नाम– शिवदत्त मिश्र
प्रकाशक का नाम– चौखम्भा सुरभारती प्रकाषन वाराणसी
3. धर्मशास्त्र का इतिहास, लेखक – डॉ. पाण्डुरङ्ग वामन काणे
प्रकाशक :– उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान।
4 नित्यकर्म पूजा प्रकाश, लेखक :– पं. बिहारी लाल मिश्र,
प्रकाशक :– गीताप्रेस, गोरखपुर।
5 अमृतवर्षा, नित्यकर्म, प्रभुसेवा, संकलन ग्रन्थ
प्रकाशक :– मल्होत्रा प्रकाशन, दिल्ली।
6 कर्मठगुरुः , लेखक – मुकुन्द वल्लभ ज्योतिषाचार्य
प्रकाशक – मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।
7 हवनात्मक दुर्गासप्तशती, सम्पादक – डॉ. रवि शर्मा
प्रकाशक – राष्ट्रीय संस्कृत साहित्य केन्द्र, जयपुर।
8 शुक्लयजुर्वेदीय रुद्राष्टध्यायी, सम्पादक – डॉ. रवि शर्मा
प्रकाशक – अखिल भारतीय प्राच्य ज्योतिष शोध संस्थान, जयपुर।
9 विवाह संस्कार, सम्पादक – डॉ. रवि शर्मा
प्रकाशक – हंसा प्रकाशन, जयपुर

1.8 सहायक पाठ्यसामग्री

1.पुस्तक का नाम–सत्यनारायण व्रत कथा, लेखक – शिवदत्त मिश्र
प्रकाशक का नाम– चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी

1.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1.सत्यनारायण व्रत की पूजन विधि को लिखिए ।
2. सत्यनारायण व्रत कथा लिखिए ।

इकाई - 2 महामृत्युञ्जय जप

इकाई संरचना

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 महामृत्युञ्जय मन्त्र

2.4 जप विधि

2.5 सारांश

2.6 शब्दावली

2.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

2.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

2.9 निबन्धात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

कर्मकाण्ड से सम्बन्धित खण्ड दो की यह दूसरी इकाई है इस इकाई के अध्ययन से आप बता सकते है कि महामृत्युञ्जय क्या है? महामृत्युञ्जय भगवान शिव का अमोघ अस्र है, जिसका प्रयोग जन मानस के लिये अपात परिस्थितियों में कहा गया है।

भगवान शिव के प्रसन्नार्थ इस महामृत्युञ्जय मन्त्र का निर्माण ऋषियों के द्वारा किया गया है।

इससे पूर्व की इकाई में आपने सत्यनारायण व्रत कथा को समझ लिया है, इस इकाई में आप महामृत्युञ्जय मन्त्र को समझेगें।

2.2 उदेश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप वेदशास्त्र से वर्णित महामृत्युंजय मन्त्र के विषय में अध्ययन करेंगे तथा समझेगें कि -

1. महामृत्युञ्जय क्या है।
2. महामृत्युञ्जय मन्त्र का प्रयोग कब किया जाता है।
3. महामृत्युञ्जय मन्त्र का उच्चारण कैसे किया जाता है।
4. पूजन की विधि क्या है।
5. महामृत्युञ्जय मन्त्र का महत्व क्या है।

2.3 महामृत्युञ्जय मन्त्र

आगे के पृष्टों में विभिन्न प्रकार की पूजा प्रणाली का प्रस्तुती करण किया गया है जो कि महामृत्युंजय मन्त्र से संजीवनी के लाभ प्रदान करने में पूर्णतः सक्षम है। इसी पूजन प्रणाली के बाद प्रयोग समर्पण से पहले साधक गण स्तोत्र कवचादि का पाठ करके समुचित लाभ उठाते हैं परन्तु कभी–कभी यह उपासना काम्य उपासना के रूप में भी की जाती है

काम्य उपासना में महामृत्युंजय मन्त्रों का जपादि किया जाता है। इसमें कौन कौन से मन्त्र जपे जाते हैं यह तथ्य सर्वसाधारण के लिये जान लेना अत्यधिक आवश्यक है अतः ध्यान दे कि–

महामृत्युञ्जय एकाक्षरी मन्त्र (ह्रौं)।

महामृत्युञ्जय का त्र्यक्षरीमृत्युञ्जय मन्त्र (**ॐ जूं सः**)।

महामृत्युञ्जय का चतुरक्षरी मन्त्र (**ॐ वं जूं सः**)।

महामृत्युञ्जय का नवाक्षरी मन्त्र (**ॐ वं जूं सः पालय पालय**)।

महामृत्युञ्जय का दशाक्षरी मन्त्र (**ॐ वं जूं सः मां पालय पालय**)।

इस मन्त्र का स्वयं के लिये जप इसी भॉति होगा। यदि किसी अन्य व्यक्ति के लिये यह

जप किया जा रहा हो तो (मां) के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम लें।

महामृत्युञ्जय का पंचदशाक्षरी मन्त्र (**ॐ वं जूं सः मां 'या अमुकं' पालय पालय सः जूं ॐ**)।

महामृत्युञ्जय का द्वात्रिंशाक्षरी मन्त्र वेदोक्त मन्त्र है जो कि निम्नलिखित है–

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवद्र्धनम्। उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्त्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

उपरोक्त द्वात्रिंशाक्षरी मन्त्र का विचार –

इस मन्त्र में आये प्रत्येक शब्द का अर्थ स्पष्ट करना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि शब्द ही मन्त्र है और मन्त्र ही शक्ति है। इस मन्त्र में से सबसे पहले 'त्र' शब्द
आता है यह शब्द ध्रुव शब्द का बोधक है।
इसके बाद **'यम'** शब्द आता है जो कि अध्वर वसु का बोधक है।
इसी प्रकार 'ब' शब्द सोम वसु का
'कम' वरुण का।
'य' वायु का ।
'ज' अग्नि का।
'म' शक्ति का ।
'हे' प्रभास का।
'सु' वीरभद्र का।
'ग' शम्भु का।
'न्धि' गिरीश का।
'पु' अजैक का।
'ष्टि' अहिर्बुध्न्य का।
'व' पिनाक का।
'र्ध' भवानी पति का ।
'नम' कपाली का ।
'उ' दिकपति का।
'र्वा' स्थानु का।
'रु' मर्ग का
'क' धाता का ।
'मि' अर्यमा का।
'व' मित्र अदित्य का।
'ब' वरुण अदित्य का
'न्ध' अंशु का।
'नात' भग अदित्य का।
'मृ' विवस्वान का।

'त्यो' इन्द्र अदित्य का ।

'मु' पुष अत्यि का।

'क्षी'पर्यन्य अदित्य का।

'य' त्वष्टा का।

'मा' विष्णु अदित्य का।

'मृ' प्रजापति का।

'तात' वषट् का बोधक है।

इस मन्त्र के स्पष्टीकरण में अनेक गूढ़तायें हैं क्योंकि यही वो वेदोक्त महामृत्युञ्जय मन्त्र है जो कि संजीवनी वि। ा है ।

यहॉ पर मै इसी द्वात्रिंशाक्षरी वेदोक्त मन्त्र के शब्द की शक्ति का स्पष्टी करण करता हूॅ।

'त्र' त्र्यम्बक शब्द त्रि शक्ति तथा त्रिनेत्र का प्रतीक है। यह शब्द तीनों देव अर्थात् ब्रह्मा , विष्णु और महेशर की भी शक्ति का प्रतीक है।

'य' यम तथा यज्ञ का प्रतीक है

'म' मंगल का ।ोतक है।

(यहा पर 'य' तथा 'म' को संलग्न करके यम कहे जाने पर मृत्यु के देवता का प्रतीक हो जाता है)

'ब' बालार्क तेज का बोधक है।

'कं' काली का कल्याणमयी बीज है। काली का एकाक्षरी बीज 'क्रीं' है और उन्हें ककार सर्वांगी माना जाता है।

'य' उपरोक्त वर्णन के अनुसार यम तथा यज्ञ का ।ोतक है।

'जा' जालंधरेश का बोधक है।

'हे' हाकिनी का बोधक है।

'सु' सुप्रभात सुगन्धि तथा सुर का बोधक है।

'गं' गणपति बीज हाने के साथ–साथ ऋद्धि–सिद्धि का दाता है।

'ध' धूमावती का बीज है जो कि अलक्ष्मी का अथात् कंगाली को हटाता है देह को पुष्ट करता है।

'म' महेश का बोधक है।

'पु' पुण्डरीकाक्ष का बोधक है।

'ष्टि' देह में स्थित षट्कोणों का बोधक है जो कि देह में प्राणें का संचार करते है।

'व' वाकिनी का ।ोतक है।

'र्ध' धर्म का ।ोतक है।

'नं' नंदी का बोधक है।

'उ'उमा रूप में पार्वती का बोधक है।

'र्वा' शिव के वॉये शक्ति का बोधक है।

'रु' रूप तथा ऑसु का बोधक है।

'क' कल्याणी का ।ोतक है।

'व' वरुण का बोधक है।
'बं' बंदी देवी का ।ोतक है।
'ध' धंदा देवी का ।ोतक है। इसके कारण देह के विकास समाप्त होते हैं तथा मांस सड़ता नही है।
'मृ' मृत्युंजय का ।ोतक है।
'त्यो' नित्येश का ।ोतक है।
'मु' मुक्ति का ।ोतक है।
'क्षी' क्षेमकरी का बोधक है।
'य' पूर्व वर्णित बोधन।
'मा' आने के लिये मॉग तथा मन्त्रेश का ।ोतक है।
'मृ' पूर्व वर्णित।
'तात' चरणों में स्पर्श का ।ोतक है।

यह पूर्ण विवरण 'देवं भूत्वा देवं यजेत' के अनुसार पुर्णतः सत्य प्रमाणित हुआ है। इस मन्त्र में 32 शब्दों प्रयोग हुआ है।और इसी मन्त्र में **ऊँ लगा देने से 33 हो जाते है। इसे त्रयस्त्रिशाक्षरी मन्त्र कहते है। श्री वसिष्ठ जी ने इन 33 शब्दों के 33 देवता अर्थात् शक्तियॉ निश्चित की है जो निम्न लिखित है।**

इस मन्त्र में 8 वसु, 11रुद्र, 12 आदित्य, 1 प्रजापति तथा 1 वषट् को मना है।

महामृत्युंजय का तान्त्रिक बीजोक्त मन्त्र निम्नलिखित है–

ऊँ भूः भुवः ऊँ स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्ट्विवद्र्धनम्।

उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥ ऊँ स्वः ऊँ भुवः ऊँ भूः ऊँ।।

महामृत्युंजय का संजीवनी मन्त्र अर्थात् संजीवनी वि।ा निम्न लिखित हैं।

ऊँ ह्रौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः ऊँ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्ट्विर्धनम्।

उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ ऊँ स्वः ऊँ भुवः भूः ऊँ सः जूं ह्रौं ऊँ॥

महामृत्युंजय का एक और प्रभावशाली मन्त्र निम्न है।

ऊँ ह्रौं ऊँ जूं सः ऊँ भूर्भुवः स्वः ऊँ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्ट्विर्धनम्।

उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥ ऊँ स्वः भुवः भूः ऊँ सः जूं ह्रौं ऊँ॥

:: अथवा ::

ऊँ ह्रौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्ट्विर्धनम्।

उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ भूर्भुवः स्वरों जूं सः ह्रौं ऊँ॥

इस मन्त्र को महामृत्युञ्जयमन्त्र कहते हैं। अब आप अपनी सुविधा के अनुसार जो भी मन्त्र चाहे चुन ले। और नित्य पाठ में या आवश्यकता के अनुसार प्रयोग में लाएँ।

सदा स्मरण रखें कि –जो भी मन्त्र जपना हो उस जप को शुद्ध तथा शुद्धता से करें। एक निश्चत संख्या में जप करें। पूर्व दिवस में जपे गये मन्त्रों से आगामी दिनों में कम मन्त्र न जपें यदि चाहे तो अधिक मन्त्र जप सकते हैं परन्तु स्मरण यही रखना है कि भूतकाल से वर्तमान काल के मन्त्र कम न हो।

मन्त्र का उच्चारण होंठों से बाहर नही आना चाहिये यदि अभ्यास न होने के कारण यह विधि प्रयुक्त न हो सके तो धीमे स्वर में जप करें।

जप काल में धूप–दीप जलता रहे।
रुद्राक्ष की माला से ही जप करे।
माला को गोमुखी में ही रखें। जब तक जप की संख्या पूर्ण न हो, माला को गोमुखी से न निकालें।
जप काल में शिवजी की प्रतिमा , शिवलिंग या यन्त्र समक्ष रखना चाहिये
महामृत्युञ्जयमन्त्र के सभी जप कुश या कम्बल के आसन पर बैठकर करें।
जिस स्थान पर जपादि का शुभारम्भ हो वही पर आगामी दिनों में भी जप करना चाहिये ।
जप काल में मन को मन्त्र से मिलाएॅं।
मिथ्या सम्भाषण न करें।
स्त्री सेवन न करे।
आलस्य जम्भाई यथाशक्ति त्याग दें।
महामृत्युञ्जयमन्त्र के सभी प्रयोग पूर्व दिशा के तरफ मुख करके ही करें।
जपकाल में दुग्ध मिले जल से शिव जी का अभिषेक करते रहे या शिवलिंग को चढ़ाते रहे।

जप संख्या का नियम

किसी प्रकार से महामारी , जैसे–हैजा, प्लेग, शीतला या अन्य प्रकार के महा उपद्रवों के शान्ति के लिये महामृत्युंजय का **एक करोड़** जप करना चाहिये। जब सामान्य रोग हो, पुत्र प्राप्ति के लिये , स्त्री प्राप्ति के लिये , पति प्राप्ति के लिये , सवालाख जप करना चाहिये। अपमृत्यु का भय हो , भय की आशंका हो तो दश हजार का जप करना चाहिये। यात्रा में यदि भय उपस्थि हो तो एक हजार जप करना चाहिये।

जप के लिये विशेष

यः शास्त्रविधि मृत्सृज्य वर्तते काम कारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं नपरांगितम्।।

इस महावाक्यानुसार शास्त्र की विधि के अनुसार पूजन अर्चन करना चाहिये। मनमानी ढंग से करना या कराना हानि प्रद होता है। प्रयोग कराने के समय शुभ मुहुर्त चन्द्र तारा आदि बलों को दिखाकर तब अनुष्ठान –पुरश्चरण प्रयोग कराना चाहिये। प्रयोग कराते समय शिवमन्दिर देवालयसिद्धस्थान, नदीतट , बिल्व, अश्वस्थवृक्ष के स्थान पर सफाई कराकर अनुष्ठान कराना चाहिये। देवालय, सिद्धस्थान शिवमन्दिर में तो पार्थिवेश्वर की कोई आवश्यकता नही है– किन्तु और सभी स्थानों पाथिवेश्वर शिवलिंग निर्माण करके ही महामृत्युंय आदि का जप विधान सहित करना चाहिये।

प्रयोग पुरश्चरणात्मक हो तो प्रतिदिन की संख्या समान होनी चाहिए, किसी दिन जप अधिक किसी दिन कम नहीं होना चाहिए–इसी प्रकार ब्राह्मण भी प्रतिदिन उतनी ही संख्या में रहें जितनों में प्रथमदिन पुरश्चरण प्रारम्भ किया हो, इसमें उलट– फेर–कमी–बेशी करने से विक्षिप्तता का भय रहता है। जपसंख्या पूर्ण होने पर अर्थात् पुरश्चरण समाप्ति पर जितना जप हुआ हो उसका दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण,तर्पण का दशांश मार्जन और मार्जन का दशांश या कार्यानुसार न्यूनाधिक रूप में ब्राह्मण भोजन कराना चाहिये

शिवपूजन विधि

शिवालय देवालय वा पार्थिवेश्वर शिलिंग के समीप बैठकर पूजन सामग्री का सम्प्रोक्षण

करके आचमन प्रणायाम करे–सर्वप्रथम गौरी गणेश का पूजन करके शिवलिंग का पूजन करे।

एक लकड़ी की चौकी के ऊपर गणेश, षोडशमातृका, सप्तमातृका स्थापित करे। दूसरी चौकी पर नवग्रह, पञ्चलोकपाल आदि स्थापति करे। तीसरी चौकी के उपर सर्वतोभद्र बनाकर बीच में शंकर जी को स्थापित करे। ईशान कोण में घी का दीपक रखे और अपने दायें हाथ में पूजा सामग्री रख लेवे। शुद्ध नवीन वस्त्र पहनकर पूर्वाभिमुख बैठे। कुंकुम (रोली) का तिलक करके अपने दायें हाथ की अनामिका में सुवर्ण की अंगुठी पहनकर आचमन प्राणायाम कर पूजन आरम्भ करे।

पवित्रीकरण–(अधोलिखित मन्त्र को पढते हुए कलश के जल से अपने उपर तथा पूजनादि की सामग्रियों पर जल छिडके) :–

ऊँ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।
ऊँ पुण्डरीकाक्षः पुनातु , ऊँ पुण्डरीकाक्षः पुनातु , ऊँ पुण्डरीकाक्षः पुनातु ,

आचमन (तीन बार आचमन करे) :–

ऊँ केशवाय नमः। ऊँ नारायणाय नमः। ऊँ माधवाय नमः।

प्राणायाम :–

गोविन्दाय नमः बोलकर हाथ धोवे और यदि ज्यादा ही कर सके तो तीन बार पूरक (दायें हाथ के अंगूठे से नाक का दायाँ छेद बन्द करके बायें छेद से श्वास अन्दर लेवे), कुम्भक (दायें हाथ की छोटी अंगुली से दूसरी अंगुली द्वारा बाया छेद भी बन्द करके श्वास को अन्दर रोके), रेचक (दायें अंगूठे को धीरे–धीरे हटाकर श्वास बाहर निकाले) करे।

पवित्रीधारणम् –

ॐ पवित्रेस्त्थो व्वैष्णव्यौसवितुर्व्वः प्रसव उत्पन्नुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्स्य रश्मिभिः।
तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्।।

सपत्नीक यजमान के ललाट में स्वस्तितिलक लगाते हुए मन्त्र को बोले–

ऊँ स्वस्तिन इन्द्रो व्वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा व्विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्ताक्षर्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।।
ऊँ श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्क्न्या वहोरात्रे पाश्र्व्वे नक्षत्राणि रूपमश्वि नौव्व्यात्तम्।
इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्व्वलोकं म ऽइषाण।।

ग्रन्थिबन्धन– (लोकाचार से यजमान का सपत्नीक ग्रन्थिबन्धन करे) :–

ऊँ तम्पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुतवा हिरण्यैः।
नाकङ्गृब्भ्णानाः सुकृतस्यलोके तृतीयपृष्ठेऽअधिरोचने दिवः।।

आसनपूजन (आसन की पूजा करे) :–

ऊँ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम् ।
ऊँ कूर्मासनाय नमः।
ऊँ अनन्तासनाय नमः।
ऊँ विमलासनाय नमः। (सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि)

भूतापसारण (बायें हाथ में सरसों लेकर उसे दाहिने हाथ से ढककर निम्र मन्त्र पढ़े) –

रक्षोहणं व्वलगहनं व्वैष्णवीमिदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि म्मे निष्ट्यो ममात्यो निचखानेदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि म्मे समानोमसमानो निचखानेदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि म्मे सबर्न्धुम सबन्धुर्न्निचखानेदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि म्मे सजातो मसजातो निचखानोत्कृत्याङ्क्रिामि।

ऊँ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामवरोधेन पूजाकर्म समारभे।।

निम्न मन्त्रों को पढते हुए सरसों का सभी दिशाओं में विकिरण करे :–

प्राच्यैदिशे स्वाहार्व्वाच्यै दिशेस्वाहा दक्षिणायै दिशेस्वाहार्व्वाच्यै दिशेस्वाहा प्रतीच्यै दिशे स्वाहार्व्वाच्यै दिशे स्वाहोदीच्यै दिशे स्वाहा र्व्वाच्यै दिशे स्वाहोद्ध्र्वायै दिशेस्वाहा र्व्वाच्यै दिशे स्वाहा व्वाच्यै दिशे स्वाहार्व्वाच्यै दिशे स्वाहा।

पूर्वे रक्षतु गोविन्द आग्नेय्यां गरुड़ध्वजः। दक्षिणे रक्षतु वाराहो नारसिंहस्तु नैर्ऋते।।
पश्चिमे वारुणो रक्षेद्वायव्यां मधुसूदनः। उत्तरे श्रीधरो रक्षेद् ऐशान्ये तु गदाधरः।।
ऊर्ध्वं गोवर्धनो रक्षेद्अधस्ताद्त्रिविक्रमः। एवं दश दिशो रक्षेद्वासुदेवो जनार्दनः।।

कर्मपात्र पूजन् (ताँबे के पात्र में जलभरकर कलश को अक्षतपुञ्ज पर स्थापित करते हुए पूजन करे) :–

ऊँ तत्वाामि ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते जमानो हविर्ब्भिः।
अहेडमानो व्वरुणे हबोद्ध्युरुश समानऽ आयुः प्रमोषीः।। ऊँ वरुणाय नमः।
पूर्वे ऋग्वेदाय नमः। दक्षिणे यजुर्वेदाय नमः।
पश्चिमे सामवेदाय नमः। उत्तरे अथर्ववेदाय नमः।
मध्ये साङ्गवरुणाय नमः। सर्वोपचारार्थे चन्दन अक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अंकुशमुद्रया सूर्यमण्डलात्सर्वाणि तीर्थानि आवाहयेत् (दायें हाथ की मध्यमा अङ्गुली से जलपात्र में सभी तीर्थों का आवाहन करे) :–

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेस्मिन्सन्निधिं कुरु।।
कलशस्य मुखे विष्णु कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।।
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।।
अश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बु समाश्रिताः।
गायत्री चात्र सावित्री शान्तिः पुष्टिकरा तथा।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।।

उदकेन पूजासामग्रीं स्वात्मानं च सम्प्रोक्षयेत् (पात्र के जल से पूजन सामग्री एवं स्वयं का प्रोक्षण करे) :–

ऊँ आपो हिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्ज्जेदधातन। महेरणायचक्षसे।।
योवः शिवतमोरसस्तस्यभाजयते हनः। उशतीरिवमातरः।।
तस्माऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्वथ आपोजनयथाचनः।।

दीपपूजनम् (देवताओं के दाहिने तरफ घी एवं विशेष कर्मों में बायें हाथ की तरफ तेल का दीपक जलाकर पूजन करना चाहिए) :–

अग्निर्द्देवता व्वातो देवता सूर्य्यो देवता चन्द्रमा देवता व्वसवो देवता रुद्रा देवतादित्त्या देवता

मरुतो देवता विश्श्वे देवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता व्वरुणो देवता।

ऊँ दीपनाथाय नमः। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि (गन्ध अक्षत पुष्प दीपक के सामने छोडे।)

प्रार्थनाः—(हाथ में अक्षत—पुष्प लेकर अधोलिखित श्लोक को पढते हुए दीपक के सामने छोड़े

ऊँ भो दीप देवस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत।
यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात्तावदत्र स्थिरो भव।।

सर्वप्रथम शिवपूजन की अधिकार प्राप्ति के लिये प्रायश्चित्तरूप में गोदान का संकल्प करना चाहिये

प्रायश्चित संकल्प हाथ में जल अक्षत—पुष्प कुश तथा द्रव्य लेकर प्रायश्चित संकल्प करे—

हरिः ऊँ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ऊँ तत्सद। ँतस्य श्रीमदभगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अ। श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्द्धे तदादौ श्रीश्वेतवाराहकल्पे सप्तमे वैवस्वतमन्वतरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे तत्रापि परमपवित्रे भारतवर्षे आर्यावर्त अन्तर्गते अमुकदेशे (अपने देश का नाम) अमुकक्षेत्रे (अपने राज्य का नाम) अमुकनगरे (अपने नगर का नाम) श्री गङ्गायमुनयोः अमुकभागे (अपने स्थान की दिशा) नर्मदाया अमुक भागे (अपने स्थान की दिशा) चान्द्रसंज्ञकानां प्रभवादिषष्टिसम्वत्सराणां मध्ये अमुक नाम्नि सम्वत्सरे (सम्वत्सर का नाम) श्रीमन्नृपति विक्रमार्कसमयादमुकसंख्यापरिमिते विक्रमाब्दे (वर्तमान विक्रम सम्वत) अमुकायने (वर्तमान सम्वत्) अमुकर्तौ (वर्तमान ऋतु) अमुकमासे (वर्तमान मास) अमुकपक्षे (वर्तमान पक्ष) अमुकतिथौ (वर्तमान तिथि) अमुकवासरे अमुकगोत्रः (यजमान का गौत्र) अमुकशर्मा अहं क्रियमाण महामृत्युञ्जय जपकर्मणि अधिकार प्राप्त्यर्थं कायिकवाचिकमानसिकसांसर्गिकचतुर्विधपापशमनार्थं शरीरशुद्ध्यर्थं गोनिष्क्रयद्रव्यं ''''''''''गोत्राय''''''''''शर्मणे आचार्याय भवते सम्प्रददे (ऐसा कहकर हाथ का संकल्प जल तथा द्रव्य ब्राह्मण के हाथ में देदे।

मंगल पाठ —हस्ते अक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा (हाथ में अक्षत—पुष्प लेकर गणेश जी की प्रार्थना करे) :—

ऊँ आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्श्वतो दब्धासोऽअपरीतासऽउद्भिदः। देवानो यथा सदमिद्वृधेऽअसन्नप्प्रायुवोरक्षितारो दिवेदिवे।।१।। देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतान्देवाना रातिरभिनोनिवर्त्तताम्। देवाना सक्ख्यमुपसेदिमा व्वयं देवानऽआयुः प्प्रतिरन्तुजीवसे।।२।। तान्पूर्वया निविदाहूमहे व्वयं भगम्मित्रमदितिं दक्षमस्रिधम्। अर्यमणं व्वरुण सोममश्विना सरस्वती नः सुभगामयस्करत्।।३।। तन्नोव्वातो मयो भुव्वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता । ैः। तदग्रावाणः सोमसुतो मयो भुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम्।।४।। तामीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पति—न्धियञ्जिन्वमवसे हूमहे व्वयम्। पूषा नो यथा व्वेदसामद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।५।। स्वस्ति न ऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषाव्विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्ताक्ष्यो ऽ अरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु।।६।। पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो व्विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वामनवः सूरचक्षसो व्विश्वेनोदेवाऽअवसा गमन्निह।।७।। भद्रङ्कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा œ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं य्यदायुः।।८।। शतमिन्नुशरदो ऽ अन्ति देवा त्रा नश्चक्रा जरसंतनूनाम्। पुत्रासो यत्र

पितरो भवन्ति मानो मद्धया रीरिषतायुर्गन्तोः।।६।। अदिति॥ ौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वेदेवा ऽ अदितिः पञ्चजना ऽ अदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्वम्।।१०।। । ौः शान्तिरन्तरिक्ष œ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। व्वनस्पतयः शान्ति व्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व œ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामाशान्तिरेधि।।११।। यतो यतः समीहसे ततो नो ऽ अभयं कुरु। शन्नः कुरु प्रजाभ्योभयन्नः पशुभ्यः।।१२।। सुशान्तिर्भवतु।। **(अक्षत–पुष्प को सिर से लगाकर गणपति मण्ड़ल पर गणेशजी को समर्पित करें)**

गणपत्यादि देवानां स्मरणम्– (हाथ में अक्षत–पुष्प लेकर गणेश जी की प्रार्थना करे)
सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजगर्णकः। लम्बोदरश्च विकटोविघ्ननाशो विनायकः। धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि। वि॥ ारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। संग्रामे संकटे चौव विघ्नस्तस्य न जायते। शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये। अभीप्सितार्थ सिध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः। सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः। सर्वमङ्ग्ल माङ्ग्ल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते। सर्वदा सर्व कार्येषु नास्ति तेषाममङ्ग्गलम्। येषां हृदिस्थो भगवान् मंगलायतनं हरिः। तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव। वि॥ ाबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि। लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः। येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः। यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः। तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम। सर्वेष्वारब्धकार्येषु त्रयस्त्रि भुवनेश्वराः। देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः। विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्। वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानी मणिकर्णिकाम्। विनायकं गुरुभानुं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान्। सरस्वतीं प्रणौम्यादौ सर्वकार्यार्थ सिद्धये।ऊँ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। ऊँ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। ऊँ उमामहेश्वराभ्यां नमः। ऊँ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। ऊँ शचीपुरन्दराभ्यां नमः। ऊँ मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः। ऊँ सर्वपितृदेवताभ्यो नमः। ऊँ इष्टदेवताभ्यो नमः। ऊँ कुलदेवताभ्यो नमः। ऊँ ग्रामदेवताभ्यो नमः। ऊँ स्थानदेवताभ्यो नमः। ऊँ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ऊँ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ऊँ गुरवे नमः। ऊँ परमगुरवे नमः। ऊँ परात्परगुरवे नमः। ऊँ परमेष्ठिगुरवे नमः।(अक्षत–पुष्प को सिर से लगाकर गणपति मण्ड़ल पर गणेशजी को समर्पित करे) ।

संकल्प–हाथ में जल अक्षत–पुष्प कुश तथा द्रव्य लेकर संकल्प करे–

हरिः ऊँ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ऊँ तत्सद॥ ैतस्य श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अ॥ श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्द्धे तदादौ श्रीश्वेतवाराहकल्पे सप्तमे वैवस्वतमन्वतरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे तत्रापि परमपवित्रे भारतवर्षे आर्यावर्त अन्तर्गते अमुकदेशे (अपने देश का नाम) अमुकक्षेत्रे (अपने राज्य का नाम) अमुकनगरे (अपने नगर का नाम) श्री गङ्गायमुनयोः अमुकभागे (अपने स्थान की दिशा) नर्मदाया अमुक भागे (अपने स्थान की दिशा) चान्द्रसंज्ञकानां प्रभवादिषष्टिसम्वत्सराणां मध्ये अमुक नाम्नि सम्वत्सरे (सम्वत्सर का नाम) श्रीमन्नृपति विक्रमार्कसमयादमुकसंख्यापरिमिते विक्रमाब्दे (वर्तमान विक्रम सम्वत्) अमुकायने (वर्तमान सम्वत्) अमुकर्तौ (वर्तमान ऋतु) अमुकमासे (वर्तमान मास) अमुकपक्षे (वर्तमान पक्ष) अमुकतिथौ (वर्तमान तिथि) अमुकवासरे अमुकगोत्रः (यजमान का गौत्र) अमुकशर्मा अहं (ब्राह्मण के लिए

शर्मा, क्षत्रिय के लिए वैश्य, वैश्य के लिए गुप्ता, शूद्र के लिए दासान्त) सपुत्रस्त्रीबान्धवो अहं मम जन्मलग्नाच्चन्द्रलग्नाद् वर्ष मास दिन गोचराष्टक वर्गदशान्तर्दशादिषु चतुर्थाष्टं द्वादशस्थान् स्थित क्रूरग्रहास्तेषां अनिष्टफल शान्ति पूर्वकं द्वितीयसप्तम् एकादशस्थानस्थित सकल शुभफल प्राप्त्यर्थं श्री महामृत्युञ्जय रुद्रदेवता प्रीत्यर्थं यथा (शत सहस्र अयुत लक्ष कोटयादि) संख्याक श्री मन्महामृत्युञ्जय मन्त्र जपम् अहं करिष्ये (वा ब्राह्मण द्वारा कारयिष्ये) ।ऐसा कहकर हाथ का संकल्प जल तथा द्रव्य गणेश जी के सामने छोड़ दे।
पुनः हाथ में जल अक्षत–पुष्प कुश तथा द्रव्य लेकर बोले –
तदंगत्वेन कार्यस्य सिद्धयर्थं आदौ गणेशाम्बिकयोः पूजनं करिष्ये। ऐसा कहकर हाथ का संकल्प जल तथा द्रव्य गणेश जी के सामने छोड़ दे।

पूजा में जो वस्तु वि। मान न हो उसके लिये 'मनसा परिकल्प्य समर्पयामि' कहे। जैसे, आभूषणके लिये 'आभूषणं मनसा परिकल्प्य समर्पयामि'।)

सर्वप्रथम गणपति का पूजन आप कर ले।

शिवपूजन

शिव जी का आवाहन ध्यान – (हाथ में अक्षत पुष्प लेकर अधोलिखित मन्त्र पढते हुए शिव जी के उपर छोड़े)

ऊँ ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसम्
रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानम्
विश्वा। ं विश्ववन। ं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।

ऊँ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः
शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय शिवतराय च।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः शिवाय नमः सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय सवाहनाय शिवम् आवाहयामिध्यायामि स्थापयामि पूजयामि। (क्षत पुष्प को शंकर जी के उपर छोड़ दे)

प्रतिष्ठापनम्:– (**हाथ में अक्षत लेकर अधोलिखित मन्त्र पढते हुए शिव जी के उपर छोड़े**

ऊँ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्ज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टं ज्ञ œ समिमन्दधातु।
विश्वेदवा स ऽ इह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ।।
ऊँ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः। सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्

आसनम् –(हाथ में पुष्प लेकर अधोलिखित मन्त्र पढते हुए शिव जी के उपर छोड़े

ऊँ पुरुष ऽ एवेद œ सर्व्वंद्भूतँच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।
ऊँ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः आसनार्थे पुष्पं समर्पयामि।

पा। म् ––(हाथ में जल लेकर अधोलिखित मन्त्र पढते हुए शिव जी के उपर छोडे

ऊँ एतावानस्य महिमातोज्ज्याँश्चपूरुषः।
पादोस्य व्श्श्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः पादप्रक्षालनार्थं पा। ं समर्पयामि।

अर्घ्यम् ––(हाथ में जल लेकर अधोलिखित मन्त्र पढते हुए शिव जी के उपर छोडे

ऊँ धामन्तेव्विश्वम्भुवनमधिश्रितमन्तः समुद्रेह्र। न्त रायुषि।

अपामनीकेसमिथेय ऽ आभृतस्तमश्याम मधुमन्तन्त ऽ ऊर्मिम्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयम् ——(हाथ में जल लेकर अधोलिखित मन्त्र पढते हुए शिव जी के उपर छोडे

सर्वतीर्थ समायुक्तं सुगन्धिनिर्मलं जलम्।

आचम्यार्थं मया दत्तं गृहाण गणनायक।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

जलस्नानम् —(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए शिव जी के उपर जल छोडे

ऊँ व्वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनीस्त्थो व्वरुणस्य ऽ ऋतसदन्यसि

वरुणस्य ऽ ऋतसदनमसि व्वरुणस्य ऽ ऋतसदनमासीद।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः स्नानार्थे जलं समर्पयामि।।

पञ्चामृत स्नानम् —(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए शिव जी के उपर पंचामृत से स्नान करावे

पयो दधिघृतं चैव मधुं च शर्करायुतम्।

सरस्वती तु पञ्चधासो देशेभवत्सरित्।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदक स्नानम् —(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए शिव जी के उपर शुद्ध जल से स्नान करावे)

ऊँ शुद्धवालः सर्व शुद्धवालो मणिवालस्त ऽ आश्विनः श्येतः

श्येताक्षो रुणस्तेरुद्रायपशुपतये कर्णायामा अवलिप्ता रौद्रानभोःरूपाः पार्ज्जन्न्याः।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

वस्त्रोपवस्त्रम्—(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए शिव जी के उपर रक्त सूत्र चढावे)

ऊँ सुजातोज्ज्योतिषा सहशर्म्म व्वरुथमासदत्स्वः।

व्वासो ऽ अग्रे विश्वःप œ सँव्ययस्वव्विभावसो।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः वस्त्रोपवस्त्रार्थे रक्तसूत्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम् —(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए शिव जी के उपर यज्ञोपवीत चढावे)

ऊँ ब्रह्मज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोव्वेनऽआवः।

सबुद्ध्न्याऽउपमा अस्यव्विष्ठ्ठाः सतश्च्चयोनिमसतश्चव्विवः।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

चन्दनम् ——(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए शिव जी के उपर चन्दन चढावे)

ऊँ अ œ शुना ते अ œ शुः पृच्यतां परुषा परुः।

गन्धस्ते सोममवतु मदायरसोऽअच्युतः।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः चन्दनकुंकुमञ्च समर्पयामि।

अक्षताः —(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए शिव जी के उपर अक्षत चढावे)

ऊँ अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रियाऽअधूषत।

अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठ्ठयामती योजान्विन्द्रते हरी।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः अलङ्करणार्थम् अक्षतान् समपर्यामि।

पुष्प (पुष्पमाला) —(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए शिव जी के उपर पुष्पमाला अथवा पुष्प चढावे)

ऊँ ओषधिः प्रतिमोदद्ध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्श्वाऽ इव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्ष्णवः।।
ऊँ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः पुष्पाणि समर्पयामि।

दुर्वाङ्कुरम् ——(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए शिव जी के उपर दूर्वा चढावे)

ऊँ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्व्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।
ऊँ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः दूर्वाङ्कुराणि समर्पयामि।

बिल्वपत्रम् ——(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए शिव जी के उपर बिल्वपत्र चढावे)

ऊँ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो व्वर्मिणे च वथिने च नमः
श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुब्भ्याय चाहनन्याय च।।
ऊँ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः बिल्वपत्राणि समर्पयामि।

सुगन्धितद्रव्यम् ——(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए शिव जी के उपर इत्र चढावे)

ऊँ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीयमामृतात्।।
ऊँ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः सुगन्धितद्रव्यं समर्पयामि।

सिन्दूरम् —(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए शिव जी के उपर सिन्दूर चढावे)

ऊँ सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो व्वातप्रमियः पतयन्ति ह्यवाः।
घृतस्य धारा ऽ अरुषो न व्वाजी काष्ठाभिन्न्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः।।
ऊँ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्याणि ——(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए शिव जी के उपर अवीर चढावे)

ऊँ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुञ्ज्याया हेतिं परिबाधमानः।
हस्तग्घ्नो व्विश्वाव्वयुनानि व्विद्वान्पुमान्पुमा œ सम्परिपातुव्विश्वतः।।
ऊँ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः परिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

धूपम् ——(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए शिव जी के उपर धूप दिखावे)

धूरसि धूर्व्वधूर्व्वन्तं धूर्व्व तोस्म्मान् धूर्वतितन्धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः।
देवानामसि व्वह्नितम œ सस्न्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्।
ऊँ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः धूपम् आघ्रापयामि।

दीपम् ———(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए शिव जी को दीप दिखावे)

ऊँ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्योज्योतिर्ज्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।
अग्निर्व्वर्चोज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा सूर्यो वर्च्चोज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा।
ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।
ऊँ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः दीपकं दर्शयामि।
हस्तौ प्रक्षाल्य। (इसके बाद हाथ धोये)

नैवे। म् ———(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए शिव जी को भोग लगावे)

ऊँ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष œ शीष्ष्र्णो । ौः समवर्त्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ २ अकल्पयन्।।
ऊँ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः नैवे। ं निवेदयामि। मध्ये जलं निवेदयामि। (इसके बाद पॉच बार जल चढावे)

ऋतुफलम् –––(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए शिव जी के उपर फल चढावे)

ऊँ याः फलनीर्या ऽ अफला ऽ अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्व œ हसः।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः फलं निवेदयामि। पुनः आचमनीयं निवेदयामि।(इसके बाद पुनः जल चढावे)

ताम्बूल–मन्त्र बोलते हुए लवंग,इलायची, सोपारी सहित पान का पत्ता शिव जी के उपर चढावे ।

ॐयत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।

वसन्तोस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मःशरद्धविः।।

ॐ भूभुर्वः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः मुखवासार्थं एलालवंगपूगीफलसहितं ताम्बूलं समर्पयामि। (इलायची,लौंग–सुपारी सहित ताम्बूल को चढाये)

दक्षिणा–(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए शिव जी के उपर दक्षिणा चढावे)

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातःपतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं । ामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

ॐ भूभुर्वः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः,कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।(द्रव्य दक्षिणा समर्पित करें।)

पुष्पांजलि–मन्त्र बोलते हाथ में फूल लेकर शिव जी को पुष्पांजलि अर्थात् प्रार्थना करना।

ॐयज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।

मन्त्र परिचय :–

मननात् मन्त्रः अर्थात् जिसका मनन किया जाये वह मन्त्र है। यदि किसी भी सामान्य वाक्य का बारम्बार उच्चारण किया जाये तो वह श्रवणकर्ता के मन–मस्तिष्क में अवश्य पहुँच जाता है, इसी प्रकार वैदिक मन्त्रों के बारम्बार जप से देवताओं तक साधक की वाणी अवश्य पहुँचती है। वैदिक मन्त्रों में छन्द व लय का विशेष महत्त्व होता है, अतः गुरु के निर्देशन में मन्त्रों का अभ्यास करना चाहिए। प्रत्येक उच्चारित शब्द/ध्वनि अमर है, ब्रह्माण्ड़ में अनेकों शब्द विचरण करते रहते है इसीलिए शास्त्रों ने शब्द को ही ब्रह्म का स्वरूप माना है। शरीर में घार्षणिक वि। ुत् प्रवाह होता रहता है तथा मस्तिष्क में धारावाही वि। ुत् प्रवाहित होती रहती है। मन्त्रोच्चार से इन दोनों वि। ुत् का संयोग होता है, यही मन्त्र की शक्ति है। मन्त्रों से हमारा आत्मबल स्वतः वृद्धि को प्राप्त होता है।

अभ्यास प्रश्न –

प्रश्न – १ : मन्त्र का निर्माण सामान्यतः किस धातु अथवा पत्र पर किया जाता है?

प्रश्न – २ : सामान्यतः मन्त्र के निर्माण में किस स्याही का उपयोग किया जाता है

प्रश्न – ३ ऊँ 'ऐं ह्रीं अक्ष–मालिकायै नमः इस मन्त्र से किसकी पूजा की जाती है?

प्रश्न – ४ : साधना के मुख्य भेद बताईये ?

प्रश्न – ५ : करन्यास से आप क्या समझते है ?

अथ श्रीगणेशषडक्षर मन्त्र–जपविधिः

किसी भी देवता के मन्त्रजाप से पूर्व गणेशमन्त्र के 108 (न्यूनतम) जप परम आवश्यक है। इसके पश्चात् ही कार्यसिद्धि होती है। जप के पूर्व एवं पश्चात् दोनों ही समय जप करना परम आवश्यक है।

हाथ में जल लेकर अधोलिखित मन्त्र को पढते हुए जल को गीरावें

ॐ अस्य श्री गणेशमन्त्रस्य भार्गव ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः विघ्नेशो देवता वं बीजं, यं शक्तिः हुँ कीलकम् सर्वार्थसिद्धये जपे विनियोगः॥

ऋष्यादिन्यासः –

ॐ भार्गव ऋषये नमः शिरसि (दाहिने हाथ से शिर को स्पर्श करे)।

ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे (दाहिने हाथ से मुख को स्पर्श करे)।

ॐ विघ्नेशदेवतायै नमः हृदि (दाहिने हाथ से हृदय को स्पर्श करे)।

ॐ वं बीजाय नमः गुह्ये (दाहिने हाथ से गुदा को स्पर्श करे)।

ॐ यं शक्त्ये नमः पादयोः दाहिने हाथ से दोनो पैर को स्पर्श करे)।

ॐ हुँ कीलकाय नमः सर्वाङ्गे (दाहिने हाथ से पुरे शरीर को स्पर्श करे)।

करन्यासः –

ॐ वं अंगुष्ठाभ्यां नमः (दोनों हाथों की तर्जनी अंगुलियों से दोनों अंगूठों का स्पर्श करे) ।

ॐ क्रं तर्जनीभ्याँ नमः (दोनों हाथों के अंगूठों से दोनों तर्जनी अंगुलियों का स्पर्श करे) ।

ॐ तुँ मध्यमाभ्याँ नमः(अंगूठों से मध्यमा अंगुलियों का स्पर्श करे) ।

ॐ डाँ अनामिकाभ्याँ नमः (अंगूठों से अनामिका अंगुलियों का स्पर्श करे) ।

ॐ यं कनिष्ठिकाभ्याँ नमः (अंगूठों से कनिष्ठिका अंगुलियों का स्पर्श करे) ।

ॐ हुँ करतलकरपृष्ठाभ्याँ नमः(हथेलियों और उनके पृष्ठ भागों का परस्पर स्पर्श करे) ।

षडङ्गन्यासः

ॐ वं नमः हृदयाय नमः (दाहिने हाथ से हृदय को स्पर्श करे)

ॐ क्रं नमः शिरसे स्वाहा (दाहिने हाथ से शिर को स्पर्श करे)।

ॐ तुं नमः शिखायै वषट् (दाहिने हाथ से शिखा को स्पर्श करे)।

ॐ डां नमः कवचाय हुँ (दाहिने हाथ की अंगुलियों से बायें कन्धे का और बायें हाथ की अंगुलियों से दाहिने कन्धे का साथ ही स्पर्श करे)।

ॐ यं नमः नेत्रत्रयाय वौषट् (दाहिने हाथ की अंगुलियों के अग्रभाग से दोनों नेत्रों और ललाट के मध्य भाग को स्पर्श करे)।

ॐ हुँ नमः अस्त्रायफट् यह वाक्य पढकर दाहिने हाथ को सिर के उपर से बायी ओर से पीछे की ओर लेजाकर दाहिनी ओर से आगे की ले आये और तर्जनी तथा मध्यमा अंगुलियों से बायें हाथ की हथेली पर ताली बजाये)।

वर्णन्यासः –

ॐ वं नमः भ्रुवोर्मध्ये (दाहिने हाथ से भ्रुव के मध्य को स्पर्श करे)।

ॐ क्रं नमः कण्ठे (दाहिने हाथ से कण्ठ को स्पर्श करे)।

ॐ तुं नमः हृदये दाहिने हाथ से हृदय को स्पर्श करे)।

ॐ डां नमः नाभौ(दाहिने हाथ से नाभी को स्पर्श करे)।

ॐ यं नमः लिङ्गे (दाहिने हाथ से लिंग को स्पर्श करे)।

ॐ हुँ नमः पादयोः(दाहिने हाथ से दोनों पैरों को स्पर्श करे)।

ऊँ वक्रतुण्डाय हुँ सर्वाङ्गे(दाहिने हाथ से सभी अंगों को स्पर्श करे)।

हाथों में पुष्प लेकर अधोलिखत श्लोक को पढते हुए गणेश जी का प्रार्थना करे

ऊँ उ। द्दिनेश्वररुचिं निजहस्तपद्मैः,

पाशाङ्कुशाभयवरान्दधतं गजास्यम्।
रक्ताम्बरं सकलदुःखहरं गणेशं,

ध्यायेत् प्रसन्नमखिलाः भरणाभिरामम्॥

जप हेतु माला का पूजन—मन्त्र :—

ऊँ 'ऐं ह्रीं अक्ष—मालिकायै नमः इस मन्त्र से माला की पूजा करे।

इसके बाद हाथों में माला लेकर अधोलिखत श्लोक को पढते हुए माला की प्रार्थना करे।

ऊँ मां माले महा—माये सर्व—शक्ति स्वःपिणि!
चतुवर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव।।
ऊँ अविघ्नं कुरु माले! त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।

जप—काले च सिद्धयर्थं प्रसीद मम सिद्धये।।
ऊँ अक्ष—मालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्व—मन्त्रार्थ—साधिनि!
साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा।।१

इसके बाद ऊँ वक्रतुण्डाय हुँ। इस मन्त्र का 108 बार जप करे

इसके बाद महामृत्युञ्जय जप प्रारम्भ करे—

अथ त्र्यक्षरीमृत्युञ्जय—जपविधिः

हाथ में जल लेकर अधोलिखित मन्त्र को पढते हुए जल को गिरावें

ऊँ अस्य श्री त्र्यक्षरात्मकमृत्युञ्जय मन्त्रस्य कहोल ऋषिः, देवी गायत्री छन्दः श्री मृत्युञ्जयो देवता, जूं बीजं, सः शक्तिः श्रीः कीलकम् सर्वेष्ट्सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

अङ्ग्न्यासः — कहोलऋषये नमः शिरसि। देवी गायत्रीछन्दसे नमः मुखे। मृत्युञ्जयदेवतायै नमः हृदि। जूं बीजाय नमः गुह्ये। सः शक्त्ये नमः पादयोः।

करन्यासः — सां अगुष्ठाभ्यां नमः। सीं तर्जनीभ्यां नमः। सूं मध्यमाभ्यां नमः। सैं अनामिकाभ्यां नमः। सौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। सः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः — सां हृदयाय नमः। सीं शिरसे स्वाहा। सूं शिखायै वषट्। सैं कवचाय हुँ। सौं नैत्रत्रयाय वौषट्। सः अस्त्राय फट्।

ध्यानम् —

ऊँ चन्द्रार्काग्निविलोचनं स्मितमुखं पद्मद्वयान्तः स्थितं,
मुद्रापाशमृगाक्षसूत्रविलसत्पाणिं हिमाँशुप्रभम्।
कोटीरेन्दुगलत्सुधास्नुततनुं हारादिभूषोज्ज्वलं,

कान्त्याविश्वविमोहनं पशुपतिं मृत्युञ्जयं भावयेत्॥

ऊँ जूं सः इति मूलमंत्रं जपेत्।

अथ महामृत्युञ्जय जपविधिः —

विनियोग करे—

हाथ में जल लेकर अधोलिखित मन्त्र को पढते हुए जल को गिरावें

ऊँ अस्य श्री महामृत्युञ्जयमन्त्रस्य वामदेवकहोलवसिष्ठऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीत्र्यम्बकरुद्रो देवता, श्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिः मम वा यजमानस्य शरीरे सर्वारिष्ट् निवृत्तिपूर्वक सकलमनोरथ सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः –
ऊँ वामदेवकहोलवसिष्ठऋषिभ्यो नमः शिरसि (दाहिने हाथ से शिर को स्पर्श करे)।
ऊँ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे (दाहिने हाथ से मुख को स्पर्श करे)।
ऊँ श्रीत्र्यम्बकरुद्रदेवतायै नमः ह्रदये(दाहिने हाथ से हृदय को स्पर्श करे)।
ऊँ श्रीं बीजाय नमः गुह्ये (दाहिने हाथ से गुदा को स्पर्श करे)।
ह्रीं शक्त्ये नमः पादयोः दाहिने हाथ से दोनो पैर को स्पर्श करे)।
करन्यासः –
ऊँ हौं ऊँ जूं सः ऊँ भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ऊँ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
(दोनों हाथों की तर्जनी अंगुलियों से दोनों अंगूठों का स्पर्श करे) ।
ऊँ हौं ऊँ जूं सः ऊँ भूर्भुवः स्वः यजामहे ऊँ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवय जीवय तर्जनीभ्यां स्वाहा।(दोनों हाथों के अंगूठों से दोनों तर्जनी अंगुलियों का स्पर्श करे) ।
ऊँ हौं ऊँ जूं सः ऊँ भूर्भुवः स्वः सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ऊँ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा मध्यमाभ्यां नमः।(अंगूठों से मध्यमा अंगुलियों का स्पर्श करे) ।
ऊँ हौं ऊँ जूं सः ऊँ भूर्भुवः स्वः उर्व्वारुकमिव बन्धनात् ऊँ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रां ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः। (अंगूठों से अनामिका अंगुलियों का स्पर्श करे) ।
ऊँ हौं ऊँ जूं सः ऊँ भूर्भुवः स्वः मृत्त्योर्म्मुक्षीय ऊँ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साममन्त्राय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। (अंगूठों से कनिष्ठिका अंगुलियों का स्पर्श करे) ।
ऊँ हौं ऊँ जूं सः ऊँ भूर्भुवः स्वः मामृतात् ऊँ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।(हथेलियों और उनके पृष्ठ भागों का परस्पर स्पर्श करे) ।
ह्रदयादिन्यासः –
ऊँ हौं ऊँ जूं सः ऊँ भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ऊँ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा ह्रदयाय नमः।
(दाहिने हाथ से हृदय को स्पर्श करे)
ऊँ हौं ऊँ जूं सः ऊँ भूर्भुवः स्वः यजामहे ऊँ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवय जीवय शिरसे स्वाहा।
(दाहिने हाथ से शिर को स्पर्श करे)।
ऊँ हौं ऊँ जूं सः ऊँभूर्भुवः स्वः सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ऊँ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा शिखायै वषट् । (दाहिने हाथ से शिखा को स्पर्श करे)।
ऊँ हौं ऊँ जूं सः ऊँ भूर्भुवः स्वः उर्व्वारुकमिव बन्धनात् ऊँ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रां ह्रीं कवचाय हुँ। (दाहिने हाथ की अंगुलियों से बायें कन्धे का और बायें हाथ की अंगुलियों से दाहिने कन्धे का साथ ही स्पर्श करे)।
ऊँ हौं ऊँ जूं सः ऊँ भूर्भुवः स्वः मृत्त्योर्म्मुक्षीय ऊँ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साममन्त्राय नेत्रत्रयाय वौषट्।(दाहिने हाथ की अंगुलियों के अग्रभाग से दोनों नेत्रों और ललाट के मध्य भाग को स्पर्श करे)।
ऊँ हौं ऊँ जूं सः ऊँ भूर्भुवः स्वः मामृतात् ऊँ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय अस्त्राय फट्। (यह वाक्य पढकर दाहिने हाथ को सिर के उपर से बायी ओर से पीछे की ओर लेजाकर दाहिनी ओर से आगे की ले आये और तर्जनी तथा मध्यमा अंगुलियों से बायें हाथ की हथेली पर ताली बजाये)।

वर्णादिन्यासः –

ऊँ त्र्यं नमः दक्षिणचरणाग्रे।

बं नमः, कं नमः, यं नमः, जां नमः दक्षिणचरणसन्धिचतुष्केषु।

ऊँ मं नमः वामचरणाग्रे।

हें नमः, सुं नमः, गं नमः धिं नमः वामचरणसन्धिचतुष्केषु।

पुं नमः गुह्ये। ष्टिं नमः आधारे।

वं नमः जठरे। र्द्धं नमः हृदये।

नं नमः कण्ठे। ऊँ उं नमः दक्षिणकराग्रे।

वां नमः, रुं नमः, कं नमः, मिं नमः, दक्षिणकरसन्धिचतुष्केषु।

ऊँ वं नमः वामकराग्रे।

बं नमः, धं नमः, नां नमः मृं नमः वामकरसन्धिचतुष्केषु।

त्यों नमः वदने। मुं नमः ओष्ठयोः।

क्षीं नमः घ्राणयोः। यं नमः दृशोः।

मां नमः श्रवणयोः। मृं नमः भ्रुवोः।

तां नमः शिरसि।

पदन्यासः –

ऊँ त्र्यम्बकं नमः शिरसि।

यजामहे भ्रुवोः।

सुगन्धिं दृशोः।

पुष्टिवर्द्धनम् मुखे।

उर्व्वारुकम् गण्डयोः।

इव हृदये।

बन्धनात् उदरे।

मृत्योः गुह्ये।

मुक्षीय उर्वोः।

मां जानवोः।

अमृतात् पादयोः।

ध्यानम् –

हस्ताभ्यां कलशद्वयामृतरसैराप्लावयन्तं शिरो,
द्वाभ्यां वो दधतं मृगाऽक्षवलये द्वाभ्यां वहन्तं परं।
अङ्कन्यस्तकरद्वयामृतघटं कैलाशकान्तं शिवम्,
स्वच्छाम्भोजगतं नवेन्दुमुकुटाभान्तं त्रिनेत्रं भजे।।

जप–मन्त्रः –

ऊँ हौं ऊँ जूं सः ऊँ भूर्भुवः स्वः ऊँ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्ट्विवर्धनम्।

उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्त्योर्मुक्षीय मामृतात्॥ ऊँ स्वः भुवः भूः ऊँ सः जूं हौं ऊँ॥

:: अथवा ::

ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्ट्विवर्धनम्।

उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्त्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ भूर्भुवः स्वरों जूं सः हौं ऊँ॥

जप करना प्रारम्भ करें।

इस मन्त्र का यथा संख्य जप करे पुनः न्यास करे और जप भगवान्महामृत्युंजय रुद्र देवता के दक्षिण हस्त में समर्पण करें।

प्रार्थना—गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान् महेश्वरः।

क्षमाप्रार्थना– मन्त्र बोलते हाथ में फूल लेकर शिव जी की क्षमा प्रार्थना करना।

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा श्रवण नयनजं वा मानसं वाऽपराधम्। विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व। जयजय करुणाब्धे श्रीमहादेव! शम्भो!

अनेन श्री महामृत्युंजय जपाख्येन कर्मणा भगवान् श्री महामृत्युंजय साम्बसदाशिवाय प्रियतां न मम (हाथ में जल लेकर अधोलिखित मन्त्र को पढ़ते हुए जल को गिरावें)

अनेन जप सांगता सिद्ध्यर्थं यथा कामनाद्रव्येण महामृत्युंजय मन्त्रेण जपदशांश हवनं तद्दशांश तर्पणं, तद्दशांश मार्जनं, तद्दशांश ब्राह्मण भोजनं च करिष्ये।

शिवजी की आरती (अधोलिखित मन्त्र पढते हुए शिव जी की आरती करे)

कर्पूर गौरं करुणावतारं संसार सारं भुजगेन्द्रहारम।

सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि॥

ऊँ जय शिव ओंकारा हो शिव पार्वती प्यारा
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव अर्द्धांगी धारा ॥ १॥ ऊँ हर हर हर महादेव॥
एकानन चतुरानन पञ्चानन राजै।
हंसासन गरुड़ासन वृषवाहन साजै॥ २॥ ऊँ हर॥0
दोयभुज चार चतुर्भुज दशभुज ते सोहै।
तीनो रुप निरखता त्रिभुवनजन मोहै॥ ३॥ ऊँ हर॥0
अक्षमाला वनमाला रुण्डमाला धारी।
चन्दन मृगमद चन्दा भाले शुभकारी ॥४॥ ऊँ हर॥0
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे।
सनकादिक प्रभुतादिक भूतादिक संगे॥ ५॥ ऊँ हर॥0
कर मध्ये कमण्डलु चक्र त्रिशूल धरता।
जगकर्ता जगहर्ता जगपालनकर्ता ॥ ६॥ ऊँ हर॥0
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर ऊँ मध्ये ये तीनों एका ॥ ७॥ ऊँ हर॥0
काशी मे विश्वनाथ विराजत नन्दी ब्रह्मचारी।
नित उठ भोग लगावत महिमा अतिभारी॥ ८॥ ऊँ हर॥0
त्रिगुण स्वामी की आरती जो कोई नर गावे।
भणत शिवानन्द स्वामी मनवाञ्छित फ ल पावै॥ ९॥ ऊँ हर॥0

ऊँ जै शिव ओंकङ्कारा, हो मन भज शिव ऊँकारा, हो मन रट शिव ओंकङ्कारा, हो शिव गलरुण्डन माला, हो शिव ओढ़त मृगछाला, हो शिव पीते भंग प्याला, हो शिव रहते

मतवाला, हो शिव पार्वतीप्यारा, हो शिव ऊपर जलधारा, जटा में गंगा विराजत, मस्तक पे चन्द्र विराजत रहते मतवाला॥ ऊँ हर.॥

ॐ भूभुर्वः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, आरार्तिकं समर्पयामि। आरती के बाद जल गिरा दे।

पुष्पांजलि–मन्त्र बोलते हाथ में फूल लेकर शिव जी को पुष्पांजलि अर्थात् प्रार्थना करना।

ॐयज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।

ऊँ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्म्महे। स मे कामान् काम कामाय मह्य कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः॥

ऊँ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात।

सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावा भूमी जनयन् देव एकः॥

ऊँ एक दन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात ॥

ऊँ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥

ऊँ गणाम्बिकायै विद्महे कर्मसिद्धयै च धीमहि। तन्नो गौरी प्रचोदयात्॥

ऊँ कात्यायिन्यै विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि। तन्नो देवि प्रचोदयात

ऊँ दशरथाय विद्महे सीतावल्लभा च धीमहि। तन्नो राम् प्रचोदयात॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।

त्वमेव वि। ा द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

ॐ भूभुर्वः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, पुष्पांजलिं समर्पयामि।(पुष्पांजलि अर्पित करे।)

प्रदक्षिणा –

यानि कानि च पापानि ज्ञाताज्ञातकृतानि च।

तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे॥

प्रणाम –

यो न पिता जनिता यो व्विधाता धामानि व्वेदभुवनानि व्विश्श्वा।

यो देवानान्नामधाऽएकऽएव त सम्प्रश्न्नम्भुवना यन्त्यन्न्या॥

क्षमा प्रार्थना –

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम।

पूजां चौव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।

तस्मात् कारुण्य भावेन रक्ष मां परमेश्वर॥

मत्समो नास्ति पापिष्ठस्त्वत्समो नास्ति पापहा।

इति मत्वा दयासिन्धो यथेच्छसि तथा कुरू॥

मन्त्रेणाक्षर हीनेन पुष्पेण विकलेन च।

पूजितोऽसि महादेव तत्सर्वं क्षम्यतां मम॥

अयं दानकालस्त्वहं दानपात्रं भवानेव दाता त्वदन्यं न याचे।

भवद्भक्तिमन्तः स्थिरां देहि मह्यं कृपाशीलशम्भो कृतार्थोऽस्मि यस्मात्॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञ क्रियादिषु।

न्यूनं सम्पूर्णतां यातु स। ो वन्दे तमच्युतम्॥

अनेन पूजनेन साम्बसदाशिवाय प्रीयताम्।

विसर्जनम् –

यान्तु देवगणारू सर्वे पूजामादाय मामकिम्।

इष्ट काम समृद्धयर्थं पुनरागमनाय च॥

तिलकाशीर्वाद –

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात्पवमानं महीयते।

धनं धान्यं पशुं बहु पुत्र लाभं शतसम्वत्सरं दीर्घमायुः॥

मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।

शत्रूणां बुद्धिनाशोस्तु मित्राणामुदयस्तव॥

स्वस्त्यस्तु ते कुशलमस्तु चिरायुरस्तु,
गोवाजिहस्ति धनधान्य समृद्धिरस्तु।
शत्रुक्षयोऽस्तु निजपक्षमहोदयोऽस्तु,
वंशे सदैव भवतां हरिभक्तिरस्तु ।

साधना :–

स्वच्छ, एकान्त और जीवन्त वातावरण में उत्पन्न वनस्पतियाँ अधिक उपयोगी और प्रभावशाली होती है, जबकि मार्ग/नदी के किनारे में नित्य प्रति कुचली और चरी जाने वाली अथवा अशुभ स्थानों में उत्पन्न वनस्पति में एक प्रकार का अदृश्य प्रदूषण व्याप्त रहता है। साधना के लिए जो भी वनस्पति ली जाये उसकी संरचना, उत्पत्ति स्थल, आयु और वातावरण का विचार कर लेना चाहिए।

१. साधना के लिए कोई भी वनस्पति, जड़ी–बूटी, फल–फूल, पत्ती अथवा टहनी, सड़ी–गली, घुन या कीड़ों से खायी हुई, ऋतु–विरुद्ध, आग में उत्पन्न, आग से दग्ध, किसी प्राकृतिक प्रकोप के कारण छिन्न, रुग्ण अथवा सत्त्वहीन होने पर त्याज्य होती है। उसका उपयोग लाभकर नहीं होता है और साधना का श्रम व्यर्थ चला जाता है।

२. जीव–जन्तुओं के आवास (गुफा–बिल आदि) पर उत्पन्न, आवागमन के मार्ग में स्थित वृक्षों के नीचे उगने वाली घास या वनस्पति साधना हेतु वर्जित होती है।

३. मन्दिर अथवा श्मशान–भूमि में स्थित वृक्षों का कोई अंश नहीं लेना चाहिए। अपवाद की स्थिति अलग है, वह भी तब जबकि उसके सम्बन्ध में स्पष्ट स्वतन्त्रता और निर्देश शास्त्रों में वर्णित हो।

४. साधना हेतु अन्य के द्वारा उपयोग की गई सामग्री (माला, आसन आदि) को काम में नहीं लेना चाहिए।

५. शङ्ख, पूजन–पात्र, प्रतिमा, चित्र, यन्त्र आदि खण्ड़ित नहीं होने चाहिए। ऐसी वस्तुयें गङ्गा या अन्य किसी नदी (तीर्थ में स्थित जल) में आदरपूर्वक विसर्जित कर देनी चाहिए।
६. माला (वह किसी प्रकार के मनकों से निर्मित हो) की मणियाँ आकार में समान, पुष्ट, सम्पूर्ण और विधिवत् शुद्ध की हुई होनी चाहिए। कटे–फटे, टूटे–दरके आकार में विषम, विकृत, नकली और आभार रहित दाने त्याज्य है। साधना में शुद्ध सामग्री का ही उपयोग करना चाहिए।
७. विशेष साधना में ही श्मशान, रक्त, हड्डी, माँस, मदिरा आदि का प्रयोग भी शास्त्रों ने किया है, परन्तु सामान्यतः यह सभी वस्तुएँ अपवित्र और त्याज्य है।
८. यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र आदि सभी कर्म गुरु के निर्देशन में ही करने चाहिए अन्यथा साधक राह से भटक सकता है और सभी कर्म निष्फल हो जायेंगे।
९. साधक को शीलवान्, गुणज्ञ, निच्छल, श्रद्धालु, धैर्यवान्, स्वस्थ, कार्य सक्षम, बुद्धिमान, सच्चरित्र, इन्द्रिय–संयमी और कुल प्रतिष्ठा का पोषक होना चाहिए।
१०. अपराधिक प्रवृत्ति, क्रूर, कुतर्की, मिथ्याभाषी, अहंकार से ग्रस्त, लोभी, लम्पट, विषयी, चोर, दुर्व्यसनी, परस्त्रीगामी, मूर्ख, जड़बुद्धि, क्रोधी, द्वेषालु, ईर्ष्या अथवा अति मोह से ग्रस्त, शास्त्र निन्दक, आस्थाहीन, दुराचारी, वंचक, पाखण्ड़ी, रोगी तथा विकलाङ्ग व्यक्ति सामान्यतः साधक बनने के योग्य नहीं होता है।
११. साधना में प्रयुक्त सामग्री :– बिल्ली की जेर, बाँदा, श्वेतार्क, रुद्राक्ष, शङ्ख, हाथाजोड़ी, गोरोचन, गुञ्जा, सियारसिंगी, एकाक्षी नारियल, कुश, हरिद्रा, नागकेसर, कमल, लवङ्ग, दक्षिणावर्ती–वामावर्ती शङ्ख, सिन्दूर, राई, सरसों, गुग्गुल, धूप, कर्पूर, सिन्दूर, श्रीफल, नागदमन, उदुम्बर, पीपल, बरगद, विजया, सहदेवी, अपामार्ग, मुण्ड़ी, बहेड़ा, लक्ष्मणा आदि।
व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए अथवा ईर्ष्या–द्वेष की तृप्ति के लिए अभिचार–कर्म निन्दनीय है, आगे चलकर इन सभी कर्मों का दुष्परिणाम साधक को भुगतना ही पड़ता है। मूलतः ऐसे अभिचार–तन्त्रों की सर्जना आत्मरक्षा के लिए अथवा लोक कल्याण के लिए की गयी थी। सामूहिक कल्याण के लिए ऐसे कर्मों का शास्त्रों ने सर्जन किया था।

2.4 सारांश

शास्त्र की विधि के अनुसार महामृत्युंजय मन्त्र का पूजन अर्चन करना चाहिये। मनमानी ढंग से करना या कराना हानि प्रद होता है। प्रयोग कराने के समय शुभ मुहुर्त चन्द्र तारा आदि बलों को दिखाकर तब अनुष्ठान –पुरश्चरण प्रयोग कराना चाहिये। प्रयोग कराते समय शिवमन्दिर देवालयसिद्धस्थान, नदीतट , बिल्व, अश्वस्थवृक्ष के स्थान पर सफाई कराकर अनुष्ठान कराना चाहिये। देवालय, सिद्धस्थान शिवमन्दिर में तो पार्थिवेश्वर की कोई आवश्यकता नही है– किन्तु और सभी स्थानों पाथिवेश्वर शिवलिंग निर्माण करके ही महामृत्युंय आदि का जप विधान सहित करना चाहिये। प्रयोग पुरश्चरणात्मक हो तो प्रतिदिन की संख्या समान होनी चाहिए, किसी दिन जप अधिक किसी दिन कम नहीं होना चाहिए–इसी प्रकार ब्राह्मण भी प्रतिदिन उतनी ही संख्या में रहें जितनों में प्रथमदिन पुरश्चरण प्रारम्भ किया हो, इसमें उलट– फेर–कमी–बेशी करने से विक्षिप्तता का भय रहता है। जपसंख्या पूर्ण होने पर अर्थात् पुरश्चरण समाप्ति पर जितना जप हुआ हो उसका दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण,तर्पण का दशांश मार्जन और मार्जन का दशांश या कार्यानुसार न्यूनाधिक रूप में ब्राह्मण भोजन कराना चाहिये ।

2.5 पारिभाषिक शब्दावली

१. जपनीय = जप के योग्य
२. वैदिक = वेद से उद्धृत
३. पुराणोक्त = पुराणों के अनुसार
४. उदर विकार = पेट का रोग
५. अशुभ = बुरा प्रभाव
७. उत्तरन्यास = जप के बाद किये जाने वालो न्यास
६. सङ्कल्प = दृढ़ प्रतिज्ञा
१०. विनियोग = मन्त्र, ऋषि, छन्द, देव काज्ञान
११. ऋष्यादिन्यास = ऋषि, छन्द, देव काशरीर के अङ्गों में ध्यान/आधान
१२. करन्यास = हाथ की अङ्गुलियों में अभीष्टमन्त्र देवता का ध्यान/आधान
१३. अङ्गन्यास = शरीर के अङ्गों में अभीष्टमन्त्र देवता का ध्यान/आधान
१४. त्र्यक्षरीमन्त्र = तीन अक्षरों का मन्त्र
१५. मृत्युञ्जय = मृत्यु पर विजय पाने वाले

2.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

उत्तर १: यन्त्र का निर्माण सामान्यतः भोजपत्र, स्वर्ण, रजत, ताम्र आदि धातुओं पर किया जाता है।

उत्तर २: सामान्यतः यन्त्र के निर्माण में अष्टगन्ध, चन्दन, कस्तूरी, पञ्चगन्ध, भस्म, यक्षकर्दम, गोरोचन व हल्दी आदि का उपयोग किया जाता है।

उत्तर ३: ऊँ 'ऐं ह्रीं अक्ष–मालिकायै नमः इस मन्त्र से माला की पूजा की जाती है।

उत्तर : ४. सात्विक, २. तामसिक, व ३. राजसिक – ये तीनों साधना के मुख्य भेद है।

उत्तर ५: हाथ की अङ्गुलियों में अभीष्टमन्त्र देवता का ध्यान/आधान करना ही करन्यास है।

2.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पुस्तक का नाम–यज्ञदीपिका लेखक का नाम– शिवदत्त मिश्र

2. पुस्तक का नाम–सर्वदेव पूजापद्धति

प्रकाशक का नाम– चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन ,वाराणसी
3 धर्मशास्त्र का इतिहास
लेखक – डॉ. पाण्डुरङ्ग वामन काणे
प्रकाशक :– उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान।
4 नित्यकर्म पूजा प्रकाश,

लेखक :– पं. बिहारी लाल मिश्र,
प्रकाशक :– गीताप्रेस, गोरखपुर।
5 अमृतवर्षा, नित्यकर्म, प्रभुसेवा
संकलन ग्रन्थ
प्रकाशक :– मल्होत्रा प्रकाशन, दिल्ली।
6 कर्मठगुरुः
लेखक – मुकुन्द वल्लभ ज्योतिषाचार्य
प्रकाशक – मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।
7 हवनात्मक दुर्गासप्तशती
सम्पादक – डॉ. रवि शर्मा
प्रकाशक – राष्ट्रीय संस्कृत साहित्य केन्द्र, जयपुर।
8 शुक्लयजुर्वेदीय रुद्राष्टध्यायी
सम्पादक – डॉ. रवि शर्मा
प्रकाशक – अखिल भारतीय प्राच्य ज्योतिष शोध संस्थान, जयपुर।

2.8 सहायक पाठ्यसामग्री

1. पुस्तक का नाम–यज्ञदीपिका लेखक का नाम– शिवदत्त मिश्र
प्रकाशक का नाम– चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी

2.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. महामृत्यंजय मन्त्र से आप क्या समझते है। विस्तार पूर्वक लिखिए।
2. महामृत्युंजय समन्त्र पूजन विधि का उल्लेख कीजिये।
3. कर्मकाण्ड में महामृत्युञ्जय मन्त्र की उपयोगिता बतलाइये।

इकाई - 3 श्री नवार्ण मन्त्र पुरश्चरण

इकाई की रुप रेखा

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 श्री नवार्णमन्त्र पुरश्चरण

अभ्यास प्रश्न

3.4 सारांश

3.5 पारिभाषिक शब्दावली

3.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

3.7 सन्दर्भ ग्रन्थ

3.8 निबन्धात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई BAKA(N)-102 की तीसरी इकाई **नवार्णमन्त्र पुरश्चरण** से सम्बन्धित है। इस इकाई के अन्तर्गत कर्मकाण्ड सम्बन्धित नवार्णमन्त्र पुरश्चरण का उल्लेख किया जा रहा है। नवार्ण मन्त्र पुरश्चरण का सम्बन्ध दुर्गा जी से है। दुर्गापूजन में इसका प्रयोग किया जाता है।

इससे पूर्व की इकाईयों में आपने सत्यनारायण एवं महामृत्युंजय का अध्ययन कर लिया है । आइये अब इस अध्याय में नवार्णमन्त्र पुरश्चरण से अवगत होते है।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् –

- नवार्ण मन्त्र पुरश्चरण के विषय में आप परिचित होंगे–
- नवार्ण मन्त्र पुरश्चरण के महत्त्व के विषय में आप परिचित होंगे
- जप संख्या के विषय में आप परिचित होंगे
- दुर्गापूजन विधि के विषय में आप परिचित होंगे

3.3 नवार्ण मन्त्र पुरश्चरण

वैदिक सनातन परम्परा में कर्मकाण्ड एक महत्वपूर्ण घटक है। इस इकाई में नवार्ण पुरश्चरण की पूजा प्रणाली का प्रस्तुती करण किया गया है जो कि नवार्ण मन्त्र से संजीवनी के लाभ प्रदान करने में पूर्णतः सक्षम है। इसी पूजन प्रणाली के बाद प्रयोग समर्पण से पहले साधक गण स्तोत्र कवचादि का पाठ करके समुचित लाभ उठाते हैं परन्तु यह उपासना काम्य उपासना के रूप में भी की जाती है

काम्य उपासना में नवार्ण मन्त्रों का जपादि किया जाता है। यह तथ्य सर्वसाधारण के लिये जान लेना अत्यधिक आवश्यक है अतः ध्यान दे कि-

सदा स्मरण रखें कि -

एक निश्चित संख्या में जप करें। पूर्व दिवस में जपे गये मन्त्रों से आगामी दिनों में कम मन्त्र न जपें यदि चाहे तो अधिक मन्त्र जप सकते हैं परन्तु स्मरण यही रखना है कि भूतकाल से वर्तमान काल के मन्त्र कम न हो।

मन्त्र का उच्चारण होंठों से बाहर नही आना चाहिये यदि अभ्यास नहीं होने के कारण यह विधि प्रयुक्त न हो सके तो धीमे स्वर में जप करें।

जप काल में धूपदीप जलता रहे।-

रुद्राक्ष की या लाल चन्दन की माला से ही जप करे।

माला को गोमुखी में ही रखें। जब तक जप की संख्या पूर्ण न हो, माला को गोमुखी से न निकालें।

जप काल में दुर्गा जी की प्रतिमा , दुर्गा यन्त्र समक्ष रखना चाहिये

नवार्ण मन्त्र का जप कुश या कम्बल के आसन पर बैठकर करें।

जिस स्थान पर जपादि का शुभारम्भ हो वही पर आगामी दिनों में भी जप करना चाहिये ।

जप काल में मन को मन्त्र से मिलाएँ।

मिथ्या सम्भाषण न करें।

स्त्री सेवन न करे।

आलस्य जम्भाई यथाशक्ति त्याग दें।

नवार्ण मन्त्र के सभी प्रयोग पूर्व दिशा के तरफ मुख करके ही करें।

जप संख्या का नियम

किसी प्रकार से महामारी , जैसे - हैजा, प्लेग, शीतला या अन्य प्रकार के महा उपद्रवों के शान्ति के लिये नवार्ण मन्त्र का एक करोड़ जप करना चाहिये। जब सामान्य रोग हो, पुत्र प्राप्ति के लिये , स्त्री प्राप्ति के लिये , पति प्राप्ति के लिये , सवालाख जप करना चाहिये। अपमृत्यु का भय हो , भय की आशंका हो तो दश हजार का जप करना चाहिये। यात्रा में यदि भय उपस्थि हो तो एक हजार जप करना चाहिये।

जप के लिये विशेष

यः शास्त्रविधि मृत्सृज्य वर्तते काम कारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परांगितम्।।

इस महावाक्यानुसार शास्त्र की विधि के अनुसार पूजन अर्चन करना चाहिये। मनमानी ढंग से करना या कराना हानिप्रद होता है। प्रयोग कराने के समय शुभ मुहुर्त चन्द्र तारा आदि बलों को दिखाकर तब अनुष्ठान पुरश्चरण प्रयोग कराना चाहिये। प्रयोग कराते समय दुर्गामन्दिर देवालयसिद्धस्थान-, नदी तट , बिल्व, अश्वस्थवृक्ष (पीपल) के स्थान पर सफाई कराकर अनुष्ठान कराना चाहिये।

प्रयोग पुरश्चरणात्मक हो तो प्रतिदिन की संख्या समान होनी चाहिए, किसी दिन जप अधिक किसी दिन कम नहीं होना चाहिएइसी प्रकार ब्राह्मण भी प्रतिदिन उतनी ही संख्या में रहें जितनों में - न पुरश्चरण प्रारम्भ किया होप्रथमदि, इसमें उलटबेशी करने से विक्षिप्तता का भय रहता है। -कमी-फेर - जपसंख्या पूर्ण होने पर अर्थात् पुरश्चरण समाप्ति पर जितना जप हुआ हो उसका दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण,तर्पण का दशांश मार्जन और मार्जन का दशांश या कार्यानुसार न्यूनाधिक रूप में

ब्राह्मण भोजन कराना चाहिये ।

दुर्गापूजन विधि

दुर्गालय देवालय वा दुर्गामन्दिर में बैठकर पूजन सामग्री का सम्प्रोक्षण करके आचमन प्रणायाम करे तथा सर्वप्रथम गणेश भगवान का पूजन करें -

एक लकड़ी की चौकी के ऊपर गणेश, षोडशमातृका, सप्तमातृका स्थापित करे। दूसरी चौकी पर नवग्रह, पञ्चलोकपाल आदि स्थापति करे। तीसरी चौकी के उपर सर्वतोभद्र बनाकर बीच में दुर्गा जी को स्थापित करे। ईशान कोण में घी का दीपक रखे और अपने दायें हाथ में पूजा सामग्री रख लेवे। शुद्ध नवीन वस्त्र पहनकर पूर्वाभिमुख बैठे। कुंकुम (रोली) का तिलक करके अपने दायें हाथ की अनामिका में सुवर्ण की अंगुठी पहनकर आचमन प्राणायाम कर पूजन आरम्भ करे।

पवित्रीकरण–(अधोलिखित मन्त्र को पढते हुए कलश के जल से अपने उपर तथा पूजनादि की सामग्रियों पर जल छिडके) :–

ऊ अपवित्र: पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।

यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

ऊँ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ऊँ पुण्डरीकाक्षः पुनातु , ऊँ पुण्डरीकाक्षः पुनातु ,

आचमन -:(तीन बार आचमन करे)

ऊँ केशवाय नमः। ऊँ नारायणाय नमः। ऊँ माधवाय नमः।

प्राणायाम-:

गोविन्दाय नमः बोलकर हाथ धोवे और यदि ज्यादा ही कर सके तो तीन बार पूरक (दायें हाथ के अंगूठे से नाक का दायाँ छेद बन्द करके बायें छेद से श्वास अन्दर लेवे), कुम्भक (दायें हाथ की छोटी अंगुली से दूसरी अंगुली द्वारा बाया छेद भी बन्द करके श्वास को अन्दर रोके), रेचक (दायें अंगूठे को धीरे–धीरे हटाकर श्वास बाहर निकाले) करे।

पवित्रीधारणम् -

ऊँ पवित्रेस्त्थो व्वैष्णव्यौसवितुर्व्वः प्रसव उत्पन्नुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्स्य रश्मिभिः।

तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्।।

सपत्नीक यजमान के ललाट में स्वस्तितिलक लगाते हुए मन्त्र को बोले-

ऊँ स्वस्तिन इन्द्रो व्वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा व्विश्ववेदाः।

स्वस्ति नस्ताक्ष्योऽरिष्टनेमि स्वस्ति नो वृहस्पतिर्दधातु ।।

ऊँ श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्क्न्या वहोरात्रेपार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्वि नौव्व्यात्तम्।

इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्व्वलोकं म ऽइषाण।।

ग्रन्थिबन्धन-:(लोकाचार से यजमान का सपत्नीक ग्रन्थिबन्धन करे) -

ऊँ तम्पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुतवा हिरण्यैः।

नाकङ्गृभ्णानाः सुकृतस्यलोके तृतीयपृष्ठेऽअधिरोचने दिवः।।

आसनपूजन -:(आसन की पूजा करे)

ऊँ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।

पवित्रं कुरु चासनम्। !त्वं च धारय मां देवि

ऊँ कूर्मासनाय नमः।

ऊँ अनन्तासनाय नमः।

विमलासनाय नमः। (सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि)

भूतापसारण (बायें हाथ में सरसों लेकर उसे दाहिने हाथ से ढककर निम्न मन्त्र पढ़े) –

रक्षोहणं व्वलगहनं व्वैष्णवीमिदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि य्मे निष्ट्यो ममात्यो निचखानेदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि य्मे समानोमसमानो निचखानेदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि य्मे सबर्न्धुम सबन्धुर्न्निचखानेदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि य्मे सजातो मसजातो निचखानोत्कृत्याङ्क्रिरामि।

ऊँ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामवरोधेन पूजाकर्म समारभे।।

निम्न मन्त्रों को पढते हुए सरसों का सभी दिशाओं में विकिरण करे :–

प्राच्यैदिशे स्वाहार्व्वाच्यै दिशेस्वाहा दक्षिणायै दिशेस्वाहार्व्वाच्यै दिशेस्वाहा प्रतीच्यै दिशे स्वाहार्व्वाच्यै दिशे स्वाहोदीच्यै दिशे स्वाहा र्व्वाच्यै दिशे स्वाहोद्ध्वायै दिशेस्वाहा र्व्वाच्यै दिशे स्वाहा व्वाच्यै दिशे स्वाहार्व्वाच्यै दिशे स्वाहा।

पूर्वे रक्षतु गोविन्द आग्नेय्यां गरुड़ध्वजः। दक्षिणे रक्षतु वाराहो नारसिंहस्तु नैर्ऋते।।
पश्चिमे वारुणो रक्षेद्वायव्यां मधुसूदनः। उत्तरे श्रीधरो रक्षेद् ऐशान्ये तु गदाधरः।।
ऊर्ध्वं गोवर्धनो रक्षेद्अधस्ताद्त्रिविक्रमः। एवं दश दिशो रक्षेद्वासुदेवो जनार्दनः।।

कर्मपात्र पूजन् (ताँबे के पात्र में जलभरकर कलश को अक्षतपुञ्ज पर स्थापित करते हुए पूजन करे) :–

ऊँ तत्वाामि ब्ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते जमानो हविर्ब्भिः।
अहेडमानो व्वरुणे हबोद्ध्युरुश समानऽ आयुः प्प्रमोषीः।। ऊँ वरुणाय नमः।
पूर्वे ऋग्वेदाय नमः। दक्षिणे यजुर्वेदाय नमः।
पश्चिमे सामवेदाय नमः। उत्तरे अथर्ववेदाय नमः।
मध्ये साङ्गवरुणाय नमः। सर्वोपचारार्थे चन्दन अक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अंकुशमुद्रया सूर्यमण्डलात्सर्वाणि तीर्थानि आवाहयेत् (दायें हाथ की मध्यमा अङ्गुली से जलपात्र में सभी तीर्थों का आवाहन करे) :–

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेस्मिन्सन्निधिं कुरु।।
कलशस्य मुखे विष्णु कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।।

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।।
अश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बु समाश्रिताः।
गायत्री चात्र सावित्री शान्तिः पुष्टिकरा तथा।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।।

अभ्यास प्रश्न -

प्रश्न – १ : किस उपासना में नवार्ण मन्त्रों का जपादि किया जाता
प्रश्न – २ नवार्ण मन्त्र का जप किस माला से करना चाहिये?
प्रश्न – ३ : नवार्ण मन्त्र से क्या तात्पर्य है
प्रश्न – ४ नवार्ण जप काल में किसकी प्रतिमा समक्ष रखना चाहिये?
प्रश्न – ५ : नवार्ण मन्त्र का जप किस आसन पर बैठकर करना चाहिये?

उदकेन पूजासामग्रीं स्वात्मानं च सम्प्रोक्षयेत् (पात्र के जल से पूजन सामग्री एवं स्वयं का प्रोक्षण करे) :–

ऊँ आपो हिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्ज्जेदधातन। महेरणायचक्षसे।।
योवः शिवतमोरसस्तस्यभाजयते हनः। उशतीरिवमातरः।।
तस्म्माऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्वथ आपोजनयथाचनः।।

दीपपूजनम् (देवताओं के दाहिने तरफ घी एवं विशेष कर्मों में बायें हाथ की तरफ तेल का दीपक जलाकर पूजन करना चाहिए) :–

अग्निर्द्देवता व्वातो देवता सूर्य्यो देवता चन्द्रमा देवता व्वसवो देवता रुद्रा देवतादित्त्या देवता मरुतो देवता विश्श्वे देवा देवता बृहस्प्पतिर्द्देवतेन्द्रो देवता व्वरुणो देवता।

ऊँ दीपनाथाय नमः। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि (गन्ध अक्षत पुष्प दीपक के सामने छोडे।)

प्रार्थनाः–(हाथ में अक्षत–पुष्प लेकर अधोलिखित श्लोक को पढते हुए दीपक के सामने छोड़े

ऊँ भो दीप देवस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत।
यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात्तावदत्र स्थिरो भव।।

सर्वप्रथम दुर्गापूजन की अधिकार प्राप्ति के लिये प्रायश्चित्तरूप में गोदान का संकल्प करना चाहिये

प्रायश्चित संकल्प हाथ में जल अक्षत–पुष्प कुश तथा द्रव्य लेकर प्रायश्चित संकल्प करे–

हरिः ऊँ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ऊँ तत्सद। ैतस्य श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अ। श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्द्धे तदादौ श्रीश्वेतवाराहकल्पे सप्तमे वैवस्वतमन्वतरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे तत्रापि परमपवित्रे भारतवर्षे आर्यावर्त अन्तर्गते अमुकदेशे (अपने देश का नाम) अमुकक्षेत्रे (अपने राज्य का नाम) अमुकनगरे (अपने नगर का नाम) श्री गङ्गायमुनयोः अमुकभागे (अपने स्थान की दिशा) नर्मदाया अमुक भागे (अपने स्थान की दिशा) चान्द्रसंज्ञकानां प्रभवादिषष्टिसम्वत्सराणां मध्ये अमुक नाम्नि सम्वत्सरे (सम्वत्सर का नाम) श्रीमन्नृपति विक्रमार्कसमयादमुकसंख्यापरिमिते विक्रमाब्दे (वर्तमान विक्रम सम्वत) अमुकायने (वर्तमान

सम्वत्) अमुकर्तौ (वर्तमान ऋतु) अमुकमासे (वर्तमान मास) अमुकपक्षे (वर्तमान पक्ष) अमुकतिथौ (वर्तमान तिथि) अमुकवासरे अमुकगोत्रः (यजमान का गौत्र) अमुकशर्मा अहं क्रियमाण नवार्ण मन्त्र जपकर्मणि अधिकार प्राप्त्यर्थं कायिकवाचिकमानसिकसांसर्गिकचतुर्विधपापशमनार्थं शरीरशुद्ध्यर्थं गोनिष्क्रयद्रव्यं ''''''''गोत्राय''''''''शर्मणे आचार्याय भवते सम्प्रददे (ऐसा कहकर हाथ का संकल्प जल तथा द्रव्य ब्राह्मण के हाथ में देदे।

मंगल पाठ –हस्ते अक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा (हाथ में अक्षत–पुष्प लेकर गणेश जी की प्रार्थना करे) :–

ॐ आनो भद्राः क्रतवो यन्तु व्विश्वतो दब्धासोऽअपरीतासऽउद्भिदः। देवानो यथा सदमिद्वृधेऽअसन्नप्रायुवोरक्षितारो दिवेदिवे।।१।। देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतान्देवाना रातिरभिनोनिवर्त्तताम्। देवाना सक्ख्यमुपसेदिमा व्वयं देवानऽआयुः प्रतिरन्तुजीवसे।।२।। तान्पूर्वया निविदाहूमहे व्वयं भगम्मित्रमदितिं दक्षमस्रिधम्। अर्यमणं व्वरुण सोममश्विना सरस्वती नः सुभगामयस्करत्।।३।। तन्नोव्वातो मयो भुव्वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता ꠱ ौः। तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयो भुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम्।।४।। तामीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पति–न्धियञ्जिन्वमवसे हूमहे व्वयम्। पूषा नो यथा व्वेदसामद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।५।। स्वस्ति न ऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषाव्विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्ताक्ष्यो ऽ अरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु।।६।। पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो व्विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वामनवः सूरचक्षसो व्विश्वेनोदेवाऽअवसा गमन्निह।।७।। भद्रङ्कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा œ सस्तनूभिर्व्व्यशेमहि देवहितं य्यदायुः।।८।। शतमिन्नुशरदो ऽ अन्ति देवा त्रा नश्चक्रा जरसंतनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मद्ध्या रीरिषतायुर्गन्तोः।।६।। अदिति꠱ ौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वेदेवा ऽ अदितिः पञ्चजना ऽ अदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्वम्।।१०।। ꠱ ौः शान्तिरन्तरिक्ष œ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। व्वनस्पतयः शान्ति व्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व œ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामाशान्तिरेधि।।११।। यतो यतः समीहसे ततो नो ऽ अभयं कुरु। शन्नः कुरु प्रजाब्भ्योभयन्नः पशुभ्यः।।१२।। सुशान्तिर्भवतु।। **(अक्षत–पुष्प को सिर से लगाकर गणपति मण्ड़ल पर गणेशजी को समर्पित करे)**

गणपत्यादि देवानां स्मरणम्– (हाथ में अक्षत–पुष्प लेकर गणेश जी की प्रार्थना करे)

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजगर्णकः। लम्बोदरश्च विकटोविघ्ननाशो विनायकः। धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि। वि꠱ ारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। संग्रामे संकटे चौव विघ्नस्तस्य न जायते। शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये। अभीप्सितार्थ सिध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः। सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः। सर्वमङ्ग्ल माङ्ग्ल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते। सर्वदा सर्व कार्येषु नास्ति तेषाममङ्ग्गलम्। येषां हृदिस्थो भगवान् मंगलायतनं हरिः। तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव। वि꠱ ाबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि। लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः। येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः। यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः। तत्र

श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम। सर्वेष्वारब्धकार्येषु त्रयस्त्रि भुवनेश्वराः। देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः। विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्। वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानी मणिकर्णिकाम्। विनायकं गुरुभानुं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान्। सरस्वतीं प्रणौम्यादौ सर्वकार्यार्थ सिद्धये।ऊँ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। ऊँ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। ऊँ उमामहेश्वराभ्यां नमः। ऊँ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। ऊँ शचीपुरन्दराभ्यां नमः। ऊँ मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः। ऊँ सर्वपितृदेवताभ्यो नमः। ऊँ इष्टदेवताभ्यो नमः। ऊँ कुलदेवताभ्यो नमः। ऊँ ग्रामदेवताभ्यो नमः। ऊँ स्थानदेवताभ्यो नमः। ऊँ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ऊँ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ऊँ गुरवे नमः। ऊँ परमगुरवे नमः। ऊँ परात्परगुरवे नमः। ऊँ परमेष्ठिगुरवे नमः।(अक्षत–पुष्प को सिर से लगाकर गणपति मण्ड़ल पर गणेशजी को समर्पित करे)

संकल्प–हाथ में जल अक्षत–पुष्प कुश तथा द्रव्य लेकर संकल्प करे–

हरिः ऊँ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ऊँ तत्सद। ैतस्य श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अ। श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्द्धे तदादौ श्रीश्वेतवाराहकल्पे सप्तमे वैवस्वतमन्वतरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे तत्रापि परमपवित्रे भारतवर्षे आर्यावर्त अन्तर्गते अमुकदेशे (अपने देश का नाम) अमुकक्षेत्रे (अपने राज्य का नाम) अमुकनगरे (अपने नगर का नाम) श्री गङ्गायमुनयोः अमुकभागे (अपने स्थान की दिशा) नर्मदाया अमुक भागे (अपने स्थान की दिशा) चान्द्रसंज्ञकानां प्रभवादिषष्टिसम्वत्सराणां मध्ये अमुक नाम्नि सम्वत्सरे (सम्वत्सर का नाम) श्रीमन्नृपति विक्रमार्कसमयादमुकसंख्यापरिमिते विक्रमाब्दे (वर्तमान विक्रम सम्वत्) अमुकायने (वर्तमान सम्वत्) अमुकर्तौ (वर्तमान ऋतु) अमुकमासे (वर्तमान मास) अमुकपक्षे (वर्तमान पक्ष) अमुकतिथौ (वर्तमान तिथि) अमुकवासरे अमुकगोत्रः (यजमान का गौत्र) अमुकशर्मा अहं (ब्राह्मण के लिए शर्मा, क्षत्रिय के लिए वैश्य, वैश्य के लिए गुप्ता, शूद्र के लिए दासान्त) सपुत्रस्त्रीबान्धवो अहं मम जन्मलग्नाच्चन्द्रलग्नाद् वर्ष मास दिन गोचराष्टक वर्गदशान्तर्दशादिषु चतुर्थाष्टं द्वादशस्थान् स्थित क्रूरग्रहास्तेषां अनिष्टफल शान्ति पूर्वकं द्वितीयसप्तम् एकादशस्थानस्थित सकल शुभफल प्राप्त्यर्थं श्री दुर्गा नवार्ण मन्त्र दुर्गा देवी रुद्रदेवता यथा (शत सहस्र अयुत लक्ष कोटयादि) संख्याक नवार्ण मन्त्र जपम् अहं करिष्ये **(वा ब्राह्मण द्वारा कारयिष्ये)** । ऐसा कहकर हाथ का संकल्प जल तथा द्रव्य गणेश जी के सामने छोड़ दे।

पुनः हाथ में जल अक्षत–पुष्प कुश तथा द्रव्य लेकर बोले –

तदंगत्वेन कार्यस्य सिद्धयर्थं आदौ गणेशाम्बिकयोः पूजनं करिष्ये। ऐसा कहकर हाथ का संकल्प जल तथा द्रव्य गणेश जी के सामने छोड़ दे।

पूजा में जो वस्तु वि। मान न हो उसके लिये 'मनसा परिकल्प्य समर्पयामि' कहे। जैसे, आभूषणके लिये 'आभूषणं मनसा परिकल्प्य समर्पयामि'।)

सर्वप्रथम गणपति का पूजन आप कर ले।

दुर्गापूजन –

दुर्गा जी का आवाहन ध्यान – (हाथ में अक्षत पुष्प लेकर अधोलिखित मन्त्र पढते हुए दुर्गा जी के उपर छोड़े)

खड्गं चक्रगदेषुचापरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शंखं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वांगभूषावृताम्।
नीलाश्म। ुतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां

यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजोहन्तुं मधुं कैटभम्‖१‖

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री दुर्गा देव्यै नमः दुर्गाम् आवाहयामिध्यायामि स्थापयामि पूजयामि। (क्षत पुष्प को दुर्गा जी के उपर छोड़ दे)

प्रतिष्ठापनम्:– (हाथ में अक्षत लेकर अधोलिखित मन्त्र पढते हुए दुर्गा जी के उपर छोड़े

ऊँ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्यस्य बृहस्पर्तिज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टं यज्ञ œ समिमन्दधातु।
विश्वेदवा स ऽ इह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ।।
ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री दुर्गा देव्यै नमः। सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्

आसनम् –(हाथ में पुष्प लेकर अधोलिखित मन्त्र पढते हुए दुर्गा जी के उपर छोड़े

ऊँ पुरुष ऽ एवेद œ सर्व्वंद्भूतँच्च भाव्व्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।
ऊँ भूर्भुवः स्वः **श्री दुर्गा देव्यै** श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः आसनार्थे पुष्पं समर्पयामि।

पा। म् ––(हाथ में जल लेकर अधोलिखित मन्त्र पढते हुए दुर्गा जी के उपर छोडे

ऊँ एतावानस्य महिमातोज्ज्याँश्चपूरुषः।
पादोस्य व्विश्श्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः **श्री दुर्गा देव्यै** नमः पादप्रक्षालनार्थं पा। ं समर्पयामि।

अर्घ्यम् ––(हाथ में जल लेकर अधोलिखित मन्त्र पढते हुए दुर्गा जी के उपर छोडे

ऊँ धामन्तेव्विश्श्वम्भुवनमधिश्रितमन्तः समुद्रेह। न्त रायुषि।
अपामनीकेसमिथेय ऽ आभृतस्तमश्याम मधुमन्तन्त ऽ ऊर्मिम्।।
ऊँ भूर्भुवः स्वः **श्री दुर्गा देव्यै** नमः हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयम् ––(हाथ में जल लेकर अधोलिखित मन्त्र पढते हुए दुर्गा जी के उपर छोडे

सर्वतीर्थ समायुक्तं सुगन्धिनिर्मलं जलम्।
आचम्यार्थं मया दत्तं गृहाण गणनायक।।
ऊँ भूर्भुवः स्वः **श्री दुर्गा देव्यै** नमः मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

जलस्नानम् –(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए दुर्गा जी के उपर जल छोडे

ऊँ व्वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनीस्त्थो व्वरुणस्य ऽ ऋतसदन्यसि
वरुणस्य ऽ ऋतसदनमसि व्वरुणस्य ऽ ऋतसदनमासीद।।
ऊँ भूर्भुवः स्वः **श्री दुर्गा देव्यै** नमः स्नानार्थे जलं समर्पयामि।।

पञ्चामृत स्नानम् –(अधोलिखित मन्त्र पढ़ते हुए दुर्गा जी के उपर पंचामृत से स्नान करावे

पयो दधिघृतं चैव मधुं च शर्करायुतम्।
सरस्वती तु पञ्चधासो देशेभवत्सरित्।
ऊँ भूर्भुवः स्वः **श्री दुर्गा देव्यै** नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदक स्नानम् –(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए दुर्गा जी के उपर शुद्ध जल से स्नान करावे)

ऊँ शुद्धवालः सर्व शुद्धवालो मणिवालस्त ऽ आश्विनः श्येतः
श्येताक्षो रुणस्तेरुद्रायपशुपतये कर्णायामा अवलिप्ता रौद्रानभोःरूपाः पार्ज्जन्न्याः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः **श्री दुर्गा देव्यै** नमः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

वस्त्रोपवस्त्रम्–(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए दुर्गा जी के उपर रक्त सूत्र चढावे)

ॐ सुजातोज्ज्योतिषा सहशर्म्म व्वरुथमासदत्स्वः।

व्वासो ऽ अग्रे विश्वःप œ सँव्ययस्वव्विभावसो।।

ॐ भूर्भुवः स्वः **श्री दुर्गा देव्यै** नमः वस्त्रोपवस्त्रार्थे रक्तसूत्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम् –(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए दुर्गा जी के उपर यज्ञोपवीत चढावे)

ॐ ब्रह्मज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोव्वेनऽआवः।

सबुद्धन्याऽउपमा अस्यविष्ठाः सतश्च्चयोनिमसतश्चव्विवः।

ॐ भूर्भुवः स्वः **श्री दुर्गा देव्यै** नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

चन्दनम् ––(अधोलिखित मन्त्र पढ़ते हुए दुर्गा जी के उपर चन्दन चढ़ावे)

ॐ अ œ शुना ते अ œ शुः पृच्यतां परुषा परुः।

गन्धस्ते सोममवतु मदायरसोऽअच्युतः।

ॐ भूर्भुवः स्वः **श्री दुर्गा देव्यै** नमः चन्दनकुंकुमञ्च समर्पयामि।

अक्षताः –(अधोलिखित मन्त्र पढ़ते हुए दुर्गा जी के उपर अक्षत चढ़ावे)

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रियाऽअधूषत।

अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठ्ठयामती योजान्विन्द्रते हरी।।

ॐ भूर्भुवः स्वः **श्री दुर्गा देव्यै** नमः अलङ्करणार्थम् अक्षतान् समपर्यामि।

पुष्प (पुष्पमाला) –(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए दुर्गा जी के उपर पुष्पमाला अथवा पुष्प चढावे)

ॐ ओषधिः प्रतिमोदद्ध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।

अश्श्वाऽ इव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्ण्वः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः **श्री दुर्गा देव्यै** नमः पुष्पाणि समर्पयामि।

दूर्वा –(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए दुर्गा जी के उपर दूर्वा चढावे)

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवा नो दूर्व्वे प्प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।

ॐ भूर्भुवः स्वः **श्री दुर्गा देव्यै** नमः दूर्वाङ्कुराणि समर्पयामि।

बिल्वपत्रम् ––(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए दुर्गा जी के उपर बिल्वपत्र चढावे)

ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो व्वर्मिणे च वरुथिने च नमः

श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुब्भ्याय चाहनन्याय च।।

ॐ भूर्भुवः स्वः **श्री दुर्गा देव्यै** नमः बिल्वपत्राणि समर्पयामि।

सुगन्धितद्रव्यम् ––(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए दुर्गा जी के उपर इत्र चढावे)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीयमामृतात्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः **श्री दुर्गा देव्यै** नमः सुगन्धितद्रव्यं समर्पयामि।

सिन्दूरम् –(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए दुर्गा जी के उपर सिन्दूर चढावे)

ॐ सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो व्वातप्रमियः पतयन्ति ह्र्यवाः।

घृतस्य धारा ऽ अरुषो न व्वाजी काष्ठाभिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः **श्री दुर्गा देव्यै** नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्याणि ––(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए दुर्गा जी के उपर अवीर चढावे)

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुञ्ज्याया हेतिं परिबाधमानः।

हस्तग्घ्नो विश्वाव्वयुनानि विद्वान्पुमान्पुमा œ सम्परिपातुविश्वतः।।
ॐ भूर्भुवः स्वः **श्री दुर्गा देव्यै** नमः परिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

धूपम् ––(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए दुर्गा जी के उपर धूप दिखावे)
धूरसि धूर्व्वधूर्व्वन्तं धूर्व्व तोस्म्मान् धूर्व्वतितन्धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः।
देवानामसि व्वह्नितम œ सस्निनतमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्।
ॐ भूर्भुवः स्वः **श्री दुर्गा देव्यै** नमः धूपम् आघ्रापयामि।

दीपम् –––(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए दुर्गा जी को दीप दिखावे)
ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्योज्योतिर्ज्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।
अग्निर्व्वर्चोर्ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा सूर्यो वर्च्चोर्ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा।
ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।
ॐ भूर्भुवः स्वः **श्री दुर्गा देव्यै** नमः दीपकं दर्शयामि।
हस्तौ प्रक्षाल्य। (इसके बाद हाथ धोये)

नैवे। म् –––(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए दुर्गा जी को भोग लगावे)

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष œ शीर्ष्णो । ैः समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ २ अकल्पयन्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः **श्री दुर्गा देव्यै** नमः नैवे। ं निवेदयामि। मध्ये जलं निवेदयामि। (इसके बाद पॉच बार जल चढावे)

ऋतुफलम् –(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए दुर्गा जी के उपर फल चढावे)
ॐ याः फलनीर्या ऽ अफला ऽ अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्व œ हसः।।
ॐ भूर्भुवः स्वः **श्री दुर्गा देव्यै** नमः फलं निवेदयामि। पुनः आचमनीयं निवेदयामि।(इसके बाद पुनः जल चढावे)

ताम्बूल–मन्त्र बोलते हुए लवंग,इलायची, सोपारी सहित पान का पत्ता दुर्गा जी के उपर चढावे

ॐयत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।

वसन्तोस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मःशरद्धविः।।

ॐ भूभुर्वः स्वः श्री दुर्गा देव्यै नमः मुखवासार्थं एलालवंगपूगीफलसहितं ताम्बूलं समर्पयामि।
(इलायची,लौंग–सुपारी सहित ताम्बूल को चढाये)

दक्षिणा–(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए दुर्गा जी के उपर दक्षिणा चढावे)

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातःपतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं । ामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

ॐ भूभुर्वः स्वः श्री दुर्गा देव्यै नमः,कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।(द्रव्य दक्षिणा समर्पित करें।)

पुष्पांजलि–मन्त्र बोलते हाथ में फूल लेकर दुर्गा जी को पुष्पांजलि अर्थात् प्रार्थना करना।

ॐयज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।

अथ श्रीगणेशषडक्षर मन्त्र–जपविधिः

किसी भी देवता के मन्त्रजाप से पूर्व गणेशमन्त्र के 108 (न्यूनतम) जप परम आवश्यक है। इसके पश्चात् ही कार्यसिद्धि होती है। जप के पूर्व एवं पश्चात् दोनों ही समय जप करना परम आवश्यक है।

हाथ में जल लेकर अधोलिखित मन्त्र को पढते हुए जल को गीरावें

ऊँ अस्य श्री गणेशमन्त्रस्य भार्गव ऋषिः अनुष्टुच्छन्दः विघ्नेशो देवता वं बीजं, यं शक्तिः हुँ कीलकम् सर्वार्थसिद्धये जपे विनियोगः॥

ऋष्यादिन्यासः –

ऊँ भार्गव ऋषये नमः शिरसि (दाहिने हाथ से शिर को स्पर्श करे)।

ऊँ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे (दाहिने हाथ से मुख को स्पर्श करे)।

ऊँ विघ्नेशदेवतायै नमः ह्रदि (दाहिने हाथ से हृदय को स्पर्श करे)।

ऊँ वं बीजाय नमः गुह्ये (दाहिने हाथ से गुदा को स्पर्श करे)।

ऊँ यं शक्तये नमः पादयोः दाहिने हाथ से दोनो पैर को स्पर्श करे)।

ऊँ हुँ कीलकाय नमः सर्वाङ्गे (दाहिने हाथ से पुरे शरीर को स्पर्श करे)।

करन्यासः –

ऊँ वं अंगुष्ठाभ्यां नमः (दोनों हाथों की तर्जनी अंगुलियों से दोनों अंगूठों का स्पर्श करे) ।

ऊँ क्रं तर्जनीभ्याँ नमः (दोनों हाथों के अंगूठों से दोनों तर्जनी अंगुलियों का स्पर्श करे) ।

ऊँ तुँ मध्यमाभ्याँ नमः(अंगूठों से मध्यमा अंगुलियों का स्पर्श करे) ।

ऊँ डाँ अनामिकाभ्याँ नमः (अंगूठों से अनामिका अंगुलियों का स्पर्श करे) ।

ऊँ यं कनिष्ठिकाभ्याँ नमः (अंगूठों से कनिष्ठिका अंगुलियों का स्पर्श करे) ।

ऊँ हुँ करतलकरपृष्ठाभ्याँ नमः(हथेलियों और उनके पृष्ठ भागों का परस्पर स्पर्श करे) ।

षडङ्गन्यासः

ऊँ वं नमः ह्रदयाय नमः (दाहिने हाथ से हृदय को स्पर्श करे ं)

ऊँ क्रं नमः शिरसे स्वाहा (दाहिने हाथ से शिर को स्पर्श करे)।

ऊँ तुं नमः शिखायै वषट् (दाहिने हाथ से शिखा को स्पर्श करे)।

ऊँ डां नमः कवचाय हुँ (दाहिने हाथ की अंगुलियों से बायें कन्धे का और बायें हाथ की अंगुलियों से दाहिने कन्धे का साथ ही स्पर्श करे)।

ऊँ यं नमः नेत्रत्रयाय वौषट् (दाहिने हाथ की अंगुलियों के अग्रभाग से दोनों नेत्रों और ललाट के मध्य भाग को स्पर्श करे)।

ऊँ हुँ नमः अस्त्रायफट् यह वाक्य पढकर दाहिने हाथ को सिर के उपर से बायी ओर से पीछे की ओर लेजाकर दाहिनी ओर से आगे की ले आये और तर्जनी तथा मध्यमा अंगुलियों से बायें हाथ की हथेली पर ताली बजाये)।

वर्णन्यासः –

ऊँ वं नमः भ्रुवोर्मध्ये (दाहिने हाथ से भ्रुव के मध्य को स्पर्श करे)।

ऊँ क्रं नमः कण्ठे (दाहिने हाथ से कण्ठ को स्पर्श करे)।

ऊँ तुं नमः ह्रदये दाहिने हाथ से हृदय को स्पर्श करे)।

ऊँ डां नमः नाभौ(दाहिने हाथ से नाभी को स्पर्श करे)।

ऊँ यं नमः लिङ्गे् (दाहिने हाथ से लिंग को स्पर्श करे)।

ऊँ हुँ नमः पादयोः(दाहिने हाथ से दोनों पैरों को स्पर्श करे)।

ऊँ वक्रतुण्डाय हुँ सर्वाङ्गे(दाहिने हाथ से सभी अंगों को स्पर्श करे)।

हाथों में पुष्प लेकर अधोलिखत श्लोक को पढते हुए गणेश जी का प्रार्थना करे

ऊँ उ। द्दिनेश्वररुचिं निजहस्तपद्मैः,

पाशाङ्कुशाभयवरान्दधतं गजास्यम्।
रक्ताम्बरं सकलदुःखहरं गणेशं,

ध्यायेत् प्रसन्नमखिलाः भरणाभिरामम्॥

जप हेतु माला का पूजन–मन्त्र :–
ऊँ 'ऐं ह्रीं अक्ष–मालिकायै नमः इस मन्त्र से माला की पूजा करे।
इसके बाद हाथों में माला लेकर अधोलिखत श्लोक को पढते हुए माला की प्रार्थना करे।
ऊँ मां माले महा–माये सर्व–शक्ति स्वःपिणि!
चतुवर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव।।
ऊँ अविघ्नं कुरु माले! त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
जप–काले च सिद्धयर्थं प्रसीद मम सिद्धये।।
ऊँ अक्ष–मालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्व–मन्त्रार्थ–साधिनि!
साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा।।१
इसके बाद ऊँ वक्रतुण्डाय हुँ। इस मन्त्र का 108 बार जप करे
नवार्ण–मन्त्र जप विधि
विनियोग–हाथ में जल लेकर अधोलिखित मन्त्र को पढते हुए जल को गीरावें
अस्य श्री नवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्राऋषयः गायत्र्यु–ष्णिग्नुष्टुभश्छन्दांसि श्री महाकालीमहालक्ष्मी महासरस्वत्योदेवताः नन्दाशाकम्भरीभीमाः शक्तयः रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामर्यो बीजानि अग्निवायुसूर्यास्तत्त्वानि ममाभीष्ट्कामनासिद्ध्यर्थं श्रीमहाकालीमहा–लक्ष्मीमहारसस्वती देवता प्रीत्यर्थे न्यासे विनियोगः। (जल को गीरावें)
ऋष्यादि न्यास–
ऊँ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि (दाहिने हाथ से शिर को स्पर्श करे)।
ऊँ गायर्त्युष्णिगनुष्टुप् छन्दोभ्यो नमः मुखे। (दाहिने हाथ से मुख को स्पर्श करे)।
ऊँ श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती देवताभ्यो नमः हृदि (दाहिने हाथ से हृदय को स्पर्श करे)।
ऊँ ऐं बीजाय नमः गुह्ये (दाहिने हाथ से गुदा को स्पर्श करे)।
ऊँ ह्रीं शक्त्ये नमः पादयोः (दाहिने हाथ से दोनो पैर को स्पर्श करे)।
क्लीं कीलकाय नमः नाभौ (दाहिने हाथ से नाभी को स्पर्श करे)।
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै – इस मूल मन्त्र से हाथों की शुद्धि करके करन्यास करें ।
करन्यास –
ऊँ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः।(दोनों हाथों की तर्जनी अंगुलियों से दोनों अंगूठों का स्पर्श करे) ।
ऊँ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः।(दोनों हाथों के अंगूठों से दोनों तर्जनी अंगुलियों का स्पर्श करे) ।
ऊँ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः।(अंगूठों से मध्यमा अंगुलियों का स्पर्श करे) ।
ऊँ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः।(अंगूठों से अनामिका अंगुलियों का स्पर्श करे) ।
ऊँ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः।(अंगूठों से कनिष्ठिका अंगुलियों का स्पर्श करे) ।
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतलकर–पृष्ठाभ्यां नमः। (हथेलियों और उनके पृष्ठ भागों का परस्पर स्पर्श करे) ।

हृदयादिन्यास

ऊँ ऐं हृदयाय नमः।(दाहिने हाथ से हृदय को स्पर्श करे)

ऊँ ह्रीं शिरसे स्वाहा।(दाहिने हाथ से शिर को स्पर्श करे)

ऊँ क्लीं शिखायै वषट्। दाहिने हाथ से शिखा को स्पर्श करे)।

ऊँ चामुण्डायै कवचाय हुम। (दाहिने हाथ की अंगुलियों से बायें कन्धे का और बायें हाथ की अंगुलियों से दाहिने कन्धे का साथ ही स्पर्श करे)।

ऊँ विच्चे नेत्त्रायाय–वौषट्। (दाहिने हाथ की अंगुलियों के अग्रभाग से दोनों नेत्रों और ललाट के मध्य भाग को स्पर्श करे)।

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्यायैविच्चे अस्त्रायफट्। यह वाक्य पढकर दाहिने हाथ को सिर के उपर से बायी ओर से पीछे की ओर लेजाकर दाहिनी ओर से आगे की ले आये और तर्जनी तथा मध्यमा अंगुलियों से बायें हाथ की हथेली पर ताली बजाये

अक्षरन्यासः –

ऊँ ऐं नमः शिखायाम्। (दाहिने हाथ से शिखा को स्पर्श करे)

ऊँ ह्रीं नमः, दक्षिण नेत्रे।(दाहिने हाथ से दाहिने नेत्र को स्पर्श करे)

ऊँ क्लीं नमः, वामनेत्रे।(दाहिने हाथ से बायें नेत्र को स्पर्श करे)

ऊँ चां नमः, दक्षिणकर्णे।(दाहिने हाथ से दाहिने कान को स्पर्श करे)

ऊँ मुं नमः वामकर्णे।(दाहिने हाथ से बायें कान को स्पर्श करे)

ऊँ डां नमः, दक्षिणनासापुटे।(दाहिने हाथ से दाहिने नासा पुट को स्पर्श करे)

ऊँ यैं नमः, वामनासापुटे।(दाहिने हाथ से बायें नासापुट को स्पर्श करे)

ऊँ विं नमः, मुखे।(दाहिने हाथ से मुख को स्पर्श करे)

ऊँ च्चें नम., गूह्ये। (दाहिने हाथ से गुदा को स्पर्श करे)

मूलेन अष्टवारं व्यापकं कुर्यात्। इस प्रकार न्यास करके मूलमन्त्र से आठ बार व्यापक (दोनों हाथों के द्वारा सिर से लेकर पैर तक के सभी अंगों का स्पर्श करे)

दिङ्न्यासः – अधोलिखित को पढ़ते में चुटकी बजायें।

ऊँ ऐं प्राच्यै नमः। पश्चिम दिशा में चुटकी बजायें

ऊँ ऐं आग्नेय्यै नम.। अग्नि कोण में चुटकी बजायें

ऊँ ह्रीं दक्षीणायै नमः। दक्षिण दिशा में चुटकी बजायें

ऊँ ह्रीं नैर्ऋत्यै नमः । नैर्ऋत्य कोण में चुटकी बजायें

ऊँ क्लीं प्रतीच्यै नमः। पूर्व दिशा में चुटकी बजायें

ऊँ क्लीं वायव्यै नमः। वायव्य कोण में चुटकी बजायें

ऊँ चामुंडायै उदीच्यै नमः। उत्तर दिशा में चुटकी बजायें

ऊँ विच्चे ऐशान्यै नमः। ईशान कोण में चुटकी बजायें

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः। अकाश में चुटकी बजायें

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः। नीचे में चुटकी बजायें

ध्यानम्

खड्गं चक्रगदेषुचापरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शंखं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वांगभूषावृताम्।

नीलाश्म। ुतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां

यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजोहन्तुं मधुं कैटभम्॥१॥

अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशुसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां

सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्॥२॥

घण्टाशूलहलानि शंखमुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा

पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्॥३॥

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे – इस नवार्ण मन्त्र का संकल्प के अनुसार जप प्रारम्भ करे –

इस मन्त्र का यथा संख्य जप करे पुनः न्यास करे और जप दुर्गा जी के दक्षिण हस्त में समर्पण करें।

प्रार्थना–गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवी त्वत्प्रसादान् महेश्वरी।

अनेन श्री नवार्ण मन्त्र जपाख्येन कर्मणा भवानी श्री दुर्गादेव्यै प्रियतां न मम (हाथ में जल लेकर अधोलिखित मन्त्र को पढ़ते हुए जल को गिरावें)

अनेन जप सांगता सिद्धयर्थं यथा कामनाद्रव्येण नवार्ण मन्त्रेण जपदशांश हवनं तद्दशांश तर्पणं, तद्दशांश मार्जनं, तद्दशांश ब्राह्मण भोजनं च करिष्ये।

त्रआरती श्रीदुर्गा जी की(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए दुर्गा जी की आरती करे)

जगजननी जय! जय!! (मा! जगजननी जय! जय!!)
भयहारिण, भवतारिणी, भवभामिनी जय! जय!! जग०
तू ही सत–चित–सुखमय शुद्ध ब्रह्मरूपा।
सत्य सनातन सुन्दर पर–शिव–सुर–भूपा ।।१।। ।। जग०।।
आदि अनादि अनामय अविचल अविनाशी।
अमल अनन्त अगोचर अज आनँदराशी ।।२।। ।। जग०।।
अविकारी, अघहारी, अकल, कलाधारी।
कर्ता विधि, भर्त्ता हरि, हर सँहारकारी।।३।। ।। जग०।।
तू विधिवधू, रमा, तू उमा, महामाया।
मूल प्रकृति वि। ा तू, तू जननी, जाया।।४ ।। जग०।।
राम, कृष्ण तू, सीता, ब्रजरानी राधा।
तू वाञ्छाकल्पद्रुम, हारिणि सब बाधा।।५।। ।। जग०।।
दश वि। ा, नव दुर्गा, नानाशस्त्रकरा।
अष्टमातृका, योगिनी, नव नव रूप धरा।।६।। ।। जग०।।
तू परधामनिवासिनी, महाविलासिनी तू।
तू ही श्मशानविहारिणी, ताण्डवलासिनी तू।।७।। ।। जग०।।
सुर–मुनि–मोहिनी सौम्या तू शोभाऽऽधारा।
विवसन विकट–सरूपा, प्रलयमयी धारा।।८।। ।। जग०।।

तू ही स्नेह–सुधामयि, तू अति गरलमना।
रत्नविभूषित तू ही, तू ही अस्थि–तना।।६ ।। जग०।।
मूलाधारनिवासिनि, इह–पर–सिद्धिप्रदे।
कालातीता काली, कमला तू वरदे।।१०ऽ।। ।। जग०।।
शक्ति शक्तिधर तू ही नित्य अभेदमयी।
भेदप्रदर्शिनि वाणी विमले! वेदत्रयी।।११।। ।। जग०।।
हम अति दीन दुखी मा! विपत–जाल घेरे।
हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे।।१२।। ।। जग०।।
निज स्वभाववश जननी! दयादृष्टि कीजै।
करुणा कर करुणामयि! चरण–शरण दीजै।।१३।। ।। जग०।।

ॐ भूभुर्वः स्वः श्री दुर्गा देव्यै नमः, आरार्तिकं समर्पयामि। आरती के बाद जल गिरा दे।

पुष्पांजलि–मन्त्र बोलते हाथ में फूल लेकर दुर्गा जी को पुष्पांजलि अर्थात् प्रार्थना करना।

ॐयज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।
ऊँ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे।
स मे कामान् काम कामाय मह्य कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु।
कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः॥
ऊँ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात।
सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावा भूमी जनयन् देव एकः॥

ऊँ एक दन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात ॥

ऊँ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥

ऊँ गणाम्बिकायै विद्महे कर्मसिद्धयै च धीमहि। तन्नो गौरी प्रचोदयात्॥

ऊँ कात्यायिन्यै विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि। तन्नो देवि प्रचोदयात

ऊँ दशरथाय विद्महे सीतावल्लभा च धीमहि। तन्नो राम् प्रचोदयात॥

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारि।़दुःख भयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव वि। ा द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

ॐ भूभुर्वः स्वः श्री दुर्गा देव्यै नमः, पुष्पांजलिं समर्पयामि।(पुष्पांजलि अर्पित करे।)

प्रदक्षिणा –

यानि कानि च पापानि ज्ञाताज्ञातकृतानि च।

तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे॥

प्रणाम –

यो न पिता जनिता यो व्विधाता धामानि व्वेदभुवनानि व्विश्श्वा।

यो देवानान्नामधाऽएकऽएव त सम्प्रश्न्नम्भुवना यन्त्यन्न्या॥

क्षमा प्रार्थना –

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम।

पूजां चौव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।

तस्मात् कारुण्य भावेन रक्ष मां परमेश्वर॥

मत्समो नास्ति पापिष्ठस्त्वत्समो नास्ति पापहा।

इति मत्वा दयासिन्धो यथेच्छसि तथा कुरू॥

मन्त्रेणाक्षर हीनेन पुष्पेण विकलेन च।

पूजितोऽसि महादेवी तत्सर्वं क्षम्यतां मम॥

अयं दानकालस्त्वहं दानपात्रं भवानेव दाता त्वदन्यं न याचे।

भवद्भक्तिमन्तः स्थिरां देहि मह्यं कृपाशीलशम्भो कृतार्थोऽस्मि यस्मात्॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञ क्रियादिषु।

न्यूनं सम्पूर्णतां यातु स। ो वन्दे तमच्युतम्॥

अनेन पूजनेन श्री दुर्गादेव्यै प्रीयताम् न मम।

विसर्जनम् –

यान्तु देवगणारू सर्वे पूजामादाय मामकिम्।

इष्ट काम समृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥

तिलकाशीर्वाद –

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात्पवमानं महीयते।

धनं धान्यं पशुं बहु पुत्र लाभं शतसम्वत्सरं दीर्घमायुः॥

मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।

शत्रूणां बुद्धिनाशोस्तु मित्राणामुदयस्तव॥

स्वस्त्यस्तु ते कुशलमस्तु चिरायुरस्तु,
गोवाजिहस्ति धनधान्य समृद्धिरस्तु।
शत्रुक्षयोऽस्तु निजपक्षमहोदयोऽस्तु,
वंशे सदैव भवतां हरिभक्तिरस्तु

3.4 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आपने जाना कि किसी प्रकार से महामारी , जैसे–हैजा, प्लेग, शीतला या अन्य प्रकार के महा उपद्रवों के शान्ति के लिये नवार्ण मन्त्र

का **एक करोड़** जप करना चाहिये। जब सामान्य रोग हो, पुत्र प्राप्ति के लिये , स्त्री प्राप्ति के लिये , पति प्राप्ति के लिये , सवालाख जप करना चाहिये। अपमृत्यु का भय हो , भय की आशंका हो तो दश हजार का जप करना चाहिये। यात्रा में यदि भय उपस्थि हो तो एक हजार जप करना चाहिये। जहाँ मन्त्र केवल ध्वनि–परक था और यन्त्र में उसके साथ चित्रात्मकता आ गयी थी। वहाँ तन्त्र में पदार्थ प्रयोग को वरीयता दी गयी। वैसे, इसमें भी मन्त्र प्रधान आधार है और चित्रात्मकता को भी स्वीकार किया गया, किन्तु उनमें विशिष्ट वस्तुओं के प्रयोग की अनिवार्यता हो गयी। आगे चलकर तन्त्र का इतना अधिक प्रचार हुआ कि वह मन्त्र और यन्त्र से कई गुना अधिक लोकव्यापी हो गया। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष सभी कुछ तन्त्र के माध्यम से प्राप्त किये जाने लगा, किन्तु जहाँ मन्त्रों का प्रयोग सात्त्विकता प्रधान था, वहाँ यन्त्र – राजसिकता प्रधान हुए और तन्त्र को तामसी माना गया।

3.5 पारिभाषिक शब्दावली

शब्द	अर्थ
अस्य	इसका
नवार्णमन्त्रस्य	नवार्ण मन्त्र का
महाकालीमहालक्ष्मी	महाकाली महालक्ष्मी
महासरस्वत्योदेवताः	महासरस्वती देवता
रक्तदन्तिका	लाल दात वाली
अग्निवायुसूर्यास्तत्त्वानि	अग्नि वायु सूर्य तत्वों को
ममाभीष्टकामनासिद्ध्यर्थं	मेरे अभिष्ट कामना सिद्धि के लिये

3.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

उत्तर : १ काम्य उपासना में नवार्ण मन्त्रों का जपादि किया जाता है।

उत्तर : २ नवार्ण मन्त्र का जप :रुद्राक्ष की या लाल चन्दन की माला से करना चाहिये

उत्तर : ३ नव अक्षरों के मन्त्र को नवार्ण मन्त्र कहते है। यथा – ४।

उत्तर : ४. नवार्ण जप काल में दुर्गा जी की प्रतिमा समक्ष रखना चाहिये।

उत्तर : ५ नवार्ण मन्त्र का जप कुश या कम्बल के आसन पर बैठकर करना चाहिये।

3.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 पुस्तक का नाम–दुर्गार्चन पद्धति लेखक का नाम– शिवदत्त मिश्र
प्रकाशक का नाम– चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी

2 पुस्तक का नाम–सर्वदेव पूजापद्धति लेखक का नाम– शिवदत्त मिश्र
प्रकाशक का नाम– चौखम्भा सुरभारती प्रकाषन वाराणसी

3 धर्मशास्त्र का इतिहास लेखक – डॉ. पाण्डुरङ्ग वामन काणे
प्रकाशक :– उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान।

4 नित्यकर्म पूजा प्रकाश,
लेखक :– पं. बिहारी लाल मिश्र,
प्रकाशक :– गीताप्रेस, गोरखपुर।

5 अमृतवर्षा, नित्यकर्म, प्रभुसेवा
संकलन ग्रन्थ
प्रकाशक :– मल्होत्रा प्रकाशन, दिल्ली।

6 कर्मठगुरुः
लेखक – मुकुन्द वल्लभ ज्योतिषाचार्य
प्रकाशक – मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

7 हवनात्मक दुर्गासप्तशती
सम्पादक – डॉ. रवि शर्मा
प्रकाशक – राष्ट्रीय संस्कृत साहित्य केन्द्र, जयपुर।

8 शुक्लयजुर्वेदीय रुद्राष्टध्यायी
सम्पादक – डॉ. रवि शर्मा
प्रकाशक – अखिल भारतीय प्राच्य ज्योतिष शोध संस्थान, जयपुर।

9 विवाह संस्कार
सम्पादक – डॉ. रवि शर्मा
प्रकाशक – हंसा प्रकाशन, जयपुर

3.8 सहायक पाठ्यसामग्री

1 पुस्तक का नाम– दुर्गाचन पद्धति
लेखक का नाम– शिवदत्त मिश्र
प्रकाशक का नाम– चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी

3.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. नवार्ण मन्त्र पुरश्चरण का विस्तारपूर्वक उल्लेख किजिये।
2. दुर्गापूजन का सविधि उल्लेख कीजिये।
3. कर्मकाण्ड में नवार्ण मन्त्र का क्या अभिप्राय है।

इकाई - 4 सन्तान गोपाल मन्त्र

इकाई की रुप रेखा

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 श्री सन्तान गोपाल मन्त्र

अभ्यास प्रश्न

4.4 सारांश

4.5 पारिभाषिक शब्दावली

4.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

4.7 सन्दर्भ ग्रन्थ

4.8 निबन्धात्मक प्रश्न

4.1 प्रस्तावना

BAKA(N)–102 से सम्बन्धित यह चौथी इकाई है इस इकाई के अध्ययन से आप बता सकते है कि कर्मकाण्ड की उत्पति किस प्रकार से हुई है? कर्मकाण्ड की उत्पति अनादि काल से हुई है। तथा इन्हीं कर्मकाण्डों के माध्यम से आज सनातन धर्म की रक्षा हो रही है।

कर्मकाण्ड को जानते हुए आप सन्तान गोपाल मन्त्र के विषय में परिचित होंगे कि सन्तानगोपाल मन्त्र का प्रयोजन क्या है एवं उसका महत्त्व क्या है इन सबका वर्णन इस इकाई में किया गया है।

प्रत्येक पूजन के प्रारम्भ में आत्मशुद्धि, गुरु स्मरण, पवित्री धारण, पृथ्वी पूजन, संकल्प, भैरव प्रणाम, दीप पूजन, शंख–घण्टा पूजन के पश्चात् ही देव पूजन करना चाहिए। सन्तान की उपासना में सन्तान गोपाल मन्त्र का जपादि किया जाता है। इसमें भगवान् गणेश के पूजन के बाद भगवन् कृष्ण का पूजन मुख्य रूप से किया जाता है

4.2 उदेश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप वेदशास्त्र से वर्णित कर्मकाण्ड का अध्ययन करेंगे।

- सन्तान गोपाल मन्त्र के विषय में आप परिचित होंगे–
- सन्तान गोपाल मन्त्र के महत्त्व के विषय में आप परिचित होंगे
- सन्तान गोपाल मन्त्र जप संख्या के विषय में आप परिचित होंगे
- सन्तान गोपाल मन्त्र में भगवान् कृष्ण की पूजा की जाती है, इसके विषय में आप परिचित होंगे

4.3 सन्तान गोपाल मन्त्र

सन्तान की उपासना में सन्तान गोपाल मन्त्र का जपादि किया जाता है। यह तथ्य सर्वसाधारण के लिये जान लेना अत्यधिक आवश्यक है अतः ध्यान दे कि– सदा स्मरण रखें कि –जो भी मन्त्र जपना हो उस जप को शुद्ध तथा शुद्धता से करें।

एक निश्चत संख्या में जप करें। पूर्व दिवस में जपे गये मन्त्रों से आगामी दिनों में कम मन्त्र न जपें यदि चाहे तो अधिक मन्त्र जप सकते हैं परन्तु स्मरण यही रखना है कि भूतकाल से वर्तमान काल के मन्त्र कम न हो।

मन्त्र का उच्चारण होंठों से बाहर नही आना चाहिये यदि अभ्यास न होने के कारण यह विधि प्रयुक्त न हो सके तो धीमे स्वर में जप करें।

जप काल में धूप–दीप जलता रहे।

रुद्राक्ष की या लाल चन्दन की माला से ही जप करे।

माला को गोमुखी में ही रखें। जब तक जप की संख्या पूर्ण न हो, माला को गोमुखी से न निकालें।

जप काल में भगवान् विष्णु की प्रतिमा , विष्णु यन्त्र समक्ष रखना चाहिये ।

सन्तान गोपाल मन्त्र का जप कुश या कम्बल के आसन पर बैठकर करें।
जिस स्थान पर जपादि का शुभारम्भ हो वही पर आगामी दिनों में भी जप करना चाहिये ।
जप काल में मन को मन्त्र से मिलाएँ।
मिथ्या सम्भाषण न करें।
स्त्री सेवन न करे।
आलस्य जम्भाई यथाशक्ति त्याग दें।
सन्तान गोपाल मन्त्र के सभी प्रयोग पूर्व दिशा के तरफ मुख करके ही करें।
जप संख्या का नियम
सन्तान गोपाल का मन्त्र पुत्र प्राप्ति के लिये , सवालाख जप करना चाहिये।

जप के लिये विशेष

यः शास्त्रविधि मृत्सृज्य वर्तते काम कारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं नपरांगितम्।।

इस महावाक्यानुसार शास्त्र की विधि के अनुसार पूजन अर्चन करना चाहिये। मनमानी ढंग से करना या कराना हानि प्रद होता है। प्रयोग कराने के समय शुभ मुहुर्त चन्द्र तारा आदि बलों को दिखाकर तब अनुष्ठान –पुरश्चरण प्रयोग कराना चाहिये। प्रयोग कराते समय विष्णुमन्दिर देवालयसिद्धस्थान, नदीतट , बिल्व, अश्वस्थवृक्ष के स्थान पर सफाई कराकर अनुष्ठान कराना चाहिये।

प्रयोग पुरश्चरणात्मक हो तो प्रतिदिन की संख्या समान होनी चाहिए, किसी दिन जप अधिक किसी दिन कम नहीं होना चाहिए–इसी प्रकार ब्राह्मण भी प्रतिदिन उतनी ही संख्या में रहें जितनों में प्रथमदिन पुरश्चरण प्रारम्भ किया हो, इसमें उलट– फेर–कमी–बेशी करने से विक्षिप्तता का भय रहता है। जपसंख्या पूर्ण होने पर अर्थात् पुरश्चरण समाप्ति पर जितना जप हुआ हो उसका दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण,तर्पण का दशांश मार्जन और मार्जन का दशांश या कार्यानुसार न्यूनाधिक रूप में ब्राह्मण भोजन कराना चाहिये

कृष्णपूजन विधि

देवालय या विष्णु मन्दिर में बैठकर पूजन सामग्री का सम्प्रोक्षण करके आचमन प्रणायाम करे–सर्वप्रथम गौरी गणेश का पूजन करे।

एक लकड़ी की चौकी के ऊपर गणेश, षोडशमातृका, सप्तमातृका स्थापित करे। दूसरी चौकी पर नवग्रह, पञ्चलोकपाल आदि स्थापति करे। तीसरी चौकी के उपर सर्वतोभद्र बनाकर बीच में भगवान् कृष्ण को स्थापित करे। ईशान कोण में घी का दीपक रखे और अपने दायें हाथ में पूजा सामग्री रख लेवे। शुद्ध नवीन वस्त्र पहनकर पूर्वाभिमुख बैठे। कुंकुम (रोली) का तिलक करके अपने दायें हाथ की अनामिका में सुवर्ण की अंगुठी पहनकर आचमन प्राणायाम कर पूजन आरम्भ करे।

पवित्रीकरण–(अधोलिखित मन्त्र को पढते हुए कलश के जल से अपने उपर तथा पूजनादि की सामग्रियों पर जल छिडके) :–

ऊँ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।
ऊँ पुण्डरीकाक्षः पुनातु , ऊँ पुण्डरीकाक्षः पुनातु , ऊँ पुण्डरीकाक्षः पुनातु

आचमन (तीन बार आचमन करे) :–

ऊँ केशवाय नमः। ऊँ नारायणाय नमः। ऊँ माधवाय नमः।

प्राणायाम :–

गोविन्दाय नमः बोलकर हाथ धोवे और यदि ज्यादा ही कर सके तो तीन बार पूरक (दायें हाथ के अंगूठे से नाक का दायाँ छेद बन्द करके बायें छेद से श्वास अन्दर लेवे), कुम्भक (दायें हाथ की छोटी अंगुली से दूसरी अंगुली द्वारा बाया छेद भी बन्द करके श्वास को अन्दर रोके), रेचक (दायें अंगूठे को धीरे–धीरे हटाकर श्वास बाहर निकाले) करे।

पवित्रीधारणम् –

ॐ पवित्रेस्त्थो व्वैष्णव्यौसवितुर्व्वः प्रसव उत्पन्नुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्स्य रश्मिभिः।

तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्।।

सपत्नीक यजमान के ललाट में स्वस्तितिलक लगाते हुए मन्त्र को बोले–

ऊँ स्वस्तिन इन्द्रो व्वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा व्विश्ववेदाः।

स्वस्ति नस्ताक्ष्योंऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।।

ऊँ श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्क्या वहोरात्रे पाश्र्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्वि नौव्व्यात्तम्।

इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्व्वलोकं म ऽइषाण।।

ग्रन्थिबन्धन– (लोकाचार से यजमान का सपत्नीक ग्रन्थिबन्धन करे) :–

ऊँ तम्पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुतवा हिरण्यैः।

नाकङ्गृब्भ्णानाः सुकृतस्यलोके तृतीयपृष्ठेऽअधिरोचने दिवः।।

आसनपूजन (आसन की पूजा करे) :–

ऊँ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।

त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम्।

ऊँ कूर्मासनाय नमः।

ऊँ अनन्तासनाय नमः।

ऊँ विमलासनाय नमः। (सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि)

भूतापसारण (बायें हाथ में सरसों लेकर उसे दाहिने हाथ से ढककर निम्र मन्त्र पढ़े) –

रक्षोहणं व्वलगहनं व्वैष्णवीमिदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि म्मे निष्ट्यो ममात्यो निचखानेदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि म्मे समानोमसमानो निचखानेदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि म्मे सबर्न्धुम सबन्धुर्न्निचखानेदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि म्मे सजातो मसजातो निचखानोत्कृत्याङ्क्रिामि।

ऊँ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।

ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।

सर्वेषामवरोधेन पूजाकर्म समारभे।।

निम्न मन्त्रों को पढ़ते हुए सरसों का सभी दिशाओं में विकिरण करे :–

प्राच्यैदिशे स्वाहार्व्वाच्यै दिशेस्वाहा दक्षिणाये दिशेस्वाहार्व्वाच्यै दिशेस्वाहा प्रतीच्यै दिशे

स्वाहार्व्वाच्यै दिशे स्वाहोदीच्यै दिशे स्वाहा र्व्वाच्यै दिशे स्वाहोद्ध्वायै दिशेस्वाहा र्व्वाच्यै दिशे स्वाहा व्वाच्यै दिशे स्वाहार्व्वाच्यै दिशे स्वाहा।

पूर्वे रक्षतु गोविन्द आग्नेय्यां गरुड़ध्वजः। दक्षिणे रक्षतु वाराहो नारसिंहस्तु नैर्ऋते।।

पश्चिमे वारुणो रक्षेद्वायव्यां मधुसूदनः। उत्तरे श्रीधरो रक्षेद् ऐशान्ये तु गदाधरः।।

ऊर्ध्वं गोवर्धनो रक्षेद्अधस्ताद्त्रिविक्रमः। एवं दश दिशो रक्षेद्वासुदेवो जनार्दनः।।

कर्मपात्र पूजन् (ताँबे के पात्र में जलभरकर कलश को अक्षतपुञ्ज पर स्थापित करते हुए पूजन करे) :–

ऊँ तत्वाामि ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते जमानो हविर्भिः।

अहेडमानो व्वरुणे हबोद्ध्युरुश समानऽ आयुः प्रमोषीः।। ऊँ वरुणाय नमः।

पूर्वे ऋग्वेदाय नमः। दक्षिणे यजुर्वेदाय नमः।

पश्चिमे सामवेदाय नमः। उत्तरे अथर्ववेदाय नमः।

मध्ये साङ्गवरुणाय नमः। सर्वोपचारार्थे चन्दन अक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अंकुशमुद्रया सूर्यमण्डलात्सर्वाणि तीर्थानि आवाहयेत् (दायें हाथ की मध्यमा अङ्गुली से जलपात्र में सभी तीर्थों का आवाहन करे) :–

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वति।

नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेस्मिन्सन्निधिं कुरु।।

कलशस्य मुखे विष्णु कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।

मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।।

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।।

अश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बु समाश्रिताः।

गायत्री चात्र सावित्री शान्तिः पुष्टिकरा तथा।

आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।।

उदकेन पूजासामग्रीं स्वात्मानं च सम्प्रोक्षयेत् (पात्र के जल से पूजन सामग्री एवं स्वयं का प्रोक्षण करे) :–

ऊँ आपो हिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्ज्जेदधातन। महेरणायचक्षसे।।

योवः शिवतमोरसस्तस्यभाजयते हनः। उशतीरिवमातरः।।

तस्म्माऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्वथ आपोजनयथाचनः।।

दीपपूजनम् (देवताओं के दाहिने तरफ घी एवं विशेष कर्मों में बायें हाथ की तरफ तेल का दीपक जलाकर पूजन करना चाहिए) :–

अग्निर्द्देवता व्वातो देवता सूर्य्यो देवता चन्द्रमा देवता व्वसवो देवता रुद्रा देवतादित्त्या देवता मरुतो देवता विश्श्वे देवा देवता बृहस्प्पतिर्द्देवतेन्द्रो देवता व्वरुणो देवता।

ऊँ दीपनाथाय नमः। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि (गन्ध अक्षत पुष्प दीपक के सामने छोडे।)

प्रार्थनाः–(हाथ में अक्षत–पुष्प लेकर अधोलिखित श्लोक को पढते हुए दीपक के सामने छोड़े –

ऊँ भो दीप देवस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत।
यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात्तावदत्र स्थिरो भव।।

सर्वप्रथम कृष्णपूजन की अधिकार प्राप्ति के लिये प्रायश्चित्तरूप में गोदान का संकल्प करना चाहिये

प्रायश्चित संकल्प हाथ में जल अक्षत–पुष्प कुश तथा द्रव्य लेकर प्रायश्चित संकल्प करे–

हरिः ऊँ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ऊँ तत्सद। ैतस्य श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अ। श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्द्धे तदादौ श्रीश्वेतवाराहकल्पे सप्तमे वैवस्वतमन्वतरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे तत्रापि परमपवित्रे भारतवर्षे आर्यावर्त अन्तर्गते अमुकदेशे (अपने देश का नाम) अमुकक्षेत्रे (अपने राज्य का नाम) अमुकनगरे (अपने नगर का नाम) श्री गङ्गायमुनयोः अमुकभागे (अपने स्थान की दिशा) नर्मदाया अमुक भागे (अपने स्थान की दिशा) चान्द्रसंज्ञकानां प्रभवादिषष्टिसम्वत्सराणां मध्ये अमुक नाम्नि सम्वत्सरे (सम्वत्सर का नाम) श्रीमन्नृपति विक्रमार्कसमयादमुकसंख्यापरिमिते विक्रमाब्दे (वर्तमान विक्रम सम्वत) अमुकायने (वर्तमान सम्वत्) अमुकर्तौ (वर्तमान ऋतु) अमुकमासे (वर्तमान मास) अमुकपक्षे (वर्तमान पक्ष) अमुकतिथौ (वर्तमान तिथि) अमुकवासरे अमुकगोत्रः (यजमान का गौत्र) अमुकशर्मा अहं क्रियमाण सन्तानगोपालमन्त्र जपकर्मणि अधिकार प्राप्त्यर्थं कायिक वाचिकमानसिक सांसर्गिकचतुर्विधपापशमनार्थं शरीरशुद्धयर्थं गोनिष्क्रयद्रव्यं ''''''''गोत्राय''''''''शर्मणे आचार्याय भवते सम्प्रददे (ऐसा कहकर हाथ का संकल्प जल तथा द्रव्य ब्राह्मण के हाथ में देदे।

मंगल पाठ –हस्ते अक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा (हाथ में अक्षत–पुष्प लेकर गणेश जी की प्रार्थना करे) :–

ऊँ आनो भद्राः क्रतवो यन्तु व्विश्वतो दब्धासोऽअपरीतासऽउद्भिदः। देवानो यथा सदमिद्वृधेऽअसन्नप्प्रायुवोरक्षितारो दिवेदिवे।।१।। देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतान्देवाना रातिरभिनोनिवर्त्तताम्। देवाना सक्ख्यमुपसेदिमा व्वयं देवानऽआयुः प्प्रतिरन्तुजीवसे।।२।। तान्पूर्वया निविदाहूमहे व्वयं भगम्मित्रमदितिं दक्षमस्रिधम्। अर्यमणं व्वरुण सोममश्विना सरस्वती नः सुभगामयस्करत्।।३।। तन्नोव्वातो मयो भुव्वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता । ैः। तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयो भुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम्।।४।। तामीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पति–न्धियञ्जिन्वमवसे हूमहे व्वयम्। पूषा नो यथा व्वेदसामद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।५।। स्वस्ति न ऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषाव्विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो ऽ अरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु।।६।। पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो व्विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वामनवः सूरचक्षसो व्विश्वेनोदेवाऽअवसा गमन्निह।।७।। भद्रङ्कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा œ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं य्यदायुः।।८।। शतमिन्नुशरदो ऽ अन्ति देवा त्रा नश्चक्रा जरसंतनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मद्ध्या रीरिषतायुर्गन्तोः।।६।। अदिति। ैरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वेदेवा ऽ अदितिः पञ्चजना ऽ अदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्वम्।।१०।। । ैः

शान्तिरन्तरिक्ष œ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। व्वनस्पतयः शान्ति व्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व œ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामाशान्तिरेधि।।११।। यतो यतः समीहसे ततो नो ऽ अभयं कुरु। शन्नः कुरु प्रजाब्भ्योभयन्नः पशुभ्यः।।१२।। सुशान्तिर्भवतु।। **(अक्षत–पुष्प को सिर से लगाकर गणपति मण्ड़ल पर गणेशजी को समर्पित करे)**

गणपत्यादि देवानां स्मरणम्– (हाथ में अक्षत–पुष्प लेकर गणेश जी की प्रार्थना करे) सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजगर्णकः। लम्बोदरश्च विकटोविघ्ननाशो विनायकः। धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि। वि। ारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। संग्रामे संकटे चौव विघ्नस्तस्य न जायते। शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये। अभीप्सितार्थ सिध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः। सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः। सर्वमङ्ग्ल माङ्ग्ल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते। सर्वदा सर्व कार्येषु नास्ति तेषाममङ्ग्गलम्। येषां हृदिस्थो भगवान् मंगलायतनं हरिः। तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव। वि। ाबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि। लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः। येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः। यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः। तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम। सर्वेष्वारब्धकार्येषु त्रयस्त्रि भुवनेश्वराः। देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः। विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्। वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानी मणिकर्णिकाम्। विनायकं गुरुभानुं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान्। सरस्वतीं प्रणौम्यादौ सर्वकार्यार्थ सिद्धये।ऊँ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। ऊँ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। ऊँ उमामहेश्वराभ्यां नमः। ऊँ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। ऊँ शचीपुरन्दराभ्यां नमः। ऊँ मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः। ऊँ सर्वपितृदेवताभ्यो नमः। ऊँ इष्टदेवताभ्यो नमः। ऊँ कुलदेवताभ्यो नमः। ऊँ ग्रामदेवताभ्यो नमः। ऊँ स्थानदेवताभ्यो नमः। ऊँ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ऊँ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ऊँ गुरवे नमः। ऊँ परमगुरवे नमः। ऊँ परात्परगुरवे नमः। ऊँ परमेष्ठिगुरवे नमः।(अक्षत–पुष्प को सिर से लगाकर गणपति मण्ड़ल पर गणेशजी को समर्पित करे)

संकल्प–हाथ में जल अक्षत–पुष्प कुश तथा द्रव्य लेकर संकल्प करे–

हरिः ऊँ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ऊँ तत्सद। ैतस्य श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अ। श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्द्धे तदादौ श्रीश्वेतवाराहकल्पे सप्तमे वैवस्वतमन्वतरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे तत्रापि परमपवित्रे भारतवर्षे आर्यावर्त अन्तर्गते अमुकदेशे (अपने देश का नाम) अमुकक्षेत्रे (अपने राज्य का नाम) अमुकनगरे (अपने नगर का नाम) श्री गङ्गायमुनयोः अमुकभागे (अपने स्थान की दिशा) नर्मदाया अमुक भागे (अपने स्थान की दिशा) चान्द्रसंज्ञकानां प्रभवादिषष्टिसम्वत्सराणां मध्ये अमुक नाम्नि सम्वत्सरे (सम्वत्सर का नाम) श्रीमन्नृपति विक्रमार्कसमयादमुकसंख्यापरिमिते विक्रमाब्दे (वर्तमान विक्रम सम्वत्) अमुकायने (वर्तमान सम्वत्) अमुकर्तौ (वर्तमान ऋतु) अमुकमासे (वर्तमान मास) अमुकपक्षे (वर्तमान पक्ष)

अमुकतिथौ (वर्तमान तिथि) अमुकवासरे अमुकगोत्रः (यजमान का गौत्र) अमुकशर्मा अहं (ब्राह्मण के लिए शर्मा, क्षत्रिय के लिए वैश्य, वैश्य के लिए गुप्ता, शूद्र के लिए दासान्त) सपुत्रस्त्रीबान्धवो अहं मम जन्मलग्नाच्चन्द्रलग्नाद् वर्ष मास दिन गोचराष्टक वर्गदशान्तर्दशादिषु चतुर्थाष्टं द्वादशस्थान् स्थित क्रूरग्रहास्तेषां अनिष्टफल शान्ति पूर्वकं द्वितीयसप्तम् एकादशस्थानस्थित सकल शुभफल प्राप्त्यर्थं मम सकलदुरित क्षयपूर्वकं चिरजीविसत्पुत्र प्रप्त्यर्थं श्री सन्तान गोपाल मन्त्रस्य सपाद लक्ष जपं करिष्ये (वा ब्राह्मण द्वारा कारयिष्ये) । ऐसा कहकर हाथ का संकल्प जल तथा द्रव्य गणेश जी के सामने छोड़ दे।

पुनः हाथ में जल अक्षत–पुष्प कुश तथा द्रव्य लेकर बोले –

तदंगत्वेन कार्यस्य सिद्धयर्थं आदौ गणेशाम्बिकयोः पूजनं करिष्ये। ऐसा कहकर हाथ का संकल्प जल तथा द्रव्य गणेश जी के सामने छोड़ दे।

पूजा में जो वस्तु वि। मान न हो उसके लिये 'मनसा परिकल्प्य समर्पयामि' कहे। जैसे, आभूषणके लिये 'आभूषणं मनसा परिकल्प्य समर्पयामि'।)

सर्वप्रथम गणपति का पूजन आप कर ले।

भगवान् कृष्ण का पूजन

भगवान् कृष्ण का आवाहन ध्यान – (हाथ में अक्षत पुष्प लेकर अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् कृष्ण जी के उपर छोड़े)

१. कृष्ण :–

क्रमात्कौमोदकी पद्मशङ्कचक्रधरं विभुम।
भक्तकल्पद्रुमं शान्तं विष्णुमावाहयाम्यहम।।
ऊँ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधेपदम्। समूढमस्यपा œ सुरे स्वाहा।।
ऊँ भूर्भुवः स्वः कृष्णाय नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री कृष्णाय नमः कृष्णम् आवाहयामिध्यायामि स्थापयामि पूजयामि। (क्षत पुष्प को भगवान् विष्णु के उपर छोड़ दे)

प्रतिष्ठापनम्:– (हाथ में अक्षत लेकर अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् कृष्ण के उपर छोड़े

ऊँ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्यस्य बृहस्पर्तिर्ज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टं यज्ञ œ समिमन्दधातु।
विश्वेदवा स ऽ इह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ।।
ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री कृष्णाय नमः। सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्

आसनम् –(हाथ में पुष्प लेकर अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् कृष्ण के उपर छोड़े

ऊँ पुरुष ऽ एवेद œ सर्व्वंद्भूतँच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।
ऊँ भूर्भुवः स्वः कृष्णाय नमः नमः आसनार्थे पुष्पं समर्पयामि।

पा। म् ––(हाथ में जल लेकर अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् कृष्ण के उपर छोडे

ऊँ एतावानस्य महिमातोज्ज्यॉंश्चपूरुषः।
पादोस्य विश्श्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः **श्री** कृष्णाय नमः नमः पादप्रक्षालनार्थं पा। ं समर्पयामि।

अर्घ्यम् ––(हाथ में जल लेकर अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् कृष्ण के उपर छोडे

ऊँ धामन्तेव्विश्वम्भुवनमधिश्रितमन्तः समुद्रेह्ट। न्त रायुषि।

अपामनीकेसमिथेय ऽ आभृतस्तमश्याम मधुमन्तन्त ऽ ऊर्मिम्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः **श्री** कृष्णाय नमः हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयम् ––(हाथ में जल लेकर अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् कृष्ण के उपर छोडे

सर्वतीर्थ समायुक्तं सुगन्धिनिर्मलं जलम्।
आचम्यार्थं मया दत्तं गृहाण गणनायक।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः **श्री कृ**ष्णाय नमः मुखे आचमनीयं जलं समर्पयामि।

जलस्नानम् –(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् कृष्ण के उपर जल छोडे

ऊँ व्वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनीस्त्थो व्वरुणस्य ऽ ऋतसदन्न्यसि
वरुणस्य ऽ ऋतसदनमसि व्वरुणस्य ऽ ऋतसदनमासीद।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः **श्री** कृष्णाय नमः स्नानार्थे जलं समर्पयामि।।

पञ्चामृत स्नानम् –(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् कृष्ण के उपर पंचामृत से स्नान करावे

पयो दधिघृतं चैव मधुं च शर्करायुतम्।
सरस्वती तु पञ्चधासो देशेभवत्सरित्।

ऊँ भूर्भुवः स्वः **श्री** कृष्णाय नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदक स्नानम् –(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् विष्ण के उपर शुद्ध जल से स्नान करावे)

ऊँ शुद्धवालः सर्व शुद्धवालो मणिवालस्त ऽ आश्विनः श्येतः
श्येताक्षो रुणस्तेरुद्रायपशुपतये कर्णायामा अवलिप्ता रौद्रानभोःरूपाः पार्ज्जन्न्याः।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री कृष्णाय नमः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

वस्त्रोपवस्त्रम्–(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् कृष्ण के उपर रक्त सूत्र चढावे)

ऊँ सुजातोज्ज्योतिषा सहशर्म्म व्वरुथमासदत्स्वः।
व्वासो ऽ अग्रे विश्वःप œ सँव्ययस्वव्विभावसो।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः कृष्णाय नमः वस्त्रोपवस्त्रार्थे रक्तसूत्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम् –(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् कृष्ण के उपर यज्ञोपवीत चढावे)

ऊँ ब्रह्मज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोव्वेनऽआवः।
सबुद्धन्याऽउपमा अस्यव्विष्ठाः सतश्च्चयोनिमसतश्चव्विवः।

ॐ भूर्भुवः स्वः **श्री** कृष्णाय नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

चन्दनम् ––(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् कृष्ण के उपर चन्दन चढावे)

ॐ अ œ शुना ते अ œ शुः पृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदायरसोऽअच्युतः।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्री कृष्णाय नमः चन्दनकुंकुमञ्च समर्पयामि।

अक्षताः –(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् कृष्ण के उपर अक्षत चढावे)

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रियाऽअधूषत।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठ्ठयामती योजान्विन्द्रते हरी।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्री कृष्णाय नमः अलङ्करणार्थम् अक्षतान् समपर्यामि।

पुष्प (पुष्पमालां) –(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् कृष्ण के उपर पुष्पमाला अथवा पुष्प चढावे)

ॐ ओषधिः प्रतिमोदद्धवं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्श्वाऽ इव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्ण्वः।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्री कृष्णाय नमः पुष्पाणि समर्पयामि।

दूर्वा –(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् कृष्ण के उपर दूर्वा चढावे)

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्व्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्री कृष्णाय नमः दूर्वाङ्कुराणि समर्पयामि।

बिल्वपत्रम् ––(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् कृष्ण के उपर बिल्वपत्र चढ़ावे)

ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो व्वर्मिणे च वथिने च नमः
श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुब्भ्याय चाहनन्याय च।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्री कृष्णाय नमः बिल्वपत्राणि समर्पयामि।

सुगन्धितद्रव्यम् ––(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् कृष्ण के उपर इत्र चढावे)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीयमामृतात्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्री कृष्णाय नमः सुगन्धितद्रव्यं समर्पयामि।

सिन्दूरम् –(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् कृष्ण के उपर सिन्दूर चढावे)

ॐ सिन्धोरिव प्राध्वनेशूघनासो व्वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः।
घृतस्य धारा ऽ अरुषो न व्वाजी काष्ठाभिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः।।
ॐ भूर्भुवः स्वः **श्री कृष्णाय** नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्याणि ––(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् कृष्ण के उपर अवीर चढावे)

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुञ्ज्याया हेतिं परिबाधमानः।
हस्तग्घ्नो व्विश्वाव्वयुनानि व्विद्वान्पुमान्पुमा œ सम्परिपातुव्विश्श्वतः।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्री कृष्णाय नमः परिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

धूपम् ––(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् कृष्ण के उपर धूप दिखावे)

धूरसि धूर्व्वधूर्व्वन्तं धूर्व्व तोस्म्मान् धूर्वतितन्धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः।
देवानामसि व्वह्नितम œ सस्न्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्री कृष्णाय नमः धूपम् आघ्रापयामि।

दीपम् ———(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् कृष्ण को दीप दिखावे)

ऊँ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्योज्योतिज्र्योतिः सूर्यः स्वाहा।
अग्निर्व्वर्चोज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा सूर्यो वर्च्चोज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा।
ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।
ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री कृष्णाय नमः दीपकं दर्शयामि।
हस्तौ प्रक्षाल्य। (इसके बाद हाथ धोये)

नैवे। म् ———(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् कृष्ण को भोग लगावे)

ऊँ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष œ शीर्ष्णो । ौः समवर्त्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ २ अकल्पयन्।।
ऊँ भूर्भुवः स्वः **श्री** कृष्णाय नमः नैवे। ं निवेदयामि। मध्ये जलं निवेदयामि।

(इसके बाद पॉच बार जल चढावे)

ऋतुफलम् –(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् कृष्ण के उपर फल चढावे)

ऊँ याः फलनीर्या ऽ अफला ऽ अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्व œ हसः।।
ऊँ भूर्भुवः स्वः **श्री** कृष्णाय नमः फलं निवेदयामि। पुनः आचमनीयं जलं निवेदयामि।(इसके बाद पुनः जल चढावे)

ताम्बूल–मन्त्र बोलते हुए लवंग,इलायची, सोपारी सहित पान का पत्ता भगवान् कृष्ण के उपर चढ़ावे

ॐयत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मःशरद्धविः।।

ॐ भूभुर्वः स्वः श्री कृष्णाय नमः मुखवासार्थं एलालवंगपूगीफलसहितं ताम्बूलं समर्पयामि।

(इलायची,लौंग–सुपारी सहित ताम्बूल को चढाये)

दक्षिणा–(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् कृष्ण के उपर दक्षिणा चढावे)

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातःपतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं । ामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

ॐ भूभुर्वः स्वः श्री कृष्णाय नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।(द्रव्य दक्षिणा समर्पित करें।)

पुष्पांजलि–मन्त्र बोलते हाथ में फूल लेकर भगवान् कृष्ण को पुष्पांजलि अर्थात् प्रार्थना करना।

ॐयज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।

अथ श्रीगणेशषडक्षर मन्त्र–जपविधिः

किसी भी देवता के मन्त्रजाप से पूर्व गणेशमन्त्र के 108 (न्यूनतम) जप परम आवश्यक है। इसके पश्चात् ही कार्यसिद्धि होती है। जप के पूर्व एवं पश्चात् दोनों ही समय जप करना परम आवश्यक है।

विनियोग–हाथ में जल लेकर अधोलिखित मन्त्र को पढते हुए जल को गीरावें

ऊँ अस्य श्री गणेशमन्त्रस्य भार्गव ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः विघ्नेशो देवता वं बीजं, यं शक्तिः हुँ कीलकम् सर्वार्थसिद्धये जपे विनियोगः॥

ऋष्यादिन्यासः –

ऊँ भार्गव ऋषये नमः शिरसि (दाहिने हाथ से शिर को स्पर्श करे)।

ऊँ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे (दाहिने हाथ से मुख को स्पर्श करे)।

ऊँ विघ्नेशदेवतायै नमः हृदि (दाहिने हाथ से हृदय को स्पर्श करे)।

ऊँ वं बीजाय नमः गुह्ये (दाहिने हाथ से गुदा को स्पर्श करे)।

ऊँ यं शक्त्ये नमः पादयोः दाहिने हाथ से दोनो पैर को स्पर्श करे)।

ऊँ हुँ कीलकाय नमः सर्वाङ्गे (दाहिने हाथ से पुरे शरीर को स्पर्श करे)।

करन्यासः –

ऊँ वं अंगुष्ठाभ्यां नमः (दोनों हाथों की तर्जनी अंगुलियों से दोनों अंगूठों का स्पर्श करे) ।

ऊँ क्रं तर्जनीभ्याँ नमः (दोनों हाथों के अंगूठों से दोनों तर्जनी अंगुलियों का स्पर्श करे) ।

ऊँ तुँ मध्यमाभ्याँ नमः(अंगूठों से मध्यमा अंगुलियों का स्पर्श करे) ।

ऊँ डाँ अनामिकाभ्याँ नमः (अंगूठों से अनामिका अंगुलियों का स्पर्श करे) ।

ऊँ यं कनिष्ठिकाभ्याँ नमः (अंगूठों से कनिष्ठिका अंगुलियों का स्पर्श करे) ।

ऊँ हुँ करतलकरपृष्ठाभ्याँ नमः(हथेलियों और उनके पृष्ठ भागों का परस्पर स्पर्श करे) ।

षडङ्गन्यासः

ऊँ वं नमः हृदयाय नमः (दाहिने हाथ से हृदय को स्पर्श करे)

ऊँ क्रं नमः शिरसे स्वाहा (दाहिने हाथ से शिर को स्पर्श करे)।

ऊँ तुं नमः शिखायै वषट् (दाहिने हाथ से शिखा को स्पर्श करे)।

ऊँ डां नमः कवचाय हुँ (दाहिने हाथ की अंगुलियों से बायें कन्धे का और बायें हाथ की अंगुलियों से दाहिने कन्धे का साथ ही स्पर्श करे)।

ऊँ यं नमः नेत्रत्रयाय वौषट् (दाहिने हाथ की अंगुलियों के अग्रभाग से दोनों नेत्रों और ललाट के मध्य भाग को स्पर्श करे)।

ऊँ हुँ नमः अस्त्रायफट् यह वाक्य पढकर दाहिने हाथ को सिर के उपर से बायी ओर से पीछे की ओर लेजाकर दाहिनी ओर से आगे की ले आये और तर्जनी तथा मध्यमा अंगुलियों से बायें हाथ की हथेली पर ताली बजाये)।

वर्णन्यासः –

ऊँ वं नमः भ्रुवोर्मध्ये (दाहिने हाथ से भ्रुव के मध्य को स्पर्श करे)।

ऊँ क्रं नमः कण्ठे (दाहिने हाथ से कण्ठ को स्पर्श करे)।

ऊँ तुं नमः हृदये दाहिने हाथ से हृदय को स्पर्श करे)।

ऊँ डां नमः नाभौ(दाहिने हाथ से नाभी को स्पर्श करे)।

ऊँ यं नमः लिङ्गे (दाहिने हाथ से लिंग को स्पर्श करे)।

ऊँ हुँ नमः पादयोः(दाहिने हाथ से दोनों पैरों को स्पर्श करे)।

ऊँ वक्रतुण्डाय हुँ सर्वाङ्गे(दाहिने हाथ से सभी अंगों को स्पर्श करे)।

हाथों में पुष्प लेकर अधोलिखत श्लोक को पढते हुए गणेश जी का प्रार्थना करे

ऊँ उ। द्विनेश्वररुचिं निजहस्तपद्मैः,
पाशाङ्कुशाभयवरान्दधतं गजास्यम्।
रक्ताम्बरं सकलदुःखहरं गणेशं,
ध्यायेत् प्रसन्नमखिलाः भरणाभिरामम्॥

जप हेतु माला का पूजन–मन्त्र :–
ऊँ 'ऐं ह्रीं अक्ष–मालिकायै नमः इस मन्त्र से माला की पूजा करे।
इसके बाद हाथों में माला लेकर अधोलिखत श्लोक को पढते हुए माला की प्रार्थना करे।
ऊँ मां माले महा–माये सर्व–शक्ति स्वःपिणि!
चतुवर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव।।
ऊँ अविघ्नं कुरु माले! त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
जप–काले च सिद्धयर्थं प्रसीद मम सिद्धये।।
ऊँ अक्ष–मालाधिपतये सुसिद्धि देहि देहि सर्व–मन्त्रार्थ–साधिनि!
साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा।।१
इसके बाद ऊँ वक्रतुण्डाय हुँ। इस मन्त्र का 108 बार जप करे

सन्तान गोपाल मन्त्र जपविधि
विनियोग–हाथ में जल लेकर अधोलिखित मन्त्र को पढते हुए जल को गीरावें
अस्य श्री सन्तानगोपालमहामन्त्रस्य नारद ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीगोपालो देवता , मम सन्तानगोपाल प्रसाद सिद्धयर्थे जपे विनियोः (जल को गिरावें)
करन्यास –
ऊँ देवकी सूत गोविन्द अंगुष्ठाभ्यां नमः।(दोनों हाथों की तर्जनी अंगुलियों से दोनों अंगूठों का स्पर्श करे) ।
ऊँ वासुदेव जगत्पते तर्जनीभ्यां नमः।(दोनों हाथों के अंगूठों से दोनों तर्जनी अंगुलियों का स्पर्श करे) ।
ऊँ देहि मे तनयं कृष्ण मध्यमाभ्यां नमः।(अंगूठों से मध्यमा अंगुलियों का स्पर्श करे) ।
ऊँ त्वामहं शरणं गतः अनामिकाभ्यां नमः।(अंगूठों से अनामिका अंगुलियों का स्पर्श करे) ।
ऊँ देवकी सूत गोविन्द वासुदेव जगत्पते कनिष्ठिकाभ्यां नमः।(अंगूठों से कनिष्ठिका अंगुलियों का स्पर्श करे)
ऊँ देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। (हथेलियों और उनके पृष्ठ भागों का परस्पर स्पर्श करे) ।
हृदयादिन्यास
ऊँ देवकी सूत गोविन्द हृदयाय नमः।(दाहिने हाथ से हृदय को स्पर्श करे)
ऊँ वासुदेव जगत्पते शिरसे स्वाहा।(दाहिने हाथ से शिर को स्पर्श करे)
ऊँ देहि मे तनयं कृष्ण शिखायै वषट्। दाहिने हाथ से शिखा को स्पर्श करे)।
ऊँ त्वामहं शरणं गतः कवचाय हुम्। (दाहिने हाथ की अंगुलियों से बायें कन्धे का और बायें हाथ की अंगुलियों से दाहिने कन्धे का साथ ही स्पर्श करे)।
ऊँ : देवकी सूत गोविन्द वासुदेव जगत्पते नेत्रत्रयाय वौषट्। (दाहिने हाथ की अंगुलियों के अग्रभाग से दोनों नेत्रों और ललाट के मध्य भाग को स्पर्श करे)।

ऊँ देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः अस्त्रायफट्। यह वाक्य पढकर दाहिने हाथ को सिर के उपर से बायी ओर से पीछे की ओर लेजाकर दाहिनी ओर से आगे की ले आये और तर्जनी तथा मध्यमा अंगुलियों से बायें हाथ की हथेली पर ताली बजाये

ध्यानम् – हाथ में पुष्प लेकर अधोलिखत श्लोक को पढते हुए भगवान् कृष्ण का प्रार्थना करे

ऊँ वैकुण्ठतेजसा दीप्तमर्जुनेन समन्वितम्।
समर्पयन्तं विप्राय नष्टानानीय बालकान्।। (हाथ में लिये हुए पुष्प को भगवान् कृष्ण के उपर छोड़ दे)
ऊँ देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।। –इस सन्तान गोपाल मन्त्र का संकल्प के अनुसार जप प्रारम्भ करे।

इस मन्त्र का यथा संख्य जप करे पुनः न्यास करे और जप श्रीकृष्ण देवता के दक्षिण हस्त में समर्पण करें।

प्रार्थना–गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान् महेश्वरः।

क्षमाप्रार्थना– मन्त्र बोलते हाथ में फूल लेकर जी की क्षमा प्रार्थना करना।

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा श्रवण नयनजं वा मानसं वाऽपराधम्। विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व। जयजय करुणाब्धे श्रीकृष्ण!

अनेन श्री सन्तान गोपाल जपाख्येन कर्मणा भगवान् श्रीकृष्णाय प्रियतां न मम (हाथ में जल लेकर अधोलिखित मन्त्र को पढ़ते हुए जल को गिरावें)

अनेन जप सांगता सिद्ध्यर्थं यथा कामनाद्रव्येण सन्तान गोपाल मन्त्रेण जपदशांश हवनं तद्दशांश तर्पणं, तद्दशांश मार्जनं, तद्दशांश ब्राह्मण भोजनं च करिष्ये।

विशेष –प्रतिदिन जप के बाद सन्तान गोपाल स्तोत्र का एक पाठ अवश्य कर लेना चाहिये

भगवान् कृष्ण की आरती (अधोलिखित मन्त्र पढते हुए भगवान् कृष्ण की आरती करे)

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्
विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्णं शुभांगम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम्,
आरती कुञ्जबिहारी की। श्रीगिरधर कृष्णमुरारि की।। टेक।।
गले मे वैजयन्तीमाला, बजावे मुरलि मधुर बाला।
श्रवन में कुण्डल झलकाला, नन्द के आनँद नँदलाला।। श्रीगिरधर ०।।
गगन सम अंग कान्ति काली, राधिका चमक रही आली, लतन में ठाढ़े बनमाली,
भ्रमर–सी अलक, कस्तूरी–तिलक, चन्द्र–सी झलक,
ललित छब स्यामा प्यारी की। श्रीगिरधर कृष्णमुरारि की।।
कनकमय मोर मुकुट बिलसै, देवता दरसन को तरसै,
गगन सों सुमन रासि बरसै,
बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग, ग्वालिनी सँग,
अतुल रति गोपकुमारी की। श्रीगिरधर कुष्णमुरारी की।।
जहाँ ते प्रगट भई गंगा, सकल–मल–हारिणी श्रीगंगा,
स्मरन ते होत मोह–भंगा,
बसी सिव सीस, जटा के बीच, हरै अघ कीच,

चरन छबि श्रीबनवारी की। श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की।।
चमकती उज्ज्वल तट रेनू, बज रही बृन्दावन बेनू,
दिसि गोपि ग्वाल धेनू,
हँसत मृदु मन्द, चाँदनी चन्द, कटत भव–फन्द,
टेर सुनु दीन दुखारि की। श्रीगिरधर कृष्णमुरारि की।।
आरती कुञ्जबिहारी की। श्रीगिरधर कृष्णमुरारिकी।।

ॐ भूभुर्वः स्वः श्री कृष्णाय नमः आरार्तिक्यं समर्पयामि। आरती के बाद जल गिरा दे।

पुष्पांजलि–मन्त्र बोलते हाथ में फूल लेकर भगवान् कृष्ण को पुष्पांजलि अर्थात् प्रार्थना करना।

ॐयज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।
ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे।
स मे कामान् काम कामाय मह्य कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु।

कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः॥

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात।

सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावा भूमी जनयन् देव एकः॥

ॐ एक दन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात ॥

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥

ॐ गणाम्बिकायै विद्महे कर्मसिद्धयै च धीमहि। तन्नो गौरी प्रचोदयात्॥

ॐ कात्यायिन्यै विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि। तन्नो देवि प्रचोदयात

ॐ दशरथाय विद्महे सीतावल्लभा च धीमहि। तन्नो राम् प्रचोदयात॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।

त्वमेव वि। ा द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

ॐ भूभुर्वः स्वः श्री कृष्णाय नमः, पुष्पांजलिं समर्पयामि।(पुष्पांजलि अर्पित करे।)

प्रदक्षिणा –

यानि कानि च पापानि ज्ञाताज्ञातकृतानि च।

तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे॥

प्रणाम –

यो न पिता जनिता यो व्विधाता धामानि व्वेदभुवनानि व्विश्श्वा।

यो देवानान्नामधाऽएकऽएव त सम्प्रश्न्नम्भुवना यन्त्यन्न्या॥

क्षमा प्रार्थना –

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम।

पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।

तस्मात् कारुण्य भावेन रक्ष मां परमेश्वर॥

मत्समो नास्ति पापिष्ठस्त्वत्समो नास्ति पापहा।

इति मत्वा दयासिन्धो यथेच्छसि तथा कुरू॥

मन्त्रेणाक्षर हीनेन पुष्पेण विकलेन च।

पूजितोऽसि महादेव तत्सर्वं क्षम्यतां मम॥

अयं दानकालस्त्वहं दानपात्रं भवानेव दाता त्वदन्यं न याचे।

भवद्भक्तिमन्तः स्थिरां देहि मह्यं कृपाशीलशम्भो कृतार्थोऽस्मि यस्मात्॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञ क्रियादिषु।

न्यूनं सम्पूर्णतां यातु स। ो वन्दे तमच्युतम्॥

अनेन पूजनेन श्रीकृष्णाय नमः प्रीयताम्।

विसर्जनम् –

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकिम्।

इष्ट काम समृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥

तिलकाशीर्वाद –

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात्पवमानं महीयते।

धनं धान्यं पशुं बहु पुत्र लाभं शतसम्वत्सरं दीर्घमायुः॥

मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।

शत्रूणां बुद्धिनाशोस्तु मित्राणामुदयस्तव॥

स्वस्त्यस्तु ते कुशलमस्तु चिरायुरस्तु,
गोवाजिहस्ति धनधान्य समृद्धिरस्तु।
शत्रुक्षयोऽस्तु निजपक्षमहोदयोऽस्तु,

वंशे सदैव भवतां हरिभक्तिरस्तु॥

4.4 सारांश :–

पुत्र प्राप्ति मानव जीवन के लिये अत्यन्त आवश्यक है। पुत्र से ही मानव जाति का कल्याण सम्भव है सन्तान गोपाल मन्त्र का प्रयोग केवल सन्तान के लिये किया जाता है। संसार में गृहस्थ पुरुष समस्त सुख के विना रह सकता है किन्तु पुत्र सुख के विना नही रह सकता है। पिता के मरने के बाद पुत्र के द्वारा ही उसकी मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस लिये पुत्र का होना अत्यन्त आवश्यक है। पुत्र प्राप्ति के लिये अनेक उपाय बताये गये है।किन्तु सभी उपायों में सबसे उत्तम उपाय सन्तान गोपाल मन्त्र को बताया गया है।जिसको करने से पुत्र की प्राप्ति होती है।

पुत्र प्राप्ति के लिये मन्त्र प्रधान आधार है और चित्रात्मकता को भी स्वीकार किया गया, किन्तु उनमें विशिष्ट वस्तुओं के प्रयोग की अनिवार्यता हो गयी। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष सभी

कुछ मन्त्र के माध्यम से प्राप्त किये जाने लगा, किन्तु जहाँ मन्त्रों का प्रयोग सात्त्विकता प्रधान था, वहाँ यन्त्र – राजसिकता प्रधान हुए और तन्त्र को तामसी साधना का चरम :प माना गया। यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र के सन्दर्भ में नवग्रहों का विशद विवेचन इस अध्ययन में प्राप्त होता है। प्रायः जन्कुण्ड़ली में उत्पन्न दोषों का निवारण सूर्यादि नवग्रहों के प्रयोगों से ही होता है। इस अध्याय के पश्चात् जातक अपने जीवन में यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र का समुचित उपयोग शास्त्रीय विधि से कर पायेगा

4.5 शब्दावली –

शब्द	अर्थ
वैकुण्ठतेजसा	वैकुण्ठ के तेज से
समर्पयन्तंसमर्पण	करता हुआ
विप्राय	ब्राह्मण के लिये
बालकान्	बालकों को
जगत्पते	जगत के पिता
देहि	दो
मे हम	लोगों को
तनयं	पुत्र को
शरणं गतः	शरण में गये

4.6 अभ्यासार्थ प्रश्न उत्तर

1–प्रश्न–ऊँ भार्गव ऋषये नमः इस मन्त्र से किसको स्पर्श किया जाता है?
उत्तर– ऊँ भार्गव ऋषये नमः इस मन्त्र से शिर को स्पर्श किया जाता है।
2–प्रश्न–ऊँ अनुष्टुप्छन्दसे नमः इस मन्त्र से किसको स्पर्श किया जाता है?
उत्तर– ऊँ अनुष्टुप्छन्दसे नमः इस मन्त्र से मुख को स्पर्श किया जाता है।
3–प्रश्न–ऊँ विघ्नेशदेवतायै नमः इस मन्त्र से किसको स्पर्श किया जाता है?
उत्तर– ऊँ विघ्नेशदेवतायै नमः इस मन्त्र से हृदय को स्पर्श किया जाता है।
4–प्रश्न–ऊँ वं बीजाय नमः इस मन्त्र से किसको स्पर्श किया जाता है?
उत्तर– ऊँ वं बीजाय नमः इस मन्त्र से गुदा को स्पर्श किया जाता है।
5–प्रश्न–ऊँ यं शक्त्ये नमः इस मन्त्र से किसको स्पर्श किया जाता है?
उत्तर– ऊँ यं शक्त्ये नमः इस मन्त्र से दोनों पैरों को स्पर्श किया जाता है।

4.7–सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची

1–पुस्तक का नाम–दुर्गाचन पद्धति
लेखक का नाम– शिवदत्त मिश्र

प्रकाशक का नाम– चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी

2–पुस्तक का नाम–सर्वदेव पूजापद्धति
लेखक का नाम– शिवदत्त मिश्र

प्रकाशक का नाम– चौखम्भा सुरभारती प्रकाषन वाराणसी
3 धर्मशास्त्र का इतिहास

लेखक – डॉ. पाण्डुरङ्ग वामन काणे
प्रकाशक :– उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान।

4 नित्यकर्म पूजा प्रकाश,
लेखक :– पं. बिहारी लाल मिश्र,
प्रकाशक :– गीताप्रेस, गोरखपुर।

5 अमृतवर्षा, नित्यकर्म, प्रभुसेवा
संकलन ग्रन्थ
प्रकाशक :– मल्होत्रा प्रकाशन, दिल्ली।

6 कर्मठगुरुः
लेखक – मुकुन्द वल्लभ ज्योतिषाचार्य
प्रकाशक – मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

7 हवनात्मक दुर्गासप्तशती
सम्पादक – डॉ. रवि शर्मा
प्रकाशक – राष्ट्रीय संस्कृत साहित्य केन्द्र, जयपुर।

8 शुक्लयजुर्वेदीय रुद्राष्टध्यायी
सम्पादक – डॉ. रवि शर्मा
प्रकाशक – अखिल भारतीय प्राच्य ज्योतिष शोध संस्थान, जयपुर।

9 विवाह संस्कार
सम्पादक – डॉ. रवि शर्मा
प्रकाशक – हंसा प्रकाशन, जयपुर

4.8–उपयोगी पुस्तकें

1. पुस्तक का नाम– दुर्गाचन पद्धति
   लेखक का नाम– शिवदत्त मिश्र

   प्रकाशक का नाम– चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी

4.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1–भगवान् कृष्ण के ध्यान का वर्णन कीजिये।

2. सन्तानगोपाल मन्त्र का प्रयोजन बतलाते हुए विस्तृत वर्णन कीजिये।
3. क्या सन्तान प्राप्ति के लिए सन्तानगोपाल मन्त्र का प्रयोग सार्थक है? यदि हॉ तो कैसे? सिद्ध कीजिये।

इकाई – 5 श्रीमद्भगवतद्गीता का 15 वॉ अध्याय

इकाई की रुप रेखा

5.1 प्रस्तावना

5.2 उद्देश्य

5.3 श्रीमद्भगवद्गीता का 15 वॉ अध्याय

अभ्यास प्रश्न

5.4 सारांश

5.5 पारिभाषिक शब्दावली

5.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

5.7 सन्दर्भ ग्रन्थ

5.8 निबन्धात्मक प्रश्न

5.1 प्रस्तावना

श्रीमद्भगवद्गीता से सम्बन्धित खण्ड दो की यह पॉचवी इकाई है इस इकाई के अध्ययन से आप बता सकते है कि श्रीमद्भगवद्गीता की उत्पति किस प्रकार से हुई है? श्रीमद्भगवद्गीता की उत्पति भगवान् कृष्ण के द्वारा हुई है। तथा श्रीमद्भगवद्गीता के माध्यम से आज सनातन धर्म की रक्षा हो रही है।

श्रीमद्भगवद्गीता को जानते हुए आप धर्म अधर्म के विषय में परिचित होंगे कि धर्म का प्रयोजन क्या है एवं उसका महत्त्व क्या है इन सबका वर्णन इस इकाई में किया गया है।

श्रीमद्भगवद्गीता का माहात्म्य वाणीद्वारा वर्णन करने के लिये किसी की भी सामर्थ्य नही है क्योंकि यह परम रहस्यमय ग्रन्थ है। इसमें सम्पूर्ण वेदों का सार संग्रह किया गया है। इसकी संस्कृत इतनी सुन्दर और सरल है कि थोड़ा अभ्यास करने से मनुष्य उसको सहज ही समझ सकता है।

5.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप श्रीमद्भगवद्गीता के पन्द्रहवे अध्याय का अध्ययन करेंगे।

- श्रीमद्भगवद्गीता के विषय में आप परिचित होंगे–
- श्रीमद्भगवद्गीता के पन्द्रहवें अध्याय के पहले श्लोक के विषय में आप परिचित होंगे
- श्रीमद्भगवद्गीता के पन्द्रहवें अध्याय के तीसरे श्लोक के विषय में आप परिचित होंगे
- श्रीमद्भगवद्गीता के पन्द्रहवें अध्याय के चौथे श्लोक के विषय में आप परिचित होंगे
- श्रीमद्भगवद्गीता पन्द्रहवें अध्याय के पाचवें श्लोक के विषय में आप परिचित होंगे

5.3 श्रीमद्भगवद्गीता

श्रीमद् भगवद्गीता का पन्द्रहवॉ अध्याय

श्रीभगवानुवाच

ऊर्ध्वमूलमधः शाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम्।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित्।।

श्रीभगवान् बोले–आदिपुरूष परमेश्वररूप मूलवाले और ब्रह्मारूप मुख्य शाखावाले, जिस संसाररूप पीपलके वृक्षको अविनाशी कहते हैं, तथा वेद जिसके पत्ते कहे गये हैं–उस संसाररूप वृक्षको जो पुरूष मूलसहित तत्त्व से जानता है, वह वेदके तात्पर्यको जानने वाला हैं।।1।।

अधश्चोर्ध्वं प्रसृतास्तस्य शाखा
गुणप्रवृद्धा विषयप्रवालाः।
अधश्च मूलान्यनुसन्ततानि
कर्मानुबन्धीनि मनुष्यलोके।।

उस संसारवृक्षकी तीनों गुणों रूप जलके द्वारा बढ़ी हुई एवं विषय–भोगरूप कोंपलोंवाली देव, मनुष्य और तिर्यक् आदि योनिरूप शाखाएँ नीचे और ऊपर सर्वत्र फैली हुई हैं तथा मनुष्यलोकमें कर्मोंके अनुसार बाँधनेवाली अहंता–ममता और वासनारूप जड़ें भी नीचे और ऊपर सभी लोकोंमें व्याप्त हो रही हैं।।2।।

न रूपमस्येह तथोपलभ्यते
नान्तो न चादिर्न च सम्प्रतिष्ठा ।
अश्वत्थमेनं सुविरूढमूल–
मसङ्गशस्त्रेण दृढेन छित्त्वा।।

इस संसार वृक्ष का स्वरूप जैसा कहा है वैसा यहाँ विचारकाल में नहीं पाया जाता, क्योंकि न तो इसका आदि है और न अन्त है तथा न इसकी अच्छी प्रकार से स्थिति ही है। इसलिये इस अहंता, ममता और वासनारूप अति दृढ़ मूलोंवाले संसार रूप पीपल के वृक्षको दृढ़ वैराग्यरूप शस्त्रद्वारा काटकर।।3।।

ततः पदं तत्परिमार्गितव्यं
यस्मिन्गता न निवर्तन्ति भूयः।
तमेव चा। ˙ पुरुषं प्रप। `
यतः प्रवृत्तिः प्रसृता पुराणी।।

उसके पश्चात् उस परम–पदरूप परमेश्वर को भली भाँति खोजना चाहिये, जिसमें गये हुए पुरूष फिर लौटकर संसार में नहीं आते और जिस परमेश्वर से इस पुरातन संसार–वृक्ष की प्रवृत्ति विस्तार को प्राप्त हुई है, उसी आदिपुरूष नारायण के मैं शरण–हूँ – इस प्रकार दृढ़ निश्चय करके उस परमेश्वर का मनन और निदिध्यासन करना चाहिये।।4।।

निर्मानमोहा जितसग्ङदोषा–'
अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः।
द्वन्द्वैर्विमुक्ताः सुखदुःखसञ्ज्ञै–

गच्छन्त्यमूढ़ाः पदमव्ययं तत्।।

जिनका मान और मोह नष्ट हो गया है, जिन्होंने आसक्ति रूप दोष को जीत लिया है, जिनकी परमात्मा के स्वरूप में नित्य स्थिति है और जिनकी कामनाएँ पूर्णरूप से नष्ट हो गयी हैं– वे सुख–दुःख नामक द्वन्द्वों से विमुक्त ज्ञानीजन उस अविनाशी परमपदको प्राप्त होते हैं।।5।।

न तभ्दासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः।
यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम।।

जिस परमपदको प्राप्त होकर मनुष्य लौटकर संसार में नहीं आते, उस स्वयं प्रकाश परम पदको न सूर्य प्रकाशित कर सकता है, न चन्द्रमा और न अग्नि ही, वही मेरा परमधाम है।।6।।

ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः।
मनः षष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति।।

इस देहमें यह जीवात्मा मेरा ही सनातन अंश है और वही इन प्रकृति में स्थित मन और पांचों इन्द्रियों को आकर्षण करता है।।7।।

शरीरं यादवाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः।
गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्गन्धानिवाशयात्।।

वायु गन्ध के स्थान से गन्ध को जैसे ग्रहण करके ले जाता है, वैसे ही देहादिका स्वामी जीवात्मा भी जिस शरीर का त्याग करता है, उससे इन मनसहित इन्द्रियों को ग्रहण करके फिर जिस शरीर को प्राप्त होता है–उसमें जाता है।।8।।

श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनं च रसनं घ्राणमेव च।
अधिष्ठाय मनश्चायं विषयानुपसेवते।।

यह जीवात्मा श्रोत्र, चक्षु और त्वचाको तथा रसना, घ्राण और मनको आश्रय करके–अर्थात् इन सबके सहारे से ही विषयों का सेवन करता है।।9।।

उत्क्रामन्तं स्थितं वापि भुञ्जानं वा गुणान्वितम्।
विमूढा नानुपश्यन्ति पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषः।।

शरीर को छोड़कर जाते हुए को अथवा शरीर में स्थित हुए को अथवा विषयों को भोगते हुए को इस प्रकार तीनों गुणों से युक्त हुए को भी अज्ञानीजन नहीं जानते, केवल ज्ञानरूप नेत्रों वाले विवेकशील ज्ञानी ही तत्त्व से जानते हैं।।10।।

यतन्तो योगिनश्चैनं पश्यन्त्यात्मन्यवस्थितम्।
यतन्तोऽप्यकृतात्मानो नैनं पश्चन्त्यचेतसः।।

यन्त करने वाले योगीजन भी अपने हृदय में स्थित इस आत्मा को तत्त्व से जानते हैं, किन्तु जिन्होंने अपने अन्तःकरण को शुद्ध नहीं किया है, ऐसे अज्ञानीजन तो यन्त करते रहने पर भी इस आत्मा को नहीं जानते ।।11।।

यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयतेऽखिलम्।
यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम्।।

सूर्य में स्थित जो तेज सम्पूर्ण जगत् को प्रकाशित करता है तथा जो तेज चन्द्रमा में है और जो अग्नि में है– उसको तू मेरा ही तेज जान।।12।।

गामाविश्च च भूतानि धारयाम्यहमोजसा।
पुष्णामि चौषधीः सर्वाः सोमो भूत्वा रसात्मकः।।

और मैं ही पृथ्वी में प्रवेश करके अपनी शक्ति से सब भूतों को धारण करता हूँ और रसस्वरूप अर्थात् अमृतमय चन्द्रमा होकर सम्पूर्ण ओषधियों को अर्थात् वनस्पतियों को पुष्ट करता हूँ।।13।।

अहं वैश्वानरों भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः।
प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम्।।

मैं ही सब प्राणियों के शरीर में स्थित रहनेवाला प्राण और अपान से संयुक्त वैव्श्रानर अग्निरूप होकर चार प्रकार के अन्न को पचाता हूँ।।14

सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो–
मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च।
वेदैश्च सर्वैरहमेव वे। ो–
वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम्।।

मैं ही सब प्राणियों के हृदय में अन्तर्यामीरूप से स्थित हूँ तथा मुझसे ही स्मृति, ज्ञान और अपोहन होता है और सब वेदों द्वारा मैं ही जानने के योग्य हूँ तथा वेदान्तका कर्त्ता और वेदों को जानने वाला भी मैं ही हूँ।।15।।

द्वाविमौ पुरूषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च।
क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते।।

इस संसार में नाशवा्न और अविनाशी भी ये दो प्रकार के पुरूष हैं। इनमें सम्पूर्ण भूतप्राणियों के शरीर तो नाशवान् और जीवात्मा अविनाशी कहा जाता हैं।।16।।

उत्तमः पुरूषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः।
यो लोकत्रयमाविश्य बिभर्त्यव्यय ईश्वरः।।

इन दोनों से उत्तम पुरूष तो अन्य ही है, जो तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण–पोषण करता है। एवं अविनाशी परमेश्वर और परमात्मा–इस प्रकार कहा गया है।।17।।

यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः।।
अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरूषोत्तमः।।

क्योंकि मैं नाशवान् जडवर्ग– क्षेत्र से तो सर्वथा अतीत् हूँ और अविनाशी जीवात्मा से भी उत्तम हूँ, इसलिये लोक में और वेदमें भी पुरूषोत्तम नाम से प्रसिद्ध हूँ।।18।।

यो मामेवमसम्मूढो जानाति पुरूषोत्तमम्।
स सर्वविद्भजति मां सर्वभावेन भारत्।।

भारत! जो ज्ञानी पुरूष मुझको इस प्रकार तत्त्व से पुरूषोत्तम जानता है, वह सर्वज्ञ पुरूष सब प्रकार से निरन्तर मुझ वासुदेव परमेश्वर को ही भजता है।।19।।

इति गुह्यतमं शास्त्रमिदमुक्तं मयानघ।
एतद्बुद्ध्वा बुद्धिमान्स्यात्कृतकृत्यश्च भारत।।

हे निष्पाप अर्जुन! इस प्रकार यह अति रहस्युक्त गोपनीय शास्त्र मेरे द्वारा कहा गया, इसको तत्त्व से जानकर मनुष्य ज्ञानवान् और कृतार्थ हो जाता है।।20।।

ऊँ तत्सतिति श्रीमद्‌भगवद्‌गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मवि। ायां
योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे पुरूषोत्तमयोगो
नाम पंचदशोऽध्यायः।।1

5.4 सारांश :–

श्रीमद्‌भगवद्‌गीता से सम्बन्धित खण्ड दो यह पॉचवी इकाई है इस इकाई में श्रीमद्‌भगवद्‌गीता के पन्द्रहवें अध्याय का वर्णन किया गया है श्रीमद्‌भगवद्‌गीता के पन्द्रहवें अध्याय में जीव परमात्मा के अंश का वर्णन किया गया है जीव परमात्मा का अंश है परन्तु इस देह में यह जीवात्मा मेरा ही सनातन अंश है और वही इन प्रकृति में स्थित मन और पांचों इन्द्रियों को आकर्षण करता है

भगवान् कृष्ण कहते है कि यह जीवात्मा श्रोत्र, चक्षु और त्वचाको तथा रसना, घ्राण और मनको आश्रय करके–अर्थात् इन सबके सहारे से ही विषयों का सेवन करता है।

शरीर को छोड़कर जाते हुए को अथवा शरीर में स्थित हुए को अथवा विषयों को भोगते हुए को इस प्रकार तीनों गुणों से युक्त हुए को भी अज्ञानीजन नहीं जानते, केवल ज्ञानरूप नेत्रों वाले विवेकशील ज्ञानी ही तत्त्व जानते हैं।अन्य अज्ञानी जन इस तत्त्व को नही जान सकते है।

5.5 शब्दावली –

शब्द	**अर्थ**
ऊर्ध्वमूलम्	उपर की ओर मूल वाले
अधः शाखम्	नीचे की ओर शाखावाले
अश्वत्थम्	संसार रूप अश्वत्थ
प्राहुरव्ययम्।	प्रवाह रूप से कहते है
छन्दांसि	वेद
यस्य	जिसके
पर्णानि	पत्ते हैं
यः	जो
वेदवित्	पम्पूर्ण वेदों को जानने वाला

5.6 अभ्यासार्थ प्रश्न उत्तर

1–प्रश्न–पन्द्रहवें अध्याय के पहले श्लोक किसका वर्णन किया गया है?
उत्तर– पन्द्रहवें अध्याय के पहले श्लोक में आदि पुरुष भगवान् कृष्ण का वर्णन

किया गया है।

2–प्रश्न– पन्द्रहवें अध्याय के पॉचवे श्लोक में किसका वर्णन किया गया है?

उत्तर– पन्द्रहवें अध्याय के पॉचवें श्लोक में सुख दुःख का वर्णन किया गया है।

3–प्रश्न– पन्द्रहवें अध्याय के सातवें श्लोक में किसका वर्णन किया गया है?

उत्तर– पन्द्रहवें अध्याय के सातवें श्लोक में आत्मा और परमात्मा का वर्णन किया गया है।

4–प्रश्न– पन्द्रहवें अध्याय के नौवें श्लोक में किसका वर्णन किया गया है?

उत्तर–पन्द्रहवें अध्याय के नौवें श्लोक में गुण एवं तत्त्वों का वर्णन किया गया है।

5–प्रश्न– पन्द्रहवें अध्याय के पन्द्रहवें श्लोक में किसका वर्णन किया गया है?

उत्तर– पन्द्रहवें अध्याय के पन्द्रहवें श्लोक में वेद का वर्णन किया गया है।

5.7–सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची

1–पुस्तक का नाम–दुर्गाचन पद्धति
लेखक का नाम– शिवदत्त मिश्र

प्रकाशक का नाम– चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी

2–पुस्तक का नाम–सर्वदेव पूजापद्धति
लेखक का नाम– शिवदत्त मिश्र
प्रकाशक का नाम– चौखम्भा सुरभारती प्रकाषन वाराणसी

3 धर्मशास्त्र का इतिहास
लेखक – डॉ. पाण्डुरङ्ग वामन काणे
प्रकाशक :– उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान।

4 श्रीमद्भगवद्गीता
लेखक :– स्वामी रामसुखदास
प्रकाशक :– गीताप्रेस, गोरखपुर

5.8–उपयोगी पुस्तकें

1–पुस्तक का नाम– श्रीमद्भगवद्गीता
लेखक :– स्वामी रामसुखदास
प्रकाशक :– गीताप्रेस, गोरखपुर

5.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1– इति गुह्यतमं शास्त्रमिदमुक्तं मयानघ।
एतद्बुद्ध्वा बुद्धिमान्स्यात्कृतकृत्यश्च भारत।। इस श्लोक का वर्णन कीजिये

4. श्रीमद्भगवद्गीता के पन्द्रहवें अध्याय का सम्पूर्ण अर्थ लिखिये ।

खण्ड - 3
विविध देवताओं की आरती एवं स्तुति

इकाई – 1 गणेश जी आरती

इकाई की संरचना

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 श्रीगणेश जी का स्वरूप विचार एवं तात्विक विवेचन

1.3.1 श्री गणेश जी का स्वरूप विचार

1.3.2 श्री गणेश जी के स्वरूप का तात्विक विवेचन

1.4 गणेश जी हेतु सूक्त पाठ, स्तोत्र पाठ एवं आरती

1.4.1 गणेश जी प्रसन्नता हेतु गणपत्यथर्वशीर्ष पाठ

1.4.2 संकटनाशनगणेशस्तोत्रम्

1.4.3 गणेश जी की आरती

1.5 सारांश

1.6 पारिभाषिक शब्दावली

1.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.9 सहायक उपयोगी पाठ्यसामग्री

1.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

इस इकाई में श्री गणेश जी की आरती एवं स्तुति विचार संबंधी प्रविधियों का अध्ययन आप करने जा रहे हैं। इससे पूर्व की प्रविधियों का अध्ययन आपने कर लिया होगा। कर्मकाण्ड के श्राद्धादि विषयक पक्ष को छोड़कर अन्यत्र सर्वत्र सर्वप्रथम श्रीगणेश जी की वन्दना या पूजा से ही कार्य का आरम्भ किया जाता है।यह प्रकल्प कार्य के निर्विघ्न समाप्त्यर्थ सम्पन्न किये जाते हैं। अतः श्री गणेश जी क्या हैं? तथा कैसे उनकी आरती पूजा की जाती है? इसका ज्ञान आपको इस इकाई के अध्ययन से हो जायेगा।

श्री गणेश जी की आरती एवं स्तुति विचार के अभाव में किसी व्रत, किसी मुहूर्त्त, किसी उत्सव एवं किसी पर्व का सम्पादन किसी भी व्यक्ति द्वारा ठीक ढंग से नही हो सकता है। क्योकि कोई भी व्रत करते हैं तो उसके निर्विघ्न पूर्णता के लिये हमें सबसे पहले श्री गणेश जी की वन्दना करनी होती है। न केवल कर्मकाण्ड अपितु अन्यत्र क्षेत्रों में भी यह परम्परा देखने को मिलती है। एक बार समस्त देवमण्डल में यह विचार चल रहा था कि हम सभी देवताओं में सबसे पहले किसकी पूजा होनी चाहिये? किसी देवता ने विचार दिया कि जो देवता गण सबसे पहले इस ब्रह्माण्ड की परिक्रमा करके यहां उपस्थित हो जायेगा उसे ही सर्व प्रथम पूज्य माना जायेगा। सभी देवता परिक्रमा करने के लिये प्रस्थान किये। गणेश जी की सवारी का नाम मूषक है। गणेश जी ने सोचा की मूषक पर बैठकर ब्रह्माण्ड की परिक्रमा हम नही कर सकते। तो विचार किया कि एक पुत्र के लिये उसके माता पिता ही ब्रह्माण्ड है। अतः उन्होनें अपने माता पिता की परिक्रमा करके अपने को उपस्थित कर दिया और उनका सर्व प्रथम पूजन हेतु चयन हो गया।

इस इकाई के अध्ययन से आप श्री गणेश जी की आरती एवं स्तुति इत्यादि के विचार करने की विधि का सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर सकेगें। इससे श्री गणेश जी की आरती एवं स्तुति आदि विषय के अज्ञान संबंधी दोषों का निवारण हो सकेगा जिससे सामान्य जन भी अपने कार्य क्षमता का भरपूर उपयोग कर समाज एवं राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकेगें। आपके तत्संबंधी ज्ञान के कारण ऋषियों एवं महर्षियों का यह ज्ञान संरक्षित एवं सवंर्धित हो सकेगा। इसके अलावा आप अन्य योगदान दें सकेगें, जैसे - कल्पसूत्रीय विधि के अनुपालन का सार्थक प्रयास करना, भारत वर्ष के गौरव की अभिवृद्धि में सहायक होना, सामाजिक सहभागिता का विकास, इस विषय को वर्तमान समस्याओं के समाधान हेतु उपयोगी बनाना आदि।

1.2 उद्देश्य-

अब श्री गणेश जी की आरती एवं स्तुति विचार की आवश्यकता को आप समझ रहे होगें। इसका उद्देश्य भी इस प्रकार आप जान सकते हैं -

- कर्मकाण्ड को लोकोपकारक बनाना।

- श्री गणेश जी की आरती एवं स्तुति सम्पादनार्थ शास्त्रीय विधि का प्रतिपादन।
- कर्मकाण्ड में व्याप्त अन्धविश्वास एवं भ्रान्तियों को दूर करना।
- प्राच्य विद्या की रक्षा करना।
- लोगों के कार्यक्षमता का विकास करना।
- समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करना।

1.3 श्रीगणेश जी का स्वरूप विचार एवं तात्विक विवेचन-

इसमें श्रीगणेश जी का स्वरूप विचार एवं तात्विक विवेचन आपको कराया जायेगा क्योकि बिना इसके परिचय के श्री गणेश जी का आधारभूत ज्ञान नही हो सकेगा। आधारभूत ज्ञान हो जाने पर श्रद्धा एवं समर्पण की भावना का उद्भव होता है। भावो हि विद्ते देवः के अनुसार भावना होने पर देवत्व को प्राप्त किया जा सकता है। इसलिये श्री गणेश जी का स्वरूप विचार एवं तात्विक विवेचन इस प्रकार है-

1.3.1 श्री गणेश जी का स्वरूप विचार-

श्री गणेश जी की वह वन्दना जो प्रायः अधिकांशतः लोगों को स्मृत होगी उसी का स्मरण करते हुये हम स्वरूप विचार करेंगे जो इस प्रकार है-

गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम्॥

यह श्लोक अत्यन्त सुप्रसिद्ध श्लोक है। इसमें कहा गया है कि- गजाननं यानी गज का आनन अर्थात् गज यानी हाथी तथा आनन यानी मुख अर्थात् भगवान गणेश हाथी के मुख वाले हैं। गजानन में दीर्घ सन्धि हुई है। ये हाथी के मुख वाले गणेश जी भूत गणों से सेवित है। कपित्थ अर्थात् कैंथ, जम्बू अर्थात् जामुन के फल को चारु यानी रुचि पूर्वक या सुन्दरता पूर्वक भक्षण करने वाले है। उमासुतं यानी मां पार्वती के पुत्र हैं तथा शोक विनाश करने के कारक है यानी दुख को विनाश करने के मूल में श्री गणेश जी है। ऐसे विघ्नों के स्वामी श्री विघ्नेश्वर के चरण कमलों में मैं नमन करता हूॅ। यहॉ विघ्नेश्वर में विघ्न एवं ईश्वर नामक दो जुड़ गया है। इन दोनों के जुड़ जाने के कारण गुण सन्धि हो रही है।

इस श्लोक में भगवान श्री गणेश को उमा सुत यानी उमा का पुत्र बतलाया है। कुछ कथानकों के अनुसार एक बार भगवती पार्वती अपने सदन में अकेली थी। उन्हें अत्यावश्यक कृत्य हेतु एकान्त की आवश्यकता थी। उन्होनें अपने तप के प्रभाव से एक बालक का सृजन किया जिसका नाम गणेश रखा। भगवान श्री गणेश ने कहा माताजी क्या आदेश है? माता ने कहा किसी को अन्दर न आने देना। ऐसा आदेश मिलने पर बालक गणेश वहीं प्रहरी की तरह खड़ा होकर द्वार का रक्षण करने लगे। कुछ

समय के पश्चात् भगवान शंकर का शुभागमन हुआ। बालक तो किसी को जानता नही था सो उसने आवाज लगाई , ये साधु बाबा वहीं रुक जाओ, अन्दर जाना मना है। भगवान श्री शंकर ने कहा हमारे घर में जाने से हमें रोकने वाला यह कौन हो सकता है? भगवान शंकर ने समझाया कि ये हमारा ही घर है मुझे जाने दो लेकिन बालक गणेश ने मना कर दिया, क्योकि वह तो किसी को पहचानता ही नही था । परिणाम स्वरूप युद्ध हुआ और उस युद्ध में भगवान शंकर ने श्री गणेश जी की गर्दन काट दी और अन्दर चले गये। भगवती ने पूछा आप अन्दर कैसे आ गये? आपको कोई रोका नही। भगवान ने कहा एक बालक रोक रहा था, परन्तु मैने उसका शिर धड़ से अलग कर दिया है। यह सुनते ही भगवती धड़ाम से नीचे गिर गयीं। भगवान ने उनको सम्भाला और पूछा, तो उन्होने कहा वह तो हमारा बेटा गणेश है। मैं उसके बिना जीवित नही रह सकती । अन्त में भगवान शंकर ने हाथी का शिर मंगवाकर उसके धड़ से जोड़कर श्री गणेश जी को जीवित कर दिया। इस प्रकार भगवान गणेश भगवान शंकर एवं माता पार्वती दोनों के पुत्र हो गये ।

भगवान गणेश जी के स्वरूप के विषय में आपने इस प्रकरण में विस्तार से जाना । आशा है इसके बारे में जानकारी हो गयी होगी। अब हम इसको आधार बनाकर कुछ प्रश्न बनाने जा रहे है जिससे आपका ज्ञान इस विषय में और प्रौढ़ हो जायेगा। प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न- उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- गज का अर्थ होता है-

क- हाथी , ख- मुख़, ग- कैंथ, घ- जामुन।

प्रश्न 2- आनन का अर्थ होता है-

क- हाथी , ख- मुख़, ग- कैंथ, घ- जामुन।

प्रश्न 3- कपित्थ का अर्थ होता है-

क- हाथी , ख- मुख़, ग- कैंथ, घ- जामुन।

प्रश्न 4- जम्बू का अर्थ होता है-

क- हाथी , ख- मुख़, ग- कैंथ, घ- जामुन।

प्रश्न 5- गजानन में सन्धि है-

क- दीर्घ , ख- गुण, ग- वृद्धि, घ- यण।

प्रश्न 6- विघ्नेश्वर में सन्धि है-

क- दीर्घ , ख- गुण, ग- वृद्धि, घ- यण।

प्रश्न 7- गणेश में सन्धि है-

क- दीर्घ , ख- गुण, ग- वृद्धि, घ- यण।

प्रश्न 8- मात पार्वती ने तप के प्रभाव से क्या सृजन किया?

क- हाथी, ख- भूत, ग- बालक, घ- बालिका।
प्रश्न 9- गणेश जी का किसके साथ युद्ध हुआ?
क- ब्रह्मा जी, ख- विष्णु जी, ग- शंकर जी, घ- इन्द्र जी।
प्रश्न 10- गणेश जी के धड़ पर किसका शिर लगाया गया?
क- मनुष्य का, ख- स्त्री का, ग- हाथी का, ध- घोड़ा का।

1.3.2 श्री गणेश जी के स्वरूप का तात्विक विवेचन-

भगवान गणेश के स्वरूप का दर्शन हमने इससे पूर्व के प्रकरण में किया है। हम सभी अवगत है कि श्री गणेश जी का मस्तक हाथी का है। हाथी का मस्तक यह बतलाता है कि जिस व्यक्ति को कोई बड़ा कार्य करना हो तो उसे अपना मस्तक बड़ा रखना चाहिये।यानी वृहद् विचार रखना चाहिये। प्रत्येक छोटी-छोटी बांतों को शिर में रखकर सबसे तू तू मै मै करना स्वयं के विकास का बाधक है। जीवन में यह आवश्यक नही की प्रत्येक प्रश्नों के उत्तर दिये ही जाय। यदि आवश्यक नही हो तो उस पर ध्यान नही देना चाहिये। हाथी जाता रहता है लोग उसे कुछ कहते हैं, कुत्ते उसे भोकते रहते हैं लेकिन बिना इसकी परवाह किये वह लगातार अपने पथ पर आगे बढ़ता जाता है।

हाथी के आंख की अत्यन्त विशेषता बतलायी गयी है। कहा गया है कि हाथी में कनीनिका विपरीत तरीके से लगने के कारण सामने की छोटी वस्तु को भी बड़ा देखता है। जिस प्रकार समतल दर्पण को छोड़कर अन्य दर्पण के प्रयोग से प्रतिबिम्ब बड़ा या छोटा दिखता है उसी प्रकार हाथी को किसी वस्तु का प्रतिबिम्ब बड़ा ही दिखता है। यह उन लोगों के लिये सबसे बड़ा सन्देश है जो धनादि के अभिमान वश लघुकाय प्राणियों को कीटप्राय समझकर पैर के तले रगड़ देते हैं। इससे यह शिक्षा मिलती है कि अपने से बड़ा समझकर सबका सम्मान करना चाहिये। नाक प्रतिष्ठा का द्योतक होता है। जिसकी नाक बड़ी हो यानी प्रतिष्ठा बड़ी हो उसको अपना सम्मान बचाने के बारे में सोचना चाहिये। प्रतिष्ठा संरक्षण व्यक्ति का कर्त्तव्य होना चाहिये। हाथी का कान यह संकेत करता है कि किसी भी व्यक्ति को कोई बात केवल सुनकर ही प्रतिक्रिया में नही लग जाना चाहिये, अपितु उसको हाथी के कान की तरह इधर-उधर चलाकर वास्तविकता की खोज करनी चाहिये। जब तक वास्तविक बातों का पता न चल जाय तब तक प्रतिकार उचित नही है। हाथी की जिह्वा दन्तमूल से कण्ठ की ओर जाती है जिसके कारण कोई भी बात कहने के प्रयास करने पर उसका अच्छी तरह मनन करना चाहिये। मनन करने बाद यदि उचित हो तो बोलना चाहिये।

हाथी के दांत दो प्रकार के पाये जाते है जिसे कह सकते है कि खाने के अलग एवं दिखाने के अलग। इसका तात्पर्य है कि प्रत्येक व्यक्ति द्वारा कही गयी बातें चिन्तनीय है ऐसी बात नही है। बहुत से लोग हास परिहास में कुछ इधर-उधर की बातें कर देते हैं। गणेश जी को चित्र में एक दॉत वाला दिखाया गया है। इसलिये उन्हें एकदन्त भी कहा गया है। गणेशजी के चित्र में केवल दायी ओर का दांत ही दर्शनीय माना गया है।

शेष शरीर गणेश जी का नराकृति के रूप में विद्यमान रहता है। इससे यह निर्देश मिलता है कि अपने किसी कार्य में विघ्न न चाहने वाले पुरुषों के लिये आवश्यक है कि वे स्पष्टवादी हों। मानव हृदय रखने वाले हों, मनुष्योचित कर्मकलाप में सतत निरत रहें। मनुष्य की ही कर्म योनि होती है शेष सभी की भोग योनि होती है। चार भुजायें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्रतीक है। व्यक्ति को अपने जीवन में इन पुरुषार्थों की ओर ध्यान देना चाहिये।

गणेश जी के उदर को लम्बोदर कहा जाता है। इससे यह शिक्षा मिलती है कि व्यक्ति को अपना उदर लम्बा रखना चाहिये। किसी बात को सुनकर उसको पेट में रखने का प्रयास करना चाहिये। उससे वास्तविकता का ज्ञान होता है। व्यक्ति भ्रम में नही पड़ता है।

गणेश जी का वाहन मूषक है। मूषक को समृद्धि का प्रतीक माना गया है। चूहे वहीं रहते है जहां अन्न इत्यादि उन्हें खाने को प्राप्त हो रहा हो। व्यक्ति को अपने समृद्धि का पूरा ध्यान रखना चाहिये। सत्य की समृद्धि विकास का कारण बनती है।

भगवान गणेश जी के स्वरूप के तात्विक विवेचन के विषय में आपने इस प्रकरण में विस्तार से जाना । आशा है इसके बारे में जानकारी हो गयी होगी। अब हम इसको आधार बनाकर कुछ प्रश्न बनाने जा रहे है जिससे आपका ज्ञान इस विषय में और प्रौढ़ हो जायेगा। प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न- उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- गणेश जी का मस्तक किसका द्योतक है-

क- वृहद् विचार का , ख- सूक्ष्म विचार का, ग- लघु विचार का, घ- वक्र विचार का।

प्रश्न 2- गणेश जी की आंखे किसका द्योतक है-

क- वृहद् विचार का , ख- अपने से बड़ा देखने का, ग- लघु देखने का, घ- वक्र देखने का।

प्रश्न 3- गणेश जी की नाक किसका द्योतक है-

क- वृहद् विचार का , ख- सूक्ष्म विचार का, ग- प्रतिष्ठा का, घ- वक्र विचार का।

प्रश्न 4- गणेश जी का कान किसका द्योतक है-

क- वृहद् विचार का , ख- सूक्ष्म विचार का, ग- लघु विचार का, घ- वास्तविकता का।

प्रश्न 5- गणेश जी की जिह्वा किसका द्योतक है-

क- मनन करने का , ख- सूक्ष्म विचार का, ग- लघु विचार का, घ- वक्र विचार का।

प्रश्न 6- गणेश जी का दांत किसका द्योतक है-

क- वृहद् विचार का , ख- कथनी करनी में समुचित भेद का, ग- लघु विचार का, घ- वक्र विचार का ।

प्रश्न 7- एकदन्त किसे कहा जाता है?

क- गणेश जी को , ख- गजग्राह को, ग- इन्द्र को, घ- ऐरावत को।

प्रश्न 8- लम्बोदर किसे कहा जाता है?

क- गणेश जी को , ख- गजग्राह को, ग- इन्द्र को, घ- ऐरावत को।

प्रश्न 9- मूषक वाहन किसका है?

क- गणेश जी का , ख- गजग्राह का, ग- इन्द्र का, घ- ऐरावत का।

प्रश्न 10- मूषक किसका प्रतीक है?

क- दरिद्रता का , ख- गजग्राह का, ग- इन्द्र का, घ- समृद्धि का।

1.4 गणेश जी हेतु सूक्त पाठ, स्तोत्र पाठ एवं आरती-

इस प्रकरण में गणेश जी की प्रसन्नता के लिये स्तोत्रों का पाठ विधान व आरती विधान जाना जायेगा। इसके ज्ञान से श्री गणेश जी के प्रसन्नता के लिये सूक्त पाठ स्तोत्र पाठ एवं आरती का आपको ज्ञान हो जायेगा। प्रकरण अधोलिखित है-

1.4.1. गणेश जी की प्रसन्न्ता हेतु श्रीगणपत्यथर्वशीर्ष का सूक्त पाठ-

गणपत्यथर्वशीर्षम् का पाठ सूक्त पाठों में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखता है। अतः गणपत्यथर्वशीषम् का पाठ इस प्रकार नीचे दिया जा रहा है-

ओं नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्वमसि। त्वमेव केवलं कर्त्तासि । त्वमेव केवलं धर्त्तासि। त्वमेव केवलं हर्त्तासि।त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षादात्मासि नित्यम् । ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि। अव त्वं माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्। अव धातारम्। अवानूचानमव शिष्यम्। अव पश्चात्तात्। अव पुरस्तात्। अवोत्तरात्तात्। अव दक्षिणात्तात्। अव चोर्ध्वात्तात्। अवाधरात्तात्। सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात्। त्वं वांग्मयस्त्वं चिन्मयः। त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयं। त्वं सच्चिदानन्दाद्वितीयोसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोसि। सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्व जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति। सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति। सर्व जगदिदं त्वयि प्रत्येति। त्वं भूमिरापो नलो निलो नभः। त्वं चत्वारि वाक्पदानि। त्वं गुणत्रयातीतः। त्वमवस्थात्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः। त्वं कालत्रयातीतः। त्वं मूलाधारस्थितोसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वंरुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्। गणादीन्पूर्वमुच्चार्य वर्णादींस्तदनन्तरम्। अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दुलसितं। तारेण रुद्धम्। एतत्तवमनुस्वरूपम्। गकारः पूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरूपम्। अनुस्वारश्चान्त्यरूपम्। विन्दुरुत्तररूपम्। नादः सन्धानम्। स गुं हिता सन्धिः।सैषा गणेशविद्या। गणक ऋषिः। निचृद्गायत्री छन्दः। गणपतिर्देवता। ओं गं गणपतये नमः। एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।

एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमंकुशधारणम्। रदं च वरदं हस्तैर्विभ्राणमूषकध्वजम्। रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्। रक्तगन्धानुलिप्तांगं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्। भक्तानुकम्पिनं देवं जगतकारणमच्युतम्।

आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम्। एवं ध्यायति योनित्यं स योगी योगिनां वरः। नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्ते अस्तु नमस्ते अस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्ननाशिने शिवसुताय श्री वरदमूर्त्तये नमः।

एतदथर्वशीर्षं यो धीते स ब्रह्मभूयाय कल्पते। स सर्व विघ्नैर्न बाध्यते। स सर्वतः सुखमेधते। स पंचमहापापात्प्रमुच्यते। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायं प्रातः प्रयुंजानो अपापो भवति। सर्वत्राधीयानो अपविघ्नो भवति। धर्मंमर्थंकामंमोक्षं च विन्दति। इदमथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम्। यो यदि मोहाद्दास्यति स पापीयान् भवति। सहावर्तनाद्यं यं काममधीते तं तमनेन साधयेत्। अनेन गणपतिमभिषिंचति। स वाग्मी भवति। चतुर्थ्यामनश्नन् जपति स विद्यावान् भवति। इत्यथर्वणवाक्यम्। ब्रह्माद्यावरणं विद्यान्न विभेति कदाचनेति। यो दूर्वांकुरैर्यजति स वैश्रवणोपमो भवति। यो लाजैर्यजति स यशोवान् भवति। स मेधावान् भवति। यो मोदकसहस्रेण यजति स वांच्छितफलमवाप्नोति। यः साज्यसमिद्भिर्यजति स सर्वं लभते। स सर्वं लभते। अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्ग्राहयित्वा सूर्यवर्चस्वी भवति। सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासन्निधौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रो भवति। महाविघ्नात्प्रमुच्यते। स सर्वविद्भवति। स सर्वविद्भवति। यं एवं वेद।।

।। इत्यथर्वणवाक्यम् ।।

गणेश जी को नमस्कार है । हे गणेश आप प्रत्यक्ष तत्व है। आप केवल कर्त्ता है। आप केवल धर्त्ता है। आप केवल कष्टों के हर्त्ता है। आप ही ब्रह्म है। आप साक्षात् नित्य आत्मा है। यह ऋत वचन है। यह सत्य वचन है। मेरी रक्षा करिये। मेरे वाणि की रक्षा करें। मेरे श्रवण की रक्षा करे। मेरे दातृत्व की रक्षा करे। धातृत्व की रक्षा करें। मेरे अनूचान शिष्यों की रक्षा करें। पश्चिम की ओर से हमारी रक्षा करें। पूर्व से हमारी रक्षा करे। उत्तर की ओर से हमारी रक्षा करे। दक्षिण की ओर से हमारी रक्षा करे। ऊपर से हमारी रक्षा करे। नीचे से हमारी रक्षा करे। सभी ओर से मेरी रक्षा करे, सामने से भी हमारी रक्षा करे। आप वांग्मय है। आप चिन्मय है। आप आनन्दमय है। आप ब्रह्ममय है। आप सच्चिदानन्द है। आप अद्वितीय हैं। आप प्रत्यक्ष ब्रह्मा है। आप ज्ञानमय एवं विज्ञानमय हैं। यह सम्पूर्ण जगत् आप से उत्पन्न होता है। यह सम्पूर्ण जगत् आपमें स्थित है। यह सम्पूर्ण जगत् आप में ही लय हो जाता है। यह सम्पूर्ण जगत् आपकी ओर ही जाता है। आप भूमि है। आप आप यानी जल हैं। आप अनल यानी अग्नि है। आप अनिल यानी वायु है। आप नभ यानी आकाश है। आप चार मूल वाक्य है। आप गुणत्रयातीत है। आप अवस्थात्रयातीत है। आप देहत्रयातीत है। आप कालत्रयातीत है। आप नित्य मूलाधार में स्थित रहते है। आप तीनों शक्तियां है। योगि गण आपका नित्य ध्यान करते हैं। आप ब्रह्मा है। आप विष्णु है। आप रुद्र है। आप इन्द्र है। आप अग्नि है। आप वायु है। आप सूर्य है। आप चन्द्रमा है। आप ब्रह्म है । आप भूर्भुवः स्वरोम् है। गणादि का उच्चारण सर्वप्रथम करते हैं। वर्णादि का उच्चारण उसके बाद करते हैं। उसके बाद अनुस्वार है। अर्ध चन्द्र से विलसित हैं। तार यानी ओं कार से रुद्ध हैं ऐसा

आपका स्वरूप है। गकार पूर्णरूप में है। अकार मध्यम रूप में है। अनुस्वार अन्त्य रूप में है। विन्दु उत्तर रूप में है। नाद सन्धान करता है। सबका सामूहिक स्वरूप सन्धि है। यहीं श्री गणेेश की विद्या है। गणक इसके ऋषि है। निचृद् गायत्री छन्द है। गणपति इसके देवता है। ओं गं गणपतये नमः। इसका मन्त्र है। एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्। यह श्री गणेश गायत्री है।

एक दांत वाले, चार हाथ वाले, पाश एवं अंकुश धारण करने वाले आप है। हाथों में रद और वरद लिये हुये मूषक पर विराजमान हैं। रक्त वर्ण, लम्बा उदर यानी पेट शूर्प जैसा कर्णक यानी कान है। आप रक्त वस्त्र धारण किये हुये हैं। रक्त गन्ध से आपके अंग अनुलिप्त हैं तथा रक्त पुष्पों से आप सुपूजित हैं। भक्तों के ऊपर अनुकम्पा करने वाले आप देवता हैं तथा जगत के कारण हैं अच्युत गणेश जी। सृष्टि हेतु आप आविर्भूत होते हैं , प्रकृति एवं पुरुष से परे है। इस प्रकार जो नित्य आपका ध्यान करता है वह योगियों में श्रेष्ठ है। हे व्रतों के स्वामी, हे गणों के स्वामी, हे प्रमथ के स्वामी आपको नमस्कार हो। लम्बोदर के लिये, एकदन्त के लिये, विघ्ननाशिन् के लिये, शिव सुता के लिये, श्री वरदमूर्त्ति के लिये नमस्कार है।

इस अथर्वशीर्ष का जो ध्यान करता है वह ब्रह्मभूय के लिये कल्पना करता है। उसको सर्व विघ्न बाधित नही करते हैं। वह सभी ओर से सुख प्राप्त करता है। वह पंचमहापापों से छूट जाता है। सायं ध्यान से दिवस कृत पाप नष्ट होता है। प्रातः ध्यान से रात्रि कृत पाप नष्ट होता है । सायं प्रातः प्रयोग करने वाला पाप रहित होता है। सर्वत्र ध्यान करने वाला अविघ्नवान होता है। धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष को प्राप्त करता है। इस अथर्वशीर्ष को अशिष्य को नही देना चाहिये। जो मोह से देता है वह पापी होता है। सहस्त्र आवर्तन से जो जो सोचता है उसे साध सकता है। इससे गणपति जी का जो अभिसिंचन करता है वह वाग्मी होता है। चतुर्थी को बिना भोजन किये जो इसको जपता है वह विद्यावान् होता है। यह अथर्वण वाक्य है। ब्रह्मादि आवरण को जानकर किसी से भय वह नही खाता है। जो दूर्वांकुरों से यजन करता है वह वैश्रवणोपम होता है । जो लाजों से यजन करता है वह यशोवान् होता है। वह मेधावान् होता है । जो मोदकसहस्र से यजन करता है वह वांच्छित फल को प्राप्त करता है। जो आज्य यानी धी सहित समिधाओं से यजन करता है वह सब कुछ प्राप्त करता है। सब कुछ प्राप्त करता है। आठ ब्राह्मणों से जो अर्चन कराता है वह सूर्यवर्चस्वी होता है। सूर्यग्रहण में महानदी में, प्रतिमा के सन्निधि में जो जपता है उसका मन्त्र सिद्ध होता है। महाविघ्नों से वह छूट जाता है। वह सर्वविद् हो जाता है। वह सर्वविद् हो जाता है। इस प्रकार जानना चाहिये।

इस प्रकार भगवान गणेश जी के प्रिय सूक्त श्रीगणपत्यथर्वशीर्षम् के विषय में आपने इस प्रकरण में विस्तार से जाना । आशा है इसके बारे में जानकारी हो गयी होगी। अब हम इसको आधार बनाकर कुछ प्रश्न बनाने जा रहे है जिससे आपका ज्ञान इस विषय में और प्रौढ़ हो जायेगा। इसमें गणपति अथर्वशीर्ष के शब्दों को दिया गया है जिसके आगे दिये गये रिक्त स्थान को दिये गये विकल्पों से प्रपूरित करना है। प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- ओं नमस्ते ....।

क-गणपतये, ख- तत्वमसि, ग- वच्मि, घ- चिन्मयः।

प्रश्न 2- त्वमेव प्रत्यक्षं................।

क-गणपतये, ख- तत्वमसि, ग- वच्मि, घ- चिन्मयः।

प्रश्न 3- ऋतं..........।

क-गणपतये, ख- तत्वमसि, ग- वच्मि, घ- चिन्मयः।

प्रश्न 4- त्वं वांग्मयस्त्वं ....।

क-गणपतये, ख- तत्वमसि, ग- वच्मि, घ- चिन्मयः।

प्रश्न 5- त्वं प्रत्यक्षं ....।

क-ब्रह्मासि, ख- त्वयि प्रत्येति, ग- लयमेष्यति, घ- ध्यायन्ति नित्यम्।

प्रश्न 6- सर्व जगदिदं ....।

क-ब्रह्मासि, ख- त्वयि प्रत्येति, ग- लयमेष्यति, घ- ध्यायन्ति नित्यम्।

प्रश्न 7- सर्वं जगदिदं त्वयि...........।

क-ब्रह्मासि, ख- त्वयि प्रत्येति, ग- लयमेष्यति, घ- ध्यायन्ति नित्यम्।

प्रश्न 8- त्वां योगिनो................।

क-ब्रह्मासि, ख- त्वयि प्रत्येति, ग- लयमेष्यति, घ- ध्यायन्ति नित्यम्।

प्रश्न 9- अनुस्वारः ....।

क-ब्रह्मासि, ख- परतरः, ग- लषितम्, घ- ध्यायन्ति नित्यम्।

प्रश्न 10- अर्धेन्दु..........................।

क-ब्रह्मासि, ख- त्वयि प्रत्येति, ग- लषितम्, घ- ध्यायन्ति नित्यम्।

1.4.2 संकटनाशनगणेशस्तोत्रम्-

संकटों को नष्ट करने हेतु श्री गणेश जी का यह स्तोत्र है। इस स्तोत्र का वर्णन नारद पुराण में किया गया है। इस स्तोत्र के विविध फल बताये गये हैं जो निम्नलिखित है-

प्रणम्य शिरसां देवं गौरीपुत्रं विनायकम् ।
भक्तावासंस्मरेन्नित्यं आयुष्कामार्थ सिद्धये ।।
प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम् ।
तृतीयं कृष्णपिंगाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् ।।
लम्बोदरं पंचमं च षष्ठं विकटमेव च ।
सप्तमं विघ्नराजं च धूम्रवर्णं तथाष्टमम् ।।

नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम् ।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम् ।।
द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः ।
न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं परम् ।।
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम् ।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान् मोक्षार्थी लभते गतिम् ।।
जपेत् गणपतिं स्तोत्रं षडिभर्मासैः फलं लभेत् ।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः ।।
अष्टानां ब्राह्मणानां च लिखित्वा यः समर्पयेत् ।
तस्य विद्या भवेत् सर्वा गणेशस्य प्रसादतः ।।
।। श्रीनारदपुराणे संकष्टनाशनं नाम गणेशस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

श्री संकट नाशन गणेश स्तोत्र का हिन्दी अनुवाद-

गौरी पुत्र श्री विनायक जी को शिर से प्रणाम करता हूँ। आपकी स्तुति का भक्तगण आयु की कामना की सिद्धि के लिये हमेशा स्मरण करते रहते है। श्री गणेश जी का पहला नाम वक्र तुण्ड है। श्री गणेश जी का दूसरा नाम एकदण्त है। श्री गणेश जी का तीसरा नाम कृष्णपिंगाक्ष है। श्री गणेश जी का चौथा नाम गजवक्त्र है। श्री गणेश जी का पॉचवॉ नाम लम्बोदर है। श्री गणेश जी का छठां नाम विकट है। श्री गणेश जी का सांतवां नाम विघ्नराज है। श्री गणेश जी का आंठवां नाम धूम्रवर्ण है। श्री गणेश जी का नौवां नाम भालचन्द्र है। श्री गणेश जी का दसवां नाम विनायक है। श्री गणेश जी का ग्यारहवां नाम गणपति है। श्री गणेश जी का बारहवां नाम गजानन है।

भगवान गणेश जी के इन बारह नामों को तीनों सन्ध्याओं में जो व्यक्ति पढ़ता है उसको किसी भी प्रकार के विध्नों का भय नही होता है। उसको सभी प्रकार की श्रेष्ठ सिद्धियां प्राप्त होती है। इस स्तोत्र को विद्यार्थी पढ़ते हैं तो विद्या की प्राप्ति होती है। धन को प्राप्त करने वाला कोई व्यक्ति इस स्तोत्र को पढ़ता है तो उसे धन की प्राप्ति होती है। पुत्र को प्राप्त करने वाला कोई व्यक्ति इस स्तोत्र को पढ़ता है तो उसे पुत्र की प्राप्ति होती है। मोक्ष को प्राप्त करने वाला कोई व्यक्ति इस स्तोत्र को पढ़ता है तो उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है। भगवान गणपति के इस स्तोत्र को पढ़ने से छः मास में फल प्राप्त होता है। एक वर्ष तक पाठ करने से सिद्धि की प्राप्ति होती है। इसमें कोई संशय नही है। आठ ब्राह्मणों को लिखकर जो गणपति स्तोत्र को समर्पित करता है उसको श्री गणेश जी के प्रसाद से सारी विद्यायें प्राप्त होती है।

इस प्रकार भगवान गणेश जी के प्रिय स्तोत्र श्रीसंकष्टनाशनगणेश स्तोत्र के विषय में आपने इस प्रकरण में विस्तार से जाना। आशा है इसके बारे में जानकारी हो गयी होगी। अब हम इसको आधार बनाकर कुछ प्रश्न बनाने जा रहे हैं जिससे आपका ज्ञान इस विषय में और प्रौढ़ हो जायेगा। इसमें

श्रीसंकष्टनाशनगणेश स्तोत्रम् के शब्दों को दिया गया है जिसके आगे दिये गये रिक्त स्थान को दिये गये विकल्पों से प्रपूरित करना है। प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न- उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- प्रणम्य शिरसा ....।
क- देवं, ख- विनायकम्, ग- वक्रतुण्डं च, घ- विकटमेव च।
प्रश्न 2- गौरीपुत्रं ....।
क- देवं, ख- विनायकम्, ग- वक्रतुण्डं च, घ- विकटमेव च।
प्रश्न 3- प्रथमं ....।
क- देवं, ख- विनायकम्, ग- वक्रतुण्डं च, घ- विकटमेव च।
प्रश्न 4- षष्ठं ....।
क- देवं, ख- विनायकम्, ग- वक्रतुण्डं च, घ- विकटमेव च।
प्रश्न 5- सप्तमं ....।
क- विघ्नराजं, ख- भालचन्द्रं, ग- विनायकम्, घ- गजाननम्।
प्रश्न 6- नवमं ....।
क- विघ्नराजं, ख- भालचन्द्रं, ग- विनायकम्, घ- गजाननम्।
प्रश्न 7- दशमं तु ....।
क- विघ्नराजं, ख- भालचन्द्रं, ग- विनायकम्, घ- गजाननम्।
प्रश्न 8- द्वादशं तु ....।
क- विघ्नराजं, ख- भालचन्द्रं, ग- विनायकम्, घ- गजाननम्।
प्रश्न 9- विद्यार्थी लभते ....।
क- विघ्नराजं, ख- विद्या, ग- विनायकम्, घ- गजाननम्।
प्रश्न 10- धनार्थी लभते ....।
क- विघ्नराजं, ख- धनमं, ग- विनायकम्, घ- गजाननम्।

1.4.3 श्री गणेश जी की आरती

आरती के बिना पूजन नही हो सकता। प्रत्येक देवता के पूजन में आरती का विशेष महत्व है । श्री गणेश जी की आरती अधोलिखित प्रकार से दी जा रही है।

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा ।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा ।।

लड्डुवन के भोग लगे सन्त करे सेवा ।
जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा ।।

एकदन्त दयावन्त चारभुजाधारी।
मस्तक पर सिन्दूर सोहे मूसे की सवारी।

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा॥

अन्धन को आंख देत कोढ़िन के काया।
बांझन को पुत्र देत निर्धन को माया॥

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा॥

पान चढ़े फूल चढ़े और चढ़े मेवा।
सूरश्याम शरण में आयें सुफल कीजै सेवा॥

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा॥

इस प्रकार भगवान गणेश जी की प्रिय आरती के विषय में आपने इस प्रकरण में विस्तार से जाना। आशा है इसके बारे में जानकारी हो गयी होगी। अब हम इसको आधार बनाकर कुछ प्रश्न बनाने जा रहे हैं जिससे आपका ज्ञान इस विषय में और प्रौढ़ हो जायेगा। इसमें आरती के शब्दों को दिया गया है जिसके आगे दिये गये रिक्त स्थान को दिये गये विकल्पों से प्रपूरित करना है। प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- माता जाकी...........।
क- पार्वती, ख- महादेवा, ग- भोग लगे, घ- सेवा।

प्रश्न 2- पिता...........।
क- पार्वती, ख- महादेवा, ग- भोग लगे, घ- सेवा।

प्रश्न 3- लड्डुवन के ....।
क- पार्वती, ख- महादेवा, ग- भोग लगे, घ- सेवा।

प्रश्न 4- सन्त करे ....।
क- पार्वती, ख- महादेवा, ग- भोग लगे, घ- सेवा।

प्रश्न 5- एकदन्त...........।
क- दयावन्त, ख- सिन्दूर सोहे, ग- सवारी, घ- आंख देत।

प्रश्न 6- मस्तक पर...........।
क- दयावन्त, ख- सिन्दूर सोहे, ग- सवारी, घ- आंख देत।

प्रश्न 7- मूसे की..........।

क- दयावन्त, ख- सिन्दूर सोहे, ग- सवारी, घ- आंख देत।

प्रश्न 8- अन्धन को ....।

क- दयावन्त, ख- सिन्दूर सोहे, ग- सवारी, घ- आंख देत।

प्रश्न 9- बांझन को ....।

क- पुत्र देत, ख- सिन्दूर सोहे, ग- सवारी, घ- आंख देत।

प्रश्न 10- निर्धन को ....।

क- दयावन्त, ख- सिन्दूर सोहे, ग-माया, घ- आंख देत।

1.5 सारांश-

इस इकाई में श्री गणेश जी की आरती एवं स्तुति विचार संबंधी प्रविधियों का अध्ययन आपने किया । कर्मकाण्ड के पक्ष में श्राद्धादि विषय को छोड़कर अन्यत्र सर्वत्र सर्वप्रथम गणेश जी की वन्दना या पूजा से ही कार्य का आरम्भ किया जाता है।यह प्रकल्प कार्य के निर्विघ्न समाप्त्यर्थ सम्पन्न किये जाते है। अतः श्री गणेश जी क्या हैं तथा कैसे उनकी आरती पूजा की जाती है इसका ज्ञान किसी पूजक को आवश्यक है। श्री गणेश जी की आरती एवं स्तुति विचार के अभाव में किसी व्रत, किसी मुहूर्त्त, किसी उत्सव एवं किसी पर्व का सम्पादन किसी भी व्यक्ति द्वारा ठीक ढंग से नही हो सकता है। क्योकि कोई भी व्रत करते हैं तो उसके निर्विघ्न पूर्णता के लिये हमें सबसे पहले श्री गणेश जी की वन्दना करनी होती है।

भगवान गणेश की आराधना सम्यक् प्रकार से तभी सम्भव है जब आप उनके स्वरूप के बारे में जाने, उनके तात्विक विवेचन के बारे में जाने। स्वरूप का विचार करते हुये कहा गया है कि भगवान गणेश का मुख मण्डल हाथी का एवं शरीर आकृति मानव की है। हाथी का मस्तक वृहद् विचार का द्योत है। हाथी के आंख की अत्यन्त विशेषता बतलायी गयी है । कहा गया है कि हाथी में कनीनिका विपरीत तरीके से लगने के कारण सामने की छोटी वस्तु को भी बड़ा देखता है। जिस प्रकार समतल दर्पण को छोड़कर अन्य दर्पण के प्रयोग से प्रतिबिम्ब बड़ा या छोटा दिखता है उसी प्रकार हाथी को किसी वस्तु का प्रतिबिम्ब बड़ा ही दिखता है। यह उन लोगों के लिये सबसे बड़ा सन्देश है जो धनादि के अभिमान वश लघुकाय प्रणियों को कीटप्राय समझकर पैर के तले रगड़ देते है। इससे यह शिक्षा मिलती है कि अपने से बड़ा समझकर सबका सम्मान करना चाहिये। नाक प्रतिष्ठा का द्योतक होता है। जिसकी नाक बड़ी हो यानी प्रतिष्ठा बड़ी हो उसको अपना सम्मान बचाने के बारे में सोचना चाहिये। प्रतिष्ठा संरक्षण व्यक्ति का कर्त्तव्य होना चाहिये। हाथी का कान यह संकेत करता है कि किसी भी व्यक्ति की कोई बात केवल सुनकर ही प्रतिक्रिया में नही लग जाना चाहिये अपितु उसको

हाथी के कान की तरह इधर- उधर चलाकर वास्तविकता की खोज करना चाहिये। जब तक वास्तविक बातों का पता न चल जाय तब तक प्रतिकार उचित नही है। हाथी की जिह्वा दन्तमूल से कण्ठ की ओर जाती है जिसके कारण कोई भी बात कहने के प्रयास करने पर उसका अच्छी तरह मनन करना चाहिये। मनन करने बाद यदि उचित हो तो बोलना चाहिये ।

भगवान गणेश को प्रसन्न करने के लिये विभिन्न प्रकार के स्तोत्रों एवं सूक्तों का वर्णन किया गया है। इन सूक्तों में सबसे महत्वपूर्ण सूक्त है श्रीगणपति अथर्वशीर्षम्। यह सूक्त इस प्रकरण के अन्तर्गत दिया गया है। इसके फल का वर्णन करते हुये कहा गया है कि इससे यानी गणपत्यथर्वशीर्षम् से गणपति जी का जो अभिषिंचन करता है वह वाग्मी होता है। चतुर्थी को बिना भोजन किये जो इसको जपता है वह विद्यावान् होता है। यह अथर्वण वाक्य है। ब्रह्मादि आवरण को जानकर किसी से भय वह नही खाता है। जो दूर्वांकुरों से यजन करता है वह वैश्रवणोपम होता है । जो लाजों से यजन करता है वह यशोवान् होता है। वह मेधावान् होता है । जो मोदकसहस्र से यजन करता है वह वांच्छित फल को प्राप्त करता है। जो आज्य यानी घी सहित समिधाओं से यजन करता है वह सब कुछ प्राप्त करता है। आठ ब्राह्मणों से जो अर्चन कराता है वह सूर्यवर्चस्वी होता है। सूर्यग्रहण में महानदी में, प्रतिमा के सन्निधि में जो जपता है उसका मन्त्र सिद्ध होता है। महाविघ्नों से वह छूट जाता है। वह सर्वविद् हो जाता है। वह सर्वविद् हो जाता है।

स्तुति में श्री संकष्टनाशन गणेश स्तोत्र का पाठ दिया गया है। इसका तीनों सन्ध्याओं में जो व्यक्ति पाठ करता है उसको किसी भी प्रकार के विघ्नों का भय नही होता है। उसको सभी प्रकार की श्रेष्ठ सिद्धियां प्राप्त होती है। इस स्तोत्र को विद्यार्थी पढ़ते हैं तो विद्या की प्राप्ति होती है। धन को प्राप्त करने वाला कोई व्यक्ति इस स्तोत्र को पढ़ता है तो उसे धन की प्राप्ति होती है। पुत्र को प्राप्त करने वाला कोई व्यक्ति इस स्तोत्र को पढ़ता है तो उसे पुत्र की प्राप्ति होती है। मोक्ष को प्राप्त करने वाला कोई व्यक्ति इस स्तोत्र को पढ़ता है तो उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है। भगवान गणपति के इस स्तोत्र को पढ़ने से छः मास में फल प्राप्त होता है। एक वर्ष तक पाठ करने से सिद्धि की प्राप्ति होती है। इसमें कोई संशय नही है।

1.6 पारिभाषिक शब्दावलियां-

एकदन्त- एक दांत वाले, दयावन्त- दया से समन्वित, चारभुजाधारी- चार भुजाओं को धारण करने वाले, मस्तक- माथा या ललाट, मूसे- चूहा, सवारी- वाहन, अन्धन- नेत्र ज्योति विहीन, कोढ़िन- कुष्ठ रोग से ग्रस्त रोगी, काया- शरीर, बांझन- सन्तानोत्पादन में असमर्थ स्त्री, निर्धन- धनहीन, माया- मुद्रा इत्यादि, पान- ताम्बूल, चढ़े- चढ़ना, मेवा- पंचमेवा, सुफल- सुस्वादु फल, प्रणम्य- प्रणाम करके, शिरसा- शिर से, गौरीपुत्रं - पार्वती जी के पुत्र, विनायक- विघ्नों के नायक, संस्मरेत्- सम्यक् प्रकार से स्मरण करना, नित्यं- प्रतिदिन, आयुष्कामार्थ - आयु की कामना के लिये, सिद्धये- सिद्धि के लिये,

गजवक्त्रं - हाथी का मुख , लम्बोदरं - लम्बा उदर हो जिसका, विघ्नराजं - विघ्नों के राजा, धूम्रवर्णं- धूम्र का वर्ण वाला, भालचन्द्रं - मस्तक पर चन्द्रमा हो जिसके, गणपतिं- गणों के स्वामी, गजाननम्- गज यानी हाथी के आनन यानी मुख वाला, द्वादशैतानि- ये बारह, नामानि- नाम, त्रिसन्ध्यं- तीनों सन्ध्याओं यानी प्रातः सन्ध्या में रात्रि एवं दिन की सन्धि, मध्यान्ह सन्ध्या में पूर्वान्ह एवं अपरान्ह की सन्धि, सायान्ह- दिन एवं रात्रि की सन्धि, यः- जो, विघ्नभयं - विघ्नों का भय, तस्य- उसको, सर्वसिद्धिकरं- सभी प्रकार की सिद्धियां करने वाला, परम्- उत्तम, विद्यार्थी - विद्या चाहने वाला, लभते- प्राप्त करता है, विद्यां- विद्या को, धनार्थी- धन चाहने वाला, धनम्- धन को, पुत्रार्थी- पुत्र चाहने वाला, पुत्रान्- पुत्रों को, मोक्षार्थी- मोक्ष चाहने वाला, गतिम्- गति को, षडिभर्मासैः - छ मासों से, संवत्सरेण - एक वर्ष, प्रसादतः- कृपा से, संकष्टनाशनं- कष्ट को नष्ट करने वाला, सम्पूर्णम्- पूरा हुआ, अव- रक्षा, माम्- मेरी, वक्तारम्- वकतृत्व शक्ति की, श्रोतारम्- श्रोतृत्व शक्ति की, दातारम्- दातृत्व शक्ति की, धातारम्- धातृत्व शक्ति की, अनूचान- ऋचाओं की, पश्चात्- पश्चिम से, पुरस्तात्- पूर्व से, उत्तरात्तात्- उत्तर से, दक्षिणात्तात्- दक्षिण से, उर्ध्वात्तात्- ऊपर से, अधरात्तात्- नीचे से, सर्वतो- चारो ओर से, मां- मेरी, पाहि- रक्षा करो, समन्तात्- सामने से, चिन्मयः- प्रकाशमय, आनन्दमय- आनन्द से विभूषित, ब्रह्ममयं- ब्रह्म से विभूषित, सच्चिदानन्द- सत्, चित्, आनन्द, अद्वितीयोसि- अद्वितीय हैं, ब्रह्मासि- ब्रह्मा हैं, ज्ञानमयो- ज्ञान से विभूषित, विज्ञानमयोसि- विज्ञान से विभूषित, जायते- उत्पन्न होता है, त्वत्तस्तिष्ठति- आप में तिष्ठित है, त्वयि लयमेष्यति- तुम्हारे में लय होता है, त्वयि प्रत्येति - आपकी ओर जाता है, भूमि- पृथ्वी, आप- जल, अनल- अग्नि, अनिल- वायु, नभः- आकाश, गुणत्रयातीतः-तीनों गुणों से परे, त्वमवस्थात्रयातीतः- तीनों अवस्थाओं से परे, देहत्रयातीतः- तीनो शरीरों से परे, कालत्रयातीतः- तीनों कालों से परे, मूलाधारस्थितोसि- मूलाधार में स्थित, नित्यम्- हमेशा, शक्तित्रयात्मकः- तीनों शक्तियों वाला, योगिनो- योगिगण, ध्यायन्ति- ध्यान करते हैं, त्वं ब्रह्मा- आप ब्रह्मा है, त्वं विष्णुस्- आप विष्णु है, त्वंरुद्रस्- आप रुद्र है, त्वमिन्द्रस्- आप इन्द्र हैं, त्वमग्निस्- आप अग्नि है, त्वं वायुस्- आप वायु है, त्वं सूर्यस्- आप सूर्य है, त्वं चन्द्रमास्- आप चन्द्रमा है, चतुर्हस्तं- चार भुजाओं वाले, पाश- फन्दा, अंकुश- अंकुश, धारणम्-धारण करने वाले, वरदं- वर देने वाले, रक्तं - लाल, शूर्पकर्णकं- शूप जैसा कान वाला, रक्तवाससम्- लाल वस्त्र धारण करने वाला, रक्तगन्धानुलिप्तांगं- लाल रंग के गन्धों से अनुलिप्त अंग वाला, रक्तपुष्पैः- लाल पुष्पों से, सुपूजितम्- पूजा किया जाने वाला, वरः- श्रेष्ठ, विघ्ननाशिने- विघ्न नाश के लिये, शिवसुताय- शिव जी के पुत्र के लिये, वरदमूर्त्तये- वरद की मूर्ति वाले देवता के लिये, नमः- नमस्कार हो, बाध्यते- बाधित करता है, स- वह, सर्वतः- चारो ओर से, सुखमेधते- सुख की वृद्धि होती है,

पंचमहापापात्- पंच महापापों से, प्रमुच्यते- छूट जाता है, सायमधीयानो- सायं को ध्यान करने वाला, दिवसकृतं- दिन के किये गये पाप, नाश्यति- नाश करता है, प्रातरधीयानो- प्रातः ध्यान करने वाला के, रात्रिकृतं- रात्रि में किये गये , पापं - पाप, अनश्नन् - बिना भोजन किये, लाजा- खीलें, मेधावान् - बुद्धि वाला, भवति- होता है, यो- जो, मोदकसहस्रेण- एक हजार लड्डु, यजति- यजन करता है, वांच्छितफलमवाप्नोति- इच्छानुसार फल प्राप्त करता है, साज्य- घी सहित, समिद्धिर्यजति- समिधाओं से यजन करता है, सर्वं - सब कुछ, लभते- प्राप्त करता है।

1.7अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

पूर्व में दिये गये सभी अभ्यास प्रश्नों के उत्तर यहां दिये जा रहे हैं। आप अपने से उन प्रश्नों को हल कर लिये होगें। अब आप इन उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कर लीजिये। यदि गलत हो तो उसको सही करके पुनः तैयार कर लीजिये। इससे आप इस प्रकार के समस्त प्रश्नों का उत्तर सही तरीके से दे पायेगें।

1.3.1 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, 2-ख, 3-ग, 4-घ, 5-क, 6-ख, 7-ख, 8-ग, 9-ग, 10-ग।

1.3.2 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, 2-ख, 3-ग, 4-घ, 5-क, 6-ख, 7-क, 8-क, 9-क, 10-घ।

1.4.1 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, 2-ख, 3-ग, 4-घ, 5-क, 6-ख, 7-ग, 8-घ, 9-ख, 10-ग।

1.4.2 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, 2-ख, 3-ग, 4-घ, 5-क, 6-ख, 7-ग, 8-घ, 9-ख, 10-ख।

1.4.3 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, 2-ख, 3-ग, 4-घ, 5-क, 6-ख, 7-ग, 8-घ, 9-क, 10-घ।

1.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1-आरती संग्रह।

2-क्यों-भाग-1

3-क्यों- भाग-2।

4-शब्दकल्पद्रुमः।

5-आह्निक सूत्रावलिः।

6-उत्सर्ग मयूख।

7-पूजन- विधान।

8- संस्कार एवं शान्ति का रहस्य।

1.9- सहायक उपयोगी पाठ्य सामग्री-

1- दैनिक आरती स्तुति एवं स्तोत्र।

2- स्तोत्ररत्नावलिः।

3- श्रीगणपत्यथर्वशीर्षम् ।

1.10 निबंधात्मक प्रश्न-

1- श्री गणेश जी का परिचय बतलाइये ।

2- श्री गणेश जी का स्वरूप बतलाइये ।

3- श्री गणेश जी के स्वरूप का तात्विक विवेचन कीजिये ।

4- गणपत्यथर्वशीर्षम् नामक सूक्त लिखिये ।

5- गणपत्यथर्वशीर्षम् का हिन्दी अनुवाद दीजिये ।

6- संकष्टनाशन गणेश स्तोत्र लिखिये ।

7- संकटनाशन श्री गणेश स्तोत्र का महत्त्व लिखिये ।

8- गणपत्यथर्वशीर्ष का महत्त्व लिखिये ।

9- संकटनाशन श्री गणेश स्तोत्र का हिन्दी अनुवाद लिखिये ।

10- श्री गणेश भगवान की आरती का वर्णन कीजिये ।

इकाई 2 - श्री दुर्गा जी की आरती एवं स्तुति

इकाई की संरचना

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 श्री दुर्गा जी का स्वरूप विचार एवं माहात्म्य

2.3.1 श्री दुर्गा जी का स्वरूप विचार

2.3.2 दुर्गा जी का माहात्म्य

2.4 श्री दुर्गा जी की स्तुति एवं आरती

2.4.1 श्री दुर्गा जी की स्तुति हेतु भगवती स्तोत्रम्

2.4.2 श्री दुर्गा जी की आरती

2.4.3 श्री दुर्गा जी की द्वितीय आरती

2.4.4 श्री दुर्गा जी की अन्य आरती

2.5 सारांश

2.6 पारिभाषिक शब्दावली

2.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

2.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

2.9 सहायक उपयोगी पाठ्यसामग्री

2.10 निबन्धात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

इस इकाई में श्री दुर्गा जी की आरती एवं स्तुति विचार संबंधी प्रविधियों का अध्ययन आप करने जा रहे हैं। इससे पूर्व की प्रविधियों का अध्ययन आपने कर लिया होगा। कर्मकाण्ड के पक्ष आदि शक्ति के रूप में पराम्बा भगवती जगत जननि जगदम्बिका को जाना गया है। श्राद्धादि विषय को छोड़कर अन्यत्र सर्वत्र दुर्गा जी की वन्दना या पूजन किया जाता है। यह प्रकल्प शक्ति प्राप्ति हेतु एवं विधि मनोकामनाओं की प्रपूर्ति हेतु किया जाता है । अतः श्री दुर्गा जी क्या हैं ? तथा कैसे उनकी आरती पूजा की जाती है ? इसका ज्ञान आपको इस इकाई के अध्ययन से हो जायेगा ।

श्री दुर्गा जी की आरती एवं स्तुति विचार के अभाव में किसी नवरात्रादि के अवसर पर व्रतादि या पूजनादि का सम्पादन किसी भी व्यक्ति द्वारा ठीक ढंग से नही हो सकता है। क्योकि इसमें दुर्गा माता की ही उपासना की जाती है। जब असुरों का अत्याचार इतना बढ़ गया था जिसमें सामान्य जन का जीना दुभर हो गया था तब समस्त देवमण्डल में यह विचार किया जाने लगा कि किस प्रकार से इन दैत्यों से मुक्त हुआ जा सकता है। उस समय ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश को छोड़कर अन्य कोई शक्ति ऐसी नही थी जिससे दैत्य पराजित हो सके। ये तीनों महाशक्तियों का दैत्यों के साथ युद्ध में आना उचित नही था इसलिये विकल्प पर विचार किया जाने लगा। समस्त देवगणों ने ध्यान से अपनी - अपनी शक्तियों का थोड़ा अंश निकालकर एक जगह एकत्रित करने का प्रयास किया। वह प्रयास सफल हुआ तथा उस एकत्रित शक्तियों से महादेवी का प्राकट्य हुआ जिसे दुर्गा देवि के रूप में जाना जाता है। दुर्गा जी की सवारी का नाम सिंह है। इस प्रकार माता दुर्गा की उपासना उपासक गण विविध रीति से करके अपने मनोकामनाओं को पूरा करते हैं।

इस इकाई के अध्ययन से आप श्री दुर्गा जी की आरती एवं स्तुति इत्यादि के विचार करने की विधि का सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर सकेगें। इससे श्री दुर्गा जी की आरती एवं स्तुति आदि विषय के अज्ञान संबंधी दोषों का निवारण हो सकेगा जिससे सामान्य जन भी अपने कार्य क्षमता का भरपूर उपयोग कर समाज एवं राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकेगें। आपके तत्संबंधी ज्ञान के कारण ऋषियों एवं महर्षियों का यह ज्ञान संरक्षित एवं सवंर्धित हो सकेगा। इसके अलावा आप अन्य योगदान दें सकेगें, जैसे - कल्पसूत्रीय विधि के अनुपालन का सार्थक प्रयास करना, भारत वर्ष के गौरव की अभिवृद्धि में सहायक होना, सामाजिक सहभागिता का विकास, इस विषय को वर्तमान समस्याओं के समाधान हेतु उपयोगी बनाना आदि।

2.2 उद्देश्य-

अब श्री दुर्गा जी की आरती एवं स्तुति विचार की आवश्यकता को आप समझ रहे होगें। इसका उद्देश्य भी इस प्रकार आप जान सकते हैं -

- ❖ कर्मकाण्ड को लोकोपकारक बनाना ।

- ❖ श्री दुर्गा जी की आरती एवं स्तुति सम्पादनार्थ शास्त्रीय विधि का प्रतिपादन।
- ❖ कर्मकाण्ड में व्याप्त अन्धविश्वास एवं भ्रान्तियों को दूर करना।
- ❖ प्राच्य विद्या की रक्षा करना।
- ❖ लोगों के कार्यक्षमता का विकास करना।
- ❖ समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करना।

2.3. श्री दुर्गा जी का स्वरूप विचार एवं माहात्म्य -

इसमें श्री दुर्गा जी का स्वरूप विचार एवं माहात्म्य का ज्ञान आपको कराया जायेगा क्योंकि बिना इसके परिचय के श्री दुर्गा जी का आधारभूत ज्ञान नही हो सकेगा। आधारभूत ज्ञान हो जाने पर श्रद्धा एवं समर्पण की भावना का उद्भव होता है। भावो हि विद्ते देवः के अनुसार भावना होने पर देवत्व को प्राप्त किया जा सकता है। इसलिये श्री दुर्गा जी का स्वरूप विचार एवं महत्त्व इस प्रकार है-

2.3.1 श्री दुर्गा जी का स्वरूप विचार-

माता दुर्गा का ध्यान हम विविध रूपों में करते हैं। देवि पुराण में अनेकों श्लोकों में मातेश्वरी के विविध स्वरूपों को दर्शाया गया है। भगवती दुर्गा की उपासना में एक ग्रन्थ अत्यन्त प्रचलित है जिसे दुर्गा सप्तशती के रूप में जाना जाता है। इसमें दुर्गा जी की उपासना के लिये तेरह अध्यायों में सात सौ श्लोकों को दिया गया है। इसी में से प्रथम अध्याय का यह श्लोक ध्यान हेतु प्रदत्त है जिसका वर्णन इस प्रकार है-

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघांछूलं भुशुण्डीं शिरः।
शंखंसंन्दधतिं करैस्त्रिनयनयनां सर्वांगभूषावृताम्॥
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां।
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥

इसकी व्याख्या करते हुये बतलाया गया है कि माता दुर्गा के दश हाथ हैं। उन दशों हाथों में माता अस्त्र धारण की हुयी है जिनके नाम खड्ग यानी तलवार, चक्र, गदा, बाण, धनुष, परिघ, शूल, भुशुण्डि, मस्तक और शंख हैं। माता दुर्गा के तीन नेत्र है। माता दुर्गा के समस्त अंग आभूषणों से सुशोभित है। इनके शरीर की कान्ति नील मणि के समान है। दुर्गा जी दस मुख और दस पैरों से युक्त है। माता दुर्गा के स्वरूपों पर विचार करते हुये सप्तशती के तीसरे अध्याय में कहा गया है कि-

उद्यद्भानुसहस्रकान्तिमरुणक्षौमां शिरो मालिकां।
रक्तालिप्तपयोधरां जपवटीं विद्यामभीतिं वरम्॥
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद्वक्त्रारविन्दश्रियं।
देवीं बद्धहिमांशुरत्नमुकूटां वन्दे अरविन्दस्थिताम्॥

अर्थात् जगदम्बा के श्री अंगों की कान्ति उदयकाल के सहस्रों सूर्यों के समान है। माताजी लाल रंग

की रेशमी साड़ी पहनी हुयी है। दुर्गा जी के गले में मुण्डमाला शोभा पा रही है। अपने कर कमलों में जपमालिका, विद्या और अभय तथा वर नामक मुद्रायें धारण की हुई है। तीन नेत्रों से सुशोभित मुखारविन्दों की अत्यन्त उत्कृष्ट शोभा हो रही है। माताजी के मस्तक पर चन्द्रमा के साथ ही रत्नमय मुकुट बधा हुआ है। माताजी कमल के आसन पर विराजमान है। ऐसी देवि दुर्गा को मै प्रणाम करता हूॅं।

सिद्धि की इच्छा रखने वाले पुरुष जिनकी सेवा करते हैं, उनका जया नाम दुर्गा के रूप में ही जाना जाता है। माता दुर्गा का एक स्वरूप पद्मावती देवि का है जो सर्वेश्वर भैरव के अंक में निवास करती हैं। यह देवी नागराज के आसन पर विराजमान है। नागों के फणों में पायी जाने वाली मणियों की माला से माता दुर्गा का शरीर सुशोभित हो रहा है।

इस प्रकार विविध शब्दों से माता दुर्गा के स्वरूपों का वर्णन किया गया है परन्तु एक कवि ने तो कह दिया मातेश्वरी मैं आपकी वन्दना हेतु ऐसा कोई शब्द नही है जिसे नही पाता हूॅं। उन्होने कहा हे जगदम्बिके संसार में कौन ऐसा वांग्मय है जिसमें तुम्हारी स्तुति नही है। क्योकि तुम्हारा शरीर तो शब्दमय है। संकल्पविकल्पात्मक रूप से उदित होने वाली एवं संसार में दृश्यरूप से सामने आने वाली सम्पूर्ण आकृतियों में आपके स्वरूप का दर्शन होने लगा है। हे समस्त अमंगलध्वंसकारिणी कल्याण स्वरूपे शिवे इस बात को सोचकर अब बिना किसी प्रयत्न के ही सम्पूर्ण चराचर जगत् में मेरी यह स्थिति हो गयी है कि मेरे समय का क्षूद्रतम अंश भी तुम्हारी स्तुति, जप, पूजा अथवा ध्यान से रहित नही है। अर्थात् मेरे सम्पूर्ण जागतिक आचार व्यवहार तुम्हारे ही भिन्न- भिन्न रूपों के प्रति यथोचित रूप से व्यवहृत होने के कारण तुम्हारी पूजा के रूप में परिणत हो गये है। संबंधित श्लोक इस प्रकार है-

तव च का किलन स्तुतिरम्बिके।
सकलशब्दमयी किल ते तनुः ।
निखिलमूर्तिषु मे भवदन्वयो।
मनसि जासु बहिः प्रसरासु च ।
इति विचिन्त्य शिवे शमिता शिवे ।
जगति जातमयत्नवशादिदम् ।
स्तुतिजपार्चनचिन्तनवर्जिता ।
न खलु काचन काल कलास्ति मे ।

इस प्रकार भगवती दुर्गा जी के स्वरूप के विषय में आपने इस प्रकरण में विस्तार से जाना । आशा है इसके बारे में जानकारी हो गयी होगी। अब हम इसको आधार बनाकर कुछ प्रश्न बनाने जा रहे हैं जिससे आपका ज्ञान इस विषय में और प्रौढ़ हो जायेगा। इसमें प्रश्नों या संबंधित शब्दों को दिया गया है जिसके आगे दिये गये रिक्त स्थान को दिये गये विकल्पों से प्रपूरित करना है। प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है -

प्रश्न 1- माता दुर्गा जी को ....नेत्र है।

क- तीन, ख- चार, ग- पांच, घ-छः।

प्रश्न 2- माता दुर्गा जी का आसन ....का है।

क- विल्व पत्र का, ख- कमल का, ग- कुशे का, घ- कम्बल का।

प्रश्न 3- माता दुर्गा जी का ....वाहन है।

क- मूसे का, ख- मयूर का, ग- सिंह का, घ- बत्तक का।

प्रश्न 4- माता दुर्गा जी के शरीर की कान्ति ....मणि जैसी है।

क- कृष्ण मणि, ख- रक्तमणि, ग- पीतमणि, घ- नीलमणि।

प्रश्न 5- माता दुर्गा जी के ....हाथ हैं।

क- दस, ख- बारह, ग- पांच, घ-छः।

प्रश्न 6- माता दुर्गा जी के सप्तशती में ....अध्याय हैं।

क- तीन, ख- तेरह, ग- पांच, घ-छः।

प्रश्न 7- माता दुर्गा जी के सप्तशती में ....श्लोक हैं।

क- तीन सौ, ख- चार सौ, ग- सात सौ, घ- एक सौ।

प्रश्न 8- माता दुर्गा जी के ....पैर हैं।

क- तीन, ख- चार, ग- पांच, घ-दस।

प्रश्न 9- माता दुर्गा जी के ....मुख हैं।

क- तीन, ख- चार, ग- दस, घ-छः।

प्रश्न 10 - माता दुर्गा जी के गले में ....मुण्डमाला है।

क- तीन, ख- चार, ग- पांच, घ-एक।

2.3.2 दुर्गा जी का माहात्म्य-

कलौ चण्डी विनायकौ के अनुसार कलियुग में चण्डी एवं विनायक दो ही साक्षात् देवता बतलाये गये हैं। कलियुग के समस्त प्राणी अपनी मनोकामना को पूर्ण करने के लिये देवी दुर्गा की उपासना करते हैं। शक्ति अर्जन की प्रमुख स्रोत मातेश्वरी दुर्गा हैं। दुर्गा जी के माहात्म्य का वर्णन करते हुये शंकराचार्य जी आनन्द लहरी में इस प्रकार लिखते है-

भवानि स्तोतुं त्वां प्रभवति चतुर्भिर्न वदनैः ।
प्ररजानामीशानस्त्रिपुरमथनः पंचभिरपि ।।
न षड्भिः सेनानीर्दशशतमुखैरप्यहिपति-
स्तदान्येषां केषां कथय कथमस्मिन्नवसरः ।।

अर्थात् हे भवानी प्रजापति ब्रह्मा जी अपने चारो मुखों से भी तुम्हारी स्तुति करने में समर्थ नही है। त्रिपुर विनाशक भगवान शंकर पांचों मुखों से तुम्हारा स्तवन नही कर सकते, कार्तिकेय जी तो छः मुख रहते हुये भी आपकी स्तुति करने में असमर्थ है। इन गणना में आनेवालों की बात तो छोड़ो , नागराज शेष हजारों मुखों से भी तुम्हारा गुणगान नही कर पाते है। जब इनकी यह दशा है तो किसी को और किस प्रकार स्तुति का अवसर प्राप्त हो सकता है।

घृतक्षीरद्राक्षामधुमधुरिमा कैरपि पदै,
विंशिष्यानाख्येयो भवति रसना मात्रविषयः।।
तथा ते सौन्दर्यं परमशिवदृंग्मात्रविषयः,
कथंकारं ब्रूमः सकलनिगमागोचरगुणगणैः ।।

अर्थात् घी, दूध, दाख और मधु की मधुरता को किसी भी शब्द से विशेष रूप से नही बताया जा सकता। उसे तो केवल रसना यानी जिह्वा ही जानती है। उसी प्रकार तुम्हारा सौन्दर्य केवल महादेव जी के नेत्रों का विषय है उसे हम कैसे बता सकते है।

मुखे ते ताम्बूलं नयनयुगले कज्जलकला,
ललाटे काश्मीरं विलसति गले मौक्तिकलता ।
स्फुरत्कांची शाटी पृथुकटितटे हाटकमयी,
भजामि त्वां गौरीं नगपतिकिशोरीमविरतम् ।।

अर्थात् हे महादेवी दुर्गा तुम्हारे मुख में पान है। नयनों में कज्जल की पतली रेखा है। ललाट में केशर की बिंदी है। गले में मोती का हार सुशोभित हो रहा है। कटि तट में सुनहली साड़ी है, जिसपर रत्नमयी मेखला चमक रही है। ऐसी वेषभूषा से सजी हुयी गिरिराज हिमालय की गौरवर्णीया कन्या आपको मैं सदा भजता हूँ।

विराजन्मन्दारद्रुमकुसुमहारस्तनतटी,

नदद्वीणानादश्रवणविलसत्कुण्डलगुणा ।
नतांगी मातंगीरुचिरगतिभंगी भगवती,
सती शम्भो रम्भोरुहचटुलचक्षुविजयते ।।

अर्थात् जहां पारिजात पुष्प की माला सुशोभित हो रही है, उन उरोंजों के समीप बजती हुयी बीड़ा का मधुर नाद श्रवण करते हुये जिनके कानों में कुण्डल शोभा पा रहे है। जिनका अंग झुका हुआ है, हथिनी की भाति मन्द मनोहर चाल है। जिनके नेत्र कमल के समान सुन्दर और चंचल है, वे शम्भू की सती भार्या भगवती उमा सर्वत्र विजयिनी हो रही है।

इस प्रकार के अनेकों श्लोकों से शंकराचार्य जी ने भगवती दुर्गा की वन्दना की है। महादैत्यपति शुम्भ के मारे जाने पर इन्द्र देवता अग्नि को आगे करके उन कात्यायनी देवि की स्तुति करने लगे। उस समय अभीष्ट की प्राप्ति होने से उनके मुख कमल दमक उठे थे और उनके प्रकाश से दिशायंे भी जगमगा उठी थी। देवताओं ने कहा-

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद,
प्रसीदमातर्जगतोखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं,
त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य।।
आधारभूता जगतस्त्वमेका,
महीस्वरूपेण यतः स्थितासि।
अपां स्वरूपस्थितया त्वयैतद्-
आप्यायते कृत्स्नमलंघ्यवीर्ये।।
त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या,
विश्वस्य बींज परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्,
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्ति हेतुः।

अर्थात् हे देवि आप शरणागत की पीड़ा दूर करने वाली हैं। सम्पूर्ण जगत् की आप माता है। विश्व की ईश्वरी है। आप चराचर जगत् की अधिष्ठात्री देवि है। आप इस जगत् की आधारभूता है क्योकि पृथ्वी रूप में आपकी स्थिति है। आपका पराक्रम अलंधनीय है। आप बल सम्पन्न वैष्णवी शक्ति है। इस विश्व की कारणभूता परा माया है। आप ने इस समस्त जगत् को मोहित कर रखा है। आप ही प्रसन्न होने पर इस पृथ्वी पर मोक्ष की प्राप्ति कराती है।

विद्याः समस्ता तव देवि भेदाः,
स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु ।
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत् ,

का ते स्तुतिः स्तव्यपरा परोक्तिः ।।

इस संसार की समस्त विद्यायें आपकी भिन्न- भिन्न स्वरूप है। जगत की सारी स्त्रियां आपकी ही मूर्तियां है। एकमात्र तुमने ही इस विश्व को व्याप्त कर रखा है। तुम्हारी स्तुति क्या हो सकती है? आप तो स्तवन योग्य पदार्थों से परे है अर्थात् आप परा वाणी हैं।

इस प्रकार भगवती दुर्ग जी के माहात्म्य के विषय में आपने इस प्रकरण में विस्तार से जाना । आशा है इसके बारे में जानकारी हो गयी होगी। अब हम इसको आधार बनाकर कुछ प्रश्न बनाने जा रहे हैं जिससे आपका ज्ञान इस विषय में और प्रौढ़ हो जायेगा। इसमें प्रश्नों को दिये गये विकल्पों से उत्तरित करना है । प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं । अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- चार मुख से कौन माता दुर्गा जी की स्तुति नही कर पाते है?

क- ब्रह्मा जी, ख- शंकर जी, ग- कार्तिकेय जी, घ- नागराज शेष जी।

प्रश्न 2- पांच मुख से कौन माता दुर्गा जी की स्तुति नही कर पाते है?

क- ब्रह्मा जी, ख- शंकर जी, ग- कार्तिकेय जी, घ- नागराज शेष जी।

प्रश्न 3- छः मुख से कौन माता दुर्गा जी की स्तुति नही कर पाते है?

क- ब्रह्मा जी, ख- शंकर जी, ग- कार्तिकेय जी, घ- नागराज शेष जी।

प्रश्न 4- हजार मुख से कौन माता दुर्गा जी की स्तुति नही कर पाते है?

क- ब्रह्मा जी, ख- शंकर जी, ग- कार्तिकेय जी, घ- नागराज शेष जी।

प्रश्न 5- द्राक्षा शब्द का अर्थ है-

क- दाख, ख- जिह्वा, ग- पान, घ- माला।

प्रश्न 6- रसना शब्द का अर्थ है-

क- दाख, ख- जिह्वा, ग- पान, घ- माला।

प्रश्न 7- ताम्बूल शब्द का अर्थ है-

क- दाख, ख- जिह्वा, ग- पान, घ- माला।

प्रश्न 8- हार शब्द का अर्थ है-

क- दाख, ख- जिह्वा, ग- पान, घ- माला।

प्रश्न 9- प्रसीद शब्द का अर्थ है-

क- प्रसन्न होना, ख- जिह्वा, ग- पान, घ- माला।

प्रश्न 10- युगल शब्द का अर्थ है-

क- दाख, ख- जिह्वा, ग- दो, घ- माला।

2.4.श्री दुर्गा जी की स्तुति एवं आरती -

इसमें श्री दुर्गा जी की स्तुति एवं आरती का ज्ञान आपको कराया जायेगा क्योकि बिना इसके परिचय के श्री दुर्गा जी का आधारभूत ज्ञान नही हो सकेगा। आधारभूत ज्ञान हो जाने पर श्रद्धा एवं समर्पण की भावना का उद्भव होता है। भावो हि विद्ते देवः के अनुसार भावना होने पर देवत्व को प्राप्त किया जा सकता है। इसलिये श्री दुर्गा जी की स्तुति एवं आरती इस प्रकार है-

2.4.1 श्री दुर्गा जी की स्तुति हेतु भगवती स्तोत्रम्-

माता दुर्गा का स्तवन हम विविध स्तोत्रों से करते हैं। भगवान व्यासकृत श्री भगवतिस्तोत्रम् इस प्रकार दिया गया है-

जय भगवति देवि नमो वरदे, जय पापविनाशिनि बहुफलदे।
जय शुम्भ निशुम्भ कपालधरे, प्रणमामि तु देवि नरार्ति हरे।।
जय चन्द्रदिवाकरनेत्रधरे, जय पावकभूषितवक्त्रवरे।
जय भैरवदेहनिलीनपरे, जय अन्धकदैत्यविशोषकरे।।
जय महिषविमर्दिनी शूलकरे, जय लोकसमस्तकपापहरे।
जय देविपितामह विष्णुनते, जय भास्करशक्रशिरोवनते।
जय षण्मुख सायुधईशनुते, जयसागरगामिनि शम्भुनुते।
जय दुखदरिद्रविनाशकरे, जयपुत्रकलत्रविवृद्धिकरे।
जय देवि समस्तशरीरधरे, जय नाकविदर्शिनि दुखहरे।
जय व्याधि विनाशिनि मोक्ष करे, जय वांछितदायिनि सिद्धिवरे।
एतद् व्यासकृतं स्तोत्रं यः पठेन्नियतः शुचिः।
गृहे वा शुद्धभावेन प्रीता भगवती सदा।।
इति श्री व्यासकृत् भगवती स्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

इस श्री व्यासकृत् भगवती स्तोत्र में पराम्बा भगवती मां दुर्गा को प्रणाम किया गया है। मां दुर्गा कैसी है? कवि कहते हैं पापों का विनाश करने वाली तथा बहुत से फलों को देने वाली है। शुम्भ एवं निशुम्भ के कपाल को धारण करने वाली है। ऐसे मनुष्यों के संकट को हरने वाली देवी को नमस्कार है। चन्द्र और दिवाकर यानी सूर्य को अपने नेत्रों में धारण करने वाली, पावक या अग्नि के समान देदिप्यमान मुख से सुशोभित होने वाली, भैरव जी के शरीर में लीन रहने वाली तथा अन्धक दैत्य का शोषण करने वाली हे देवि तुम्हारी जय हो।

हे महिषासुर का विमर्दन यानी मर्दन करने वाली, त्रिशूल को हाथों में धारण करने वाली, समस्त

लोकों के पापों को हरण करने वाली, पितामह ब्रह्मा, विष्णु, सूर्य, और इन्द्र से नमस्कृत् होने वाली, हे देवी तुम्हारी जय हो। सशस्त्र शंकर और कार्तिकेय जी के द्वारा वन्दित होने वाली, शिव के द्वारा प्रशंसित होने वाली, सागर में मिलने वाली गंगा के स्वरूप में विराजमान हे देवि आपकी जय हो।

दुख एवं दरिद्रता का नाश करने वाली, पुत्र एवं कलत्र यानी स्त्री सुख की वृद्धि करने वाली देवी आपकी जय हो।

समस्त शरीर को धारण करने वाली, नाक यानी स्वर्ग का दर्शन कराने वाली, व्याधि यानी रोगों का विनाश कर मुक्ति प्रदान करने वाली, वांछित फलों को प्रदान करने वाली, श्रेष्ठ सिद्धियों को प्रदान करने वाली आपकी जय हो।

यह श्री व्यास कृत् स्तोत्र जो शुद्ध होकर नित्य पठता है, उसके ऊपर भगवती प्रसन्न होती है।

इस प्रकार भगवती दुर्गा जी के भगवती स्तोत्र के विषय में आपने इस प्रकरण में विस्तार से जाना । आशा है इसके बारे में जानकारी हो गयी होगी। अब हम इसको आधार बनाकर कुछ प्रश्न बनाने जा रहे हैं जिससे आपका ज्ञान इस विषय में और प्रौढ़ हो जायेगा। इसमें प्रश्नों को दिये गये विकल्पों से उत्तरित करना है। प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- दिवाकर शब्द का अर्थ है-

क-सूर्य , ख- अग्नि, ग- पान, घ- माला।

प्रश्न 2- पावक शब्द का अर्थ है-

क-सूर्य , ख- अग्नि, ग- पान, घ- माला।

प्रश्न 3- नाक शब्द का अर्थ है-

क-सूर्य , ख- अग्नि, ग- स्वर्ग, घ- माला।

प्रश्न 4- व्याधि शब्द का अर्थ है-

क-सूर्य , ख- अग्नि, ग- पान, घ- रोग।

प्रश्न 5- कलत्र शब्द का अर्थ है-

क-स्त्री , ख- अग्नि, ग- पान, घ- माला।

प्रश्न 6- विमर्दन शब्द का अर्थ है-

क-सूर्य , ख- मर्दन, ग- पान, घ- माला।

प्रश्न 7- पितामह शब्द का अर्थ है-

क-सूर्य , ख- मर्दन, ग- ब्रह्मा, घ- माला।

प्रश्न 8- शक्र शब्द का अर्थ है-

क-सूर्य , ख- मर्दन, ग- पान, घ- इन्द्र ।

प्रश्न 9- षण्मुख शब्द का अर्थ है-

क-सूर्य , ख-कार्तिकेय, ग- पान, घ- माला ।

प्रश्न 10- ईश शब्द का अर्थ है-

क-सूर्य , ख- शंकर भगवान, ग- पान, घ- माला ।

2.4.2 श्री दुर्गा जी की आरती

इस प्रकरण में आप माता दुर्गा के आरती के विषय में जानेगें। बिना आरती के पूजन पूरा नही होता है। इसलिये आरती का ज्ञान अनिवार्य है। आरती इस प्रकार दी जा रही है-

ओं जग जननी जय जय, मां जग जननी जय जय ।
भयहारिणी भवतारिणि भवभामिनि जय जय ।। मां जग जननी जय जय ।।
तू ही सत् चित् सुखमय, शुद्ध ब्रह्मरूपा । मैया शुद्ध ब्रह्म रूपा ।
सत्य सनातन सुन्दर, पर शिव सुर भूपा ।। मां जगजननी जय जय ।
आदि अनादि अनामय अविचल अविनाशी । मैया अविचल अविनाशी ।
अमल अनन्त अगोचर अज आनन्द राशी । मां जग जननी जय जय ।
अविकारी अघहारी, अकल कलाधारी । मैया अकल कला धारी ।
कर्त्ता विधि भर्त्ता हरि हर संहार कारी । मां जग जननी जय जय ।
तू विधि वधू रमा तू उमा महामाया । मैया उमा महामाया ।
मूल प्रकृति विद्या तू तू जननी जाया । मां जगजननी जय जय ।
रामकृष्ण तू सीता व्रजरानी राधा । मैया व्रज रानी राधा ।
तू वांछाकल्पद्रुम , हारिणि सब बाधा । मां जगजननी जय जय ।
दश विद्या नव दुर्गा नाना शास्त्रकरा । मैया नाना शास्त्रकरा ।
अष्टमातृका योगिनि नव नव रूप धरा । मां जग जननी जय जय ।
तू परधामनिवासिनि महाविलासिनि तू । मैया महा विलासिनि तू ।
तू ही श्मशान विहारिणि , ताण्डवलासिनि तू । मां जग जननी जय जय ।
सुर मुनि मोहिनि सौम्या तू शोभा धारा । मैया तू शोभा धारा ।

विवसन विकट सरूपा प्रलयमयी धारा। मां जगजननी जय जय।

तू ही स्नेह सुधामयि, तू अति गरलमना। मैया तू अति गरलमना।

रत्नविभूषित तू ही, तू ही अस्थितना। मां जग जननी जय जय।

मूलाधार निवासिनि, इह पर सिद्धि प्रदे। मैया इह पर सिद्धि प्रदे।

कालातीता काली कमला तू वर दे। मां जग जननी जय जय।

शक्ति शक्तिधर तू ही नित्य अभोद मयी। मैया नित्य अभेदमयी।

भेद प्रदर्शिनि वाणी विमले वेदत्रयी। मां जग जननी जय जय।

हम अति दीन दुखी मां विपत् जाल घेरे। मैया विपत् जाल घेरे।

है कपूत अति कपटी पर बालक तेरे। मां जग जननी जय जय।

निज स्वभाव वश जननी दया दृष्टि कीजै। मैया दया दृष्टि कीजै।

करुणा कर करुणामयि चरण शरण दीजै ।। मां जग जननी जय जय।

ओं जग जननी जय जय, मां जग जननी जय जय।

भयहारिणी भवतारिणि भवभामिनि जय जय।। मां जग जननी जय जय ।।

इस प्रकार भगवती दुर्गा जी की आरती के विषय में आपने इस प्रकरण में विस्तार से जाना। आशा है इसके बारे में जानकारी हो गयी होगी। अब हम इसको आधार बनाकर कुछ प्रश्न बनाने जा रहे हैं जिससे आपका ज्ञान इस विषय में और प्रौढ़ हो जायेगा। इसमें प्रश्नों को दिये गये विकल्पों से पूरित करना है। प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- भयहारिणी .... भवभामिनि जय जय।। मां जग जननी जय जय ।।

क- भवतारिणि, ख- सुखमय, ग- सुन्दर, घ- अविचल।

प्रश्न 2- तू ही सत् चित् ...., शुद्ध ब्रह्मरूपा। मैया शुद्ध ब्रह्म रूपा।

क- भवतारिणि, ख- सुखमय, ग- सुन्दर, घ- अविचल।

प्रश्न 3- सत्य सनातन ...., पर शिव सुर भूपा।। मां जगजननी जय जय।

क- भवतारिणि, ख- सुखमय, ग- सुन्दर, घ- अविचल।

प्रश्न 4- आदि अनादि अनामय .... अविनाशी। मैया अविचल अविनाशी।

क- भवतारिणि, ख- सुखमय, ग- सुन्दर, घ- अविचल।

प्रश्न 5- अमल अनन्त .... अज आनन्द राशी। मां जग जननी जय जय।

क-अगोचर, ख- अकल, ग- हरि हर, घ- उमा।

प्रश्न 6- अविकारी अघहारी, ... कलाधारी। मैया अकल कला धारी।

क-अगोचर, ख- अकल, ग- हरि हर, घ- उमा।

प्रश्न 7-कर्त्ता विधि भर्त्ता .... संहार कारी। मां जग जननी जय जय।

क-अगोचर, ख- अकल, ग- हरि हर, घ- उमा।

प्रश्न 8-तू विधि वधू रमा तू .... महामाया। मैया उमा महामाया।

मूल प्रकृति विद्या तू तू जननी जाया। मां जगजननी जय जय।

क-अगोचर, ख- अकल, ग- हरि हर, घ- उमा।

प्रश्न 9-रामकृष्ण तू सीता .... राधा। मैया व्रज रानी राधा।

क-अगोचर, ख- ब्रजरानी, ग- हरि हर, घ- उमा।

प्रश्न 10- तू वांछाकल्पद्रुम , ... सब बाधा। मां जगजननी जय जय।

क-अगोचर, ख- अकल, ग- हारिणि, घ- उमा।

2.4.3 मॉ दुर्गा जी की द्वितीय आरती-

माता दुर्गा जी के एक आरती को आपने जाना। अब हम आपको दूसरी आरती से भी परिचय कराना चाहते है। क्योंकि समय-समय पर भक्तों द्वारा इस आरती का भी प्रयोग किया जाता रहा है। दोनों आरतियों का ज्ञान कर्मकाण्ड के लिये अत्यन्त आवश्यक है। अतः यह आरती इस प्रकार है-

ओं जय अम्बे गौरी मैया जै श्यामा गौरी।

तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिव री। ओं जय अम्बे गौरी।

मांग सिन्दूर विराजत, टीको मृग मदको। मैया टीको मृगमदको।

उज्ज्वल से दोउ नयना, चन्द्रवदन नीको। मां जै अम्बे गौरी।

कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजे। मैया रक्ताम्बर राजे।

रक्त पुष्प गले माला, कण्ठन पर साजे। मां जै अम्बे गौरी।

केहरि वाहन राजत , खड्ग खप्पर धारी। मैया खड्ग खप्पर धारी।

सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुख हारी। ओं जै अम्बे गौरी।

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती। मैया नासाग्रे मोती।

कोटिक चन्द्र दिवाकर , राजत सम ज्येति। ओं जै अम्बे गौरी।

शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती। मैया महिषासुरघाती।

धूम्र विलोचन नयना, निशि दिन मदमाती। ओं जै अम्बे गौरी।

चण्ड मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे। मैया शोणित बीज हरे।

मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भय हीन करे। ओं जै अम्बे गौरी ।

ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी। मैया तुम कमला रानी ।

आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी । ओं जै अम्बे गौरी ।

चौसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरो । मैया नृत्य करत भैरो ।

बाजत तालमृदंगा , और बाजत डमरू । ओं जै अम्बे गौरी ।

तू ही जग की माता, तुम ही हो भरता । मैया तुम ही हों भरता ।

भक्तन की दुख हरता, सुख सम्पत्ति करता । ओ जै अम्बे गौरी ।

भुजा चार अति शोभित, वर मुद्रा धारी । मैया वर मुद्रा धारी ।

मन वांछित फल पावत, सेवत नर नारी । ओ जै अम्बे गौरी ।

कंचन थाल विराजत, अगर कपुर बाती। मैया अगर कपुर बाती ।

श्री मालकेतु में रजत, विन्ध्याचल में विराजत, कोटि रतन ज्योती। ओं जै अम्बे गौरी ।

श्री अम्बे जी कि आरति, जो कोइ नर गावे। मैया जो कोइ नर गावे ।

कहत शिवानन्द स्वामी , सुख सम्पति पावे। ओं जै अम्बे गौरी ।।

इस प्रकार भगवती दुर्गा जी की आरती के विषय में आपने इस प्रकरण में विस्तार से जाना । आशा है इसके बारे में जानकारी हो गयी होगी। अब हम इसको आधार बनाकर कुछ प्रश्न बनाने जा रहे हैं जिससे आपका ज्ञान इस विषय में और प्रौढ़ हो जायेगा। इसमें प्रश्नों को दिये गये विकल्पों से पूरित करना है। प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- मांग सिन्दूर विराजत, ... मृग मदको। मैया टीको मृगमदको।

क- टीको, ख- चन्द्रवदन, ग-कलेवर, घ-कण्ठन।

प्रश्न 2-उज्ज्वल से दोउ नयना, ... नीको। मां जै अम्बे गौरी।

क- टीको, ख- चन्द्रवदन, ग-कलेवर, घ-कण्ठन।

प्रश्न 3- कनक समान ...., रक्ताम्बर राजे। मैया रक्ताम्बर राजे।

क- टीको, ख- चन्द्रवदन, ग-कलेवर, घ-कण्ठन।

प्रश्न 4- रक्त पुष्प गले माला, ... पर साजे । मां जै अम्बे गौरी।

क- टीको, ख- चन्द्रवदन, ग-कलेवर, घ-कण्ठन।

प्रश्न 5- केहरि वाहन राजत , ... खप्पर धारी। मैया खड्ग खप्पर धारी।

क- खड्ग , ख- तिनके, ग-नासाग्रे, घ- राजत।

प्रश्न 6- सुर नर मुनि जन सेवत, ... दुख हारी। ओं जै अम्बे गौरी।

क- खड्ग , ख- तिनके, ग-नासाग्रे, घ- राजत।

प्रश्न 7-कानन कुण्डल शोभित, ... मोती। मैया नासाग्रे मोती।

क- खड्ग , ख- तिनके, ग-नासाग्रे, घ- राजत।

प्रश्न 8-कोटिक चन्द्र दिवाकर , ... सम ज्येति। ओं जै अम्बे गौरी।

क- खड्ग , ख- तिनके, ग-नासाग्रे, घ- राजत।

प्रश्न 9-शुम्भ निशुम्भ विदारे, ... घाती। मैया महिषासुरघाती।

क- खड्ग , ख- महिषासुर, ग-नासाग्रे, घ- राजत।

प्रश्न 10-धूम्र विलोचन ....,निशि दिन मदमाती । ओं जै अम्बे गौरी।

क- खड्ग , ख- तिनके, ग-नयना, घ- राजत।

2.4.4 मॉं दुर्गा जी की द्वितीय आरती-

इस प्रकार माता दुर्गा जी के दो आरतियों को आपने जाना। अब हम आपको तीसरी आरती से भी परिचय कराना चाहते हैं। क्योंकि समय-समय पर भक्तों द्वारा इस आरती का भी प्रयोग किया जाता रहा है। तीनों आरतियों का ज्ञान कर्मकाण्ड के लिये अत्यन्त आवश्यक है। अतः यह आरती इस प्रकार है-

ओ अम्बे तू है जगदम्बे काली , जै दुर्गे खप्पर वाली ।
तेरे ही गुण गायें भारती, ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती ।
तेरे भक्तजनों पे माता भीर पड़ी है भारी ।
दानव दल पर टूट पडों मां करके सिंह सवारी ।
सौ सौ सिंहो सी बलशाली , अष्ट भुजाओं वाली,
दुखियों के दुख को निवारती, ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती ।
मां बेटे का है इस जग में बड़ा हि निर्मल नाता ।
पूत कपूत सुने हैं पर ना माता सुनी कुमाता ।
सब पर करुणा दरसाने, अमृत बरसाने वाली ।
नैया भंवर से उबारती। ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती ।

नहीं मांगते धन औ दौलत ना चांदी ना सोना।

हम तो मांगे मा तेरे चरणों में छोटा कोना।

सबकी बिगड़ी बनाने वाली, लज्जा बचाने वाली,

सतियों के सत को सवांरती। ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती।

अम्बे तू है जगदम्बे काली, जै दुर्गे खप्पर वाली,

तेरे हि गुण गावों भारती। हो मैया हम सब उतारे तेरी आरती।

इस प्रकार भगवती दुर्गा जी की इस आरती के विषय में आपने इस प्रकरण में विस्तार से जाना। आशा है इसके बारे में जानकारी हो गयी होगी। अब हम इसको आधार बनाकर कुछ प्रश्न बनाने जा रहे हैं जिससे आपका ज्ञान इस विषय में और प्रौढ़ हो जायेगा। इसमें प्रश्नों को दिये गये विकल्पों से पूरित करना है। प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- तेरे ही गुण गायें ...., ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती।

क- भारती, ख- भीर, ग-टूट, घ-बलशाली।

प्रश्न 2- तेरे भक्तजनों पे माता .... पड़ी है भारी।

क- भारती, ख- भीर, ग-टूट, घ-बलशाली।

प्रश्न 3-दानव दल पर .... पडों मां करके सिंह सवारी।

क- भारती, ख- भीर, ग-टूट, घ-बलशाली।

प्रश्न 4-सौ सौ सिंहो सी .... , अष्ट भुजाओं वाली,

क- भारती, ख- भीर, ग-टूट, घ-बलशाली।

प्रश्न 5-दुखियों के दुख को ...., ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती।

क- निवारती, ख- जग में, ग- कुमाता, घ- बरसाने।

प्रश्न 6-मां बेटे का है इस .... में बड़ा हि निर्मल नाता।

क- निवारती, ख- जग में, ग- कुमाता, घ- बरसाने।

प्रश्न 7-पूत कपूत सुने हैं पर ना माता सुनी ....।

क- निवारती, ख- जग में, ग- कुमाता, घ- बरसाने।

प्रश्न 8- सब पर करुणा दरसाने, अमृत .... वाली।

क- निवारती, ख- जग में, ग- कुमाता, घ- बरसाने।

प्रश्न 9-नैया भंवर से ....। ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती।

क- उबारती, ख- जग में, ग- कुमाता, घ- बरसाने।

प्रश्न 10- नहीं मांगते धन औ .... ना चांदी ना सोना।

क- निवारती, ख- दौलत, ग- कुमाता, घ- बरसाने ।

2.5 सारांश-

इस इकाई में श्री दुर्गा जी की आरती एवं स्तुति विचार संबंधी प्रविधियों का अध्ययन आपने किया । श्री दुर्गा जी की आरती एवं स्तुति विचार के अभाव में किसी नवरात्रादि के अवसर पर व्रतादि या पूजनादि का सम्पादन किसी भी व्यक्ति द्वारा ठीक ढंग से नही हो सकता है। क्योकि इसमें दुर्गा माता की ही उपासना की जाती है। जब असुरांे का अत्याचार इतना बढ़ गया था जिसमें सामान्य जन का जीना दुभर हो गया था तब समस्त देवमण्डल में यह विचार किया जाने लगा कि किस प्रकार से इन दैत्यों से मुक्त हुआ जा सकता है। उस समय ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश को छोड़कर अन्य कोई शक्ति ऐसी नही थी जिससे दैत्य पराजित हो सके। ये तीनों महाशक्तियों का दैत्यों के साथ युद्ध में आना उचित नही था इसलिये विकल्प पर विचार किया जाने लगा। समस्त देवगणों ने ध्यान से अपनी अपनी शक्तियों का थोड़ा थोड़ा अंश निकालकर एक जगह एकत्रित करने का प्रयास किया। वह प्रयास सफल हुआ तथा उस एकत्रित शक्तियों से महादेवी का प्राकट्य हुआ जिसे दुर्गा देवि के रूप में जाना जाता है। दुर्गा जी की सवारी का नाम सिंह है।

देवि पुराण में अनेकों श्लोकों में मातेश्वरी के विविध स्वरूपों को दर्शाया गया है। भगवती दुर्गा की उपासना में एक ग्रन्थ अत्यन्त प्रचलित है जिसे दुर्गा सप्तशती के रूप में जाना जाता है। इसमें दुर्गा जी के उपासना के लिये तेरह अध्यायों में सात सौ श्लोकों को दिया गया है। इसी में से प्रथम अध्याय में यह बतलाया गया है कि माता दुर्गा के दश हाथ हैं। उन दशों हाथों में माता अस्त्र धारण की हुयी है जिनके नाम खड्ग यानी तलवार, चक्र, गदा, बाण, धनुष, परिघ, शूल, भुशुण्डि, मस्तक और शंख हैं। माता दुर्गा के तीन नेत्र है। माता दुर्गा के समस्त अंग आभूषणों से सुशोभित है। इनके शरीर की कान्ति नील मणि के समान है। दुर्गा जी दस मुख और दस पैरों से युक्त है।

श्री व्यासकृत् भगवती स्तोत्र में पराम्बा भगवती मां दुर्गा को प्रणाम किया गया है। मां दुर्गा कैसी है? कवि कहते हैं पापों का विनाश करने वाली तथा बहुत से फलों को देने वाली है। शुम्भ एवं निशुम्भ के कपाल को धारण करने वाली है। ऐसे मनुष्यों के संकट को हरने वाली देवी को नमस्कार है। चन्द्र और दिवाकर यानी सूर्य को अपने नेत्रों में धारण करने वाली, पावक या अग्नि के समान देदिप्यमान मुख से सुशोभित होने वाली, भैरव जी के शरीर में लीन रहने वाली तथा अन्धक दैत्य का शोषण करने वाली हे देवि तुम्हारी जय हो ।

2.6 पारिभाषिक शब्दावलियां-

खड्गं - तलवार, चक्र- चक्र, गद- गदा, इषु- बाण, चाप- धनुष, परिघ- एक प्रकार का अस्त्र, छूलं - त्रिशूल, शंखं- मुख से बजाने वाला वाद्य, संन्दधतिं- सम्यक् प्रकार से धारण करना, कर-हाथ, त्रिनयनां - तीन आखों वाली, सर्वांग- सभी अंग, भूषा- आभूषण, आवृताम्- आच्छादित, द्युति- प्रकाश, आस्य- मुख, पाददशकां- दस पैरों वाली, उद्यद्- उगते हुये, भानु- सूर्य, सहस्त्र- हजार, कान्ति- तेज, अरुण-लाल, क्षौमां-रेशमी वस्त्र, शिरो मालिकां- मुण्डमाला, पयोधरा- स्तन, अभीतिं - अभय, वरम्- श्रेष्ठ, हस्त- हाथ, अब्ज- कमल, दधतीं- धारण, त्रिनेत्र- तीनों नेत्र, विलसत्- सुशोभित, वक्त्र -मुख, अरविन्द- कमल, हिमांशु- चन्द्रमा, रत्नमुकुटां-रत्नों के मुकुट, वन्दे- वन्दना, अरविन्दस्थिताम्- कमल पर स्थित देवि, कान्ति-तेज, उदयकाल- उगने का समय, उत्कृष्ट- उच्च, सर्वेश्वर- सभी के ईश्वर, कल्पात्मक- कला के रूप में, दृश्यरूप- देखने का स्वरूप, सम्पूर्ण- सारा, अमंगलध्वंसकारिणी- अमंगल को विनाश करने वाली, क्षूद्रतम अंश- छोटा से छोटा अंश, जागतिक- जगत के, आचार- आचरण, यथोचित- जैसा उचित, परिणत- बदल जाना, तव- तुम्हारा, च- और, का- क्या, सकल- सम्पूर्ण, शब्दमयी- शब्दमय, तनुः- शरीर, मूर्तिषु - मूर्तियों में, मनसि- मन में, बहिः- बाहर, प्रसरासु- विस्तार, इति - ऐसा, विचिन्त्य- चिन्तन, शिवे - पार्वती, शमिता- शान्ति करने वाली, शिवे- कल्याण करने वाली, जगति- जगत में, स्तुति- प्रार्थना, जप - जप, अर्चन- पूजा, चिन्तनवर्जिता- चिन्तन मुक्त, न- नही, काल- समय, अस्ति- है, प्रौढ़- पुष्ट, सप्तशती- सात सौ, मुण्डमाला- मुण्डों की माला, साक्षात् - प्रत्यक्ष, अर्जन - प्राप्त, भवानि- दुर्गा, स्तोतुं - स्तुति करने के लिये, प्रभवति - तैयार होते हैं, वदनैः- मुखों से, प्ररजानां - प्रजाओं, ईशान- शंकर भगवान, स्त्रिपुरमथनः- त्रिपुरासुर को मारने वाले, पंचभिः- पांचों मुखों से, अपि- भी, षड्भिः- छ से, सेनानी- कार्तिकेय जी, दशशतमुखैः- हजार मुखों से, अहिपति- नागराज, तदा- तो, अन्येषां- अन्य, केषां- किसी का, कथय- कहिये, कथम्- कैसे, अस्मिन्- यह, अवसरः- अवसर, स्तवन- स्तुति, गुणों का गायन, घृत- धी, क्षीर- दुग्ध, द्राक्षा- दाख, मधु- शहद, नाख्येयो - जिसकी व्याख्या न की जा सके, रसना- जिह्वा, ताम्बूलं - पान, नयनयुगले - दोनों आंखें, कज्जल- काजल, विलसति - सुशोभित होता है, गले - गर्दन में, मौक्तिकलता- मोती की लता, शाटी- साड़ी, कटि- कमर, तटे - किनारा, नगपति - पर्वतराज, विराजन्- विराजमान, मन्दार- मदार, दु्रम- लता, कुसुम- पुष्प, हार- माला, स्तनतटी- स्तन के तट तक, द्वीणानाद- वीणा का स्वर, श्रवण- कान, नतांगी- नत अंग वाली, रुचिर- सुन्दर, विजयते- जय हो, भार्या - पत्नी, अभीष्ट- इच्छा के अनुसार, प्रसीद- प्रसन्न होवें, विश्वेश्वरि- विश्व की ईश्वरी, पाहि - रक्षा करें, आधारभूता- आधार, मही- पृथ्वी, अपां- जल, अनन्तवीर्या- अनन्त बलशाली, विश्वस्य बींज- बीज शक्ति, परमासि- श्रेष्ठतमा, शरणागत- शरण में आये हुये।

2.7अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

पूर्व में दिये गये सभी अभ्यास प्रश्नों के उत्तर यहां दिये जा रहे हैं। आप अपने से उन प्रश्नों को हल कर लिये होगें। अब आप इन उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कर लीजिये। यदि गलत हो तो उसको सही करके पुनः तैयार कर लीजिये। इससे आप इस प्रकार के समस्त प्रश्नों का उत्तर सही तरीके से दे पायेगें।

2.3.1 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, 2-ख, 3-ग, 4-घ, 5-क, 6-ख, 7-ग, 8-घ, 9-ग, 10-घ।

2.3.2 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, 2-ख, 3-ग, 4-घ, 5-क, 6-ख, 7-ग, 8-घ, 9-क, 10-ग।

2.4.1 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, 2-ख, 3-ग, 4-घ, 5-क, 6-ख, 7-ग, 8-घ, 9-ख, 10-ख।

2.4.2 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, 2-ख, 3-ग, 4-घ, 5-क, 6-ख, 7-ग, 8-घ, 9-ख, 10-ग।

2.4.3 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, 2-ख, 3-ग, 4-घ, 5-क, 6-ख, 7-ग, 8-घ, 9-ख, 10-ग।

2.4.4 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, 2-ख, 3-ग, 4-घ, 5-क, 6-ख, 7-ग, 8-घ, 9-क, 10-ख।

2.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1-आरती संग्रह।
2-क्यों-भाग-1
3-क्यों- भाग-2।
4-शब्दकल्पद्रुमः।
5-आह्निक सूत्रावलिः।
6-प्रतिष्ठा मयूख।
7-पूजन- विधान।
8-संस्कार एवं शान्ति का रहस्य।

2.9- सहायक उपयोगी पाठ्य सामग्री-

1- दैनिक आरती स्तुति एवं स्तोत्र।
2- स्तोत्ररत्नावलिः।

3- श्रीदुर्गासप्तशती।

2.10 निबंधात्मक प्रश्न-

1- श्री दुर्गा जी का परिचय बतलाइये।

2- श्री दुर्गा जी का स्वरूप बतलाइये।

3- श्री दुर्गा जी का माहात्म्य लिखिये।

4- भगवती स्तोत्रम् नामक सूक्त लिखिये।

5- भगवती स्तोत्रम् का हिन्दी अनुवाद दीजिये।

6- दुर्गा जी की प्रथम आरती लिखिये।

7- दुर्गा जी की द्वितीय आरती लिखिये।

8- दुर्गा जी की तृतीय आरती लिखिये।

9- गंगालहरी के कुछ श्लोकों को लिखिये।

10- गंगालहरी के कुछ श्लोकों का हिन्दी अनुवाद लिखिये।

इकाई 3 - श्री लक्ष्मी जी की आरती एवं स्तुति

इकाई की संरचना

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 श्री लक्ष्मी जी का स्वरूप विचार एवं श्रीसूक्त पाठ

3.3.1 श्री लक्ष्मी जी का स्वरूप विचार

3.3.2 लक्ष्मी जी की प्रसन्नता हेतु श्री सूक्त पाठ

3.4 श्री लक्ष्मी जी की स्तुति एवं आरती

3.4.1 श्री लक्ष्मी जी की प्रसन्नता हेतु लक्ष्मी सूक्त का पाठ

3.4.2 श्री लक्ष्मी जी की प्रसन्नता हेतु महालक्ष्म्यष्टक स्तोत्र पाठ

3.4.3 महालक्ष्मी जी की आरती

3.5 सारांश

3.6 पारिभाषिक शब्दावली

3.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

3.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

3.9 सहायक उपयोगी पाठ्यसामग्री

3.10 निबन्धात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

इस इकाई में श्री लक्ष्मी जी की आरती एवं स्तुति विचार संबंधी प्रविधियों का अध्ययन आप करने जा रहे हैं। इससे पूर्व की प्रविधियों का अध्ययन आपने कर लिया होगा। कर्मकाण्ड में धन की आदि शक्ति के रूप में पराम्बा भगवती लक्ष्मी को जाना गया है। धन की प्राप्ति के लिये लक्ष्मी जी की वन्दना या पूजन किया जाता है। यह प्रकल्प शक्ति प्राप्ति हेतु एवं विविध मनोकामनाओं की प्रपूर्ति हेतु किया जाता है। अतः श्री लक्ष्मी जी क्या हैं ? तथा कैसे उनकी आरती पूजा की जाती है ? इसका ज्ञान आपको इस इकाई के अध्ययन से हो जायेगा।

श्री लक्ष्मी जी की आरती एवं स्तुति विचार के अभाव में दीपावली आदि के अवसर पर या अन्य लक्ष्मी जी के व्रतादि या पूजनादि का सम्पादन किसी भी व्यक्ति द्वारा ठीक ढंग से नही हो सकता है। क्योकि इसमें लक्ष्मी माता की ही उपासना की जाती है। सभी सुख, सुविधा, शक्ति, भुक्ति, मुक्ति की दाता एवं ज्ञान पुंज रूपा आह्लादिनी महालक्ष्मी जी की पूजा अवश्य करनी चाहिये। मां लक्ष्मी भाव से की गयी समस्त प्रकार के पूजन या स्तोत्र पाठ से परम प्रसन्न होती हैं। इसलिये मां लक्ष्मी की पूजा अवश्य करनी चाहिये। इसके लिये यथा उपलब्ध उपचारों से मां की श्रद्धा भक्ति एवं शुचिता से दीपावली या अन्य पर्व इत्यादि के समय महालक्ष्मी पूजन करना चाहिये। ताकि हमारा जीवन सुखमय, आनन्दमय, सात्विक विचारों से परिपूर्ण एवं वर्ष पर्यन्त पुत्र पौत्र सुख, हर्ष उल्लास, ग्रहों की शान्ति, कायिक, वाचिक एवं मानसिक पीड़ा की निवृत्ति के लिये, भूत, प्रेत, डाकिनी, शाकिनी, बेतालादि की शान्ति के लिये, अखण्ड लक्ष्मी की प्राप्ति और कोष को आगे बढ़ाने के लिये, निरोगी काया के लिये, व्यापार को बढ़ाने के लिये, लोक कल्याण के लिये, अपने आश्रितों का पोषण करने के लिये महालक्ष्मी पूजन करना चाहिये।

इस इकाई के अध्ययन से आप श्री लक्ष्मी जी की आरती एवं स्तुति इत्यादि के विचार करने की विधि का सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर सकेगें। इससे श्री लक्ष्मी जी की आरती एवं स्तुति आदि विषय के अज्ञान संबंधी दोषों का निवारण हो सकेगा जिससे सामान्य जन भी अपने कार्य क्षमता का भरपूर उपयोग कर समाज एवं राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकेगें। आपके तत्संबंधी ज्ञान के कारण ऋषियों एवं महर्षियों का यह ज्ञान संरक्षित एवं सवंर्धित हो सकेगा। इसके अलावा आप अन्य योगदान दें सकेगें, जैसे - कल्पसूत्रीय विधि के अनुपालन का सार्थक प्रयास करना, भारत वर्ष के गौरव की अभिवृद्धि में सहायक होना, सामाजिक सहभागिता का विकास, इस विषय को वर्तमान समस्याओं के समाधान हेतु उपयोगी बनाना आदि।

3.2 उद्देश्य-

अब श्री लक्ष्मी जी की आरती एवं स्तुति विचार की आवश्यकता को आप समझ रहे होगें। इसका उद्देश्य भी इस प्रकार आप जान सकते हैं -

- ❖ कर्मकाण्ड को लोकोपकारक बनाना।
- ❖ श्री लक्ष्मी जी की आरती एवं स्तुति सम्पादनार्थ शास्त्रीय विधि का प्रतिपादन।
- ❖ लक्ष्मी पूजन के कर्मकाण्ड में व्याप्त अन्धविश्वास एवं भ्रान्तियों को दूर करना।
- ❖ प्राच्य विद्या की रक्षा करना।
- ❖ लोगों के कार्यक्षमता का विकास करना।
- ❖ समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करना।

3.3.श्री लक्ष्मी जी का स्वरूप विचार एवं श्रीसूक्त पाठ -

इसमें श्री लक्ष्मी जी का स्वरूप विचार एवं श्रीसूक्त पाठ का ज्ञान आपको कराया जायेगा क्योकि बिना इसके परिचय के श्री लक्ष्मी जी का आधारभूत ज्ञान नही हो सकेगा। आधारभूत ज्ञान हो जाने पर श्रद्धा एवं समर्पण की भावना का उद्भव होता है। भावो हि विद्ते देवः के अनुसार भावना होने पर देवत्व को प्राप्त किया जा सकता है। इसलिये श्री लक्ष्मी जी का स्वरूप विचार एवं श्रीसूक्त पाठ इस प्रकार है-

3.3.1 श्री लक्ष्मी जी का स्वरूप विचार-

माता लक्ष्मी का ध्यान हम विविध रूपों में करते हैं। पुराणों के अनेकों श्लोकों में मातेश्वरी के विविध स्वरूपों को दर्शाया गया है। भगवती लक्ष्मी के स्वरूप का वर्णन इस प्रकार है-

या सा पद्मासनसस्था, विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी।
गम्भीरावर्तनाभिस्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया ।।
या लक्ष्मीर्दिव्यरूपैर्मणिगणखचितैः स्नापिता हेमकुम्भैः।
सा नित्यं पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमांगल्ययुक्ता ।।

इस श्लोक में महालक्ष्मी जी के स्वरूप का वर्णन करते हुये कहा गया है कि वह देवि जो पद्म यानी कमल के आसन पर स्थित है। दस महादेवि का कटि तट यानी कमर का तट विपुल अर्थात् विशद् है। माताजी की आखें कमल के पत्र के समान है। महालक्ष्मी जी की गम्भीर आवर्तन वाली नाभि है। शुभ्र उत्तरीय वस्त्रों से सुशोभित हो रही है। हे लक्ष्मी माता आपका रूप दिव्य है। यानी माता लक्ष्मी के रूप से तेज प्रकट हो रहा है। मणि गणों से माता लक्ष्मी का रूप विभूषित हो रहा है। हेम कुम्भ यानी सोने के घड़े से आपको स्नान कराया जाता है। इस मातेश्वरी के हाथ में कमल सर्वदा सुशोभित हो रहा है। ऐसी माता लक्ष्मी जो सभी प्रकार के मंगल कार्यो से युक्त होती है वह लक्ष्मी मेरे घर में वास करें।
लक्ष्मी की व्याख्या करते हुये शब्दकल्पद्रुम में कहा गया है कि लक्ष्यति पश्यति उद्योगिनमिति लक्ष्मी अर्थात् जो उद्योगियों को देखे उसे लक्ष्मी कहते है। लक्ष्मी की प्राप्ति के लिये उद्योग का करना अत्यन्त आवश्यक है क्योकि कहा गया है उद्योगिनं पुरुष सिंहमुपैतिलक्ष्मीः यानी उद्योग करने वाले

पुरुष सिंहों के पास ही लक्ष्मी जाती है। वैसे तो लक्ष्मी के विविध नाम दिये गये हैं उनमें से कुछ नाम इस प्रकार दिया गया है- विष्णुपत्नी, पद्मालया, पद्मा, कमला, श्रीः, हरिप्रिया, इन्दिरा, लोकमाता, मां, क्षीराब्धितनया, रमा, जलधिजा, भार्गवी, हरिवल्लभा, दुग्धाब्धितनया, क्षीरसागरसुता इत्यादि। अथर्व वेद के 7.115.4 में दो प्रकार की लक्ष्मीयों का वर्णन मिलता है। वहां कहा गया है कि- रमन्तां पुण्या लक्ष्मीर्या पापीस्ता अनीनशम् यानी पुण्या लक्ष्मी हमारे घर में निवास करे तथा जो अनर्थमूला लक्ष्मी है वह विनष्ट हो जावे। इसकी चर्चा श्री सूक्तम् में भी करते हुये बतलाया गया है कि क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान्निर्णुद मे गृहात् यानी क्षुधा यानी भूखे रहना, पिपासा यानी प्यासे रहना, मलां यानी मलयुक्ता लक्ष्मी तथा ज्येष्ठा अलक्ष्मी नष्ट हों, अभूति, असमृद्धि ये सभी मेरे घर से निकल जायं। लक्ष्मी जी की उत्पत्ति समुद्र मन्थन से हुयी है ऐसा मिलता है। समुद्र मन्थन से चौदह रत्न निकले थे, जिनमें से एक लक्ष्मी जी को बतलाया गया है। इनका विवाह श्रीमन्नारायण भगवान से हुआ है इसलिये लक्ष्मी जी सदैव नारायण भगवान के साथ रहती है इसलिये प्रायः सुना जाता है कि लक्ष्मी नारायण भगवान की जै।

श्रीदुर्गा सप्तशती में तीन चरित्र दिये गये हैं जिन्हें प्रथम चरित्र, मध्यम चरित्र एवं उत्तम चरित्र के रूप में जाना जाता है। इनमें प्रथम चरित्र में महाकाली का ध्यान एवं चरित्र दिया है, मध्यम चरित्र में मां लक्ष्मी का चरित्र दिया है और उत्तम चरित्र में सरस्वती का चरित्र दिया गया है। मध्यम चरित्र में महालक्ष्मी का ध्यान इस प्रकार दिया गया है-

अक्षस्रक्परशुं गदेषु कुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां।
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं धण्टां सुराभाजनम्।।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्ननां।
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्।।

इसकी व्याख्या करते हुये कहा गया है कि मैं कमल के आसन पर बैठी हुयी प्रसन्न मुख वाली महिषासुरमर्दिनी भगवती महालक्ष्मी का भजन करता हूॅ जो अपने हाथों में अक्ष यानी अक्षमाला, स्रक् यानी माला, परशु यानी फरसा, गद यानी गदा, इषु यानी बाण, कुलिश यानी वज्र, पद्म यानी कमल, धनुष, कुण्डिका, दण्ड, शक्ति, असि यानी खड्ग, चर्म यानी ढाल, जलज यानी शंख, घण्टा, सुराभाजन यानी मधु पात्र, शूल, पाश और सुदर्शन चक्र धारण करती हैं।

इस प्रकार भगवती लक्ष्मी जी के स्वरूप के विषय में आपने इस प्रकरण में विस्तार से जाना । आशा है इसके बारे में जानकारी हो गयी होगी। अब हम इसको आधार बनाकर कुछ प्रश्न बनाने जा रहे हैं जिससे आपका ज्ञान इस विषय में और प्रौढ़ हो जायेगा। इसमें प्रश्नों या संबंधित शब्दों को दिया गया है जिसके आगे दिये गये रिक्त स्थान को दिये गये विकल्पों से प्रपूरित करना है। प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु

विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- अक्ष शब्द का अर्थ है-

क- अक्षमाला, ख- माला, ग- फरसा, घ-बाण।

प्रश्न 2- स्रक् शब्द का अर्थ है-

क- अक्षमाला, ख- माला, ग- फरसा, घ-बाण।

प्रश्न 3- परशु शब्द का अर्थ क्या है?

क- अक्षमाला, ख- माला, ग- फरसा, घ-बाण।

प्रश्न 4- इषु शब्द का अर्थ है-

क- अक्षमाला, ख- माला, ग- फरसा, घ-बाण।

प्रश्न 5- कुलिश शब्द का अर्थ क्या है ?

क- वज्र, ख- कमल, ग- खड्ग, घ-ढाल।

प्रश्न 6- असि शब्द का अर्थ क्या है ?

क- वज्र, ख- कमल, ग- खड्ग, घ-ढाल।

प्रश्न 7- पद्म शब्द का अर्थ क्या है ?

क- वज्र, ख- कमल, ग- खड्ग, घ-ढाल।

प्रश्न 8- चर्म शब्द का अर्थ क्या है?

क- वज्र, ख- कमल, ग- खड्ग, घ-ढाल।

प्रश्न 9- जलज शब्द का अर्थ क्या है?

क- वज्र, ख- शंख, ग- खड्ग, घ-ढाल।

प्रश्न 10- सुराभाजन शब्द का अर्थ क्या है ?

क- वज्र, ख- कमल, ग- मधुपात्र, घ-ढाल।

इस प्रकार आपने महालक्ष्मी जी के स्वरूप के बारे में आपने जाना। अब हम श्री सूक्त का वर्णन करने जा रहे हैं जो इस प्रकार है-

3.3.2 लक्ष्मी जी की प्रसन्नता हेतु श्री सूक्त पाठ -

लक्ष्मी जी की प्रसन्नता हेतु श्री सूक्त का पाठ अत्यन्त प्रभावशाली माना गया है। कहा गया है शुद्धता पूर्वक श्री सूक्त का पाठ करने वाले या कराने वाले लोगों के यहां लक्ष्मी का कभी अभाव नही होता है। आज के समय में तो लक्ष्मी के सन्दर्भ में यस्यास्ति वित्तं स नर कुलीनः यह श्लोक उपयुक्त

प्रतीत होता है। इसलिये लक्ष्मी प्राप्ति हेतु श्री सूक्त का पाठ भी एक उपाय है। इसके पाठ से सद् लक्ष्मी का आगमन होता है-

हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मी मनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्।
कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्ता तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थिता पद्मवर्णा तामिहोपह्वयेश्रियम्।
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मिनीमीं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे।
आदित्य वर्णे तपसो अधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोथविल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च वाह्या अलक्ष्मीः ।।
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रदुर्भूतोस्मि राष्ट्रे स्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाश्याम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्।
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्यस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।
कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देविं मातरं श्रियं वासय मे कुले।
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।

सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्यो अश्वान्विन्देयं पुरुषानहम्।।
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्।

इस प्रकार भगवती लक्ष्मी जी की प्रसन्नता के लिये उनके परम प्रिय सूक्त श्री सूक्त के विषय में आपने इस प्रकरण में विस्तार से जाना। आशा है इसके बारे में जानकारी हो गयी होगी। अब हम इसको आधार बनाकर कुछ प्रश्न बनाने जा रहे हैं जिससे आपका ज्ञान इस विषय में और प्रौढ़ हो जायेगा। इसमें प्रश्नों या संबंधित शब्दों को दिया गया है जिसके आगे दिये गये रिक्त स्थान को दिये गये विकल्पों से प्रपूरित करना है। प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- हिरण्यवर्णां .... सुवर्णरजतस्रजाम्।

चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।

क- हरिणीं, ख-जातवेदो, ग- हस्तिनाद, घ- हिरण्यप्राकारा।

प्रश्न 2- तां म आवह .... लक्ष्मी मनपगामिनीम्।

यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।

क- हरिणीं, ख-जातवेदो, ग- हस्तिनाद, घ- हिरण्यप्राकारा।

प्रश्न 3- अश्वपूर्वां रथमध्यां .... प्रमोदिनीम्।

श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्।।

क- हरिणीं, ख-जातवेदो, ग- हस्तिनाद, घ- हिरण्यप्राकारा।

प्रश्न 4- कांसोस्मितां ....मार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्ता तर्पयन्तीम्।

पद्मे स्थिता पद्मवर्णा तामिहोपह्वयेश्रियम्।

क- हरिणीं, ख-जातवेदो, ग- हसितनाद, घ- हिरण्यप्राकारा।

प्रश्न 5- चन्द्रां प्रभासां .... ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।

तां पद्मिनीमीं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे।

क- यशसा, ख-वनस्पतिस्तव, ग- देवसखः घ- अभूतिमसमृद्धिं।

प्रश्न 6- आदित्य वर्णे तपसो अधिजातो .... वृक्षोथविल्वः।

तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च वाह्या अलक्ष्मीः।।

क- यशसा, ख-वनस्पतिस्तव, ग- देवसखः घ- अभूतिमसमृद्धिं।

प्रश्न 7- उपैतु मां .... कीर्तिश्च मणिना सह।

प्रदुर्भूतोस्मि राष्ट्रे स्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।

क- यशसा, ख-वनस्पतिस्तव, ग- देवसखः घ- अभूतिमसमृद्धिं।

प्रश्न 8- क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाश्याम्यहम्।

.... च सर्वां निर्णुद मे गृहात्।

क- यशसा, ख-वनस्पतिस्तव, ग- देवसखः घ- अभूतिमसमृद्धिं।

प्रश्न 9- गन्धद्वारां .... नित्यपुष्टां करीषिणीम्।

ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।

क- दुराधर्षां, ख-वनस्पतिस्तव, ग- देवसखः घ- अभूतिमसमृद्धिं।

प्रश्न 10- मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।

.... रूपमन्यस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।

क- यशसा, ख-वनस्पतिस्तव, ग-पशूनां घ- अभूतिमसमृद्धिं।

3.4 श्री लक्ष्मी जी की स्तुति एवं आरती-

इससे पूर्व में आपने श्रीसूक्तम् के बारे में जान लिया है। अब हम इस प्रकरण में माता लक्ष्मी की स्तुति एवं आरती के बारे में वर्णन करने जा रहे है जो इस प्रकार है-

3.4.1- श्री लक्ष्मी जी की प्रसन्नता हेतु लक्ष्मी सूक्त का पाठ -

पद्मानने पद्मविपद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि।
विश्वप्रिये विष्णु मनोनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि सन्निधत्स्वः।।
पद्मानने पद्मऊरू पद्माक्षि पद्मसम्भवे।
तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम्।
अश्वदायी गोदायि धनदायी महाधने।
धनं मे जुषतां देवि सर्वकांमाश्च देहि मे।
पुत्रपौत्रधनं धान्यं हस्तश्वादिगवेरथम्।
प्रजानां भवसि माता आयुष्मन्तं करोतु मे।
धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः।
धनमिन्द्रो वृहस्पतिर्वरुणो धनमश्विना।।
वैनतेय सोमं पिब सोम पिबतु वृत्रहा।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः।
न क्रोधो न च मात्सर्यं ना लोभो नाशुभा मतिः।
भवन्तिकृत्पुण्यानां भक्त्या श्रीसूक्तजापिनाम्।
सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुक गन्धमाल्यशोभे।
भगवति हरि वल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतकरी प्रसीद मह्यम्।।
विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम्।
लक्ष्मीं प्रियसखीं देवीं नमामच्युतवल्लभाम्।
महालक्ष्मीं च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्।।
आनन्दः कर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इति विश्रुताः।
ऋषयः श्रियः पुत्राश्च श्रीर्देवीदेवता मताः।।
ऋणरोगादिदारिद्र्यपापक्षुदपमृत्यवः।
भयशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा।
श्रीवर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधाच्छोभमानं महीयते।
धान्यं धनं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्धमायुः।।

इस प्रकार भगवती लक्ष्मी जी की प्रसन्नता के लिये उनके परम प्रिय सूक्त लक्ष्मी सूक्त के विषय में आपने इस प्रकरण में विस्तार से जाना । आशा है इसके बारे में जानकारी हो गयी होगी। अब हम इसको आधार बनाकर कुछ प्रश्न बनाने जा रहे हैं जिससे आपका ज्ञान इस विषय में और प्रौढ़ हो जायेगा। इसमें प्रश्नों या संबंधित शब्दों को दिया गया है जिसके आगे दिये गये रिक्त स्थान को दिये गये विकल्पों से प्रपूरित करना है। प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- पद्मानने पद्मविपद्मपत्रे .... पद्मदलायताक्षि।
विश्वप्रिये विष्णु मनोनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि सन्निधत्स्वः।।

क- पद्मप्रिये, ख- पद्माक्षि, ग- धनदायी, घ- धान्यं।

प्रश्न 2- पद्मानने पद्मऊरू .... पद्मसम्भवे।
तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम्।

क- पद्मप्रिये, ख- पद्माक्षि, ग- धनदायी, घ- धान्यं।

प्रश्न 3- अश्वदायी गोदायि .... महाधने।
धनं मे जुषतां देवि सर्वकांमाश्च देहि मे।

क- पद्मप्रिये, ख- पद्माक्षि, ग- धनदायी, घ- धान्यं।

प्रश्न 4- पुत्रपौत्रधनं .... हस्तश्वादिगवेरथम्।
प्रजानां भवसि माता आयुष्मन्तं करोतु मे।

क- पद्मप्रिये, ख- पद्माक्षि, ग- धनदायी, घ- धान्यं।

प्रश्न 5- धनमग्निर्धनं .... सूर्यो धनं वसुः।
धनमिन्द्रो वृहस्पतिर्वरुणो धनमश्विना।।

क- वायुर्धनं, ख- वृत्रहा, ग- नाशुभामतिः, घ- सरोजहस्ते।

प्रश्न 6- वैनतेय सोमं पिब सोम पिबतु ....।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः।

क- वायुर्धनं, ख- वृत्रहा, ग- नाशुभामतिः, घ- सरोजहस्ते।

प्रश्न 7- न क्रोधो न च मात्सर्यं ना लोभो ....।
भवन्तिकृतपुण्यानां भक्त्या श्रीसूक्तजापिनाम्।

क- वायुर्धनं, ख- वृत्रहा, ग- नाशुभामतिः, घ- सरोजहस्ते।

प्रश्न 8- सरसिजनिलये .... धवलतरांशुक गन्धमाल्यशोभे।
भगवति हरि वल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतकरी प्रसीद मह्यम्।।

क- वायुर्धनं, ख- वृत्रहा, ग- नाशुभामतिः, घ- सरोजहस्ते।

प्रश्न 9- विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं .... माधवप्रियाम्।
लक्ष्मीं प्रियसखीं देवीं नमामच्युतवल्लभाम्।

क- वायुर्धनं, ख- वृत्रहा, ग- नाशुभामतिः, घ- माधवीं।

प्रश्न 10- महालक्ष्मीं च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि।
तन्नो .... प्रचोदयात्।।

क- वायुर्धनं, ख- लक्ष्मीः, ग- नाशुभामतिः, घ- सरोजहस्ते।

इस प्रकार आपने अभी लक्ष्मी सूक्त को जाना। इसके पाठ से लक्ष्मी जी प्रसन्न होती है।

3.4.2 श्री लक्ष्मी जी की प्रसन्नता हेतु महालक्ष्म्यष्टक स्तोत्र का पाठ –

इस प्रकरण में आप महालक्ष्म्यष्टक स्तोत्र का पाठ एवं उसका महत्व जानेगें। इसके ज्ञान से आपको महालक्ष्म्यष्टक स्तोत्र के पाठ का ज्ञान आपको जायेगा।

इन्द्र उवाच-

नमस्तेस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते ।
शंखचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मी नमोस्तुते ।
नमस्ते गरुडारूढ़े कोलासुरभयंकरी ।
सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मी नमोस्तुते ।
सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्टभयंकरी ।
सर्वदुखहरे देवि महालक्ष्मी नमोस्तुते ।
सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी ।
मन्त्रपूते सदादेवि महालक्ष्मीनमोस्तुते ।
आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्तिमहेश्वरी ।
योगजे योगसम्भूते महालक्ष्मी नमोस्तुते ।
स्थूलसूक्ष्ममहारौद्रे महाशक्ति महोदरे ।
महापापहरे देवि महालक्ष्मी नमोस्तुते ।
पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणी ।

परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मी नमोस्तुते ।
श्वेताम्बरधरे देवि नानालंकारभूषिते ।
जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मी नमोस्तुते ।
महालक्ष्म्यष्टकं स्तोत्रं यः पठेत् भक्तिमान्नरः ।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा ।
एककाले पठेन्नित्यं महापापविनाशनम् ।
द्विकालं यः पठेन्नित्यं धनधान्यसमन्वितः ।
त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रु विनाशनम् ।
महालक्ष्मीर्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा ।।
इतीन्द्रकृतं महालक्ष्म्यष्टकम्।

इस महालक्ष्म्यष्टक का निर्माण इन्द्र जी के द्वारा किया गया है। इसका महत्व बतलाते हुये कहा गया है कि जो भी भक्तिमान होकर मनुष्य इस महालक्ष्म्यष्टक का पाठ करता है वह सभी प्रकार की सिद्धियों को प्राप्त करता है। राज्य की भी प्राप्ति इस स्तोत्र के पाठ से होती है। एक समय में पाठ करने से महापाप का विनाश होता है, दो काल यानी दो समय पढ़ने से धन एवं धान्य से व्यक्ति समन्वित होता है। तीन काल यानी तीनों समयों में पढ़ने से व्यक्ति महा शत्रुओं का विनाश होता है तथा महालक्ष्मी प्रसन्न होकर वर देने वाली होती है।

इस प्रकार भगवती लक्ष्मी जी की प्रसन्नता के लिये उनके परम प्रिय स्तोत्र महालक्ष्म्यष्टक स्तोत्र के विषय में आपने इस प्रकरण में विस्तार से जाना । आशा है इसके बारे में जानकारी हो गयी होगी। अब हम इसको आधार बनाकर कुछ प्रश्न बनाने जा रहे हैं जिससे आपका ज्ञान इस विषय में और प्रौढ़ हो जायेगा। इसमें प्रश्नों या संबंधित शब्दों को दिया गया है जिसके आगे दिये गये रिक्त स्थान को दिये गये विकल्पों से प्रपूरित करना है। प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित
प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- नमस्तेस्तु महामाये श्रीपीठे ....।
शंखचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मी नमोस्तुते।

क- सुरपूजिते, ख- कोलासुरभयंकरी, ग- सर्ववरदे, घ- सिद्धिबुद्धिप्रदे।

प्रश्न 2- नमस्ते गरुडारूढे ....।

सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मी नमोस्तुते।

क- सुरपूजिते, ख- कोलासुरभयंकरी, ग- सर्ववरदे, घ- सिद्धिबुद्धिप्रदे।

प्रश्न 3- सर्वज्ञे .... सर्वदुष्टभयंकरी।

सर्वदुखहरे देवि महालक्ष्मी नमोस्तुते।

क- सुरपूजिते, ख- कोलासुरभयंकरी, ग- सर्ववरदे, घ- सिद्धिबुद्धिप्रदे।

प्रश्न 4- .... देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी।

मन्त्रपूते सदादेवि महालक्ष्मीनमोस्तुते।

क- सुरपूजिते, ख- कोलासुरभयंकरी, ग- सर्ववरदे, घ- सिद्धिबुद्धिप्रदे।

प्रश्न 5- आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्तिमहेश्वरी।

योगजे .... महालक्ष्मी नमोस्तुते।

क- योगसम्भूते, ख- महोदरे, ग- परमेशि, घ- श्वेताम्बरधरे।

प्रश्न 6- स्थूलसूक्ष्ममहारौद्रे महाशक्ति ....।

महापापहरे देवि महालक्ष्मी नमोस्तुते।

क- योगसम्भूते, ख- महोदरे, ग- परमेशि, घ- श्वेताम्बरधरे।

प्रश्न 7- पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणी।

.... जगन्मातर्महालक्ष्मी नमोस्तुते।

क- योगसम्भूते, ख- महोदरे, ग- परमेशि, घ- श्वेताम्बरधरे।

प्रश्न 8- .... देवि नानालंकारभूषिते।

जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मी नमोस्तुते।

क- योगसम्भूते, ख- महोदरे, ग- परमेशि, घ- श्वेताम्बरधरे।

प्रश्न 9- महालक्ष्म्यष्टकं स्तोत्रं यः पठेत् भक्तिमान्नरः।

सर्वसिद्धिमवाप्नोति .... प्राप्नोति सर्वदा।

क- योगसम्भूते, ख- राज्यं, ग- परमेशि, घ- श्वेताम्बरधरे।

प्रश्न 10- एककाले पठेन्नित्यं महापाविनाशनम्।

द्विकालं यः पठेन्नित्यं ....।

क- योगसम्भूते, ख- महोदरे, ग- धनधान्यसमन्वितः, घ- श्वेताम्बरधरे।

3.4.3 महालक्ष्मी जी की आरती-

आरती के बिना कोई भी पूजन कार्य पूर्णतया सम्पन्न नही माना जाता है। इसलिये महालक्ष्मी जी आरती इस प्रकार दी जा रही है। इसके सम्यक् प्रकार से गायन से लक्ष्मी जी की आरती उत्तम रीति से की जा सकती है।

ओं जय लक्ष्मी माता मैया जै लक्ष्मी माता
तुमको निसिदिन सेवत, हर विष्णु धाता। ओ जय लक्ष्मी माता।
उमा, रमा, ब्रह्माणि, तुम ही जगमाता।
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता। ओं जय लक्ष्मी माता।
दुर्गा रूप निरंजनि, सुख सम्पत्ति दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत, नारद ऋषि गाता। ओं जय लक्ष्मी माता।
तुम पाताल निवासिनि, तुम ही शुभ दाता।
कर्म प्रभाव प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता। ओं जय लक्ष्मी माता।
जिस घर में तुम रहती, तहॅं सब सद्गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहि घबराता। ओं जय लक्ष्मी माता।
तुम बिन यज्ञ न होते, व्रत भी न हो पाता।
खान पान का वैभव, सब तुमसे आता। ओं जय लक्ष्मी माता।
शुभ गुण मंदिर सुन्दर, क्षीरोदधि जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोइ नही पाता। ओं जय लक्ष्मी माता।
महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई जन गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता। ओं जय लक्ष्मी माता।

इस प्रकार भगवती लक्ष्मी जी की प्रसन्नता के लिये उनकी आरती के विषय में आपने इस प्रकरण में विस्तार से जाना । आशा है इसके बारे में जानकारी हो गयी होगी। अब हम इसको आधार बनाकर कुछ प्रश्न बनाने जा रहे हैं जिससे आपका ज्ञान इस विषय में और प्रौढ़ हो जायेगा। इसमें प्रश्नों या संबंधित शब्दों को दिया गया है जिसके आगे दिये गये रिक्त स्थान को दिये गये विकल्पों से प्रपूरित करना है। प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- ओं जय लक्ष्मी माता मैया जै लक्ष्मी माता

तुमको .... सेवत, हर विष्णु धाता। ओ जय लक्ष्मी माता।

क- निसिदिन, ख- चन्द्रमा, ग- निरंजनि, ध- पाताल।

प्रश्न 2- उमा, रमा, ब्रह्माणि, तुम ही जगमाता।

सूर्य .... ध्यावत, नारद ऋषि गाता। ओं जय लक्ष्मी माता।

क- निसिदिन, ख- चन्द्रमा, ग- निरंजनि, ध- पाताल।

प्रश्न 3- दुर्गा रूप ...., सुख सम्पत्ति दाता।

जो कोई तुमको ध्यावत, नारद ऋषि गाता। ओं जय लक्ष्मी माता।

क- निसिदिन, ख- चन्द्रमा, ग- निरंजनि, ध- पाताल।

प्रश्न 4- तुम .... निवासिनि, तुम ही शुभ दाता।

कर्म प्रभाव प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता। ओं जय लक्ष्मी माता।

क- निसिदिन, ख- चन्द्रमा, ग- निरंजनि, ध- पाताल।

प्रश्न 5- जिस घर में तुम रहती, तहॅं सब .... आता।

सब सम्भव हो जाता, मन नहि घबराता। ओं जय लक्ष्मी माता।

क- सद्गुण, ख- वैभव, ग- क्षीरोदधि, ध- रत्न चतुर्दश।

प्रश्न 6- तुम बिन ....होते, वरत न हो पाता।

क- निसिदिन, ख- यज्ञ न , ग- निरंजनि, ध- पाताल।

प्रश्न 7- खान पान का ...., सब तुमसे आता । ओं जय लक्ष्मी माता।

क- सद्गुण, ख- वैभव, ग- क्षीरोदधि, ध- रत्न चतुर्दश।

प्रश्न 8- शुभ गुण मंदिर सुन्दर, ... जाता।

क- सद्गुण, ख- वैभव, ग- क्षीरोदधि, ध- रत्न चतुर्दश।

प्रश्न 9-.............. तुम बिन, कोइ नही पाता। ओं जय लक्ष्मी माता।

क- सदुण, ख- वैभव, ग- क्षीरोदधि, ध- रत्न चतुर्दश।

प्रश्न 10- महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई जन गाता।

उर .... समाता, पाप उतर जाता। ओं जय लक्ष्मी माता।

क- आनन्द, ख- वैभव, ग- क्षीरोदधि, ध- रत्न चतुर्दश।

3.5 सारांश-

इस इकाई में श्री लक्ष्मी जी की आरती एवं स्तुति विचार संबंधी प्रविधियों का अध्ययन आपने किया। श्री लक्ष्मी जी की आरती एवं स्तुति विचार के अभाव में दीपावली आदि के अवसर पर, लक्ष्मी यज्ञादि अनुष्ठानों के अवसर पर पूजनादि का सम्पादन किसी भी व्यक्ति द्वारा ठीक ढंग से नही हो सकता है। क्योकि इसमें लक्ष्मी माता की ही उपासना की जाती है। सभी सुख, सुविधा, शक्ति, भुक्ति, मुक्ति की दाता एवं ज्ञान पुंज रूपा आह्लादिनी महालक्ष्मी जी की पूजा अवश्य करनी चाहिये। मां लक्ष्मी जी भाव से की गयी समस्त प्रकार के पूजन या स्तोत्र पाठ से परम प्रसन्न होती हैं। इसलिये मां लक्ष्मी की पूजा अवश्य करनी चाहिये। इसके लिये यथा उपलब्ध उपचारों से मां की श्रद्धा भक्ति एवं शुचिता से दीपावली या अन्य पर्व इत्यादि के समय महालक्ष्मी पूजन करना चाहिये। ताकि हमारा जीवन सुखमय, आनन्दमय, सात्विक विचारों से परिपूर्ण एवं वर्ष पर्यन्त पुत्र पौत्र सुख, हर्ष उल्लास, ग्रहों की शान्ति, कायिक, वाचिक एवं मानसिक पीड़ा की निवृत्ति के लिये, भूत, प्रेत, डाकिनी, शाकिनी, बेतालादि की शान्ति के लिये, अखण्ड लक्ष्मी की प्राप्ति और कोष को आगे बढ़ाने के लिये, निरोगी काया के लिये, व्यापार को बढ़ाने के लिये, लोक कल्याण के लिये, अपने आश्रितों का पोषण करने के लिये महालक्ष्मी पूजन करना चाहिये।

महालक्ष्मी जी के स्वरूप का वर्णन करते हुये कहा गया है कि वह देवि जो पद्म यानी कमल के आसन पर स्थित है। दस महादेवि का कटि तट यानी कमर का तट विपुल अर्थात् विशद है। माताजी की आखें कमल के पत्र के समान है। महालक्ष्मी जी की गम्भीर आवर्तन वाली नाभि है। शुभ्र उत्तरीय वस्त्रों से सुशोभित हो रही है। हे लक्ष्मी माता आपका रूप दिव्य है। यानी माता लक्ष्मी के रूप से तेज प्रकट हो रहा है। मणि गणों से माता लक्ष्मी का रूप विभूषित हो रहा है। हेम कुम्भ यानी सोने के घड़े से आपको स्नान कराया जाता है। इस मातेश्वरी के हाथ में कमल सर्वदा सुशोभित हो रहा है। ऐसी माता लक्ष्मी जो सभी प्रकार के मंगल कार्यों से युक्त होती है वह लक्ष्मी मेरे घर मे वास करें।

अथर्व वेद के 7.115.4 में दो प्रकार की लक्ष्मीयों का वर्णन मिलता है। वहां कहा गया है कि- रमन्तां पुण्या लक्ष्मीर्या पापीस्ता अनीनशम् यानी पुण्या लक्ष्मी हमारे घर में निवास करे तथा जो अनर्थमूला लक्ष्मी है वह विनष्ट हो जावे। इसकी चर्चा श्री सूक्तम् में भी करते हुये बतलाया गया है कि

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान्निर्णुद मे गृहात् यानी क्षुधा यानी भूखे रहना, पिपासा यानी प्यासे रहना, मलां यानी मलयुक्ता लक्ष्मी तथा ज्येष्ठा अलक्ष्मी नष्ट हों, अभूति, असमृद्धि ये सभी मेरे घर से निकल जायं। लक्ष्मी जी की उत्पत्ति समुद्र मन्थन से हुयी है ऐसा मिलता है। समुद्र मन्थन से चौदह रत्न निकले थें जिनमें से एक लक्ष्मी जी को बतलाया गया है। इनका विवाह श्रीमन्नारायण भगवान से हुआ है इसलिये लक्ष्मी जी सदैव नारायण भगवान के साथ रहती है इसलिये प्रायः सुना जाता है कि लक्ष्मी नारायण भगवान की जै।

3.6 पारिभाषिक शब्दावलियां-

हिरण्यवर्णां - सोने के रंग वाली, हरिणीं- दुख हरण करने वाली, सुवर्णरजतस्रजाम्- सोने एवं चांदी की माला वाली, हिरण्यमयीं- स्वर्ण से समन्वित, लक्ष्मीं- लक्ष्मी जी, जातवेद- अग्नि, म- मेरे लिये, आवह- आमन्त्रित करिये, मनपगामिनीम्- चंचला, यस्यां - जिसका, हिरण्य- स्वर्ण, विन्देयं - जाना जाता है, गामश्वं - गाय धोड़ा, अश्व- धोड़ा, हस्ति- हाथी, नाद - ध्वनि, श्रियं देवीं- लक्ष्मी देवी, उपह्वये - समीप में आवे, स्मितां- स्मित हास करने वाली, हिरण्यप्राकारा- हिरण्य के आकार की, आर्द्रां- द्रवित हृदय वाली, ज्वलन्तीं- जाज्वल्यमान होती हुयी, तृप्ता- तृप्त रहने वाली, तर्पयन्तीम्- तर्पित की जाने वाली, पद्म- कमल, स्थिता- स्थित रहने वाली, पद्मवर्णा - कमल के रंग की, इह- यहां, उप- समीप, ह्वये- आवाहन करता हूॅ, श्रियम्- लक्ष्मी के लिये, चन्द्रां प्रभासां- चनद्र के समान आभा वाली, यशसा- यश से, ज्वलन्तीं - प्रकाशमान, शरणं प्रपद्ये- शरण में अपने को समर्पित करता हॅू, अलक्ष्मीर्मे - मेरी अलक्ष्मी, नश्यतां - नष्ट करने के लिये, त्वां- आपका, वृणे- वरण करता हॅू, आदित्य वर्णे- सूर्य के समान वर्ण वाली, तपसो - ताप से, अधिजातो - उत्पन्न, वनस्पति- पौधा, तव - आपका, वृक्षोथविल्वः- विल्ववृक्ष, उसका- उसका, तपसा- गर्मी से, नुदन्तु- उत्पन्न होता है,
उपैतु - समीप, मां- मुझे, देवसख- देवताओं के सखा, कीर्ति- कीर्तियॉ, मणिना- मणियों, सह- साथ, प्रदुर्भूतोस्मि -उत्पन्न होती हो, राष्ट्रे स्मिन् - इस राष्ट्र में, कीर्ति- कीर्ति, ऋद्धि - धन, ददातु- दें, मे- मुझे, क्षुत्पिपासा - क्षुधा, प्यास, मलां - मल युक्ता, ज्येष्ठामलक्ष्मीं: अलक्ष्मी, नाश्याम्यहम्- उसका मैं नाश करता हॅू, अभूति- नही होना, असमृद्धिं - समृद्धि का अभाव, सर्वां - सभी, निर्णुद- निकल जांय, मे- मेरे, गृहात्- घर से, गन्धद्वारां - गन्ध द्वार यूक्त, दुराधर्षां - कठिन, नित्यपुष्टां- प्रतिदिन पुष्ट, करीषिणीम्- करने की इच्छा रखने वाली, ईश्वरीं सर्वभूतानां- सभी प्रणियों की ईश्वरी, तामिहोपह्वये श्रियम्- उस लक्ष्मी का यहां आवाहन करता हॅू। कर्दमेन - कींचड़ से उत्पन्न, श्रियं - लक्ष्मी का, वासय- वास हो, मे - मेरे, कुले -कुल में, मातरं - माता, पद्ममालिनीम्- कमल की माला धारण की हुयी, आपः- जल, सृजन्तु- निर्माण करें, स्निग्धानि- पंचदशर्चं - पन्द्रह ऋचाओं वाला सततं - हमेशा, जपेत्- जप करना चाहिये।

3.7अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

पूर्व में दिये गये सभी अभ्यास प्रश्नों के उत्तर यहां दिये जा रहे हैं। आप अपने से उन प्रश्नों को हल कर लिये होगें। अब आप इन उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कर लीजिये। यदि गलत हो तो उसको सही करके पुनः तैयार कर लीजिये। इससे आप इस प्रकार के समस्त प्रश्नों का उत्तर सही तरीके से दे पायेगें।

3.3.1 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, 2-ख, 3-ग, 4-घ, 5-क, 6-ग, 7-ख, 8-घ, 9-ख, 10-ग।

3.3.2 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, 2-ख, 3-ग, 4-घ, 5-क, 6-ख, 7-ग, 8-घ, 9-क, 10-ग।

3.4.1 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, 2-ख, 3-ग, 4-घ, 5-क, 6-ख, 7-ग, 8-घ, 9-घ, 10-ख।

3.4.2 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, 2-ख, 3-ग, 4-घ, 5-क, 6-ख, 7-ग, 8-घ, 9-ख, 10-ग ।

3.4.3 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, 2-ख, 3-ग, 4-घ, 5-क, 6-ख, 7-ख, 8-ग, 9-घ, 10-क।

3.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1-आरती संग्रह।

2-क्यों-भाग-1

3-क्यों- भाग-2।

4-शब्दकल्पद्रुमः।

5-आह्निक सूत्रावलिः।

6-प्रतिष्ठा मयूख।

7-पूजन- विधान।

8-संस्कार एवं शान्ति का रहस्य।

3.9- सहायक उपयोगी पाठ्य सामग्री-

1- दैनिक आरती स्तुति एवं स्तोत्र।

2- स्तोत्ररत्नावलिः।

3- श्री लक्ष्मी उपासना।

3.10 निबंधात्मक प्रश्न-

1- श्री लक्ष्मी जी का परिचय बतलाइये।

2- श्री लक्ष्मी जी का स्वरूप बतलाइये।

3- श्री सूक्त का परिचय लिखिये।

4- लक्ष्मी सूक्त नामक सूक्त लिखिये।

5- महालक्ष्म्यष्टक स्तोत्र लिखिये।

6- श्रीसूक्तम् लिखिये।

7- महालक्ष्म्यष्टक स्तोत्र पाठ का फल लिखिये।

8- लक्ष्मी जी की आरती लिखिये।

9- दुर्गा सप्तशती के अनुसार महालक्ष्मी का ध्यान लिखिये।

10- लक्ष्मी सूक्त पाठ का फल लिखिये।

इकाई 4 - श्री सत्यनारायण जी की आरती एवं स्तुति

इकाई की संरचना

4.1प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 श्री सत्यनारायण जी का स्वरूप विचार एवं पुरुषसूक्त पाठ

4.3.1 श्री सत्यनारायण जी का स्वरूप विचार

4.3.2 श्री सत्यनारायण जी के प्रसन्नार्थ पुरूष सूक्त पाठ

4.4 श्री सत्यनाराण जी की स्तोत्र एवं आरती

4.4.1 नारायणाष्टकम्

4.4.2 श्री सत्यनारायण जी की आरती

4.5 सारांश

4.6 पारिभाषिक शब्दावली

4.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

4.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

4.9 सहायक उपयोगी पाठ्यसामग्री

4.10 निबन्धात्मक प्रश्न

4.1 प्रस्तावना

इस इकाई में श्री सत्यनारायण जी की आरती एवं स्तुति विचार संबंधी प्रविधियों का अध्ययन आप करने जा रहे हैं। इससे पूर्व की प्रविधियों का अध्ययन आपने कर लिया होगा। कर्मकाण्ड में धन की आदि शक्ति के रूप में पराम्बा भगवती लक्ष्मी को जाना गया है। लक्ष्मी जी सदैव भगवान श्री नारायण के पास रहती है इसलिये सत्य नारायण भगवान की उपासना से चारो पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की प्राप्ति होती है।

सत्यं परं धीमहि कहते हुये श्री व्यास जी ने श्रीमद्भागवत महापुराण के प्रथम स्कन्ध के प्रथम अध्याय में सत्य नारायण भगवान की वन्दना की है। वहॉं प्रश्न उठता है कि मंगलाचरण में तो किसी देवता का नाम व्यास जी ने लिया ही नही। परन्तु ध्यान से देखने पर मिलता है कि सत्य की वन्दना व्यास जी के द्वारा की गयी है। वर्तमान में पूजा अर्चन में सबसे प्रसिद्ध है श्री सत्यनारायण व्रत कथा। क्योंकि एक बार नारद जी कलिकाल के जीवों के दुख को देखकर दुख मुक्ति का उपाय स्वयं श्री नारायण भगवान से ही पूछा था। भगवान बतलाया था कि श्री सत्यनारायण भगवान की कथा कलिकाल के दुखों से मुक्ति प्रदान करने वाली है। इसकी विशेषता यह है न्यून व्यय साध्य है। पत्रं पुष्पं फलं तोयं यानी जो उपलब्ध हो उसी से श्री सत्यनाराण की उपासना अत्यन्त आनन्द प्रदान करने वाली है।

इस इकाई के अध्ययन से आप श्री सत्यनारायण जी की आरती एवं स्तुति इत्यादि के विचार करने की विधि का सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर सकेगें। इससे श्री सत्यनारायण जी की आरती एवं स्तुति आदि विषय के अज्ञान संबंधी दोषों का निवारण हो सकेगा जिससे सामान्य जन भी अपने कार्य क्षमता का भरपूर उपयोग कर समाज एवं राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकेगें। आपके तत्संबंधी ज्ञान के कारण ऋषियों एवं महर्षियों का यह ज्ञान संरक्षित एवं सवंर्धित हो सकेगा। इसके अलावा आप अन्य योगदान दें सकेगें, जैसे - कल्पसूत्रीय विधि के अनुपालन का सार्थक प्रयास करना, भारत वर्ष के गौरव की अभिवृद्धि में सहायक होना, सामाजिक सहभागिता का विकास, इस विषय को वर्तमान समस्याओं के समाधान हेतु उपयोगी बनाना आदि।

4.2 उद्देश्य-

अब श्री सत्यनारायण जी की आरती एवं स्तुति विचार की आवश्यकता को आप समझ रहे होगें। इसका उद्देश्य भी इस प्रकार आप जान सकते हैं -

- ❖ कर्मकाण्ड को लोकोपकारक बनाना।
- ❖ श्री सत्यनारायण जी की आरती एवं स्तुति सम्पादनार्थ शास्त्रीय विधि का प्रतिपादन।
- ❖ सत्यनारायण पूजन के कर्मकाण्ड में व्याप्त अन्धविश्वास एवं भ्रान्तियों को दूर करना।
- ❖ प्राच्य विद्या की रक्षा करना।
- ❖ लोगों के कार्यक्षमता का विकास करना।

❖ समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करना।

4.3. श्री सत्यनारायण जी का स्वरूप विचार एवं पुरुषसूक्त पाठ -

इसमें श्री सत्यनारायण जी का स्वरूप विचार एवं पुरुषसूक्त पाठ का ज्ञान आपको कराया जायेगा क्योकि बिना इसके परिचय के श्री सत्यनारायण जी का आधारभूत ज्ञान नही हो सकेगा। आधारभूत ज्ञान हो जाने पर श्रद्धा एवं समर्पण की भावना का उद्भव होता है। भावो हि विद्ते देवः के अनुसार भावना होने पर देवत्व को प्राप्त किया जा सकता है। इसलिये श्री सत्यनारायण जी का स्वरूप विचार एवं पुरुषसूक्त पाठ इस प्रकार है-

4.3.1 श्री सत्यनारायण जी का स्वरूप विचार-

व्यास जी महाराज ने कहा कि एक समय नैमिषारण्य नाम स्थान में शौनकादि ऋषियों ने परम पौराणिक श्री सूत जी से प्रश्न किया। ऋषियों ने कहा कि किस व्रत या तपस्या से वांच्छित फल की प्राप्ति हो सकती है? उन सारी चीजों की सुनने की इच्छा है। कृपाकर आप कहें। श्री सूत जी ने कहा कि नारद जी ने भी भगवान कमलापति नारायण भगवान से इस प्रकार का प्रश्न किया था। हे ऋषिगणों उस समय भगवान ने जो कहा था उसी को यदि आपलोग भी सुन लेगें तो आपके भी प्रश्नों का उत्तर उसी से मिल जायेगा।

एक बार नारद ऋषि लोगों के ऊपर कृपा की आकांक्षा से विविध लोकों में भ्रमण करते हुये मृत्यु लोक में आये। वहां उन्होने सभी जनों को विभिन्न प्रकार के कष्टों से समन्वित पाया। विभिन्न प्रकार के योनियों में उत्पन्न होकर पापकर्मों के फलों को भोगते हुये भी देखा। उन्होनें सोचा कि कौन सा ऐसा उपाय किया जाय जिससे इन लोगों के दुख दूर हो जाय। बार - बार चिन्तन करने पर भी कोई उपाय न पाकर भगवान श्री विष्णु के लोक में गये। वहॉ पर भगवान के स्वरूप का इस प्रकार दर्शन किया। भगवान श्री नारायण शुक्ल वर्ण के वस्त्रों को धारण किये हुये हैं। इनको चार भुजायें हैं, जिनमें शंख, चक्र, गदा, और पद्म धारण किये हुये है। कण्ठ में भगवान वनमाला धारण किये हुये है। वनमाला की व्याख्या में लिखा गया है कि- तुलसी, कुन्द, मन्दार पारिजातश्चचम्पकैः, पंचभिर्ग्रथिता माला वनमाला विभूषिता। तुलसी, कुन्द, मन्दार, पारिजात एवं चम्पक के पुष्प से निर्मित माला को वनमाला कहा जाता है। ऐसा दिव्य स्वरूप देखकर नारद भगवान श्री नारायण की स्तुति करने लगे। नारद जी ने कहा-

नमो वांग्मनसातीत रूपायानन्तशक्तये। आदि मध्यान्तहीनाय निर्गुणाय गुणात्मने ।।

अर्थात् वाणी एवं मनस से परे स्वरूप वाले, अनन्त स्वरूप एवं शक्ति वाले, आदि, मध्य एवं अन्त से हीन, निर्गुण रूप सकल गुणों के धाम आपको प्रणाम है। भगवान के स्वरूप का वर्णन करते हुये कहा गया है कि-

सशंखचक्रं सकिरीटकुण्डलं सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणं।
सहारवक्षस्थलकौस्तुभश्रियं नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम्।

अर्थात् भगवान श्री नारायण शंख एवं चक्र धारण किये रहते हैं। किरीट यानी मुकुट और कण्डल तो कान में धारण किया जाता है उसको धारण किये रहते हैं। पीताम्बर वाला वस्त्र धारण किये हुये हैं। कमल के समान भगवान की आंखें हैं। हार यानी माला सहित वक्षस्थल सुशोभित हो रहा है। कौस्तुभ मणि सहित भगवान लक्ष्मी जी के साथ विराजमान है ऐसे चार भुजा धारी भगवान श्री विष्णु को शिर से प्रणाम करता हूॅ। श्री लक्ष्मीनृसिंह स्तोत्र में भगवान श्री नारायण के स्वरूप का वर्णन करते हुये कहा गया है कि-

हे अति शोभायमान क्षीरसमुद्र में निवास करने वाले, हाथ में चक्र धारण करने वाले, नागनाथ के फणों की मणियों से देदीप्यमान मनोहर मूर्ति वाले, हे योगीश संसार सागर के लिये नौका स्वरूप आप अपने चरण कमल का सहारा दीजिये। आपके अमल चरण कमल ब्रह्मा, इन्द्र, रुद्र, आदि के किरीटों की कोटियों के समूह से अति देदीप्यमान हो रहे है। हे लक्ष्मी के कुच कमल के राजहंस श्री लक्ष्मी नृसिंह मुझे अपने कर कमल का सहारा दीजिये।

ध्येयः सदा सवितृ मण्डल मध्यवर्ति
नारायणः सरसिजासन सन्निविष्टः।
केयूरवान् मकर कुण्डलवान् किरीटी,
हारी हिरण्मय वपुर्धृत शंखचक्रः।।

इस श्लोक में भगवान के सूर्य समान स्वरूप की वन्दना की गयी है। भगवान नारायण कमल के आसन पर सन्निविष्ट है। केयूर एवं कुण्डल धारण किये हुये मुकुट वाले तथा स्वर्ण के समान देदीप्यमान शरीर वाले शंख एवं चक्र को धारण करने वाले, सदैव हार धारण करने वाले आपका मैं सदा ध्यान करता हूॅ।

इस प्रकार अनेक स्तोत्रों में भगवान नारायण के स्वरूप का वर्णन किया गया है। वेद तो कहता है नारायण रूपी जो पुरुष है वह सहस्रों यानी हजारों शिरों वाला है, सहस्रों आंखों वाला, सहस्रों पैरों वाला, भूमि पर सम्पूर्ण रूप से व्याप्त है, परन्तु दस अंगुल मे बैठा हुआ है। वह सब कुछ जानता है यानी भूतं जो हो चुका और जो होने वाला है। अमृत का भी स्वामी है और अन्नों में भी वास करता है।

इस प्रकार भगवान श्री सत्यनारायण जी के स्वरूप के विषय में आपने इस प्रकरण में विस्तार से जाना। आशा है इसके बारे में जानकारी हो गयी होगी। अब हम इसको आधार बनाकर कुछ प्रश्न बनाने जा रहे हैं जिससे आपका ज्ञान इस विषय में और प्रौढ़ हो जायेगा। इसमें प्रश्नों या संबंधित

शब्दों को दिया गया है जिसके आगे दिये गये रिक्त स्थान को दिये गये विकल्पों से प्रपूरित करना है। प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- नमो वांग्............तीत रूपायानन्तशक्तये।

क- वांग्, ख- मनसा, ग- रूपा, घ- आदि।

प्रश्न 2- .... मध्यान्तहीनाय निर्गुणाय गुणात्मने।।

क- वांग्, ख- मनसा, ग- रूपा, घ- आदि।

प्रश्न 3- सशंखचक्रं .... सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणं।

क- सशंखचक्रं, ख- सकिरीटकुण्डलं, ग- सपीतवस्त्रं, घ- सरसीरुहेक्षणं।

प्रश्न 4- सहारवक्षस्थलकौस्तुभश्रियं नमामि .... शिरसा चतुर्भुजम्।

क-सहारवक्षस्थलकौस्तुभश्रियं, ख- नमामि, ग- विष्णुं, घ- शिरसा ।

प्रश्न 5- ध्येयः सदा सवितृ .... मध्यवर्ति।

क- मण्डल, ख- सरसिजासन्, ग- मकर, घ- हिरण्मय।

प्रश्न 6- नारायणः .... सन्निविष्टः।

क- मण्डल, ख- सरसिजासन्, ग- मकर, घ- हिरण्मय।

प्रश्न 7- केयूरवान् ....कुण्डलवान् किरीटी।

क- मण्डल, ख- सरसिजासन्, ग- मकर, घ- हिरण्मय।

प्रश्न 8- हारी .... वपुर्धृत शंखचक्रः।।

क- मण्डल, ख- सरसिजासन्, ग- मकर, घ- हिरण्मय।

प्रश्न 9- भगवान का नेत्र किस पुष्प के समान है?

क- कमल, ख- गेंदा, ग- चमेली, ध-चम्पा।

प्रश्न 10- किरीट शब्द का अर्थ क्या है?

क- कीट, ख- कुण्डल, ग- मुकुट, ध- कूट।

4.3.2 श्री सत्यनारायण भगवान की प्रसन्नता हेतु पुरुष सूक्त पाठ-

ओं सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमि गुं सर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशांगुलम्।।
पुरुष एवेद गुं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।
एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः।
पादोस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादो स्येहा भवत्पुनः।
ततो विष्वंग् व्यक्रामत्साशनानशने अभि।
ततो विराडजायतविराजो अधिपूरुषः।
सजातो अत्यरिच्यतपश्चाद् भूमिमथोपुरः।
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूस्तांश्चक्रे व्वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये।
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दा गुं सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।
तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः।
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साद्ध्या ऋषयश्च ये।
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्या सीत्किं बाहू किमूरु पादा उच्येते।
ब्राह्मणोस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।

उरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां गुं शूद्रो अजायत।

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।

श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्चमुखादग्निरजायत।

नाब्भ्या आसीदन्तरिक्ष गुं शीष्णोर्द्यौः समवर्तत।

पद्भ्यां भूमिर्दिश: श्रोत्रात्तथा लोकान् अकल्पयन्।

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।

व्वसन्तो अस्यासीदाज्ज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।

सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः।

देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरुषं पशुम्।

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः ।।

इस प्रकार भगवान श्री सत्यनारायण जी की प्रसन्नता के लिये पुरुष सूक्त के विषय में आपने इस प्रकरण में विस्तार से जाना। आशा है इसके बारे में जानकारी हो गयी होगी। अब हम इसको आधार बनाकर कुछ प्रश्न बनाने जा रहे हैं जिससे आपका ज्ञान इस विषय में और प्रौढ़ हो जायेगा। इसमें प्रश्नों या संबंधित शब्दों को दिया गया है जिसके आगे दिये गये रिक्त स्थान को दिये गये विकल्पों से प्रपूरित करना है। प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- ओं सहस्रशीर्षा पुरुषः .... सहस्रपात्।

स भूमि गुं सर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशांगुलम्।।

क- सहस्राक्षः, ख- यद्भूतं, ग- महिमातो, घ- उदैत्पुरुषः।

प्रश्न 2- पुरुष एवेद गुं सर्वं .... यच्च भाव्यम्।

उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।

क- सहस्राक्षः, ख- यद्भूतं, ग- महिमातो, घ- उदैत्पुरुषः।

प्रश्न 3- एतावानस्य .... ज्यायांश्च पूरुषः।

पादोस्य व्विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।

क- सहस्राक्षः, ख- यद्भूतं, ग- महिमातो, घ- उदैत्पुरुषः।

प्रश्न 4- त्रिपादूर्ध्व .... पादो स्येहा भवत्पुनः।

ततो विष्वंग् व्यक्रामत्साशनानशने अभि।।

क- सहस्राक्षः, ख- यद्भूतं, ग- महिमातो, घ- उदैत्पुरुषः।

प्रश्न 5- ततो व्विराडजायतव्विराजो ....।

सजातो अत्यरिच्यतपश्चाद् भूमिमथोपुरः।।

क- अधिपूरुषः, ख- सम्भृतं, ग- सामानि, घ- अजायन्त।

प्रश्न 6- तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः .... पृषदाज्यम्।

पशूस्तांश्चक्रे व्वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये।

क- अधिपूरुषः, ख- सम्भृतं, ग- सामानि, घ- अजायन्त।

प्रश्न 7- तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः ....जज्ञिरे।

छन्दा गुं सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।

क- अधिपुरुषः, ख- सम्भृतं, ग- सामानि, घ- अजायन्त।

प्रश्न 8- तस्मादश्वा .... ये के चोभयादतः।

गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः।

क- अधिपूरुषः, ख- सम्भृतं, ग- सामानि, घ- अजायन्त।

प्रश्न 9- तं यज्ञं .... प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः।

तेन देवा अयजन्त साद्ध्या ऋषयश्च ये।

क- अधिपूरुषः, ख- बर्हिषि ग- सामानि, घ- अजायन्त।

प्रश्न 10- यत्पुरुषं व्यदधुः .... व्यकल्पयन्।

मुखं किमस्या सीत्किं बाहू किमूरु पादा उच्येते।

क- अधिपूरुषः, ख- कतिधा, ग- सामानि, घ- अजायन्त।

इस प्रकार आपने श्री सत्यनारायण भगवान के स्वरूप एवं पुरुषसूक्त के बारे में जाना। अब हम श्री सत्यनारायण भगवान के स्तोत्र पाठ एवं आरती के विषय में अगले प्रकरण में चर्चा करने जा रहे हैं जो इस प्रकार है-

4.4.- श्री सत्यनारायण स्तोत्र एवं आरती

इस प्रकरण में श्री सत्यनारायण स्तोत्रों के बारे में एवं आरती के बारे में चर्चा करेगें। सर्व प्रथम श्री सत्यनारायणाष्टक इस प्रकार दिया जा रहा है-

4.4.1 श्रीसत्यनारायणाष्टकस्तोत्रम्-

आदिदेवं जगत्कारणं श्रीधरं, लोकनाथं विभुं व्यापकं शंकरम्।

सर्वभक्तेष्टदं मुक्तिदं माधवं, सत्यनारायणं विष्णुमीशं भजे।।
सर्वदा लोककल्याणपारायणं , देवगोविप्ररक्षार्थसद्विग्रहम्।
दीनहीनात्मभक्ताश्रयं सुन्दरम् , सत्यनारायणं विष्णुमीशं भजे।।
दक्षिणे यस्य गंगा शुभा शोभते, राजते सा रमा यस्य वामे सदा।
यः प्रसन्नाननो भाति भव्यश्च तं, सत्यनारायणं विष्णुमीशं भजे।।
संकटे संगरे यं जनः सर्वदा, स्वात्मभीनाशनाय स्मरेत् पीडितः।
पूर्णकृत्यो भवेत् यत्प्रसादच्च तम्, सत्यनारायणं विष्णुमीशं भजे।।
वांछितं दुर्लभं यो ददाति प्रभुः, साधवे स्वात्मभक्ताय भक्तिप्रियः।
सर्वभूताश्रयं तं हि विश्वम्भरं , सत्यनारायणं विष्णुमीशं भजे।।
ब्राह्मणः साधुवैश्यश्च तुंगध्वजो, ये भवन् विश्रुता यस्य भक्त्यामराः।
लीलया यस्य विश्वं ततं तं विभुं, सत्यनारायणं विष्णुमीशं भजे।
येनचा ब्रह्मबालतृणं धार्यते , सृज्यते पाल्यते सर्वमेतज्जगत्।
भक्तभावप्रियं श्रीदयासागरं, सत्यनारायणं विष्णुमीशं भजे।
सर्वकामप्रदं सर्वदा सत्प्रियं, वन्दितं देववृन्दैर्मुनीन्द्रार्चितम्।
पुत्रपौत्रादिसर्वेष्टदं शास्वतं , सत्यनारायणं विष्णुमीशं भजे।।
अष्टकं सत्यदेवस्य भक्त्या नरः, भावयुक्तो मुदा यस्त्रिसन्ध्यं पठेत्।
तस्य नश्यन्ति पापानि तेनाग्निना, इन्धनानीव शुष्काणि सर्वाणि वै।।

।। इति श्री सत्यनारायणाष्टकम्।।

इस प्रकार भगवान श्री सत्यनारायण जी की प्रसन्नता के लिये सत्यनारायणाष्टक के विषय में आपने इस प्रकरण में विस्तार से जाना । आशा है इसके बारे में जानकारी हो गयी होगी। अब हम इसको आधार बनाकर कुछ प्रश्न बनाने जा रहे हैं जिससे आपका ज्ञान इस विषय में और प्रौढ़ हो जायेगा। इसमें प्रश्नों या संबंधित शब्दों को दिया गया है जिसके आगे दिये गये रिक्त स्थान को दिये गये विकल्पों से प्रपूरित करना है। प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- आदिदेवं जगत्कारणं ...., लोकनाथं विभुं व्यापकं शंकरम्।

सर्वभक्तेष्टदं मुक्तिदं माधवं, सत्यनारायणं विष्णुमीशं भजे।।

क- श्रीधरं, ख- सुन्दरम्, ग- शुभा, ध- संगरे।

प्रश्न 2- सर्वदा लोककल्याणपारायणं , देवगोविप्ररक्षार्थसद्विग्रहम्।

दीनहीनात्मभक्ताश्रयं .... , सत्यनारायणं विष्णुमीशं भजे।।

क- श्रीधरं, ख- सुन्दरम्, ग- शुभा, ध- संगरे।

प्रश्न 3- दक्षिणे यस्य गंगा .... शोभते, राजते सा रमा यस्य वामे सदा।

यः प्रसन्नाननो भाति भव्यश्च तं, सत्यनारायणं विष्णुमीशं भजे।।

क- श्रीधरं, ख- सुन्दरम्, ग- शुभा, ध- संगरे।

प्रश्न 4- संकटे ....यं जनः सर्वदा, स्वात्मभीनाशनाय स्मरेत् पीडितः।

पूर्णकृत्यो भवेत् यत्प्रसादच्च तम्, सत्यनारायणं विष्णुमीशं भजे।।

क- श्रीधरं, ख- सुन्दरम्, ग- शुभा, ध- संगरे।

प्रश्न 5- वांछितं दुर्लभं यो ददाति प्रभुः, साधवे .... भक्तिप्रियः।

सर्वभूताश्रयं तं हि विश्वम्भरं , सत्यनारायणं विष्णुमीशं भजे।।

क- स्वात्मभक्ताय, ख- तुंगध्वजो, ग-पाल्यते, घ- सर्वकामप्रदं।

प्रश्न 6- ब्राह्मणः साधुवैश्यश्च ...., ये भवन् विश्रुता यस्य भक्त्यामराः।

लीलया यस्य विश्वं ततं तं विभुं, सत्यनारायणं विष्णुमीशं भजे।

क- स्वात्मभक्ताय, ख- तुंगध्वजो, ग-पाल्यते, घ- सर्वकामप्रदं।

प्रश्न 7- येनचा ब्रह्मबालतृणं धार्यते , सृज्यते .... सर्वमेतज्जगत्।

भक्तभावप्रियं श्रीदयासागरं, सत्यनारायणं विष्णुमीशं भजे।

क- स्वात्मभक्ताय, ख- तुंगध्वजो, ग-पाल्यते, घ- सर्वकामप्रदं।

प्रश्न 8- .. .. सर्वदा सत्प्रियं, वन्दितं देववृन्दैर्मुनीन्द्रार्चितम्।

पुत्रपौत्रादिसर्वेष्टदं शास्वतं , सत्यनारायणं विष्णुमीशं भजे।।

क- स्वात्मभक्ताय, ख- तुंगध्वजो, ग-पाल्यते, घ- सर्वकामप्रदं।

प्रश्न 9- अष्टकं सत्यदेवस्य भक्त्या नरः, ... मुदा यस्त्रिसन्ध्यं पठेत्।

क- स्वात्मभक्ताय, ख- भावयुक्तो, ग-पाल्यते, घ- सर्वकामप्रदं।

प्रश्न 10- तस्य नश्यन्ति पापानि ...., इन्धनानीव शुष्काणि सर्वाणि वै।।

क- स्वात्मभक्ताय, ख- तुंगध्वजो, ग-तेनाग्निना, घ- सर्वकामप्रदं।

इस प्रकार आपने श्री सत्यनारायणाष्टक को जाना। अब श्रीनारायणाष्टक स्तोत्र को लिखा जा रहा है।

4.4.1 श्रीनारायणाष्टकम्-

वात्सल्यादभयप्रदानसमयादार्तार्तिनिर्वापणा-

दौदार्यादघशोषणादगणित श्रेयः पदप्रापणात्।

सेव्यः श्रीपतिरेक एव जगतामेते भवन्साक्षिणः।

प्रह्लादश्च विभीषणश्च करिराट् पांचाल्यहल्या ध्रुवः।

प्रह्लादास्ति यदीश्वरो वद हरिः सर्वत्र मे दर्शय।

स्तम्भे चैवमिति ब्रुवन्तमसुरं तत्राविरासीद्धरिः।

वक्षस्तस्य विदारयन्निजनखैर्वात्सल्यमापादय-

न्नार्तत्राणपरायणः स भगवान्नारायणो मे गतिः।।

श्रीरामात्रविभीषणो अयमनघो रक्षोभयादागतः।

सुग्रीवानय पालयैनमधुना पौलस्त्यमेवागतम्।

इत्युक्त्वाभयमस्य सर्वविदितं यो राघवो दत्तवान्।

आर्तत्राणपरायणः स भगवान्नारायणो मे गतिः।।

नक्रग्रस्तपदं समुद्धतकरं ब्रह्मादयो भो सुराः।

पाल्यन्तामिति दीनवाक्यकरिणं देवेष्वशक्तेषु यः।

मा भैषीरिति यस्य नक्रहनने चक्रायुधः श्रीधरः।

आर्तत्राणपरायणः स भगवान्नारायणो मे गतिः।।

भो कृष्णाच्युत भो कृपालय हरे भो पाण्डवानां सखे।

क्वासि क्वासि सुयोधनादपहृतां भो रक्ष मामातुराम्।

इत्युक्तोक्षयवस्त्रसंभृततनुं यो अपालयद्द्रोपदीम्।

आर्तत्राणपरायणः स भगवान्नारायणो मे गतिः।।

यत्पादाव्जनखोदकं त्रिजगतां पापौघविध्वंसनं।

यन्नामामृतपूरकं च पिबतां संसारसंतारकम्।

पाषाणोपि यदंघ्रिपद्मरजसा शापान्मुनेर्मोचित।

आर्तत्राणपरायणः स भगवान्नारायणो मे गतिः।।

पित्राभ्रातरमुत्तमासनगतं चौत्तानपादि ध्रुवो।

दृष्ट्वा तत्सममारुरुक्षुरधृतो मात्रावमानं गतः।

यं गत्वा शरणं यदाप तपसा हेमाद्रि सिंहासनम्।

आर्तत्राणपरायणः स भगवान्नारायणो मे गतिः।।

आर्ता विष्णाः शिथिलाश्चभीता

घोरेषु च व्याधिषु वर्त्तमानाः।

संकीर्त्य नारायणशब्दमात्रं,

विमुक्तदुःखाः सुखिनो भवन्ति।।

।। इति श्रीनारायणाष्टकम् ।।

इस प्रकार भगवान श्री सत्यनारायण जी की प्रसन्नता के लिये श्रीनारायणाष्टक के विषय में आपने इस प्रकरण में विस्तार से जाना । आशा है इसके बारे में जानकारी हो गयी होगी। अब हम इसको आधार बनाकर कुछ प्रश्न बनाने जा रहे हैं जिससे आपका ज्ञान इस विषय में और प्रौढ़ हो जायेगा। इसमें प्रश्नों या संबंधित शब्दों को दिया गया है जिसके आगे दिये गये रिक्त स्थान को दिये गये विकल्पों से प्रपूरित करना है। प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- वात्सल्यादभयप्रदानसमयादार्तार्तिनिर्वापणा-

दौदार्यादघशोषणादगणित ....पदप्रापणात्।

क- श्रेयः, ख- सेव्यः, ग- वद हरिः, घ- वक्षस्तस्य

प्रश्न 2- .... श्रीपतिरेक एव जगतामेते भवन्साक्षिणः।

प्रह्लादश्च विभीषणश्च करिराट् पांचाल्यहल्या ध्रुवः।

क- श्रेयः, ख- सेव्यः, ग- वद हरिः, घ- वक्षस्तस्य

प्रश्न 3- प्रह्लादास्ति यदीश्वरो .... सर्वत्र मे दर्शय।

स्तम्भे चैवमिति बुरवन्तमसुरं तत्राविरासीद्धरिः।

क- श्रेयः, ख- सेव्यः, ग- वद हरिः, घ- वक्षस्तस्य।

प्रश्न 4- .... विदारयन्निजनखैर्वात्सल्यमापादय-

न्नार्तत्राणपरायणः स भगवान्नारायणो मे गतिः।।

क- श्रेयः, ख- सेव्यः, ग- वद हरिः, घ- वक्षस्तस्य।

प्रश्न 5- श्रीरामात्रविभीषणो अयमनघो रक्षोभयादागतः।

.... पालयैनमधुना पौलस्त्यमेवागतम्।

क- सुग्रीवानय, ख- राघवो, ग- गतिः, घ- ब्रह्मादयो।

प्रश्न 6- इत्युक्त्वाभयमस्य सर्वविदितं यो .... दत्तवान्।

क- सुग्रीवानय, ख- राघवो, ग- गतिः, घ- ब्रह्मादयो।

प्रश्न 7- आर्तत्राणपरायणः स भगवान्नारायणो मे ....।।

क- सुग्रीवानय, ख- राघवो, ग- गतिः, घ- ब्रह्मादयो।

प्रश्न 8- नक्रग्रस्तपदं समुद्धतकरं .... भो सुराः।

क- सुग्रीवानय, ख- राघवो, ग- गतिः, घ- ब्रह्मादयो।

प्रश्न 9-पाल्यन्तामिति .... देवेष्वशक्तेषु यः।

क- सुग्रीवानय, ख-दीनवाक्यकरिणं, ग- गतिः, घ- ब्रह्मादयो।

प्रश्न 10-यं गत्वा शरणं यदाप तपसा हेमाद्रि सिंहासनम्।

आर्तत्राणपरायणः स भगवान्नारायणो मे ....।।

क- सुग्रीवानय, ख-दीनवाक्यकरिणं, ग- गतिः, घ- ब्रह्मादयो।

4.4.2- श्री सत्यनारायण जी की आरती-

आरती में सर्व प्रथम चरणों की चार बार, नाभि की दो बार, मुख की एक बार एवं समस्त अंगों की सात बार आरती उतारना चाहिये। तत्पश्चात् शंख का जल छिड़कना चाहिये।

ओं जय लक्ष्मी रमणा, स्वामी जय लक्ष्मी रमणा।
सत्यनारायण स्वामी, जनपातक हरणा।। ओं जय लक्ष्मी रमणा।
रत्नजड़ित सिंहासन, अद्भुत छवि राजे।
नारद करत निराजन, धंटाधुनि बाजे।। ओ जय लक्ष्मी रमणा।
प्रकट भये कलिकारण, द्विज को दरश दियो।

बूढ़ो ब्राह्मण बनके, कंचन महल कियो। ओ जय लक्ष्मी रमणा

दुर्बल भील कठारो, श्रद्धा तज दीन्ही ।

सो फल भोग्यो प्रभु जी, पुनि स्तुति कीन्ही। ओं जय लक्ष्मी रमणा ।

भाव भक्ति के कारण, छिन-छिन रूप धर्यो ।

श्रद्धा धारण कीनी, जिनको काज सर्यो। ओं जय लक्ष्मी रमणा ।

ग्वाल बाल संग राजा, वन में भक्ति करी ।

मनवांछित फल दीनों, दीन दयाल हरी। ओं जय लक्ष्मी रमणा ।

चढ़त प्रसाद सवायो कदली फल मेवा ।

धूप दीप तुलसी से, राजी सत्यदेवा।। ओं जय लक्ष्मी रमणा ।

श्री सत्यनारायण जी की आरती, जो कोइ नर गावे ।

भणत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पति पावे। ओं जय लक्ष्मी रमणा ।।

इस प्रकार भगवान श्री सत्यनारायण जी की प्रसन्नता के लिये श्रीसत्यनारायणजी की आरती के विषय में आपने इस प्रकरण में विस्तार से जाना । आशा है इसके बारे में जानकारी हो गयी होगी। अब हम इसको आधार बनाकर कुछ प्रश्न बनाने जा रहे हैं जिससे आपका ज्ञान इस विषय में और प्रौढ़ हो जायेगा। इसमें प्रश्नों या संबंधित शब्दों को दिया गया है जिसके आगे दिये गये रिक्त स्थान को दिये गये विकल्पों से प्रपूरित करना है। प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- ओं जय लक्ष्मी रमणा, स्वामी जय लक्ष्मी रमणा।

सत्यनारायण स्वामी, ... हरणा।। ओं जय लक्ष्मी रमणा।

क- जनपातक, ख- निराजन, ग- कलिकारण, घ-भोग्यो।

प्रश्न 2- रत्नजड़ित सिंहासन, अद्भुत छवि राजे।

नारद करत ...., धंटाधुनि बाजे।। ओ जय लक्ष्मी रमणा।

क- जनपातक, ख- निराजन, ग- कलिकारण, घ-भोग्यो।

प्रश्न 3- प्रकट भये ...., द्विज को दरश दियो।

बूढ़ो ब्राह्मण बनके, कंचन महल कियो। ओ जय लक्ष्मी रमणा

क- जनपातक, ख- निराजन, ग- कलिकारण, घ-भोग्यो।

प्रश्न 4- दुर्बल भील कठारो, श्रद्धा तज दीन्ही।

सो फल .... प्रभु जी, पुनि स्तुति कीन्ही। ओं जय लक्ष्मी रमणा।

क- जनपातक, ख- निराजन, ग- कलिकारण, घ-भोग्यो।

प्रश्न 5- भाव भक्ति के कारण, ... रूप धर्यो।

क- धारण, ख- छिन छिन, ग- भक्ति, घ-मनवांछित।

प्रश्न 6 -श्रद्धा .... कीनी, जिनको काज सर्यो। ओं जय लक्ष्मी रमणा।

क- धारण, ख- छिन छिन, ग- भक्ति, घ-मनवांछित।

प्रश्न 7- ग्वाल बाल संग राजा, वन में ....करी।

क- धारण, ख- छिन छिन, ग- भक्ति, घ-मनवांछित।

प्रश्न 8-................ फल दीनों, दीन दयाल हरी। ओं जय लक्ष्मी रमणा।

क- धारण, ख- छिन छिन, ग- भक्ति, घ-मनवांछित।

प्रश्न 9- चढ़त प्रसाद .... कदली फल मेवा।

क- सवायो, ख- छिन छिन, ग- भक्ति, घ-मनवांछित।

प्रश्न 10- धूप दीप तुलसी से, राजी ....।। ओं जय लक्ष्मी रमणा।

क- धारण, ख- छिन छिन, ग- सत्यदेवा, घ-मनवांछित।

4.5 सारांश-

इस इकाई में श्री सत्यनारायण जी की आरती एवं स्तुति विचार संबंधी प्रविधियों का अध्ययन आपने किया । श्री सत्यनारायण जी की आरती एवं स्तुति विचार के अभाव में पूर्णिमा आदि के

अवसर पर श्री सत्य नारायण व्रत कथा का आयोजन, विष्णु यज्ञादि अनुष्ठानों के अवसर पर पूजनादि का सम्पादन किसी भी व्यक्ति द्वारा ठीक ढंग से नही हो सकता है। क्योकि इसमें सत्यनारायण रूप श्री विष्णु जी की ही उपासना की जाती है ।

सत्य नारायण भगवान की उपासना से चारो पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की प्राप्ति होती है। सत्यं परं धीमहि कहते हुये श्री व्यास जी ने श्रीमद्भागवत महापुराण के प्रथम स्कन्ध के प्रथम अध्याय में सत्य नारायण भगवान की वन्दना की है। वहॉं प्रश्न उठता है कि मंगलाचरण में तो किसी देवता का नाम व्यास जी ने लिया ही नही। परन्तु ध्यान से देखने पर मिलता है कि सत्य की वन्दना व्यास जी के द्वारा की गयी है। वर्तमान में पूजा अर्चन में सबसे प्रसिद्ध है श्री सत्यनारायण व्रत कथा। क्योंकि एक बार नारद जी कलिकाल के जीवों के दुख को देखकर दुख मुक्ति का उपाय स्वयं श्री नारायण भगवान से ही पूछा था। भगवान बतलाया था कि श्री सत्यनारायण भगवान की कथा कलिकाल के दुखों से मुक्ति प्रदान करने वाली है। इसकी विशेषता यह है न्यून व्यय साध्य है। पत्रं पुष्पं फलं तोयं यानी जो उपलब्ध हो उसी से श्री सत्यनाराण की उपासना अत्यन्त आनन्द प्रदान करने वाली है।

भगवान श्री सत्यनारायण के स्वरूप का वर्णन करते हुये कहा गया है कि भगवान श्री नारायण शुक्ल वर्ण के वस्त्रों को धारण किये हुये हैं। इनको चार भुजायें हैं, जिनमें शंख, चक्र, गदा, और पद्म धारण किये हुये है। कण्ठ में भगवान वनमाला धारण किये हुये है। वनमाला की व्याख्या में लिखा गया है कि- तुलसी, कुन्द, मन्दार पारिजातश्चचम्पकैः, पंचभिर्ग्रथिता माला वनमाला विभूषिता। तुलसी, कुन्द, मन्दार, पारिजात एवं चम्पक के पुष्प से निर्मित माला को वनमाला कहा जाता है। ऐसा दिव्य स्वरूप देखकर नारद भगवान श्री नारायण की स्तुति करने लगे। नारद जी ने कहा- वाणी एवं मनस से परे स्वरूप वाले, अनन्त स्वरूप एवं शक्ति वाले, आदि, मध्य एवं अन्त से हीन, निर्गुण रूप सकल गुणों के धाम आपको प्रणाम है। भगवान के स्वरूप का वर्णन करते हुये कहा गया है कि- भगवान श्री नारायण शंख एवं चक्र धारण किये रहते है। किरीट यानी मुकुट और कुण्डल जो कान में धारण किया जाता है उसको धारण किये रहते है। पीताम्बर वाला वस्त्र धारण किये हुये है। कमल के समान भगवान की आंखें हैं। हार यानी माला सहित वक्षस्थल सुशोभित हो रहा है। कौस्तुभ मणि सहित भगवान लक्ष्मी जी के साथ विराजमान है ऐसे चार भुजा धारी भगवान श्री विष्णु को शिर से प्रणाम करता हूॅं।

4.6 पारिभाषिक शब्दावलियां-

सशंखचक्रं - शंख और चक्र सहित, सकिरीटकुण्डलं- मुकुट एवं कुण्डल सहित, सपीतवस्त्रं - पीला वस्त्र सहित, सरसीरुह- कमल, इक्षणं- आंखें, सहार- हार सहित, वक्षस्थल- हृदय स्थल, कौस्तुभ- कौस्तुभ नामक मणि, श्रियं - लक्ष्मी, नमामि - नमस्कार करता हूॅं, विष्णुं- श्री विष्णु भगवान को, शिरसा- शिर से, चतुर्भुजम्- चार भुजा वाले, नमो - नमस्कार, वांग्मनसातीत- वाणी एवं मन से परे, रूपाय- रूप के लिये, अनन्तशक्तये- अनन्त शक्ति के लिये, आदि- प्रारम्भ, मध्य- बीच, अन्तहीनाय-

अन्त न हो , निर्गुणाय- निगुण के लिये, गुणात्मने- गुण स्वरूप के लिये, आदिदेवं - सबसे प्रारम्भ के देव, जगत्कारणं - जगत् यानी संसार के कारण, श्रीधरं- श्री को धारण करने वाले, लोकनाथं- लोकों के स्वामी, व्यापकं - विस्तृत, शंकरम्- शान्ति करने वाले, सर्वभक्तेष्टदं - सभी प्रकार के भक्तों को इष्ट प्रदान करने वाले, मुक्तिदं - मुक्ति देने वाले, माधवं- मेरे स्वामी, लोककल्याणपारायणं- लो कल्याण में रत वाले, , देवगोविप्रक्षार्थसद्विग्रहम्- देवता, गौ, विप्र की रक्षा हेतु सद् विग्रह स्वरूप, दीनहीनात्मभक्ताश्रयं- दीन एव हीन भक्तों के आश्रय देने वाले, सुन्दरम्- सुन्दर स्वरूप वाले, राजते - विराजित है, सा- वह, रमा- लक्ष्मी, यस्य- जिसके, वामे- वाम भाग में, सदा- हमेशा, प्रसन्नाननो - प्रसन्न मुख वाला, भव्य- दिव्य, स्वात्मभीनाशनाय- अपने भय को विनष्ट करने के लिये, स्मरेत् - स्मरण करते है, पीडितः- पीड़ित लोग,पूर्णकृत्यो - कार्य पूर्ण हो जाता है, यत्- जिसके, प्रसादात्- प्रसाद से, वांछितं- इच्छानुसार, दुर्लभं - अप्राप्य, यो - जो, ददाति- देता है, साधवे - साधु जनों के लिये, स्वात्मभक्ताय- अपने भक्तों के लिये, भक्तिप्रियः- भक्ति प्रिय है जिसको, सर्वभूताश्रयं - सभी प्राणियों का आश्रय, विश्वम्भरं- विश्व का भरण पोषण करने वाला, लीलया- खेल से, यस्य -जिसका, विश्वं - विश्व को, विभुं- जानने वाला, येन- जिसके द्वारा, ब्रह्मबाल - ब्रह्म से बालक पर्यन्त, तृणं- तिनका के समान, धार्यते- धारण करता है, सृज्यते - सृजन करता है, पाल्यते- पालन करता है, भक्तभावप्रियं- भक्त का भाव प्रिय हो जिसको, श्रीदयासागरं- दया के श्रेष्ठ सागर, सर्वकामप्रदं - सभी कामनाओं को देने वाले, सर्वदा सत्प्रियं- हमेशा सत्य ही प्रिय हो जिसको, वन्दितं - वन्दना किये जाने वाले, देववृन्दैर्मुनीन्द्रार्चितम्- देव वृन्द एवं मुनीन्द्रों से पूजित, पुत्रपौत्रादिसर्वेष्टदं - पुत्र पौत्र सहित सभी प्रकार के अभीष्ट को प्रदान करने वाले, शास्वतं - सनातन, मुदा- प्रसन्न, यस्त्रिसन्ध्यं - तीनों सन्ध्याओं में, पठेत्- पढ़ना चाहिये, तस्य- उसके, नश्यन्ति- नष्ट होते हैं, पापानि- पाप, तेन- उसी प्रकार, अग्निना- अग्नि से, इन्धनानीव शुष्काणि सर्वाणि - सभी सूखा इन्धन जल जाता है।

4.7अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

पूर्व में दिये गये सभी अभ्यास प्रश्नों के उत्तर यहां दिये जा रहे हैं। आप अपने से उन प्रश्नों को हल कर लिये होगें। अब आप इन उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कर लीजिये। यदि गलत हो तो उसको सही करके पुनः तैयार कर लीजिये। इससे आप इस प्रकार के समस्त प्रश्नों का उत्तर सही तरीके से दे पायेगें।

4.3.1 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-ख, 2-घ, 3-ख, 4-ग, 5-क, 6-ख, 7-ग, 8-घ, 9-क, 10-ग।

4.3.2 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, 2-ख, 3-ग, 4-घ, 5-क, 6-ख, 7-ग, 8-घ, 9-ख, 10-ख।

4.4.1 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, 2-ख, 3-ग, 4-घ, 5-क, 6-ख, 7-ग, 8-घ, 9-ख, 10-ग।

4.4.2 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, 2-ख, 3-ग, 4-घ, 5-क, 6-ख, 7-ग, 8-घ, 9-ख, 10-ग ।

4.4.3 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, 2-ख, 3-ग, 4-घ, 5-ख, 6-क, 7-ग, 8-घ, 9-क, 10-ग।

4.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1-आरती संग्रह।

2-वृह्द स्तोत्र रत्नावलिः।

3-सत्यनारायण व्रत कथा।

4-शब्दकल्पद्रुमः।

5-आह्निक सूत्रावलिः।

6-नित्य कर्म पूजा प्रकाश।

7-पूजन- विधान।

8-संस्कार एवं शान्ति का रहस्य।

4.9- सहायक उपयोगी पाठ्य सामग्री-

1- दैनिक आरती स्तुति एवं स्तोत्र।

2- स्तोत्ररत्नावलिः।

3- श्री शुक्लयजुर्वेदरुद्राष्टाध्यायी।

4.10 निबंधात्मक प्रश्न-

1- श्री सत्यनारायण व्रत का परिचय बतलाइये।

2- श्री सत्यनारायण जी का स्वरूप बतलाइये।

3- पुरुष सूक्त का परिचय लिखिये।

4- नारायणाष्टक स्तोत्र लिखिये।

5- सत्यनारायणाष्टक स्तोत्र लिखिये।

6- पुरुषसूक्तम् लिखिये।

7- सत्यनारायणाष्टक स्तोत्र पाठ का फल लिखिये।

8- श्री सत्यनारायण जी की आरती लिखिये।

9- श्री नारायण भगवान का ध्यान लिखिये।

10- श्रीनारायणाष्टकस्तोत्र पाठ का फल लिखिये।

खण्ड - 4

कर्मकाण्ड प्रक्रियाओं की वैज्ञानिकता

इकाई – 1 पूजन में मांगलिक द्रव्यों की वैज्ञानिकता

इकाई की रूपरेखा

1.1 प्रस्तावना
1.2 उद्देश्य
1.3 पूजन परिचय
1.4 पूजन में मांगलिक द्रव्यों की वैज्ञानिकता
बोध प्रश्न
1.5 सारांश
1.6 पारिभाषिक शब्दावली
1.7 बोध प्रश्नों के उत्तर
1.8 सहायक पाठ्यसामग्री
1.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई BAKA(N)–102 के चतुर्थ खण्ड की प्रथम इकाई 'पूजन में मांगलिक द्रव्यों की वैज्ञानिकता' शीर्षक से सम्बन्धित है। यद्यपि देखा जाए तो सम्पूर्ण कर्मकाण्ड ही वैज्ञानिक रूप में है, तथा उसमें उपयोग की जाने वाली सामग्रीयों का भी विज्ञान की दृष्टि से अपना महत्व है।

इससे पूर्व की इकाईयों में आपने विविध प्रकार के पूजन से सम्बन्धित इकाईयों का अध्ययन कर लिया है। यहॉ इस इकाई में पूजन में मांगलिक द्रव्य की सार्थकता का अध्ययन करेंगे।

मांगलिक शब्द का अर्थ ही होता है मंगल करने वाला या कल्याण करने वाला। इसी प्रकार पूजन में प्रयोग किये जाने वाले मांगलिक द्रव्य मंगलकारी के साथ अपनी वैज्ञानिकता को सिद्ध करते हैं। इस इकाई में हम तत्सम्बन्धित तथ्यों का अध्ययन करेंगे।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- ❖ पूजन विधि को समझा सकेंगे।
- ❖ पूजन में प्रयोगार्थ मांगलिक द्रव्य को बता सकेंगे।
- ❖ मांगलिक द्रव्य की वैज्ञानिकता को बता सकेंगे।
- ❖ पूजन से जुड़ी विधियों को समझा सकेंगे।
- ❖ मांगलिक द्रव्य की महत्ता को निरूपित कर सकेंगे।

1.3 पूजन परिचय

पूजा अथवा पूजन किसी भगवान को प्रसन्न करने हेतु हमारे द्वारा उनका अभिवादन होता है। पूजा दैनिक जीवन का शांतिपूर्ण तथा महत्वपूर्ण कार्य है। पूजन कर्म में आस्था प्रधान होता है। यहाँ भगवान को पुष्प आदि समर्पित किये जाते हैं जिनके लिये कई पुराणों से लिये गए श्लोकों का उपयोग किया जाता है। वैदिक श्लोकों का उपयोग किसी बड़े कार्य जैसे यज्ञ आदि की पूजा में ब्राह्मण द्वारा होता है। पूजन में प्रधान रूप से वेद के मन्त्रों का उपयोग किया जाता है, बाद में ऋषियों द्वारा लौकिक मन्त्रों का भी निर्माण किया गया। इस प्रकार वैदिक और लौकिक मन्त्रों से देवताओं का पूजन किया जाता है। सभी पूजन में सर्वप्रथम गणेश की पूजा की जाती है। आइये सर्वप्रथम पूजन के प्रकार को भी समझते है।

पूजन के मुख्य रूप से छ: प्रकार है—

पंचोपचार (5 प्रकार)

दशोपचार (10 प्रकार)

षोडशोपचार (16 प्रकार)

द्वात्रिंशोपचार (32 प्रकार)

चतु:षष्टि प्रकार (64 प्रकार)

एकोद्वात्रिंशोपचार (132 प्रकार)

पूजन योनिज पिण्डों का होता है । अत: दैनिक जीवन में जो मनुष्य अपने साथ उपयोग करता है, ठीक वैसे ही देवताओं को भी पूजन प्रक्रिया में अर्पित करता है, उसमें कहीं – कहीं भेद होता है । यथा मनुष्य आसन पर बैठता है, तो देवता को भी पूजन में आसन दिया जाता है। आसन का अर्थ बैठने वाले स्थान पर तत्सम्बन्धित तत्व से है। उसी क्रम में मनुष्य स्नान करता है, तो देवताओं को भी स्नानार्थ जल अर्पित करता है। स्नान का वैज्ञानिक कारण आप सभी जानते हैं। इसी प्रकार प्रत्येक कर्मों में समतुल्यता दिखलाई पड़ती है। यहॉ पूजन क्रम को समझिये -

स्नान - सर्वप्रथम स्वयं स्वच्छ जल से स्नान करें तथा एक काँस के पात्र में जल लावें ध्यान रहे बिना स्नान किये व्यक्तियों से स्पर्श न हो तथा पानी लाते समय चप्पल आदि न पहनें। और उसे भगवान के समक्ष रख दें।

पूजा की थाल - आचमनी पंचपात्र आदि एक थाली काँस अथवा ताँबे की हो उसमें रखें तथा साथ में पुष्प, अक्षत, बिल्वपत्र, धूप, दीप, नैवेद्य, चंदन आदि पूजा में उपयोगी वस्तुएँ रखें।

पवित्रीकरण - आसन में बैठ कर पवित्रीकरण करें, अपने तथा पूजन के थाल पर जल सिंचन करें तथा पवित्रीकरण श्लोक बोलें।

ध्यान - भगवान का ध्यान करें।

दैनिक पूजा उपक्रम - क्रम निम्नांकित हैं—

ध्यान

आवाहन

आसन

पाद्य

अर्घ्य

आचमनी

स्नान जल, दुग्ध, घृत, शर्करा, मधु, दधि, उष्ण जल या शीत जल (ऋतु अनुसार)

पंचामृत स्नान दुग्ध, दधि, घृत (घी), मधु, शर्करा एवं गंगाजल को एक साथ मिलाकर उससे स्नान करावें।

शुद्धोदकस्नान शुद्ध जल से स्नान।

वस्त्र

चंदन

यज्ञोपवीत (जनेऊ)

पुष्प

दुर्वा गणेश जी में दूबी अर्पित करें।

तुलसी विष्णु में तुलसी।

शमी शमीपत्र।

अक्षत शिव में श्वेत अक्षत, देवी में रक्त (लाल) अक्षत, अन्य में पीत (पीला) अक्षत।

सुगंधिद्रव्य इत्र।

धूप

दीप

नैवेद्य प्रसाद।

ताम्बूल पान।

पुष्पाञ्जलि।

मंत्र पुष्पांजलि।

प्रार्थना।

1.4 पूजन में प्रयुक्त मांगलिक द्रव्यों की वैज्ञानिकता –

वस्तुत: पूजन में प्रयुक्त समस्त द्रव्य मांगलिक ही है अर्थात् मंगल को देने वाले है। उनकी वैज्ञानिकता स्वयंसिद्ध है। मांगलिक द्रव्यों के अन्तर्गत स्वस्तिक, तिलक, अभिषेक, अक्षत, हरिद्रा, गंगाजल, पंचामृत (दूध, दही, घी, शहद, गंगाजल) यज्ञोपवीत, चंदन, सुगंधित द्रव्य, दीप, नैवेद्य, धूप, ताम्बूल आदि।

भारतीय संस्कृति में वैदिक काल से ही स्वस्तिक को विशेष महत्त्व प्रदान किया गया है। यद्यपि बहुत से लोग इसे हिन्दू धर्म का एक प्रतीक चिह्न ही मानते हैं किन्तु वे लोग ये नहीं जानते कि इसके पीछे कितना गहरा अर्थ छिपा हुआ है। सामान्यतय: स्वस्तिक शब्द को "सु" एवं "अस्ति" का मिश्रण योग माना जाता है। यहाँ "सु" का अर्थ है- शुभ और "अस्ति" का- होना। संस्कृत व्याकरण अनुसार "सु"

एवं "अस्ति" को जब संयुक्त किया जाता है तो जो नया शब्द बनता है- वो है "स्वस्ति" अर्थात "शुभ हो", "कल्याण हो"। स्वस्तिक शब्द का विच्छेद करने पर **सु+अस+क** होता है। 'सु' का अर्थ अच्छा, 'अस' का अर्थ सत्ता 'या' अस्तित्व और 'क' का अर्थ है कर्ता या करने वाला । इस प्रकार स्वस्तिक शब्द का अर्थ हुआ **अच्छा या मंगल करने वाला**। इसलिए देवता का तेज़ शुभ करनेवाला - स्वस्तिक करने वाला है और उसकी गति सिद्ध चिह्न 'स्वस्तिक' कहा गया है ।

स्वस्तिक अर्थात कुशल एवं कल्याण । कल्याण शब्द का उपयोग अनेक प्रश्नों का एक उत्तर के रूप में किया जाता है। शायद इसलिए भी यह निशान मानव जीवन में इतना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है । संस्कृत में सु-अस धातु से स्वस्तिक शब्द बनता है। सु अर्थात् सुन्दर, श्रेयस्कर, अस् अर्थात् उपस्थिति, अस्तित्व। जिसमें सौन्दर्य एवं श्रेयस का समावेश हो, वह स्वस्तिक है।

स्वस्तिक का सामान्य अर्थ शुभ, मंगल एवं कल्याण करने वाला है। स्वस्तिक शब्द मूलभूत सु+अस धातु से बना हुआ है। सु का अर्थ है अच्छा, कल्याणकारी, मंगलमय और अस का अर्थ है अस्तित्व, सत्ता अर्थात कल्याण की सत्ता और उसका प्रतीक है स्वस्तिक। यह पूर्णतः कल्याणकारी भावना को दर्शाता है। देवताओं के चहुं ओर घूमने वाले आभामंडल का चिह्न ही स्वस्तिक होने के कारण वे देवताओं की शक्ति का प्रतीक होने के कारण इसे शास्त्रों में शुभ एवं कल्याणकारी माना गया है । अमरकोश में स्वस्तिक का अर्थ आशीर्वाद, मंगल या पुण्यकार्य करना लिखा है, अर्थात सभी दिशाओं में सबका कल्याण हो। इस प्रकार स्वस्तिक में किसी व्यक्ति या जाति विशेष का नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व के कल्याण या **वसुधैव कुटुम्बकम्** की भावना निहित है। प्राचीनकाल में हमारे यहाँ कोई भी श्रेष्ठ कार्य करने से पूर्व मंगलाचरण लिखने की परंपरा थी, लेकिन आम आदमी के लिए मंगलाचरण लिखना सम्भव नहीं था, इसलिए ऋषियों ने स्वस्तिक चिह्न की परिकल्पना की, ताकि सभी के कार्य सानन्द सम्पन्न हों।

स्वस्तिक के प्रयोग से धनवृद्धि, गृहशान्ति, रोग निवारण, वास्तुदोष निवारण, भौतिक कामनाओं की पूर्ति, तनाव, अनिद्रा, चिन्ता रोग, क्लेश, निर्धनता एवं शत्रुता से मुक्ति भी दिलाता है। ऊं एवं स्वस्तिक का सामूहिक प्रयोग नकारात्मक ऊर्जा को शीघ्रता से दूर करता है। हल्दी से अंकित स्वास्तिक शत्रु शमन करता है। स्वस्तिक 27 नक्षत्रों का सन्तुलित करके सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करता है।

स्वस्तिक की ऊर्जा

स्वस्तिक का आकृति सदैव कुमकुम (कुमकुं), सिन्दूर व अष्टगंध से ही अंकित करना चाहिए । यदि आधुनिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो अब तो विज्ञान भी स्वस्तिक, इत्यादि माँगलिक चिह्नों की

महता स्वीकार करने लगा है। मृत मानव शरीर का बोविस शून्य माना गया है और मानव में औसत ऊर्जा क्षेत्र 6,500 बोविस पाया गया है। वैज्ञानिक हार्टमेण्ट अनसर्ट ने आवेएंटिना नामक यन्त्र द्वारा विधिवत पूर्ण लाल कुंकुम से अंकित स्वस्तिक की सकारात्मक ऊर्जा को 100000 बोविस यूनिट में नापा है। यदि इसे उल्टा बना दिया जाए तो यह प्रतिकूल ऊर्जा को इसी अनुपात में बढ़ाता है। इसी स्वस्तिक को थोड़ा टेड़ा बना देने पर इसकी ऊर्जा मात्र 1,000 बोविस रह जाती है।

हरिद्रा – पूजन में हरिद्रा अर्थात् हल्दी अत्यन्त शुभकारी माना गया है। इसका वैज्ञानिक उपयोग भी सर्वविदित है। सभी शुभ कार्यो में हल्दी का उपयोग किया जाता है। दूध के साथ हल्दी का मिश्रण कर सेवन करने से बड़ा – से बड़ा घाव भर जाता है। प्राचीन समय में या वर्तमान समय में भी विभिन्न प्रकार के रोगों में चिकित्सक ये परामर्श देते हैं - कि दुग्ध के साथ हल्दी का मिश्रण करके सेवन कीजिये। अत: स्पष्ट है कि व्यावहारिक रूप में भी हरिद्रा उपयोगी है।

पूजन में भी हरिद्रा शुभकारी, गुणकारी एवं लाभकारी है।

अभिषेक - राजतिलक का स्नान जो राज्यारोहण को वैध करता था। पुराने काल में जब किसी को राजा बनाया जाता था तो उस के सिर पर अभिमन्त्रित जल और औषधियों की वर्षा की जाती थी। इस क्रिया को ही ‘अभिषेक’ कहते है। अभि उपसर्ग और सिञ्च् धातु कि सन्धि से अभिषेक शब्द बना है। कालांतर में राज्याभिषेक राजतिलक का पर्याय बन गया।

प्राचीन साहित्य में अभिषेक -

अथर्ववेद में ‘अभिषेक’ शब्द कई स्थलों पर आया है और इसका संस्कारगत विवरण भी वहाँ उपलब्ध है। कृष्ण यजुर्वेद तथा श्रौत सूत्रों में हम प्राय: सर्वत्र "अभिषेचनीय" संज्ञा का प्रयोग पाते हैं जो वस्तुत: राजसूय का ही अंग था, यद्यपि ऐतरेय ब्राह्मण को यह मत संभवत: स्वीकार नहीं। उसके अनुसार अभिषेक ही प्रधान विषय है।

ऐतरेय ब्राह्मण ने अभिषेक के दो प्रकार बतलाए हैं: -

(1) पुनरभिषेक ।

(2) ऐंद्र महाभिषेक।

दूध – पूजन कार्यों में प्रयोग में आने वाले द्रव्यों में दूध का नाम भी आता है। दूध सर्वौषधी है। कहा जाता है कि दूध में समस्त विटामीन का मिश्रण होता है। पूजन में दूध से स्नान कराया जाता है। शुद्ध दूध का सेवन करने वाला दीर्घायु एवं तेजस्वी होता है। यहीं कारण है कि ऋषि – महर्षि अपने चिरकाल की साधना में केवल दूध का उपयोग करते थे। गाय का दूध जिस समय में निकाला गया हो, उसी क्षण का दूध सर्वाधिक लाभकारी होता है। दही, मट्ठा, पनीर, घी आदि दूध के विकृत

रूप हैं।

घी – पूजन कार्य में घी का मुख्य रूप से दो स्थलों पर उपयोग होता है एक तो स्नान कराने में, दूसरा दीपक जलाने में। वैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाए तो घी का सेवन करने से स्मरण शक्ति तेज होता है तथा व्यक्ति तेजस्वी, दीर्घायु एवं वीर्यवान होता है ।

गंगाजल -

गंगाजल पूजन कार्य का प्रमुख द्रव्य है। पूजन में इसका महत्व अत्यन्त उपयोगी है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी गंगाजल का महत्व सर्वविदित है। गंगाजल की सबसे बड़ी विशेषता है कि वह कभी अशुद्ध नहीं होता, उसमें कभी भी जीवाणु प्रकट नहीं होते। चिरकाल तक उसका जल यथावत स्थिति में रहता है। पौराणिक मान्यता के अनुसार गंगा पतितपावन हैं। कहा जाता है कि मरते समय यदि गंगाजल मिल जाये तो मोक्ष की प्राप्ति हो जाता है। कई आधुनिक वैज्ञानिकों द्वारा भी गंगाजल को प्रमाणित किया जा चुका है। गंगा अत्यन्त पवित्र होने के साथ ही भारतीय सनातन परम्परा का एक अमूल्य धरोहर है। कई ऋषि, महर्षि इसके तट पर बैठकर साधना करते रहते हैं। यह भी कहा जाता है कि इसके समीप कोई धार्मिक कृत्य करने से सहस्र गुणा फल मिलता हैं।

चन्दन –

चन्दन भी पूजन कर्म का एक मांगलिक द्रव्य है। चन्दन देवता के साथ – साथ स्वयं को भी लगाया जाता है। सभी देवता इसको धारण करते हैं । कहा गया है –

चन्दनस्य महत्पुण्यं पवित्रं पापनाशनम्।
आपदं हरते नित्यं लक्ष्मी वसति सर्वदा ।।

यह तो चन्दन का पौराणिक गुण है। इसका वैज्ञानिक गुण यह है कि यह सुवासित होता है। इसके अन्दर से सदैव सुगन्धित महक प्रखरित होते रहता है। यह शीतल होता है। इसलिए जब इसको मस्तक पर लगाते हैं, तो मन सदैव प्रसन्न एवं शान्त रहता है। इसकी शीतलता के कारण ही भुजंग सदैव इससे लिपटा होता है। यह एक दिव्य औषधी है।

पुष्प -

पुष्प भी गुणकारी एवं लाभकारी है। पूजन में पुष्प एक अभिन्न अंग है। पुष्प की आवश्यकता पूजन में सर्वाधिक है। पुष्प के कई प्रकार हैं । सभी पुष्पों का अलग – अलग महत्व है। कई पुष्प जीवनदायिनी होती है। वैज्ञानिक निरन्तर अनुसन्धान करते रहते हैं कि कौन सा पुष्प ज्यादा लाभकारी एवं गुणकारी है। आयुर्वेद में तो कई जड़ी –बुटियों को बनाने में पुष्पों का उपयोग किया जाता है। दिव्य पुष्पों में – ब्रह्मकमल, गेंदा, जूही, कमल, गुलाब, चम्पा , चमेली, मदार,

कुमुदिनी आदि हैं।

तुलसीपत्र -

तुलसी को हरिप्रिया भी कहते हैं। पूजन में विशेष रूप से यह भगवान नारायण को चढ़ाया जाता है यह एक अद्वितीय औषधी है। तुलसीपत्र को आयुर्वेद में औषधी निर्माण में सर्वाधिक उपयोग किया जाता है। सामान्य रूप में भी इसका सेवन गुणकारी व लाभकारी ह । पौराणिक मतों के अनुसार मृत्यु के समीप व्यक्ति को तुलसी और गंगाजल देने का विधान है। यह एक इसका विशिष्ट गुण है। वैज्ञानिक प्रामाणिकता पर भी यह विशुद्ध है।

मधु –

पूजन कार्य में मधु या शहद का उपयोग किया जाता है । साथ ही इसका उपयोग औषधियों के निर्माण में तथा सेवन में किया जाता है। मधु के सेवन से तीव्र बुद्धि होती है तथा स्मरण शक्ति तेज होती है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी यह उत्तम है क्योंकि इसमें कई विटामीन पाये जाते हैं, जो स्वास्थ्यवर्धक होते हैं।

ताम्बुल –

ताम्बुल का उपयोग पूजन में मुखवासार्थ के रूप में दिया जाता है। ऐसी मान्यता है कि यह शुभकारी होता है । इसके भक्षण से कार्य सिद्ध हो जाते है। वैज्ञानिक रूप में भी इसका उपयोग कई चिजों के निर्माण में किया जाता है। इसके सेवन से गर्मी पैदा हो जाती है यह एक इसका विशेष गुण है।

यज्ञोपवीत -

यज्ञोपवीत धारण करना भारतीय सनातन का एक महत्वपूर्ण संस्कार है । पूजन में भी इसका उपयोग देवताओं को धारणार्थे किया जाता है । स्वयं भी मनुष्य जब इसको धारण करता है तो उसकी बल, तेज, आयु एवं बुद्धि का विकास होता है । यज्ञोपवीत में ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव का वास होता है । इससे उनका आशीर्वाद प्राप्त होते रहता है ।

इस प्रकार से यदि देखा जाए तो पूजन में समस्त मांगलिक द्रव्यों की वैज्ञानिकता स्वयंसिद्ध है । फिर भी मैंने यहॉ संक्षिप्त रूप में इस इकाई में आपके ध्यानाकर्षण हेतु उपर्युक्त तथ्यों का उदाहरण प्रस्तुत किया । आशा है आप सभी इन तत्वों से परिचित हो होकर इसके महत्व को समझ लेंगे ।

बोध प्रश्न –

1. पूजन के मुख्य कितने प्रकार है –

   क. 5 ख. 6 ग. 7 घ. 8

2. पूजन क्रम में आवाहन के पश्चात् होता है –

क. पाद्य ख. अर्घ्य ग. आसन घ. आचमन

3. ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार अभिषेक के कितने प्रकार हैं -

क. 2 ख. 3 ग.4 घ. 5

4. चन्दन धारण करने से क्या होता है –

क. पाप का नाश ख. लक्ष्मी वास ग. आपदा हरण घ. उपर्युक्त सभी

5. निम्नलिखित में हरिप्रिया किसे कहते है –

क. मधु ख. तुलसी ग. हरिद्रा घ. कोई नहीं

6. यज्ञोपवीत में किस देवता का वास होता है –

क. ब्रह्मा , विष्णु एवं महेश ख. सूर्य ग. इन्द्र घ. अग्नि

1.5 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जाना कि पूजा अथवा पूजन किसी भगवान को प्रसन्न करने हेतु हमारे द्वारा उनका अभिवादन होता है। पूजा दैनिक जीवन का शांतिपूर्ण तथा महत्वपूर्ण कार्य है। पूजन कर्म में आस्था प्रधान होता है। यहाँ भगवान को पुष्प आदि समर्पित किये जाते हैं जिनके लिये कई पुराणों से लिये गए श्लोकों का उपयोग किया जाता है। वैदिक श्लोकों का उपयोग किसी बड़े कार्य जैसे यज्ञ आदि की पूजा में ब्राह्मण द्वारा होता है। पूजन में प्रधान रूप से वेद के मन्त्रों का उपयोग किया जाता है, बाद में ऋषियों द्वारा लौकिक मन्त्रों का भी निर्माण किया गया। इस प्रकार वैदिक और लौकिक मन्त्रों से देवताओं का पूजन किया जाता है। वस्तुत: पूजन में प्रयुक्त समस्त द्रव्य मांगलिक ही है अर्थात् मंगल को देने वाले है। उनकी वैज्ञानिकता स्वयंसिद्ध है। मांगलिक द्रव्यों के अन्तर्गत स्वस्तिक, तिलक, अभिषेक, अक्षत, हरिद्रा, गंगाजल, पंचामृत (दूध, दही, घी, शहद, गंगाजल) यज्ञोपवीत, चंदन, सुगंधित द्रव्य, दीप, नैवेद्य, धूप, ताम्बूल आदि।

1.6 शब्दावली-

वैदिक – वेद से सम्बन्धित ।

शांतिपूर्ण - शान्ति से भरा हुआ ।

लौकिक – सांसारिक ।

पंचोपचार - पूजन विधि ।

हरिद्रा – हल्दी

मांगलिक – मंगल को देने वाली

स्वस्तिक – सुन्दर एवं श्रेयस

धारणार्थे – धारण के लिए

अभिन्न – बिल्कुल अलग

सहस्र – दस हजार

सर्वविदित – सभी के द्वारा जो जाना गया हो

1.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. ख
2. ग
3. क
4. घ
5. ख
6. क

1.8 सहायक पाठ्यसामग्री

1. कर्मकाण्ड प्रदीप

2.कर्मकलाप

3.नित्यकर्मपूजाप्रकाश

4. पूजन पद्धति

1.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. पूजन परिचय का अपने शब्दों में लेखन कीजिये।
2. पूजन में प्रयुक्त मांगलिक द्रव्यों की वैज्ञानिकता सिद्ध कीजिये।
3. पूजन में प्रयुक्त मांगलिक द्रव्य कौन – कौन से है। वर्णन कीजिये।

इकाई – 2 संस्कारों की वैज्ञानिक अवधारणा

इकाई की रूपरेखा

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 संस्कार परिचय

2.4 संस्कार की वैज्ञानिक अवधारणा

बोध प्रश्न

2.5 सारांश

2.6 पारिभाषिक शब्दावली

2.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.8 सन्दर्भ ग्रन्थ

2.9 सहायक पाठ्यसामग्री

2.10 निबन्धात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई BAKA(N)–102 के चतुर्थ खण्ड की द्वितीय इकाई 'संस्कारो की वैज्ञानिक अवधारणा' शीर्षक से सम्बन्धित है। इससे पूर्व की इकाई में आपने पूजन में मांगलिकद्रव्य की वैज्ञानिकता का अध्ययन कर लिया है। यहॉ अब संस्कारों की वैज्ञानिकता को समझेंगे। भारतीय सनातन परम्परा में संस्कारों का अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान है।

संस्कार मानव की उत्तरोत्तर वृद्धि में एक सहायक तत्व है। मानव सभ्य एवं संस्कृत संस्कार को धारण कर ही हो सकता है। अन्यथा नहीं। संस्कारों के प्रकार में भी ऋषियों के पृथक् –पृथक् मत है। सर्वाधिक प्रचलित षोडश संस्कार है।

संस्कार का भी वैज्ञानिक महत्व है। इसकी वैज्ञानिक अवधारणा का वर्णन प्रस्तुत इकाई में आपके अवलोकनार्थ एवं पाठार्थ प्रस्तुत है।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- ❖ संस्कार किसे कहते है, समझ लेंगे।
- ❖ षोडश संस्कार को समझा सकेंगे।
- ❖ संस्कार की वैज्ञानिक अवधारणा का चिन्तन कर सकेंगे।
- ❖ संस्कार की महत्ता को समझा सकेंगे।
- ❖ संस्कार के गुणों का वैज्ञानिक विश्लेषण कर सकेंगे।

2.3 संस्कार परिचय

भारतीय सनातन अथवा हिन्दू धर्म की संस्कृति संस्कारों पर ही आधारित है। हमारे ऋषि-मुनियों ने मानव जीवन को पवित्र एवं मर्यादित बनाने के लिये संस्कारों का अविष्कार किया। धार्मिक ही नहीं वैज्ञानिक दृष्टि से भी इन संस्कारों का हमारे जीवन में विशेष महत्व है। भारतीय संस्कृति की महानता में इन संस्कारों का महती योगदान है। प्राचीन काल में हमारा प्रत्येक कार्य संस्कार से आरम्भ होता था। उस समय संस्कारों की संख्या भी लगभग चालीस थी । जैसे-जैसे समय बदलता गया तथा व्यस्तता बढती गई तो कुछ संस्कार स्वत: विलुप्त हो गये। इस प्रकार समयानुसार संशोधित

होकर संस्कारों की संख्या निर्धारित होती गई। गौतम स्मृति में चालीस प्रकार के संस्कारों का उल्लेख है। महर्षि अंगिरा ने इनका अंतर्भाव पच्चीस संस्कारों में किया। व्यास स्मृति में सोलह संस्कारों का वर्णन हुआ है । हमारे धर्मशास्त्रों में भी मुख्य रूप से सोलह संस्कारों की व्याख्या की गई है। इनमें पहला गर्भाधान संस्कार और मृत्यु के उपरांत अन्त्येष्टि अंतिम संस्कार है। गर्भाधान के बाद पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण ये सभी संस्कार नवजात का दैवी जगत् से संबंध स्थापना के लिये किये जाते हैं। नामकरण के बाद चूडाकर्म और यज्ञोपवीत संस्कार होता है। इसके बाद विवाह संस्कार होता है। यह गृहस्थ जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्कार है। हिन्दू धर्म में स्त्री और पुरुष दोनों के लिये यह सबसे बडा संस्कार है, जो जन्म-जन्मान्तर का होता है। विभिन्न धर्मग्रंथों में संस्कारों के क्रम में थोडा-बहुत अन्तर है, लेकिन प्रचलित संस्कारों के क्रम में गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूडाकर्म, विद्यारंभ, कर्णवेध, यज्ञोपवीत, वेदारम्भ, केशान्त, समावर्तन, विवाह तथा अन्त्येष्टि ही मान्य है।

गर्भाधान से विद्यारंभ तक के संस्कारों को गर्भ संस्कार भी कहते हैं। इनमें पहले तीन (गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन) को अन्तर्गर्भ संस्कार तथा इसके बाद के छह संस्कारों को बहिर्गर्भ संस्कार कहते हैं। गर्भ संस्कार को दोष मार्जन अथवा शोधक संस्कार भी कहा जाता है। दोष मार्जन संस्कार का तात्पर्य यह है कि शिशु के पूर्व जन्मों से आये धर्म एवं कर्म से सम्बन्धित दोषों तथा गर्भ में आई विकृतियों के मार्जन के लिये संस्कार किये जाते हैं । बाद वाले छह संस्कारों को गुणाधान संस्कार कहा जाता है। दोषमार्जन के बाद मनुष्य के सुप्त गुणों की अभिवृद्धि के लिये ये संस्कार किये जाते हैं। हमारे मनीषियों ने हमें सुसंस्कृत तथा सामाजिक बनाने के लिये अपने अथक प्रयासों और शोधों के बल पर ये संस्कार स्थापित किये हैं। इन्हीं संस्कारों के कारण भारतीय संस्कृति अद्वितीय है। हालांकि हाल के कुछ वर्षो में आपाधापी की जिंदगी और अतिव्यस्तता के कारण सनातन धर्मावलम्बी अब इन मूल्यों को भुलाने लगे हैं और इसके परिणाम भी चारित्रिक गिरावट, संवेदनहीनता, असामाजिकता और गुरुजनों की अवज्ञा या अनुशासनहीनता के रूप में हमारे सामने आने लगे हैं। समय के अनुसार बदलाव जरूरी है लेकिन हमारे मनीषियों द्वारा स्थापित मूलभूत सिद्धांतों को नकारना कभी श्रेयस्कर नहीं होगा।

संस्कृति व संस्कार में सामाजिक उपादानों का अन्योन्याश्रित संबंध है। संस्कृति शब्द सम् उपसर्गपूर्वक कृ धातु से क्त प्रत्यय करने से निष्पन्न है, जिसका अर्थ पूरा किया हुआ, मांझकर चमकाया हुआ, सुधारा हुआ, सिद्ध, सुनिर्मित, अलंकृत आदि होता है। इसी संस्कृति शब्द (विशेषण) की संज्ञा है संस्कृति। संस्कृति शब्द सम् उपसर्गपूर्वक कृ धातु से भूषणभूत अर्थ में सुट् का आगम करके क्तिन प्रत्यय करने से निर्मित होता है, जिसका अर्थ भूषणभूत सम्यक् कृति है। संस्कृति

शब्द अत्यंत व्यापक अर्थ में प्रयोग किया जाता है।

संस्कृति मानवीय कृति होने के कारण मानव की ही भांति प्रगतिशील भी है। संस्कृति ही मानव का समग्र परिष्कार करती है। संस्कार शब्द संस्कृत भाषा की कृ धातु से निष्पन्न है। सम् उपसर्गपूर्वक घञ् प्रत्यय के योग से 'संस्कार' शब्द निर्मित हुआ है, जिसका सामान्य अर्थ है- पूर्ण करना संशोधन करना, सुधारना, संवारना या शुद्ध करना।

2.4 संस्कारों की वैज्ञानिक अवधारणा -

किसी व्यक्ति या वस्तु में अन्य गुणों एवं योग्यताओं का आधान करना संस्कार है। संस्कार-सम्पन्नता मानव-हृदय को दया, करुणा, अहिंसा, मानवता, आदर्श, आस्था, दान, सत्य, प्रेम, उदारता, त्याग, बंधुत्व आदि गुणों से सम्पृक्त करती है। संस्कारपूर्ण जीवन व्यतीत करने वाला मनुष्य ही सही अर्थो में मानव बनता है। मानव-हृदय संस्कारों से ही विशाल और उदार बनता है। संस्कार व्यक्ति या वस्तु को पात्रता प्रदान करता है। इसी दृष्टि से संस्कार और संस्कृति का गहरा संबंध है। संस्कारों की पूर्णता आध्यात्मिक जीवन के साथ ही वैज्ञानिक अवधारणा के रूप में विकसित भारतीय जीवन-पद्धति सर्वस्वीकृत एक महत्वपूर्ण अनुष्ठानिक प्रक्रिया है। संस्कार व्यक्ति को संवारते हैं, तो संस्कृति समाज को संवारती है। उत्तम संस्कारों से ही श्रेष्ठ संस्कृति का स्वरूप निर्मित होता है। लकड़ी, पत्थर, धातुएं, कपास आदि अनेक भौतिक वस्तुओं का विविध संस्कारों द्वारा शोधन करने के बाद ही मनुष्य उन्हें अनेक प्रकार से उपयोगी बनाता है, जबकि संस्कृति मानव का समग्र संस्कार कर उसे सुसंस्कृत करती है। निष्कर्षत: मानव शास्त्रोक्त उत्तम संस्कारों के माध्यम से भारतीय संस्कृति के उदात्त स्वरूप को अक्षुण्ण बनाए रखने की सामर्थ्य अर्जित कर सकता है।

प्रत्येक मनुष्य का अपना-अपना व्यक्तित्व है। वही मनुष्य की पहचान है। कोटि-कोटि मनुष्यों की भीड़ में भी वह अपने निराले व्यक्तित्व के कारण पहचान लिया जाता है। यही उसकी विशेषता है। यही उसका व्यक्तित्व है। प्रकृति का यह नियम है कि एक मनुष्य की आकृति दूसरे से भिन्न है। आकृति का यह जन्मजात भेद आकृति तक ही सीमित नहीं है; उसके स्वभाव, संस्कार और उसकी प्रवृत्तियों में भी वही असमानता रहती है। इस असमानता में ही सृष्टि का सौन्दर्य है। प्रकृति हर पल अपने को नये रूप में सजाती है। हम इस प्रतिपल होनेवाले परिवर्तन को उसी तरह नहीं देख सकते जिस तरह हम एक गुलाब के फूल में और दूसरे में कोई अन्तर नहीं कर सकते। परिचित वस्तुओं में ही हम इस भेद की पहचान आसानी से कर सकते हैं। परिचित वस्तुओं में ही हम इस भेद की पहचान आसानी से कर सकते हैं। यह हमारी दृष्टि का दोष है कि हमारी आंखें सूक्ष्म भेद को और प्रकृति के सूक्ष्म परिवर्तनों को नहीं परख पातीं। मनुष्य-चरित्र को परखना भी बड़ा कठिन कार्य है, किन्तु असम्भव नहीं है। कठिन वह केवल इसलिए नहीं है कि उसमें विविध तत्त्वों का मिश्रण है बल्कि इसलिए भी है कि नित्य नई परिस्थितियों के आघात-प्रतिघात से वह बदलता रहता है। वह चेतन वस्तु है। परिवर्तन उसका स्वभाव है। प्रयोगशाला की परीक्षण नली में रखकर उसका विश्लेषण नहीं किया जा सकता। उसके विश्लेषण का प्रयत्न सदियों से हो रहा है। हजारों वर्ष पहले

हमारे विचारकों ने उसका विश्लेषण किया था। आज के मनोवैज्ञानिक भी इसी में लगे हुए हैं। फिर भी यह नहीं कह सकते कि मनुष्य-चरित्र का कोई भी संतोषजनक विश्लेषण हो सका है। हर बालक अनगढ़ पत्थर की तरह है जिसमें सुन्दर मूर्ति छिपी है, जिसे शिल्पी की आँख देख पाती है। वह उसे तराश कर सुन्दर मूर्ति में बदल सकता है। क्योंकि मूर्ति पहले से ही पत्थर में मौजूद होती है शिल्पी तो बस उस फालतू पत्थर को जिसमें मूर्ति ढकी होती है, एक तरफ कर देता है और सुन्दर मूर्ति प्रकट हो जाती है। माता-पिता शिक्षक और समाज बालक को इसी प्रकार सँवार कर उत्तम व्यक्तित्व प्रदान हैं। व्यक्तित्व-विकास में वंशानुक्रम (Heredity) तथा परिवेश (Environment) दो प्रधान तत्त्व हैं। वंशानुक्रम व्यक्ति को जन्मजात शक्तियाँ प्रदान करता है। परिवेश उसे इन शक्तियों को सिद्धि के लिए सुविधाएँ प्रदान करता है। बालक के व्यक्तित्व पर सामाजिक परिवेश प्रबल प्रभाव डालता है। ज्यों-ज्यों बालक विकसित होता जाता है, वह उस समाज या समुदाय की शैली को आत्मसात् कर लेता है, जिसमें वह बड़ा होता है, व्यक्तित्व पर गहरी छाप छोड़ते हैं।

'चरित्र' शब्द मनुष्य के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को प्रकट करता है। 'अपने को पहचानो' शब्द का वही अर्थ है जो 'अपने चरित्र को पहचानो' का है। उपनिषदों ने जब कहा था : 'आत्मा वारे श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः; नान्यतोऽस्ति विजानतः,' तब इसी दुर्बोध मनुष्य-चरित्र को पहचानने की प्रेरणा की थी। यूनान के महान दार्शनिक सुकरात ने भी पुकार-पुकार कर यही कहा था: अपने को पहचानो। विज्ञान ने मनुष्य-शरीर को पहचानने में बहुत सफलता पाई है। किन्तु उसकी आंतरिक प्रयोगशाला अभी तक एक गूढ़ रहस्य बनी हुई है। इस दीवार के अन्दर की मशीनरी किस तरह काम करती है, इस प्रश्न का उत्तर अभी तक अस्पष्ट कुहरे में छिपा हुआ है। जो कुछ हम जानते हैं, वह केवल हमारी बुद्धि का अनुमान है। प्रामाणिक रूप से हम यह नहीं कह सकते कि यही सच है; इतना ही कहते हैं कि इससे अधिक स्पष्ट उत्तर हमें अपने प्रश्न का नहीं मिल सका है। अपने को पहचानने की इच्छा होते ही हम यह जानने की कोशिश करते हैं कि हम किन बातों में अन्य मनुष्यों से भिन्न है। भेद जानने की यह खोज हमें पहले यह जानने को विवश करती है कि किन बातों में हम दूसरों के समान हैं। समानताओं का ज्ञान हुए बिना भिन्नता का या अपने विशेष चरित्र का ज्ञान नहीं हो सकता।

संस्कार शब्द का अर्थ है - शुद्धिकरण ; अर्थात् मन, वाणी और शरीर का सुधार। हमारी सारी प्रवृतियों का संप्रेरक हमारे मन में पलने वाला संस्कार होता है। प्राचीन भारतीय ग्रंथों में व्यक्ति निर्माण पर जोर दिया गया है। हिन्दू संस्कारों का इसमें महत्वपूर्ण भूमिका है।

गर्भाधान से लेकर विवाह संस्कार पर्यन्त प्रत्येक संस्कार एक संस्कृत मानव को जन्म देती हैं। इसका क्रमशः वैज्ञानिक विश्लेषण करने पर प्रतिभाषित होता है। गर्भाधान संस्कार की बात ले तो सम्प्रति सेरोगेसी तकनीक के माध्यम से भी दूसरे के कोख द्वारा बच्चें का जनन हो रहा है, जो सर्वथा अनुचित है। इससे विकृतियॉ आती है। प्राचीन संस्कार की परम्परा में एक ओर कार्य सिद्ध भी होता

था दूसरी ओर मर्यादा को भी सुरक्षित रखा जाता था। अब तो संस्कार का कोई महत्व ही नहीं रह गया है और अपने ही लोग इसे दिनानुदिन प्रपंच का विषय बताकर अस्वीकार करते रहते है। लेकिन ध्यातव्य है कि जब - जब मनुष्य ने अपने मूल को छोड़कर अन्य का साथ पकड़ा है तो परिणाम विनाशकारी हुआ है। अत: संस्कार पूर्णत: वैज्ञानिक है । इसमें कोई संशय नहीं।

संस्कारों की वैज्ञानिकता को समझने के लिए सबसे अच्छा उदाहरण है कि दो नवजात शिशु का चयन कर लिजिये, उसमें प्रथम को भारतीय सनातन परम्परा में कथित संस्कारों को धारण कराइये तथा द्वितीय को अन्य तरीके से रखिये। कालान्तर में जब वह युवा होते हैं, उनके गुणों को परखिए उनके आचार – विचार , रहन – सहन, खान – पान, काम करने का तरीका, शिष्टाचार, अनुशासन आदि का क्रमश: परीक्षण करने पर तुलान्तमक रूप में पायेंगे और आपको स्वयं बोध हो जाएगा कि संस्कारों की वैज्ञानिक अवधारणा कैसी है। यह लिखकर बताने वाली बात नहीं हैं, प्रयोग सिद्ध है। अत: जिन्हें भी सन्देह हो कि संस्कार निरर्थक हैं, वह उपर्युक्त क्रिया को करके अपना भ्रम दूर कर सकते हैं।

आपने पूर्व की इकाईयों में संस्कारों का अध्ययन कर लिया है, अत: यहॉ केवल वैज्ञानिकता परक बात ही की जा रही है।

वेदों में संस्कार –

ऋग्वेद में संस्कारों का उल्लेख नहीं है, किन्तु इस ग्रंथ के कुछ सूक्तों में विवाह, गर्भाधान और अंत्येष्टि से संबंधित कुछ धार्मिक कृत्यों का वर्णन मिलता है। यजुर्वेद में केवल श्रौत यज्ञों का उल्लेख है, इसलिए इस ग्रंथ के संस्कारों की विशेष जानकारी नहीं मिलती। अथर्ववेद में विवाह, अंत्येष्टि और गर्भाधान संस्कारों का पहले से अधिक विस्तृत वर्णन मिलता है। गोपथ और शतपथ ब्राह्मणों में उपनयन गोदान संस्कारों के धार्मिक कृत्यों का उल्लेख मिलता है। तैत्तिरीय उपनिषद् में शिक्षा समाप्ति पर आचार्य की दीक्षांत शिक्षा मिलती है।

इस प्रकार गृह्यसूत्रों से पूर्व हमें संस्कारों के पूरे नियम नहीं मिलते। ऐसा प्रतीत होता है कि गृहसूत्रों से पूर्व पारंपरिक प्रथाओं के आधार पर ही संस्कार होते थे। सबसे पहले गृहसूत्रों में ही संस्कारों की पूरी पद्धति का वर्णन मिलता है। गृह्यसूत्रों में संस्कारों के वर्णन में सबसे पहले विवाह संस्कार का उल्लेख है। इसके बाद गर्भाधान, पुंसवन, सीमंतोन्नयन, जातकर्म -, नामकरण, निष्क्रमण, अन्न - प्राशन, चूड़ाकर्म -, उपनयन और समावर्तन संस्कारों का वर्णन किया गया है। अधिकतर गृह्यसूत्रों में अंत्येष्टि संस्कार का वर्णन नहीं मिलता, क्योंकि ऐसा करना अशुभ समझा जाता था। स्मृतियों के आचार प्रकरणों में संस्कारों का उल्लेख है और तत्संबंधी नियम दिए गए हैं। इनमें उपनयन और

विवाह संस्कारों का वर्णन विस्तार के साथ दिया गया है, क्योंकि उपनयन संस्कार के द्वारा व्यक्ति ब्रह्मचर्य आश्रम में और विवाह संस्कार के द्वारा गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करता था।

संस्कार का अभिप्राय उन धार्मिक कृत्यों से था जो किसी व्यक्ति को अपने समुदाय का पूर्ण रुप से योग्य सदस्य बनाने के उद्देश्य से उसके शरीर, मन और मस्तिष्क को पवित्र करने के लिए किए जाते थे, किंतु हिंदू संस्कारों का उद्देश्य व्यक्ति में अभीष्ट गुणों को जन्म देना भी था। वैदिक साहित्य में "संस्कार' शब्द का प्रयोग नहीं मिलता। संस्कारों का विवेचन मुख्य रुप से गृह्यसूत्रों में ही मिलता है, किंतु इनमें भी संस्कार शब्द का प्रयोग यज्ञ सामग्री के पवित्रीकरण के अर्थ में किया गया है। वैखानस स्मृति सूत्र)200 से 500 ई. में सबसे पहले शरीर संबंधी संस्कारों और यज्ञों में स्पष्ट (अंतर मिलता है।

मनु और याज्ञवल्क्य के अनुसार संस्कारों से द्विजों के गर्भ और बीज के दोषादि की शुद्धि होती है। कुमारिल (ई. आठवीं सदी) ने तंत्रवार्तिक ग्रंथ में इसके कुछ भिन्न विचार प्रकट किए हैं। उनके अनुसार मनुष्य दो प्रकार से योग्य बनता है - पूर्व- कर्म के दोषों को दूर करने से और नए गुणों के उत्पादन से। संस्कार ये दोनों ही काम करते हैं। इस प्रकार प्राचीन भारत में संस्कारों का मनुष्य के जीवन में विशेष महत्व था। संस्कारों के द्वारा मनुष्य अपनी सहज प्रवृतियों का पूर्ण विकास करके अपना और समाज दोनों का कल्याण करता था। ये संस्कार इस जीवन में ही मनुष्य को पवित्र नहीं करते थे, उसके पारलौकिक जीवन को भी पवित्र बनाते थे। प्रत्येक संस्कार से पूर्व होम किया जाता था, किंतु व्यक्ति जिस गृह्यसूत्र का अनुकरण करता हो, उसी के अनुसार आहुतियों की संख्या, हव्यपदार्थों और मंत्रों के प्रयोग में अलग- अलग परिवारों में भिन्नता होती थी।

मनु ने गर्भाधान, पुंसवन, सीमंतोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, उपनयन, केशांत, समावर्तन, विवाह और श्मशान, इन तेरह संस्कारों का उल्लेख किया है। **याज्ञवल्क्य** ने भी इन्हीं संस्कारों का वर्णन किया है। केवल केशांत का वर्णन उसमें नहीं मिलता है, क्योंकि इस काल तक वैदिक ग्रंथों के अध्ययन का प्रचलन बंद हो गया था। बाद में रची गई पद्धतियों में संस्कारों की संख्या सोलह दी है, किंतु गौतम धर्मसूत्र और गृह्यसूत्रों में अंत्येष्टि संस्कार का उल्लेख नहीं है, क्योंकि अंत्येष्टि संस्कार का वर्णन करना अशुभ माना जाता था। **स्वामी दयानंद सरस्वती** ने अपनी संस्कार विधि तथा **पंडित भीमसेन शर्मा** ने अपनी षोडश संस्कार विधि में **सोलह संस्कारों** का ही वर्णन किया है। इन दोनों लेखकों ने अंत्येष्टि को सोलह संस्कारों में सम्मिलित किया है।

गर्भावस्था में गर्भाधान, पुंसवन और सीमंतोन्नयन तीन संस्कार होते हैं। इन तीनों का उद्देश्य माता-

पिता की जीवन- चर्या इस प्रकार की बनाना है कि बालक अच्छे संस्कारों को लेकर जन्म ले। जात-कर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, मुंडन, कर्ण बेध, ये छः संस्कार पाँच वर्ष की आयु में समाप्त हो जाते हैं। बाल्यकाल में ही मनुष्य की आदतें बनती हैं, अतः ये संस्कार बहुत जल्दी- जल्दी रखे गये हैं। उपनयन और वेदारंभ संस्कार ब्रह्मचर्याश्रम के प्रारंभ में प्रायः साथ- साथ होते थे। समावर्तन और विवाह संस्कार गृहस्थाश्रम के पूर्व होते हैं। उन्हें भी साथ- साथ समझना चाहिए। वानप्रस्थ और संन्यास संस्कार इन दोनों आश्रमों की भूमिका मात्र हैं । अंत्येष्टि, संस्कार का मृतक की आत्मा से संबंध नहीं होता । उसका उद्देश्य तो मृत पुरुष के शरीर को सुगंधित पदार्थों सहित जलाकर वायु मण्डल में फैलाना है, जिससे दुर्गंध आदि न फैले । इन संस्कारों का उद्देश्य इस प्रकार है : -

१. बीजदोष न्यून करने हेतु संस्कार किए जाते हैं । २. गर्भदोष न्यून करने हेतु संस्कार किए जाते हैं ।

बोध प्रश्न -

1. महर्ष गौतम के मत में संस्कारों की संख्या कितनी है –

   क. 16 ख. 25 ग. 40 घ. 10

2. जन्म – जन्मान्तर तक का होने वाला संस्कार है –

   क. पुंसवन ख. नामकरण ग. निष्क्रमण घ. विवाह

3. धर्मशास्त्रानुसार संस्कार है –

   क. 15 ख. 20 ग. 25 घ. 16

4. संस्कार शब्द में कौन सा प्रत्यय है –

   क. वान् ख. मान् ग. घञ् घ. ल्यूट्

5. संस्कार व्यक्ति को .... प्रदान करता है –

   क. धन ख. सुख ग. पात्रता घ. कोई नहीं

6. संस्कार का शाब्दिक अर्थ है –

   क. शुद्धिकरण ख. समता ग. व्यक्तित्व घ. परिवेश

2.5 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जाना कि भारतीय सनातन अथवा हिन्दू धर्म की संस्कृति संस्कारों पर ही आधारित है । हमारे ऋषि-मुनियों ने मानव जीवन को पवित्र एवं मर्यादित बनाने के लिये संस्कारों का अविष्कार किया । धार्मिक ही नहीं वैज्ञानिक दृष्टि से भी इन संस्कारों का

हमारे जीवन में विशेष महत्व है। भारतीय संस्कृति की महानता में इन संस्कारों का महती योगदान है। प्राचीन काल में हमारा प्रत्येक कार्य संस्कार से आरम्भ होता था। उस समय संस्कारों की संख्या भी लगभग चालीस थी। जैसे-जैसे समय बदलता गया तथा व्यस्तता बढती गई तो कुछ संस्कार स्वत: विलुप्त हो गये। इस प्रकार समयानुसार संशोधित होकर संस्कारों की संख्या निर्धारित होती गई। गौतम स्मृति में चालीस प्रकार के संस्कारों का उल्लेख है। महर्षि अंगिरा ने इनका अंतर्भाव पच्चीस संस्कारों में किया। व्यास स्मृति में सोलह संस्कारों का वर्णन हुआ है। हमारे धर्मशास्त्रों में भी मुख्य रूप से सोलह संस्कारों की व्याख्या की गई है। इनमें पहला गर्भाधान संस्कार और मृत्यु के उपरांत अन्त्येष्टि अंतिम संस्कार है। गर्भाधान के बाद पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण ये सभी संस्कार नवजात का दैवी जगत् से संबंध स्थापना के लिये किये जाते हैं। नामकरण के बाद चूडाकर्म और यज्ञोपवीत संस्कार होता है। इसके बाद विवाह संस्कार होता है। यह गृहस्थ जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्कार है। हिन्दू धर्म में स्त्री और पुरुष दोनों के लिये यह सबसे बडा संस्कार है, जो जन्म-जन्मान्तर का होता है। विभिन्न धर्मग्रंथों में संस्कारों के क्रम में थोडा-बहुत अन्तर है, लेकिन प्रचलित संस्कारों के क्रम में गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूडाकर्म, विद्यारंभ, कर्णवेध, यज्ञोपवीत, वेदारम्भ, केशान्त, समावर्तन, विवाह तथा अन्त्येष्टि ही मान्य है।

2.6 शब्दावली-

षोडश – सोलह ।

अंतर्भाव - आंतरिक भाव ।

स्मृति – ग्रन्थ, यथा – मनुस्मृति।

मनीषी - ऋषि।

अद्वितीय – जिसके समान दूसरा कोई न हो।

अनुशासनहीनता – जो अनुशासन का पालन न करता हो।

अन्योनाश्रित – परस्पर।

सिद्धान्त – जो अन्त में जाकर सिद्ध हो जाये।

आगम – शास्त्र।

सर्वस्वीकृत – सभी के द्वारा स्वीकृत।

अक्षुण्ण – निरन्तरता।

उपनयन - यज्ञोपवीत ।

2.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. ग
2. घ
3. घ
4. ग
5. ग
6. क

2.8 सहायक पाठ्यसामग्री

1- कर्मकाण्ड प्रदीप
2- कर्मकलाप
3. संस्कार विमर्श
4. षोडश संस्कार
5. मनुस्मृति

2.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. संस्कार से आप क्या समझते हैं। स्पष्ट कीजिये।
2. संस्कार की वैज्ञानिक अवधारणा को स्पष्ट कीजिये।
3. षोडश संस्कारों का उल्लेख कीजिये ।
4. संस्कारों का अपने शब्दों में महत्व समझाइये।

इकाई – 3 व्रत एवं पर्वों की वैज्ञानिकता

इकाई की रूपरेखा

3.1 प्रस्तावना
3.2 उद्देश्य
3.3 व्रत एवं पर्व परिचय
3.4 व्रत एवं पर्वों की वैज्ञानिकता
बोध प्रश्न
3.5 सारांश
3.6 पारिभाषिक शब्दावली
3.7 बोध प्रश्नों के उत्तर
3.8 सन्दर्भ ग्रन्थ
3.9 सहायक पाठ्यसामग्री
3.10 निबन्धात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई BAKA(N)–102 के चतुर्थ खण्ड की तीसरी इकाई 'व्रत एवं पर्वों की वैज्ञानिकता' शीर्षक से सम्बन्धित है। इससे पूर्व की इकाईयों में आपने पूजन में मांगलिक द्रव्यों की वैज्ञानिकता, एवं संस्कारों की वैज्ञानिक अवधारणा का अध्ययन कर लिया है । इस इकाई में अब आप व्रत एवं पर्वों की वैज्ञानिकता का अध्ययन करने जा रहे है।

भारतीय हिन्दू सनातन परम्परा में व्रत एवं पर्वों का विधान प्राचीनकाल से चलता आ रहा है । व्रत एवं पर्व एक क्रिया है जिसे धारण कर मनुष्य शक्तियॉ अर्जित करता है। जिस प्रकार कोई कार्य करने पर हमें उसका फल मिलता है। वैसे ही व्रत एवं पर्व को धारण करने पर फल के रूप में हमें उससे शक्ति एवं उर्जा प्राप्त होती है। धार्मिक आस्था के अनुसार हम ईश्वर की कृपा से मनोवांछित फल की भी प्राप्ति करते है।

व्रत धारण किया जाता है, पर्व मनाया जाता है। पर्व वर्ष में अलग –अलग नाम से होते है। व्रत का रूप अलग है। आइये व्रत एवं पर्व का अध्ययन करते है।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- ❖ व्रत एवं पर्व को समझा सकेंगे।
- ❖ व्रत एवं पर्व में क्या भेद है निरूपित कर सकेंगे।
- ❖ व्रत एवं पर्व के प्रकार को समझा सकेंगे।
- ❖ इसका वैज्ञानिक चिन्तन कर सकेंगे।
- ❖ व्रत एवं पर्व की महत्ता को समझा सकेंगे।

3.3 व्रत एवं पर्व परिचय

भारत विविधताओं का देश हैं। धर्मनिरपेक्षता होने के कारण अनेक धर्म के लोग यहॉ पाये जाते हैं। यहॉ पर्वों के साथ व्रत और अनुष्ठान जोड़े गये हैं। अन्य संस्कृतियों में भी पर्वों, व्रतों और अनुष्ठानों का प्रचलन किसी न किसी रूप में मिलता है, किन्तु जितनी वैज्ञानिकता हिन्दुओं के व्रत उपवासों में है उतनी अन्य कहीं नहीं। प्रत्येक त्यौहार में मौसम के अनुसार व्रत, अनुष्ठान किये जाते हैं। हिन्दू शास्त्रों में धारण किए हुए व्रत में क्या खायें, क्या पहनें किसका पूजन करें, इन सभी बातों

का विस्तृत उल्लेख मिलता है। लोक संस्कृति में इनका समावेश होने से जन साधारण को भी इस बात का ज्ञान है कि व्रतस्वास्थ्य के लिये- कितने लाभदायक हैं। प्रत्येक व्रत उपवास के पीछे पौराणिक कथायें हैं जो सुखी जीवन के लिये हितकर संदेश देती हैं।

व्रत का अनुष्ठान होता है, तथा वह सात्विक रूप में धारण किया जाता है। इसमें जो वह धारण करता है , पूरी दृढ़ता के साथ उसका पालन करता है। पर्व को उत्सव के रूप में मनाया जाता है। भारत में पर्वों की एक लम्बी परम्परा रही है। एक वर्ष में कई महत्वपूर्ण पर्व मनाये जाते हैं –

प्रमुख व्रत एवं पर्व -

मकरसंक्रान्ति

वसन्तपंचमी

माघी पूर्णिमा

शिवरात्रि

होली

वैशाखी

रामनवमी

वटसावित्री

गुरूपूर्णिमा

रक्षाबन्धन

गणेश चतुर्थी

श्रीकृष्णजन्माष्टमी

हरितालिका तीज व्रत

अनन्तचतुर्दशी व्रत

जीवत्पुत्रिका व्रत

नवरात्र (दशहरा) व्रत

करवा चौथ व्रत

प्रबोधिनी एकादशी व्रत

दीपावली

सूर्यषष्ठी व्रत

उपर्युक्त व्रत एवं पर्वों की अपनी अपनी महत्ता है। लोग वर्ष में इसे धूमधाम से मनाते हैं। प्रत्येक व्रत

एवं पर्व में अलग – अलग धारणाओं को मानते हुए लोग परम्परावशात् इसे उत्सव के रूप में मनाते हैं। व्रत को अपनी इष्ट सिद्धि के लिए धारण करते हैं।

प्रत्येक कथा में एक सांसारिक एवं पारमार्थिक बोध होता है। कथाओं में नीतियॉ होती है। वह लोक स्वरों में लोक बिम्बों के साथ गूथी हुई होती हैं। इतना ही नहीं भारतीय समाज का सर्वाधिक भरोसा सम्बन्धों में हैं। सम्बन्ध बनाना और निभाना भारतीय संस्कृति की आदर्श स्थिति है। यहां कोई स्त्री सिर्फ स्त्री नहीं है। वे मां है, बहन है, पत्नी है इसी तरह पुरुष भी भाई हैं, सखा है, बेटा है आदि। इन सब सम्बन्धों को एक सूत्र में पिरोने पर बनता है परिवार। परिवार से समाज बनाते हैं और समाज से राष्ट्र इसी तरह इकाई बड़ी होती रहती है। जीवन को पूर्ण बनाने; सात्विक बनाने के लिए व्रत और चेतनामयी बनाए रखने के लिए त्यौहार मनाये जाते हैं। व्रतों के प्रभाव से मनुष्य की आत्मा शुद्ध होती है। संकल्प शक्ति बढ़ती है। बुद्धि, सद्विचार तथा ज्ञान विकसित होता है। परम्परा के प्रति भक्ति और श्रद्धा बढ़ती है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मनुष्य कुशलतापूर्वक, सफलतापूर्वक तथा उत्साहपूर्वक कार्य करता है। उसके सुखमय दीर्घ जीवन के आरोग्य साधनों का स्वयं ही संचय हो जाता है।

प्रमुख व्रत एवं त्योहार की वैज्ञानिकता –

यदि देखा जाए तो प्रत्येक व्रत एवं पर्वों की वैज्ञानिकता सिद्ध होती है। उनमें से यहॉ कुछ प्रमुख का उदाहरण प्रस्तुत है -

मकर संक्रान्ति –

मकर संक्रान्ति का पर्व प्रति वर्ष 14 जनवरी को मनाया जाता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार इसी दिन सूर्य का मकर राशि में प्रवेश हुआ था। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी इस पर्व की महत्ता है। इस दिन से दिन में परिवर्तन होने लगता है अर्थात् दिन तिल – तिल बढ़ने लगता है, तथा रात्रि छोटी होने लगती है। इस दिन तिल सेवन का महत्व होता है।

होली महोत्सव

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार हिन्दी मासों की गणना चैत्र मास से आरम्भ होती है। चैत्र से लेकर फाल्गुन मास पर्यन्त 12 मास होते है। अंग्रेजी में वही जनवरी से दिसम्बर तक होता है। यद्यपि माघ शुक्ल पंचमी से चैत्र शुक्ल पंचमी तक वसन्तोत्सव होता है। चैत्रकृष्ण प्रतिपदा को होली पर्व मनाया जाता है तथा फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा को होलिका दहन होता है। भारतीय सनातन परम्परा में होली पर्व नूतन वर्ष आने का सूचक होता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार इस दिन अधर्म के प्रतीक के रूप में होलिका दहन किया जाता है तथा धर्म रूप में भगवान नारायण का नृसिंह रूप द्वारा

भक्त प्रहलाद की रक्षा की गई थी इसलिए धर्म की स्थापना को मानकर उत्सव के रूप में रंग – अबीर के माध्यम से होली का पर्व मनाते है। विशेष रूप में यह राग – रंग, हॅसी – खुशी, नूतन वर्षारम्भ का उत्सव आदि के रूप में मनाया जाता है।

गौरी व्रत

व्रत विज्ञान के अनुसार यह व्रत चैत्र कृष्ण प्रतिपदा से चैत्र प्रतिपदा चैत्र शुक्ल तृतीया तक किया जाता है। गौरी व्रत करने से विवाहिता स्त्री को पति का अनुराग –प्रेम प्राप्त होता है। व्रत करने से शारीरिक बल मिलता है। शारीरिक विकृतियॉ दूर हो जाती है। उदर जनित समस्याओं का निदान हो जाता है। यह एक वैज्ञानिक लाभ भी मिलता है।

देवशयन –

हिन्दू धर्म में अधिकतर लोगों को इस विषय में तनिक भी जानकारी नहीं हैं कि हमारे जो पर्व, त्योहार, व्रतउपवास इत्यादि हैं-, उनका वास्तविक प्रयोजन क्या है? एक साधारण मनुष्य की तो बात ही छोड दीजिए, जो लोग धर्म के नाम पर कमा खा रहे हैं, वो भी इसके बारे में पूरी तरह से अनभिज्ञ हैं। अब यदि कोई इन सब का गहन विश्लेषण करे तो पता चलेगा कि इस धर्म के (सनातन धर्म) प्रत्येक नियम, परम्परा में कितनी वैज्ञानिकता छिपी हुई है। लेकिन आज की पाश्चात्य रंग में रंगी युवा पीढी इन सब को रूढिवादिता, आडम्बर, पुरातनपंथिता जैसे नामों से संबोधित करने लगी है।

देवशयन – जैसा कि नाम ही बोध होता है देवताओं के शयन का समय। सूर्य जब कर्क राशि में प्रवेश करता हो दक्षिणायन आरम्भ होता है, और तभी से देवताओं की रात्रि आरम्भ हो जाती है। कर्कादि छ: राशियों में सूर्य की स्थिति जब तक रहती है, तब तक दक्षिणायन होता है। पुन: मकर संक्रान्ति को सूर्य के मकर राशि में प्रवेश से उत्तरायण आरम्भ होता है और देवताओं का दिन आरम्भ हो जाता है।

भारत व्रत पर्व व त्योहारों का देश है। यूं तो काल गणना का प्रत्येक पल कोई न कोई महत्व रखता है किन्तु कुछ तिथियों का भारतीय काल गणना (कलैंडर) में विशेष महत्व है। भारतीय नव वर्ष (विक्रमी संवत्) का पहला दिन (यानि वर्ष-प्रतिपदा) अपने आप में अनूठा है। इसे नव संवत्सर भी कहते हैं। इस दिन पृथ्वी सूर्य का एक चक्कर पूरा करती है तथा दिन-रात बराबर होते हैं। इसके बाद से ही रात्रि की अपेक्षा दिन बड़ा होने लगता है। काली अंधेरी रात के अंधकार को चीर चन्द्रमा की चांदनी अपनी छटा बिखेरना शुरू कर देती है। वसंत ऋतु का राज होने के कारण प्रकृति का सौंदर्य अपने चरम पर होता है। फाल्गुन के रंग और फूलों की सुगंध से तन-मन प्रफुल्लित और उत्साहित रहता है।

विक्रम सम्वत्सर की वैज्ञानिकता –

भारत के पराक्रमी सम्राट विक्रमादित्य द्वारा प्रारंभ किये जाने के कारण इसे विक्रमी संवत् के नाम से जाना जाता है। विक्रमी संवत् के बाद ही वर्ष को 12 माह का और सप्ताह को 7 दिन का माना गया। इसके महीनों का हिसाब सूर्य व चंद्रमा की गति के आधार पर रखा गया। विक्रमी संवत का प्रारंभ अंग्रेजी कलैण्डर ईसवीं सन् से 57 वर्ष पूर्व ही हो गया था।

चन्द्रमा के पृथ्वी के चारों ओर एक चक्कर लगाने को एक माह माना जाता है, जबकि यह 29 दिन का होता है। हर मास को दो भागों में बांटा जाता है- कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष। कृष्ण पक्ष, में चाँद घटता है और शुक्ल पक्ष में चाँद बढ़ता है। दोनों पक्ष प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी आदि ऐसे ही चलते हैं। कृष्ण पक्ष के अन्तिम दिन (यानी अमावस्या को) चन्द्रमा बिल्कुल भी दिखाई नहीं देता है जबकि शुक्ल पक्ष के अन्तिम दिन (यानी पूर्णिमा को) चाँद अपने पूरे यौवन पर होता है। अर्द्ध-रात्रि के स्थान पर सूर्योदय से दिवस परिवर्तन की व्यवस्था तथा सोमवार के स्थान पर रविवार को सप्ताह का प्रथम दिवस घोषित करने के साथ चैत्र कृष्ण प्रतिपदा के स्थान पर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से वर्ष का आरम्भ करने का एक वैज्ञानिक आधार है। वैसे भी इंग्लैण्ड के ग्रीनविच नामक स्थान से दिन परिवर्तन की व्यवस्था में अर्द्ध-रात्रि के 12 बजे को आधार इसलिए बनाया गया है क्योंकि उस समय भारत में भगवान भास्कर की अगवानी करने के लिए प्रात: 5-30 बज रहे होते हैं। वारों के नामकरण की विज्ञान सम्मत प्रक्रिया को देखें तो पता चलता है कि आकाश में ग्रहों की स्थिति सूर्य से प्रारम्भ होकर क्रमशः बुध, शुक्र, चन्द्र, मंगल, गुरु और शनि की है। पृथ्वी के उपग्रह चन्द्रमा सहित इन्हीं अन्य छह ग्रहों पर सप्ताह के सात दिनों का नामकरण किया गया। तिथि घटे या बढ़े किंतु सूर्य ग्रहण सदा अमावस्या को होगा और चन्द्र ग्रहण सदा पूर्णिमा को होगा, इसमें अंतर नहीं आ सकता। तीसरे वर्ष एक मास बढ़ जाने पर भी ऋतुओं का प्रभाव उन्हीं महीनों में दिखाई देता है, जिनमें सामान्य वर्ष में दिखाई पड़ता है। जैसे, वसंत के फूल चैत्र-वैशाख में ही खिलते हैं और पतझड़ माघ-फाल्गुन में ही होती है। इस प्रकार इस कालगणना में नक्षत्रों, ऋतुओं, मासों व दिवसों आदि का निर्धारण पूरी तरह प्रकृति पर आधारित वैज्ञानिक रूप से किया गया है।

ऐतिहासिक संदर्भ -

वर्ष प्रतिपदा पृथ्वी का प्राकट्य दिवस, ब्रह्मा जी के द्वारा निर्मित सृष्टि का प्रथम दिवस, सतयुग का प्रारम्भ दिवस, त्रेता में भगवान श्री राम के राज्याभिषेक का दिवस (जिस दिन राम राज्य की स्थापना हुई), द्वापर में धर्मराज युधिष्ठिर का राज्याभिषेक दिवस होने के अलावा कलयुग के प्रथम सम्राट परीक्षित के सिंहासनारूढ़ होने का दिन भी है। इसके अतिरिक्त देव पुरुष संत झूलेलाल, महर्षि गौतम व समाज संगठन के सूत्र पुरुष तथा सामाजिक चेतना के प्रेरक डॉ. केशव बलिराम हेड़गेवार का जन्म दिवस भी यही है। इसी दिन समाज सुधार के युग प्रणेता स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की

स्थापना की थी। वर्ष भर के लिए शक्ति संचय करने हेतु नौ दिनों की शक्ति साधना (चैत्र नवरात्रि) का प्रथम दिवस भी यही है। इतना ही नहीं, दुनिया के महान गणितज्ञ भास्कराचार्य जी ने इसी दिन से सूर्योदय से सूर्यास्त तक दिन, महीना और वर्ष की गणना करते हुए पंचांग की रचना की। भगवान राम ने बाली के अत्याचारी शासन से दक्षिण की प्रजा को मुक्ति इसी दिन दिलाई। महाराज विक्रमादित्य ने आज से 2071 वर्ष पूर्व राष्ट्र को सुसंगठित कर शकों की शक्ति का उन्मूलन कर यवन, हूण, तुषार, तथा कंबोज देशों पर अपनी विजय ध्वजा फहराई थी। उसी विजय की स्मृति में यह प्रतिपदा संवत्सर के रूप में मनाई जाती है। अन्य काल गणनाएँ ग्रेगेरियन (अंग्रेजी) कलेण्डर की काल गणना मात्र दो हजार वर्षों के अति अल्प समय को दर्शाती है। जबकि यूनान की काल गणना 3582 वर्ष, रोम की 2759 वर्ष यहूदी 5770 वर्ष, मिस्त्र की 28673 वर्ष, पारसी 198877 वर्ष तथा चीन की 96002307 वर्ष पुरानी है। इन सबसे अलग यदि भारतीय काल गणना की बात करें तो हमारे ज्योतिष के अनुसार पृथ्वी की आयु एक अरब 97 करोड़ 39 लाख 49 हजार 112 वर्ष है। जिसके व्यापक प्रमाण हमारे पास उपलब्ध हैं। हमारे प्राचीन ग्रंथों में एक-एक पल की गणना की गयी है। जिस प्रकार ईस्वी सम्वत् का सम्बन्ध ईसा जगत से है उसी प्रकार हिजरी सम्वत् का सम्बन्ध मुस्लिम जगत और हजरत मुहम्मद साहब से है। किन्तु विक्रमी सम्वत् का सम्बन्ध किसी भी धर्म से न हो कर सारे विश्व की प्रकृति, खगोल सिद्धांत व ब्रह्माण्ड के ग्रहों व नक्षत्रों से है। इसलिए भारतीय काल गणना पंथ निरपेक्ष होने के साथ सृष्टि की रचना व राष्ट्र की गौरवशाली परम्पराओं को दर्शाती है।

ग्रन्थों व संतों का मत स्वामी विवेकानन्द ने कहा था - ''यदि हमें गौरव से जीने का भाव जगाना है, अपने अन्तर्मन में राष्ट्र भक्ति के बीज को पल्लवित करना है तो राष्ट्रीय तिथियों का आश्रय लेना होगा। गुलाम बनाए रखने वाले परकीयों की दिनांकों पर आश्रित रहनेवाला अपना आत्म गौरव खो बैठता है''। महात्मा गांधी ने 1944 की हरिजन पत्रिका में लिखा था ''स्वराज्य का अर्थ है- स्व-संस्कृति, स्वधर्म एवं स्व-परम्पराओं का हृदय से निर्वहन करना। पराया धन और परायी परम्परा को अपनाने वाला व्यक्ति न ईमानदार होता है न आस्थावान'' । नव संवत् यानि संवत्सरों का वर्णन यजुर्वेद के 27वें व 30वें अध्याय के मंत्र क्रमांक क्रमशः 45 व 15 में भी विस्तार से दिया गया है।

स्वाधीनता के पश्चात देश की स्वाधीनता के बाद पंडित जवाहरलाल नेहरू के कार्यकाल में पंचाग सुधार समिति का गठन किया गया जिसके अध्यक्ष प्रो मेघनाथ साहा थे। वे स्वयं तो परमाणु वैज्ञानिक थे ही साथ ही उनकी इस समिति में एक भी सदस्य ऐसा नहीं था, जो भारत की ज्योतिष विद्या या हमारे धर्म शास्त्रों का ज्ञान रखता हो। यही नहीं, प्रो. साहा स्वयं भी भारतीय काल गणना के सूर्य सिद्धांत के सर्वथा विरोधी थे तथा ज्योतिष को मूर्खतापूर्ण मानते थे। परिणामत: इस समिति ने जो पंचाग बनाया उसे ग्रेगेरियन कलेंडर के अनुरूप ही बारह मासों में बांट दिया गया। अंतर केवल उनके नामकरण में रखा। अर्थात जनवरी, फरवरी आदि के स्थान पर चैत्र, वैशाख आदि रख दिए। लेकिन,

महीनों व दिवसों की गणना ग्रेगेरियन कलेंडर के आधार पर ही की गई। पर्व एक नाम अनेक चेती चाँद का त्यौहार, गुडी पडवा त्यौहार (महाराष्ट्र), उगादी त्यौहार (दक्षिण भारत) भी इसी दिन पडते हैं। वर्ष प्रतिपदा के आसपास ही पडने वाले अंग्रेजी वर्ष के अप्रैल माह से ही दुनियाभर में पुराने कामकाज को समेटकर नए कामकाज की रूपरेखा तय की जाती है। समस्त भारतीय व्यापारिक व गैर व्यापारिक प्रतिष्ठानों को अपना-अपना अधिकृत लेखा जोखा इसी आधार पर रखना होता है जिसे वही-खाता वर्ष कहा जाता है। भारत के आय कर कानून के अनुसार प्रत्येक कर दाता को अपना कर निर्धारण भी इसी के आधार पर करवाना होता है जिसे कर निर्धारण वर्ष कहा जाता है। भारत सरकार तथा समस्त राज्य सरकारों का बजट वर्ष भी इसी के साथ प्रारंभ होता है। सरकारी पंचवर्षीय योजनाओं का आधार भी यही वित्तीय वर्ष होता है।

कैसे करें नव वर्ष का स्वागत ? हमारे यहां रात्रि के अंधकार में नववर्ष का स्वागत नहीं होता बल्कि, भारतीय नव वर्ष तो सूरज की पहली किरण का स्वागत करके मनाया जाता है। सभी को नववर्ष की बधाई प्रेषित करें। नववर्ष के ब्रह्ममुहूर्त में उठकर स्नान आदि से निवृत्त होकर पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से घर में सुगंधित वातावरण बनाएँ। शंख व मंगल ध्वनि के साथ प्रभात फेरियाँ निकाल कर ईश्वर उपासना हेतु बृहद यज्ञ करें तथा गौओं, संतों व बडों की सेवा करें। घरों, कार्यालयों व व्यापारिक प्रतिष्ठानों को भगवा ध्वजों व तोरण से सजाएं। संत, ब्राह्मण, कन्या व गाय इत्यादि को भोजन कराएं। रोली-चन्दन का तिलक लगाते हुए मिठाइयाँ बाँटें। इनके अलावा नववर्ष प्रतिपदा पर कुछ ऐसे कार्य भी किए जा सकते हैं जिनसे समाज में सुख, शान्ति, पारस्परिक प्रेम तथा एकता के भाव उत्पन्न हों। जैसे, गरीबों और रोगग्रस्त व्यक्तियों की सहायता, वातावरण को प्रदूषण से मुक्त रखने हेतु वृक्षारोपण, समाज में प्यार और विश्वास बढ़ाने के प्रयास, शिक्षा का प्रसार तथा सामाजिक कुरीतियाँ दूर करने जैसे कार्यों के लिए संकल्प लें। सामुदायिक सफाई अभियान, खेल कूद प्रतियोगिताएँ, रक्त दान शिविर इत्यादि का आयोजन भी किया जा सकता है। आधुनिक साधनों (यथा एस एम एस, ई-मेल, फेस बुक, व्हॉट्स ऐप, और्कुट के साथ-साथ बैनर, होर्डिंग व कर-पत्रकों) के माध्यम से भी नव वर्ष की बधाइयाँ प्रेषित करते हुए उसका महत्व जन-जन तक पहुँचाएँ।

इन श्रेष्ठताओं को राष्ट्र की ऋचाओं में समेटने एवं जीवन में उत्साह व आनन्द भरने के लिये यह नव संवत्सर की प्रतिपदा प्रति वर्ष समाज जीवन में आत्म गौरव भरने के लिए आता है। आवश्यकता इस बात की है कि हम सब भारतवासी इसे पूरी निष्ठा के साथ आत्मसात कर धूम-धाम से मनाएं और विश्व भर में इसका प्रकाश फैलाएं। आओ! सन् को छोड़ संवत अपनाएँ, निज गौरव का मान जगाएं

दीपावली –

जैसा कि भारतीय त्योहारों और परम्पराओं का आशय धर्म और स्वास्थ्य से जुड़ा हुआ है। जो वैज्ञानिक तथ्यों को अपने अंदर दृढता से समाहित किये हुए है। किसी भी त्यौहार व परम्परा का एक गहन मतलब है जिसमे सफाई, स्वास्थ्य, ऋतु के अनुसार रहन- -सहन और खान पान पर खूब

ध्यान दिया गया है। जिसमे कृषि को ध्यान में रखकर ऋतुओं के अनुसार त्योहारों का प्रचलन है जो हमारें उच्च आदर्श व हमारें उच्च जीवन को दर्शाता है। ऋषि-मुनियों ने अपने- अपने ज्ञान को विज्ञान की कसौटी पर उस समय ही कस दिया था जब विज्ञान का उदय भी नहीं हुआ था और तभी से वैज्ञानिकता के महत्त्व को जीवन में उतारने पर विधिवत बल दिया गया है। सुबह की संध्या से लेकर रात्रि के शयन तक के जीवन शैली को देखें तो यह प्रतीत होता है कि हमारें ऋषियों और पूर्वजों ने हर काम को विज्ञान के आधार पर विकसित किया था। जिसे आधुनिकता में हम दर किनार करते हुए चलने की होड़ लगा बैठे हैं। तथा आज हम तमाम उद्वेगों और समस्याओं से घिरें हुए हैं इसके पीछें शायद हमारा अपनी परम्पराओं और रहनसहन पर विश्वास न करना ही प्रतीत - होता है। जैसा कि भारतीय प्रथा में कार्तिक मास का बहुत ही महत्व बताया गया है जिसमें पुरे मास तुलसी के पौधें की पूजा व दीपक जलाकर व्रत रखना तथा तुलसी ब्याह का उत्तम उदाहरण वनस्पतियों के जीवन दायिनी मुल्य के समझ को दर्शाता है। कार्तिक मास में शाम का भोजन आंवले के बृक्ष के नीचें पका कर ग्रहण करना या कम से कम एक दिन जरुर करना इस बात का प्रमाण है कि आंवला का महत्त्व स्वस्थ जीवन के लिए कितना जरुरी है। कार्तिक अमावस्या को दीवाली मनाना गहन अंधकार को दूर करना है और कार्तिक पूर्णिमा को नदियों में स्नान, अर्घ व अर्चन तथा दान करना प्राकृतिक साधनों का जीवन में गहन महत्त्व को दर्शाता है जिसको आध्यात्म के साथ जोड़कर स्वास्थ्य, प्रदुषण और नकारात्मकता इत्यादि पहलू के लिए धर्म की राह पर चल कर जीवन जीने की गरिमा को श्रद्धा और विश्वास के साथ दर्शाया गया है।

इसी कार्तिक महीने में धनतेरस, काली चौदस और दीपावली का त्यौहार बडें ही धूम- धाम और श्रद्धा से मनाया जाता है। लगातार तीन दिन तक चलने वाले इस त्यौहार में सबका अपना- अपना एक अलग स्थान है। जिसमे आयु, धन, ऐश्वर्य, सुखसंपत्ति-, आमोदप्रमोद को धर्म के साथ-जोडकर धार्मिक आस्था को प्रकृति के साथ संयोजन बनाए रखने पर बल दिया गया है जिसमे सफाई और स्वास्थ्य के प्रति विशेष ध्यान दिया गया है जो किसी भी प्रकार से वैज्ञानिक आदर्शों को जीवन में उतारने की ही बात है। जैसा कि समुन्द्र मंथन से चौदह अमूल्य रत्नों की प्राप्ति हुयी जिसमे अमृत कलश के साथ धनवंतरी ऋषि का उत्तपन्न होना और स्वास्थ्य के लिए आयुर्वेद का जीवनदायिनी प्रयोग करना एक महान स्तंभ है। जिसमे कलश और अमृत का मतलब धन और स्वास्थ्य से है और विष्णु के अंश धनवंतरी का प्रादुर्भाव जगत को निरोगी बनाना है। इसी उपलक्ष्य में धनतेरस मनाया जाता है जिसमे माता लक्ष्मी की कृपा प्राप्त करने के लिए लंबी आयु और स्वस्थ होने के लिए यह त्यौहार मनाया जाता है और पूजा की जाती है। यह शरद ऋतु का समय होता है जब

वनस्पतियां अपने रूपरंग से नवपल्वित होती हैं और वातावरण में एक नया उमंग होता है- गर्मी और वर्षा ऋतु का समय समाप्त होने को होता है और ठंढी का शीतल आगमन होता है। दों ऋतुओं का उतारचढाव होता है जिससे कफ इत्यादी का व्याप्त- होना बढ़ जाता है और बरसाती कीटाणुओं तथा गंदगी इत्यादि नुकशानकारक अवयवों का वातावरण में जम जाने से स्वास्थ्य के लिए जोखम की अधिकता बढ़ी हुयी होती है जिसकों स्वच्छ करने कके लिए भी इन त्योहारों और परंपरा का उद्देश्य है जो स्वास्थ्य के प्रति हमारी सजगता को दर्शाता है। इसी दिन धनवंतरी जी कलश लेकर प्रकट हुए थे अत: किसी नए पात्र को इस दिन खरीद कर घर पर पूजा की जाती है जिससे धन में कई गुना बृद्धि होती है। आज के दिन चांदी खरीदने की प्रथा है जो चन्द्रमा का प्रतिक है और शीतलता प्रदान करता है जिससे मन में संतोष रूपी धन का वास होता है जैसा कि संतोष में ही हर धन समाहित है जो सबसे बडा धन है। इस दिन लक्ष्मी और गणेश की मूर्ति खरीद कर रख ली जाती है और दीपावली के दिन उसका पूजन किया जाता है। धनतेरस के दिन आँगन में दीप जलाकर किसी नए पत्र या चांदी के सिक्के का पूजन किया जाता है और दीपक का पूजन करके मुख्य दरवाजे पर रखा जाता है जिससे पुत्र रत्न की प्राप्ति होती है। तथा रात्रि को यम के नाम से दक्षिण दिशा में दीपक जलाया जाता है ताकी परिवार कुल में अकाल मृत्यु को रोका जा सकें-। जैसा कि धनवंतरी देवताओं के वैद्य हैं और अमृत पिलाकर उन्हें अमर कर दिये थे। पर मनुष्य योनी में यम के दूतों को किसी की अकाल मृत्यु करने पर बहुत ग्लानी होती थी अत: धनवंतरी ने कहा कि जो आज की रात्रि यम के नाम का दीपक दक्षिण मुखी जलाएगा उसके घर में किसी भी प्रकार से अकाल मृत्यु नहीं होगी और यह प्रथा आज भी प्रचलित है। अत: पूजन करना चाहिए और आज के दिन धनवंतरी भगवान का भगवान धनवंतरी से स्वास्थ्य और अर्थ की कामना करनी चाहिए। आज ही के दिन लक्ष्मी या गणेश से अंकित चांदी का सिक्का या कोई वर्तन खरीदें तथा उसमे दीपावली की रात में भगवान गणेश और माँ लक्ष्मी को भोग लगाएं। काली चौदस के दिन घर की खूब सफाई कर लें और दरिद्र नारायण को रात्रि में झाडूं से सूपा को बजाकर घर से निकाले और ईश्वर को आमंत्रित करें। जो आज भी दीपावली की रात्रि में औरतें देर रात्रि के बाद ईश्वर पैठें दरिद्र निकले की आवाज लगाते हुए सूप बजाकर घर के हर कोनें में घूम ननारायण को दूर काघूम कर करती हैं और दरिद्र- रास्ता दिखाती हैं। इसी दिन माँ काली ने नरकासुर का वध किया था। यानि नरक जैसी अवस्था का विनाश कर यह संदेश दिया था कि गंदगी किसी भी अवस्था में हों नकारात्मक उर्जा पैदा करती है और स्वास्थ्य को प्रभावित कर धन का नाश करती है। दीपावली कार्तिक मास अमावस्या को मनाई जाती है। आज के ही दिन माता लक्ष्मी समुन्द्र मंथन से अवतरित हुयी थी और विष्णु जी का वरण किया था। जिन्हें

धनवंतरी की बहन भी कहा गया है। अंग्रेजी के विद्वान का यह उद्धरण इसकी पुष्टि करता है WEALTH IS GONE NOTHING IS GONE, HEALTH IS GONE SOMTHING IS GONE, BUT IF CHARACTER IS GONE EVERYTHING IS GONE. यहाँ चरित्र का मतलब केवल काम से सम्बंधित नहीं है बल्कि सम्पूर्ण चरित्र से है। जैसा कि श्री रामचन्द्र जी चौदह वर्षीय वनवास पूर्ण करके आज ही अयोध्या में वापस पधारें थे इस उपलक्ष्य में दीवाली मनाई जाती है जिसमे प्रथम पूज्य गणेश, माँ लक्ष्मी और माँ सरस्वती जी की पूजा की जाती है और दीपों की आवली यानि दीपक का कतार प्रज्वलित कर जीवन के गहन अंधकार को दूर किया जाता है। रात्रि में माँ लक्ष्मी हर घर में आती हैं इसलिए उनकी आगवानी करने हेतु घर को सजाकर रखा जाता है और उनके वास करने की कामना की जाती है। स्वादिष्ट व मधुर भोजन बनाया जाता है और सपरिवार ग्रहण किया जाता है सबकी प्रसन्नता के लिए नए आभूषण व वस्त्र लाया जाता है ताकी मन प्रफुल्लित रहें घर प्रफुल्लित रहें और माँ लक्ष्मी का वास चिर काल तक घर- परिवार में बना रहें, एक दूसरे से प्रेम और सम्मान बना रहें। यही दीपावली का त्यौहार है जो सिंधु सभ्यता से मनाया जा रहा है जो अपने आप में पूर्ण वैज्ञानिक व धार्मिक है। हां एक निवेदन है कि आज हम प्रदूषित वातावरण में जीवन जी रहें हैं जिसमे पटाखे का अत्यधिक उपयोग व विषैली मिठाइयों का जमावड़ा हमारे लिए व आने वाली पीढ़ी के लिए अभिशाप है। अत: न तो पटाखे फोडने का अतिक्रमण करें नाही विषाक्त मिष्ठान का प्रयोग करें। प्रदुषण मुक्त स्वास्थ ही जीवन है।

इस प्रकार मानव जीवन में व्रत एवं पर्वों की वैज्ञानिकता सिद्ध होती है।

बोध प्रश्न –

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें –

1.भारत .... का देश है।

2. भारत में पर्वो की एक लम्बी .... रही है।

3. प्रत्येक कथा में एक .... एवं .... पारमार्थिक बोध होता है।

4. मकर संक्रान्ति का पर्व .... को मनाया जाता हैं।

5. मास की संख्या .... है।

6. माघ शुक्ल पंचमी से चैत्र शुक्ल पंचमी तक .... मनाया जाता है।

3.5 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जाना कि भारत में पर्वों के साथ व्रत और अनुष्ठान जोड़े गये हैं। अन्य संस्कृतियों में भी पर्वों, व्रतों और अनुष्ठानों का प्रचलन किसी न किसी रूप में मिलता है, किन्तु जितनी वैज्ञानिकता हिन्दुओं के व्रत उपवासों में है उतनी अन्य कहीं नहीं। प्रत्येक त्यौहार में मौसम के अनुसार व्रत, अनुष्ठान किये जाते हैं। हिन्दू शास्त्रों में किए किये व्रत में क्या खायें, क्या पहनें किसका पूजन करें, इन सभी बातों का विस्तृत उल्लेख मिलता है। लोक संस्कृति में इनका समावेश होने से जन साधारण को भी इस बात का ज्ञान है कि व्रतस्वास्थ्य के - लिये कितने लाभदायक हैं। प्रत्येक व्रत उपवास के पीछे पौराणि-क कथायें हैं जो सुखी जीवन के लिये हितकर संदेश देती हैं। व्रत का अनुष्ठान होता है, तथा वह सात्विक रूप में धारण किया जाता है। इसमें जो वह धारण करता है , पूरी दृढ़ता के साथ उसका पालन करता है। पर्व को उत्सव के रूप में मनाया जाता है। भारत में पर्वों की एक लम्बी परम्परा रही है। प्रत्येक कथा में एक सांसारिक एवं पारमार्थिक बोध होता है। कथाओं में नीतियॉ होती है। वह लोक स्वरों में लोक बिम्बों के साथ गूथी हुई होती हैं। इतना ही नहीं भारतीय समाज का सर्वाधिक भरोसा सम्बन्धों में हैं। सम्बन्ध बनाना और निभाना भारतीय संस्कृति की आदर्श स्थिति है। यहां कोई स्त्री सिर्फ स्त्री नहीं है। वे मां है, बहन है, पत्नी है इसी तरह पुरुष भी भाई हैं, सखा है, बेटा है आदि। इन सब सम्बन्धों को एक सूत्र में पिरोने पर बनता है परिवार। परिवार से समाज बनाते हैं और समाज से राष्ट्र इसी तरह इकाई बड़ी होती रहती है। जीवन को पूर्ण बनाने; सात्विक बनाने के लिए व्रत और चेतनामयी बनाए रखने के लिए त्यौहार मनाये जाते हैं। व्रतों के प्रभाव से मनुष्य की आत्मा शुद्ध होती है। संकल्प शक्ति बढ़ती है। बुद्धि, सद्विचार तथा ज्ञान विकसित होता है। परम्परा के प्रति भक्ति और श्रद्धा बढ़ती है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मनुष्य कुशलतापूर्वक, सफलतापूर्वक तथा उत्साहपूर्वक कार्य करता है। उसके सुखमय दीर्घ जीवन के आरोग्य साधनों का स्वयं ही संचय हो जाता है।

3.6 शब्दावली-

विविधता – अनेकता ।

धर्मनिरपेक्ष - जहॉ अनेक धर्म के लोग एक साथ रहते हो ।

पारमार्थिक – कल्याणकारिक ।

सर्वाधिक - सबसे अधिक ।

सद्विचार – अच्छे विचार

दीर्घजीवन – लम्बा जीवन

संक्रान्ति – परिवर्तन

वर्षारम्भ – वर्ष का आरम्भ

विकृतियॉ – दोष

देवशयन – देवताओं का शयन

काल गणना – समय गणना

अर्द्धरात्रि – आधी रात

3.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. विविधताओं
2. परम्परा
3. सांसारिक, पारमार्थिक
4. 14 जनवरी
5. 12
6. वसन्तोत्सव

3.8 सहायक पाठ्यसामग्री

1- कर्मकलाप

2. संस्कार विमर्श

3.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. भारत के प्रमुख व्रत – पर्वों का उल्लेख कीजिये।
2. व्रत एवं पर्वों की वैज्ञानिकता क्या है ।
3. व्रत एवं पर्वों पर अपने शब्दों में निबन्ध लिखिये ।

इकाई – 4 उपनयन एवं विवाह की वैज्ञानिकता

इकाई की रूपरेखा

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 उपनयन की वैज्ञानिकता

4.4 विवाह की वैज्ञानिकता

बोध प्रश्न

4.5 सारांश

4.6 पारिभाषिक शब्दावली

4.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.8 सन्दर्भ ग्रन्थ

4.9 सहायक पाठ्यसामग्री

4.10 निबन्धात्मक प्रश्न

4.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई BAKA(N)–102 के चतुर्थ खण्ड की चौथी इकाई 'उपनयन एवं विवाह की वैज्ञानिकता' शीर्षक से सम्बन्धित है। इससे पूर्व की इकाई में आपने व्रत एवं पर्व की वैज्ञानिकता को समझ लिया है। आइये इस इकाई में उपनयन एवं विवाह की वैज्ञानिकता को समझते है।

उपनयन का अर्थ – यज्ञोपवीत संस्कार से है एवं विवाह को आप सब जानते ही होंगे। इसका भी अपना वैज्ञानिक महत्व है जिसका अध्ययन आप प्रस्तुत इकाई में करेंगे।

कर्मकाण्ड में उपनयन एवं विवाह एक अभिन्न अंग है। उपनयन मानव जीवन को आरम्भ में शक्ति प्रदान करता है, जिसके बल पर वह तेज धारण कर अपने आप को योग्य बनाता है तथा विवाह में उसे शक्ति के रूप में एक साहचरी की प्राप्ति होती है, जिसे अपनाकर वह सम्पूर्ण जीवन को सुखपूर्वक एवं व्यवस्थित रूप से चला पाने में समर्थ होता है।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- ❖ उपनयन क्या है। समझा सकेंगे।
- ❖ विवाह की वैज्ञानिकता बता सकेंगे।
- ❖ उपनयन की वैज्ञानिकता को समझ लेंगे।
- ❖ उपनयन एवं विवाह का महत्व समझा पायेंगे।
- ❖ उपनयन एवं विवाह के गुण दोष की समीक्षा कर सकेंगे।

4.3 उपनयन की वैज्ञानिकता

भारतीय सनातन परम्परा में समस्त धर्म सम्बन्धी कर्म पूर्णत: वैज्ञानिक है, इसमें कोई सन्देह नहीं हैं। जहाँ तक उपनयन और विवाह का प्रश्न है, वह भी पूर्णरूपेण वैज्ञानिक है। उपनयन का अर्थ है –

पास या सन्निकट ले जाना। प्रश्न उठता है कि किसके पास ले जाना ? इसमें कई मत है। शिक्षण हेतु आचार्य के पास ले जाना। नवशिष्य को विद्यार्थीपन की अवस्था तक पहुँचा देना आदि … आदि। हिरण्यकेशि के अनुसार जब गुरू शिष्य से कहलवाता है कि – मैं ब्रह्मसूत्रों को प्राप्त हो गया हूँ , मुझे इसके पास ले चलिये, सविता देवता द्वारा प्रेरित मुझे ब्रह्मचारी होने दीजिये।

मानवगृह्यसूत्र एवं काठक ने 'उपनयन' के स्थान पर 'उपायन' शब्द का प्रयोग किया है। काठक के टीकाकार आदित्यदर्शन ने कहा है कि उपानय, उपनयन, मौञ्चीबन्धन, बटुकरण, व्रतबन्ध समानार्थक हैं।

इस संस्कार के उद्गम एवं विकास के विषय में कुछ चर्चा हो जाना आवश्यक है, क्योंकि यह संस्कार सब संस्कारों में अति महत्त्वपूर्ण माना गया है। उपनयन संस्कार का मूल भारतीय एवं ईरानी है, क्योंकि प्राचीन ज़ोरॉस्ट्रिएन (पारसी) का (लुंगी) नुसार पवित्र मेखला अधोवसनशास्त्रों के अ सम्बन्ध आधुनिक पारसियों से भी है। किन्तु इस विषय में हम प्रवेश नहीं करेंगे। हम अपने को भारतीय साहित्य तक ही सीमित रखेंगे। ऋग्वेद में 'ब्रह्मचारी' शब्द आया है। 'उपनयन' शब्द दो प्रकार से समझाया जा सकता है –

1. बच्चे को आचार्य के सन्निकट ले जाना,

2. वह संस्कार या कृत्य जिसके द्वारा बालक आचार्य के पास ले जाया जाता है। पहला अर्थ आरम्भिक है, किन्तु कालान्तर में जब विस्तारपूर्वक यह कृत्य किया जाने लगा तो दूसरा अर्थ भी प्रयुक्त हो गया। आपस्तम्बधर्मसूत्र ने दूसरा अर्थ लिया है। उसके अनुसार उपनयन एक संस्कार है जो उसके लिए किया जाता है, जो विद्या सीखना चाहता है; "यह ऐसा संस्कार है जो विद्या सीखने वाले को गायत्री मन्त्र सिखाकर किया जाता है।स्पष्ट है ", उपनयन प्रमुखतया गायत्री-है (पवित्र गायत्री मन्त्र का उपदेश) उपदेश। इस विषय में जैमिनीय भी द्रष्टव्य है।

आश्वलायनगृह्यसूत्र के मत से ब्राह्मणकुमार का उपनयन जन्म से लेकर आठवें वर्ष में, क्षत्रिय का 11वें वर्ष में एवं वैश्य का 12वें वर्ष में होना चाहिए ; यही नहीं, क्रम से 16वें, 22वें एवं 24वें वर्ष तक भी उपनयन का समय बना रहता है। आपस्तम्ब, शांखायन बौधायन, भारद्वाज एवं गोभिल गृह्यसूत्र तथा याज्ञवल्क्य, आपस्तम्बधर्मसूत्र स्पष्ट कहते हैं कि वर्षों की गणना गर्भाधान से होनी चाहिए। यही बात महाभाष्य में भी है। पारस्करगृह्यसूत्र के मत से उपनयन गर्भाधान या जन्म से आठवें वर्ष में होना चाहिए, किन्तु इस विषय में कुलधर्म का पालन भी करना चाहिए। याज्ञवल्क्य ने भी कुलधर्म की बात चलायी है। शांखायनगृह्यसूत्र ने गर्भाधान से 8वाँ या 10वाँ वर्ष, मानव ने 7वाँ या 9वाँ वर्ष, काठक ने तीनों वर्णों के लिए क्रम से 7वाँ, 9वाँ एवं 11वाँ वर्ष स्वीकृत किया है; किन्तु यह छूट केवल क्रम से आध्यात्मिक, सैनिक एवं धनसंग्रह की महत्ता- के लिए ही दी गयी है। आध्यात्मिकता, लम्बी आय एवं धन की अभिकांक्षा वाले ब्राह्मण पिता के लिए पुत्र का उपनयन गर्भाधान से 5वें, 8वें एवं 9वें वर्ष में भी किया जा सकता है। आपस्तम्बधर्मसूत्र एवं बौधायन गृह्यसूत्र' ने आध्यात्मिक महत्ता, लम्बी आयु, दीप्ति, पर्याप्त भोजन, शारीरिक बल एवं पशु के लिए

क्रम से 7वाँ, 8वाँ, 9वाँ, 10वाँ, 11वाँ एवं 12वाँ वर्ष स्वीकृत किया है। अत: जन्म से 8वाँ, 11वाँ एवं 12वाँ वर्ष क्रम से ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य के लिए प्रमुख समय माना जाता रहा है। 5वें वर्ष से 11वें वर्ष तक ब्राह्मणों के लिए गौण, 9वें वर्ष से 16 वर्ष तक क्षत्रियों के लिए गौण माना जाता रहा है। ब्राह्मणों के लिए 12वें से 16वें तक गौणतर काल तथा 16वें के उपरान्त गौंणतम काल माना गया है। आपस्तम्बगृह्यसूत्र एवं आपस्तम्बधर्मसूत्र, हिरण्यकेशिगृह्यसूत्र एवं वैखानस के मत से तीनों वर्णों के लिए क्रम से शुभ मुहूर्त पड़ते हैं वसन्त, ग्रीष्म एवं शरद् के दिन। भारद्वाज के अनुसार वसन्त ब्राह्मण के लिए, ग्रीष्म या हेमन्त क्षत्रिय के लिए, शरद् वैश्य के लिए, वर्षा बढ़ई के लिए या शिशिर सभी के लिए मान्य है। भारद्वाज ने वहीं यह भी कहा है कि उपनयन मास के शुक्लपक्ष में किसी शुभ नक्षत्र में, भरसक पुरुष नक्षत्र में करना चाहिए। कालान्तर के धर्मशास्त्रकारों ने उपनयन के लिए मासों, तिथियों एवं दिनों के विषय में ज्योतिषसम्बन्धी विधान बड़े विस्तार के साथ दिये हैं-, जिन पर लिखना यहाँ उचित एवं आवश्यक नहीं जान पड़तां किन्तु थोड़ाबहुत लिख- देना आवश्यक है, क्योंकि आजकल ये ही विधान मान्य हैं। वृद्धगार्ग्य ने लिखा है कि माघ से लेकर छ: मास उपनयन के लिए उपयुक्त हैं, किन्तु अन्य लोगों ने माघ से लेकर पाँच मास ही उपयुक्त ठहराये हैं। प्रथम, चौथी, सातवीं, आठवीं, नवीं, तेरहवीं, चौदहवीं, पूर्णमासी एवं अमावस की तिथियाँ बहुधा छोड़ दी जाती हैं। जब शुक्र सूर्य के बहुत पास हो और देखा न जा सके, जब सूर्य राशि के प्रथम अंश में हो, अनध्याय के दिनों में तथा गलग्रह में उपनयन नहीं करना चाहिए। बृहस्पति, शुक्र, मंगल एवं बुध क्रम से ऋग्वेद एवं अन्य वेदों के देवता माने जाते हैं। अत: इन वेदों के अध्ययनकर्ताओं का उनके देवों के वारों में ही उपनयन होना चाहिए। सप्ताह में बुध, बृहस्पति एवं शुक्र सर्वोत्तम दिन हैं, रविवार मध्यम तथा सोमवार बहुत कम योग्य है। किन्तु मंगल एवं शनिवार निषिद्ध माने जाते हैं सामवेद के) छात्रों एवं क्षत्रियों के लिए मंगल मान्य है(। नक्षत्रों में हस्त, चित्रा, स्वाति, पुष्य, घनिष्ठा, अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, श्रवण एवं रवती अच्छे माने जाते हैं विशिष्ट वेद वालों के लिए नक्षत्रसम्बन्धी - अन्य नियमों की चर्चा यहाँ नहीं की जा रही है। एक नियम यह है कि भरणी, कृत्तिका, मघा, विशाखा, ज्येष्ठा, शततारका को छोड़कर सभी अन्य नक्षत्र सबके लिए अच्छे हैं। लड़के की कुण्डली के लिए चन्द्र एवं बृहस्पति ज्योतिषरूप से शक्तिशाली होने चाहिए-। बृहस्पति का सम्बन्ध ज्ञान एवं सुख से है, अत: उपनयन के लिए उसकी परम महत्ता गायी गयी है । यदि बृहस्पति एवं शुक्र न दिखाई पड़ें तो उपनयन नहीं किया जा सकता। अन्य ज्योतिषटन यहाँ सम्बन्धी नियमों का उद्धा- स्थानाभाव के कारण नहीं किया जायगा।

उपनयन कर्म का सबसे बड़ा वैज्ञानिक प्रमाण है कि शास्त्रोक्त विधि के द्वारा यदि बालक का

उपनयन संस्कार हुआ हो तो उसकी बुद्धि, तेज, स्मृति, आयु आदि सभी उत्तरोत्तर उत्तम स्तर के होगी । इससे परे निम्न स्तर के होंगे। इसमें कोई संशय नहीं। मुहूर्तचिन्तामणि के लेखक रामदैवज्ञ ने भी व्रतबन्ध (उपनयन) संस्कार के लिए कहा है –

विप्राणां व्रतबन्धनं निगदितं गर्भाज्जनेवारेऽष्टमे।
वर्षे वाऽप्यथ पंचमे क्षितिभुजां षष्ठे तथैकादशे ॥
वैश्यानां पुनरष्टमेऽप्यथ पुनः स्याद्वादश वत्सरे ।
कालेऽथ द्विगुणे गते निगदिते गौणं तदाहुर्बुधाः ॥

विवाह संस्कार –

विशेषेण प्रकारेण वाहयति निर्वाहयति इति विवाह:। अर्थात् जब दो प्राणी स्त्री-पुरूष एक साथ ब्रह्म विधि द्वारा एक सम्बन्ध में बंधकर विशेष रूप से आजीवन निर्वाह करते है, ऐसा सम्बन्ध 'विवाह' कहलाता है। विवाह दो आत्माओं का पवित्र बन्धन है। दो प्राणी अपने अलग-अलग पहचान को समाप्त कर एक सम्मिलित इकाई का निर्माण करते हैं। स्त्री और पुरुष दोनों में परमात्मा ने कुछ विशेषताएँ और कुछ अपूणर्ताएँ दे रखी हैं। विवाह सम्मिलन से एक दूसरे की अपूर्णताओं को पूर्ण करते हैं, इससे समग्र व्यक्तित्व का निर्माण होता है। इसलिए विवाह को सामान्यतया मानव जीवन की एक आवश्यकता माना गया है। स्त्री-पुरूष जीवन में एक- दूसरे के साथ जीवन व्यतीत करते हुए गाड़ी में लगे हुए दो पहियों की तरह प्रगति- पथ पर साथ-साथ अग्रसर होते जाना विवाह का उद्देश्य है। वासना का दाम्पत्य- जीवन में अत्यन्त तुच्छ और गौण स्थान है, प्रधानतः दो आत्माओं के मिलने से उत्पन्न होने वाली उस महती शक्ति का निमार्ण करना है, जो दोनों के लौकिक एवं आध्यात्मिक जीवन के विकास में सहायक सिद्ध हो सके।

गृहस्थाश्रम को सारे आश्रमों का मूलाधार व सर्वश्रेष्ठ बताया गया है। लेकिन कहा गया है कि समय आने पर ही अर्थात् जब बालक विद्या प्राप्ति कर गृहस्थाश्रम में प्रवेशार्थ योग्य हो जाये तभी विवाह करनी चाहिए । इसका वैज्ञानिक कारण भी है कि यदि असामयिक विवाह होता है तो शारीरिक एवं मानसिक दोनों स्थितियों में दम्पत्ती को कष्ट पहुॅचता है। यदि समय से पूर्व कन्या मॉ बन जाती है, तो उसका शारीरिक पक्ष कमजोर पड़ जाता है। पिता यदि स्वस्थ न हो तो भी परेशानी का सामना करना पड़ता है।

धर्मशास्त्रों के अनुसार विवाह के आठ प्रकार हैं – ब्राह्म, दैव, प्राजापत्य, आर्ष, गान्धर्व, आसुर, राक्षस, एवं पिशाच। इनमें प्रथम चार श्रेष्ठ माने जाते हैं तथा बाद के तीन नि:कृष्ट। अत: प्रयास यह होना चाहिये कि प्रथम चार का ही विवाह हो। कालान्तर में अधमाधम विवाह हो रहा है, जिससे

वंशानुगत विकृतियॉ उत्पन्न हो रही है । फलस्वरूप अधर्मी, संस्कारहीन, पापी, व्यभिचारी, तथाकथित तत्वों का उद्भव हो रहा है।

विवाह की वैज्ञानिकता स्वत: सिद्ध होती है। विवाह का मुख्य उद्देश्यों में एक है – सन्तानोत्पत्ति। सन्तान की उत्पत्ति में विचार करना आवश्यक हो जाता है कि वर – कन्या की नाड़ी एकसमान तो नहीं। एक समान नाड़ी होने पर सन्तानोत्पत्ति में बाधा आती है। ज्योतिष के अनुसार जो नाड़ी विचार हैं, वही विज्ञान के अनुसार रक्त समूह होता है । कई चिकित्सक परामर्श देते हैं कि रक्तसमूह एक हो तो प्रजननता में विलम्ब होता है।

इस प्रकार विवाह में कई वैज्ञानिक चिन्तन होते हैं। वस्तुत: विवाह का मुख्य प्रयोजन हैं –

भार्यात्रिवर्गकरणं शुभशीलयुक्ता
शीलं शुभं भवति लग्नवशेन तस्या: ॥
तस्माद्विवाहसमये परिचिन्त्यते हि
तन्निघ्नतामुपगता सुतशीलधर्मा ॥

ज्योतिष शास्त्रानुसार विवाह में चिन्तनीय अष्टकूट विचार पूर्णत: वैज्ञानिक है । वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्री, भकूट, गण, नाडी । इनमें प्रत्येक से वर्ण, शरीर, मन, वाणी, परस्परमेल, प्रजनन क्षमता, व्यवहार, रक्तसमूह आदि का विचार किया जाता हैं।

बोध प्रश्न -

1. उपनयन का अर्थ होता है –
   क. उपनेत्र ख. पास या सन्निकट ले जाना ग. समीप घ. कोई नहीं
2. ब्राह्मणों का उपनयन संस्कार होना चाहिए –
   क. जन्म से पॉचवे वर्ष में ख. जन्म से आठवें वर्ष में ग. जन्म से दसवें वर्ष में
   घ. जन्म से सोलहवें वर्ष में
3. शास्त्रानुसार कथित काल से द्विगुणित काल हो जाने पर यज्ञोपवीत संस्कार होता है -
   क. मध्यम ख. उत्तम ग. गौण घ. निम्न
4. भारद्वाज के अनुसार किस ऋतु में ब्राह्मण के लिए उपनयन उत्तम होता है –
   क. शिशिर ख. ग्रीष्म ग. वसन्त घ.हेमन्त
5. वृहस्पति ग्रह का सम्बन्ध है –
   क. ज्ञान से ख. धन से ग. आत्मा से घ. शरीर से
6. धर्मशास्त्रों के अनुसार विवाह के कितने प्रकार हैं -

क. 7 ख. 8 ग. 9 घ. 10

4.5 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जाना कि भारतीय सनातन परम्परा में समस्त धर्म सम्बन्धी कर्म पूर्णत: वैज्ञानिक है, इसमें कोई सन्देह नहीं हैं। जहॉ तक उपनयन और विवाह का प्रश्न है, वह भी पूर्णरूपेण वैज्ञानिक है। उपनयन का अर्थ है – पास या सन्निकट ले जाना। प्रश्न उठता है कि किसके पास ले जाना ? इसमें कई मत है। शिक्षण हेतु आचार्य के पास ले जाना। नवशिष्य को विद्यार्थीपन की अवस्था तक पहॅुचा देना आदि ... आदि। हिरण्यकेशि के अनुसार जब गुरू शिष्य से कहलवाता है कि – मैं ब्रह्मसूत्रों को प्राप्त हो गया हॅू , मुझे इसके पास ले चलिये, सविता देवता द्वारा प्रेरित मुझे ब्रह्मचारी होने दिजीये। मानवग्रह्यसूत्र एवं काठक ने 'उपनयन' के स्थान पर 'उपायन' शब्द का प्रयोग किया है। काठक के टीकाकार आदित्यदर्शन ने कहा है कि उपानय, उपनयन, मौञ्चीबन्धन, बटुकरण, व्रतबन्ध समानार्थक हैं। विवाह दो आत्माओं का पवित्र बन्धन है। दो प्राणी अपने अलग- अलग अस्तित्वों को समाप्त कर एक सम्मिलित इकाई का निर्माण करते हैं। स्त्री और पुरुष दोनों में परमात्मा ने कुछ विशेषताएँ और कुछ अपूणर्ताएँ दे रखी हैं। विवाह सम्मिलन से एक दूसरे की अपूर्णताओं को पूर्ण करते हैं, इससे समग्र व्यक्तित्व का निर्माण होता है। इसलिए विवाह को सामान्यतया मानव जीवन की एक आवश्यकता माना गया है। एक- दूसरे को अपनी योग्यताओं और भावनाओं का लाभ पहुँचाते हुए गाड़ी में लगे हुए दो पहियों की तरह प्रगति- पथ पर अग्रसर होते जाना विवाह का उद्देश्य है। वासना का दाम्पत्य- जीवन में अत्यन्त तुच्छ और गौण स्थान है, प्रधानतः दो आत्माओं के मिलने से उत्पन्न होने वाली उस महती शक्ति का निमार्ण करना है, जो दोनों के लौकिक एवं आध्यात्मिक जीवन के विकास में सहायक सिद्ध हो सके।

4.6 शब्दावली-

उपनयन – यज्ञोपवीत संस्कार ।

पूर्णरूपेण - पूरी तरह से ।

सविता – सूर्य ।

उद्गम - उत्पत्ति ।

व्रतबन्ध – यज्ञोपवीत

वटुकरण – यज्ञोपवीत

असामयिक – बिना समय के

अपूर्ण – अधूरा

उद्भव – जन्म

लौकिक – सांसारिक

अद्वितीय – जिसके समान दूसरा कोई न हो

4.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. ख
2. ख
3. ग
4. ग
5. क
6. ख

4.8 सहायक पाठ्यसामग्री

1- मुहूर्तचिन्तामणि

2- कर्मकलाप

3. संस्कार विमर्श

4. मेलापक मीमांसा

4.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. उपनयन संस्कार का परिचय दीजिये।
2. उपनयन की वैज्ञानिकता सिद्ध कीजिये।
3. विवाह की वैज्ञानिकता सिद्ध कीजिये।
4. विवाह एवं उपनयन की महत्ता पर प्रकाश डालिये।